अनुक्रमणिका.

चैत्यवंदनानि.

छंद.

स्तवनानि.

सज्जायो.



॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र.

(बालावबोध—अर्थ सहित.)

॥ श्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

અ આ ઇ ઈ ઉ ઊ ઋ ૠ ઌ ૡ

ए ऐ अै ओ ओ औ अं अः

એ ઐ ઐ ઓ ઓ ઔ અં અઃ

॥ क ख ग घ ङ ॥ च छ ज झ

॥ ક ખ ગ ઘ ઙ ॥ ચ છ જ ઝ

ञ ॥ ट ठ ड ढ ण ॥ त थ

ઞ ॥ ટ ઠ ડ ઢ ણ ॥ ત થ

द ध न ॥ प फ ब भ म

દ ધ ન ॥ પ ફ બ ભ મ

॥ य र ल व ॥ श ष स ह

॥ ય ર લ વ ॥ શ ષ સ હ

ळं क्ष ज्ञः ॥ १ ॥

ળં ક્ષ જ્ઞઃ ॥ ૧ ॥

क्क ख्ख ग्ग ग्घ ङ्ङ ॥ च्च च्छ

ક્ક ખ્ખ ગ્ગ ગ્ઘ ઙ્ઙ ॥ ચ્ચ ચ્છ

ज्ज ज्झ झ्झ ञ्ञ ज्झ ट्ट ठ्ठ ड्ड ढ्ढ

જ્જ જ્જ જ્ઝ જ્ઝ જ્ઝ ટ્ટ ઠ્ઠ ડ્ડ ઢ્ઢ

ण्ण ॥ त्त त्थ थ्थ द्द द्ध न्न प्प

ણ્ણ ॥ ત્ત થ્થ ત્થ દ્દ દ્ધ ન્ન પ્પ

प्फ ब्ब भ्भ म्म ॥ य्य ल्ल व्व

ફ્ફ બ્બ ભ્ભ મ્મ ॥ ય્ય લ્લ વ્વ

श्श ॥ ष्ष स्स क्ष ज्ञ ॥

શ્શ ॥ ષ્ષ સ્સ ક્ષ જ્ઞ ॥

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः

च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः
ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञं ञः
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः
ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः
ड़ ड़ा ड़ि ड़ी ड़ु ड़ू ड़े ड़ै ड़ो ड़ौ ड़ं ड़ः
ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः
ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ णं णः
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः

फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः
क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः
ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯ ૦

उदाहरणो.

गुण, कमल, नल, पवन, पाप, जीव, अजीव, पुण्य, दास, अपकाय, तेउकाय, त्रसकाय, पृथ्वी, थलचर, खेचर, ऐश्वर्य, औदार्य, स्तुति, इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, मत्थएण, इत्यादि.

नवकारना जुदा शब्दोना अर्थ.

नमो–नमस्कार थाओ.
अरिहंताणं–अरिहंतोने–नुं.
सिद्धाणं–सिद्धोने–नुं.
आयरियाणं–आचार्योने–नुं.
उवज्झायाणं–उपाध्यायोने–नुं.
लोए–लोकने विषे.
सव्व–सर्व
साहूणं–साधुओने– नुं.
एसो–आ–ए

पंच–पांच
नमुक्कारो–नमस्कार
पाव–पाप.
प्पणासणो–नाश करनार
मंगलाणं–मंगलिकोनुं–(मां.)
सव्वेसिं–सर्वनुं
पढमं–पहेलुं
हवइ–छे–थाय छे.
मंगलं–मंगल.

१ ॥ नवकार मंत्र. ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो

आयरिआणं, नमो उवझायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्व मंगलनुं मूल, श्री जिनशासननो सार, अगिआर अंग अने बार उपांग तथा चौद पूर्वनो उध्धार, हमेशां शाश्वत एवा श्री पंच परमेष्ठिने नमस्कार रुप महामंत्र श्री नवकार छे. तेनो प्रारंभ करीए छीए. तेमां पहेलुं श्री अरिहंत पदनुं वर्णन करीए छीए. नमो अरिहंताणं के० अरि के० रागादिक वेरी प्रते हंताणं के० हणनार एवा, बार गुणे करी सहित चोत्रीस अतिशयवंत समवसरणने विषे विराजमान एवा विहरमान तीर्थंकर जे श्री वीतराग अरिहंत देव ते प्रत्यें, नमो के० नमस्कार थाउ.

अहींआं नमः ए पद द्रव्य तथा भाव संकोचने अर्थे छे माटे एवमे हाथ, पग, अने माथा वमे करी. सुप्रणिधानरुप नमस्कार थाउ. एटले कर, मस्तक अने विशुद्ध मननो नियोग ते भाव संकोच जाणवो,

एटले द्रव्य अने भावथी नमस्कार थाउ एवो नमस्कार कोने थाउ ? तो के अरिहंतादिक पंच परमेष्टिने अहींआं प्रथम नमो अरिहंताणं ए पदना त्रण जूदा जूदा पाठ छे तेनां नाम. १ नमो अरहंताणं २ नमो अरिहंताणं अने ३ जो नमो अरुहंताणं.

पहेला (नमो अरहंताणं के०) नमोऽर्हद्भ्यः जे पूजाने योग्य छे तेने अर्हंत कहिये, अर्थात् देवोए रचेला एवा अशोक वृक्ष आदि आठ महा प्रातिहार्यरूप पूजाने जे योग्य छे तेने अरहंत कहियें ते विषे आवो पाठ छे.—अरहंति वंदण नमं, सणाइ अरहंति पूअसक्कारं ॥ सिद्धिगमणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥१॥ अर्थः—जेउ वंदण नमस्कारादिने योग्य छे, जमने पूजा सत्कार करवां घटे छे अने जेउ सिद्धिगति पामवाने योग्य छे ते माटे तेमने अरहंत कहे छे.

अथवा अरहंत एटले जेम वादलां सूर्यमंडलने ढांके छे तेम कर्मरूप रज आत्माना ज्ञानादिक अनंत गुणोने ढांकी दे छे एवां चार घातिकर्मरूप रजने हणवाथकी अरहंत कहियें.तथा रहस्याभावात् अरहंत एटले केवलज्ञान अने केवलदर्शनवडे करीने रहस्यनो अभाव

छे एटले जेनाथी कंइ छानुं नथी माटे अरहंत कहियें.

अथवा (अ के०) नथी (रह के०) एकांत प्रदेश अने (अंत के०) मध्यन्नाग पर्वत गुफा विगेरेनो जेने एटले समस्त वस्तु समूहना प्रछन्नपणाना अन्नावे करी अरहंत कहिये अर्थात् कंइपण वस्तु तेमनाथी छानी नथी सर्व वस्तुने तेउ जाणे छे तेवा न्नगवंतोने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) नथी (रह के०) रथ विगेरे वधो परिग्रह अने (अंत के०) विनाशना करनारा एवा जरा विगेरे जेमने एवा अरहंत तेमने नमस्कार थाउ.

अथवा अरहयन्नयः एटले प्रकृष्ट रागादि हेतुन्नूत एवा मनोज्ञ अने अमनोज्ञ विषयो तेना संपर्कथकी पण जे पोतानो स्वस्वन्नाव छांरुता नथी ते माटे अरहंत कहिये.

हवे (नमोअरिहंताणं के०)नमो रिहद्भ्यः नमो के० नमस्कार थाउ. (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुउने (हंताणं के०) हणनारा एवा श्रीअरिहंतदेव प्रत्ये नमस्कार थाउ.ते श्री अरिहंत न्नगवानने महागोप महामाहण,

निर्यामक अने सार्थवाह ए चार उपमा अपाय छे ते सार्थकज छे ते आ रीतेः—महागोपः—जेम गोवाल गायोने चराववाने वनवगडामां लइ जाय छे तेम अरिहंत भगवान जीवोने निर्वाण रुप वन प्रत्यें पोहोचाडे छे माटे महागोप कहीए. वली महा माहण एटले अरिहंतजी प्राण, भूत, सत्व अने जीव ए चार प्रकारना जीवोने माहण माहण एटले मारो नही मारो नही एवो शब्द कहे, माटे महा माहण कहीए. वली ए अरिहंत भगवानना आश्रय थकी संसार समुद्रनो पार पमाय छे माटे निर्यामक कहीए. वली जेम कोइ सार्थवाहनी मददथी इच्छित नगरे जवाय छे तेम श्री अरिहंतनी सहायथी मोक्षरुप नगरीए पोहोंचाय छे माटे तेमने सार्थवाहनी उपमा अपाय छे. ए रीते चारे उपमा अपाय छे. ए चारे उपमा सार्थक छे अने ते श्री अरिहंतनेज छाजे छे.

वली राग द्वेष, परिसह अने उपसर्गने नमावनार पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय, चार कषाय, बावीश परिसह तथा शरीरमां स्वभावे करीने उत्पन्न थएली अने बीजाए करेली एवी बे प्रकारनी वेदना अने अनु

लोम उपसर्ग (ते स्त्रीआदिक कामनी प्रार्थना करे ते) अने प्रतिलोम उपसर्ग (ते देव मनुष्य तिर्यंच वीगेरे थी ताड़ना तर्जना थाय ते) इत्यादिक शत्रुउने हण नार माटे अरिहंत कहीए ते अरिहंतने नमस्कार था उ. एवा अरिहंतने मन वचन अने कायानी एकाग्र ताए नाव सहित नमस्कार करतां थकां जीव नवना सहस्त्रोथी मुकाय तथा बोधिना लाभने पामे. ए बी जा पाठनो अर्थ थयो.

हवे त्रीजो पाठ (नमो अरुहंताणं के०) नमो अरुह नयः एनो अर्थ कहे बेः—कर्मरूप बीज नाश थवा थकी जे मने संसारमां फरी (अ के०) नथी (रुहंत के०) उपजवुं तेमने अरुहंत कहीए एटले जेमने एके नव करवो नथी. कह्युं बे केः—दग्धे बीजे यथाऽत्यंतं, प्राउर्नवति नांकुरः ॥ कर्म्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति नवांकुरः ॥१॥ अर्थः—जेम अत्यंतपणे बली गएला बीजने वाव वाथी अंकुरो फुटतो नथी तेम कर्मरूप बी बली ज वाथी नवरुप अंकुरो उगतो नथी. एटले नवा नव क रवा पड़ता नथी; माटे अरुहंत कहीए. एवा अरुहंत नगवानने नमस्कार थाउ ए त्रीजा पाठनो अर्थ थयो.

अहींआ कोइ कहे के उपर वर्णवेला लक्षणवाळा अरिहंत भगवानने शा माटे नमस्कार करवो जोइए ? तेने उत्तर कहे छे जे आ संसाररुप महा भयंकर अटवीमां भ्रमण करवाने बीहीता एवा जीवोने अनुपम आनंद आपनार जे मोक्षपुरी तेनो मार्ग बतावधाथी परम उपकारी छे ते माटे तेमने नमस्कार करवो योग्यज छे. अहींआं 'नमो अरिहंताणं' ए सात अक्षरनुं पहेलुं पद थयुं. वली ते पद पहेली संपदा थइ. संपदा एटले ज्यां अर्थ समाप्तिनो अधिकार होय अथवा ज्यां विसामो लइए तेने संपदा कहीयें. ए अरिहंत पदने श्वेत वर्णे ध्याइए. ए प्रथम अरिहंत पदनुं भावमंगल वर्णव्युं ॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे छे (नमो सिद्धाणं के०) नमः सिद्धेभ्यः अहीआं सित के० चिरकालनो बांधेलो एवो आठ कर्मरुप लाकडानो भारो, तेने ज्वाजल्यमान शुक्लध्यानरुप अग्निवडे जेणे ध्मातं के० धम्यो छे, बाळ्यो छे, भस्म कीधो छे तेने निरुक्ते सिद्ध कहिए. एवा सर्व सिद्धने नमो के० नमस्कार होजो. अथवा षिधु धातु, गत्यर्थवाची छे एथी

अपुनरावृत्तिये एटले पाछुं न अवाय एवी रीते मोक्ष प्रत्ये गया ते सिद्ध कहेवाय, अथवा शिक्षा करनार शास्त्रकथक थया तेथी सिद्ध कहेवाय, अथवा शासनने प्रवर्त्तावनार थइने सिद्धरूप मांगल्यपणाप्रत्यें अनुभव्युं ते सिद्ध कहीयें. अथवा नित्ये नहीं बदलाय तेवी अनंत स्थितिने पामवाथी सिद्ध कहिये अथवा जेमनाथी भव्य जीवोने गुणोनो समूह प्राप्त थाय छे माटे सिद्ध कहिये. ए विषे उपर कहेला भावार्थवालो आ श्लोक लख्यो छे. तद्यथा ॥ ध्मातं सितं येन पुराणकर्म्म, यो वा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि ॥ ख्यातोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो, यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥ १ ॥

ए सिद्ध परमात्माने अनंत चतुष्क एटले ज्ञान दर्शन चारित्र तथा वीर्य ए गुण प्रगट थया छे ते गुणोए करी सहित होवाथी भव्य जीवोने अति आनंद उत्पन्न करे छे तेथी अत्यंत उपकारी छे माटे श्री सिद्ध भगवान् नमस्कार करवा योग्यज छे. एमनुं रातां वर्णे ध्यान करीयें. आ पंचपरमेष्ठि मंगलनुं बीजुं मंगल जाणवुं. ए नवकारनुं बीजुं पद तथा बीजी संपदा थइ.

हवे आचार्य पदनुं त्रीजुं मंगल कहे छे. (नमो

आयरियाणं के०) नम आचार्येभ्यः आ एटले मर्यादाए करी, एटले विनये करी चर्यते के० सेवाय छे अर्थात् जिनशासनना अर्थना उपदेशक छे अने तेथी ते उप देश सांजलवानी इछा करनारा जीवो जेमने सेवे छे तेमने आचार्य कहियें तेवा आचार्यने नमो के० नम स्कार थाउ. कह्युं छे के "सुत्तछविऊ लरकण, जुत्तो ग छस्स मेढिजूउ अ ॥ गणतत्ति विप्पमुक्को, अछं वाएइ आयरिउ ॥ १ ॥

अथवा आ एटले मर्यादाए करी चार एटले वि हार ते आचार कहियें ते पांच प्रकारना छे. तेनां ना मः—ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार अने वीर्याचार ए पांच प्रकारना आचार पालवामां पोते च तुर छे, तथा बीजाने ते आचार पालवानो उपदेश करे छे तेथी तथा बीजा साधु प्रमुखने ते आचार देखाडे छे तेथी आचार्य कहियें. कह्युं छे के, "पंचविहं आयारं, आयरमाणा तहा पयासंता ॥ आयारं दंसंता, आयरि या तेण वुच्चंति ॥ १ ॥

अथवा आचारमां युक्तायुक्तनो विजाग करवामां अनिपुण शिष्यने जला यथार्थ शास्त्रार्थ उपदेशक छे

तेथी आचार्य केहेवाय.

एवा आचार्य न्नव्य प्राणीउने आचारनो उपदेश करे ढे तेथी परोपकारी ढे अने ढत्रीश ढत्रीशी गुणे करीने विराजमान युगप्रधान, न्नव्य जीवोने उपदेश आपी प्रतिबोधी कोइने सर्व विरति, कोइने देश विरति अने कोइने समकीती करे ढे, तथा कोइक उपदेश सांन्नलीने न्नडक परिणामी थाय ढे, एवा उपकारना करनार शांतमुझना धणी क्षण मात्र पण कषायवाला न होय; वली आचार्य न्नगवान् नित्ये प्रमाद रहित थका अप्रमत्त धर्मना उपदेशक ढे; वली राज कथा, देश कथा, न्नक्त कथा अने स्त्री कथा सम्यक्त्व ढिलणीयानी अने चारित्र ढिलणीयानी कथा एवी ढ विकथा करता नथी. वली शिष्यादिकने सारणा, वारणा, चोयणा अने पमिचोयणादिके करी प्रवचननो अन्यास करावनार ढे अने साधुजनने क्रिया धरावता थका ढे. वली जेम सूर्य अस्त थयाथकी घरमां घट पटादिक देखातां नथी, पण ज्यारे दीवो करीए त्यारे सर्व पदार्थ देखाय ढे तेम अहियां केवलज्ञान न्नास्कर श्रीतीर्थंकर देव मुक्तियें पधार्या पढी सकल न्नूवनना पदार्थने प्र

गट करवाने दीपक समान एवा आचार्य ज्ञगवान ले एवा आचार्य ज्ञगवानने नमस्कार करवो योग्य छे. ए श्री आचार्य ज्ञगवानने सुवर्णवर्णे ध्यायीए. ए पंच परमेष्टि मंगलमां त्रीजुं मंगल अने नवकारनुं त्रीजुं पद तथा त्रीजी संपदा थइ.

(नमो उवज्झायाणं के०) नम उपाध्यायेभ्यः उप के० पासे आव्या एवा जे साधु प्रमुख तेमने अध्याय के० सिद्धान्तनुं अध्ययन करावे तथा उपाधीय ते के० जेमनी पासे आवी ज्ञणाय तेमने उपाध्याय कहियें ते प्रते नमः के० नमस्कार थाउ.

अथवा जेमना पासे घणीवार जवाय अथवा सूत्रनुं स्मरण कराय ते माटे उपाध्याय कहियें. ते विषे कह्युं छे के, "बारसंगो जिणरकाउ, सज्झाउ कहिउ बुहेहिं ॥ ते उवइसंति जम्हा, उवज्झाया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ अर्थः—श्री जिनेश्वर ज्ञगवाने अर्थथी ज्ञाख्यां एवां बार अंग तेनो स्वाध्याय पंमित पुरुषोए कह्यो तेनो उपदेश करे छे ते माटे तेमने उपाध्याय कहियें.

वली उ अक्षर ते उपयोगने अर्थे छे, अने व ए पापनुं समस्त प्रकारे वर्जवुं तेने अर्थे छे, अने ज्झा ते

ध्यान करवाने अर्थे छे अने उ अक्षर ते कर्मथकी प
गा हठवाने अर्थे छे. ए रीते चार अक्षर मलवाथी उ
वज्झाउ एटले उपाध्याय एवो शब्द थाय. ए उपाध्य
य भगवान पचीस गुणे करी विराजमान छे अने द्व
दशांगीना धारक छे तथा ते द्वादशांगी सूत्रथी साधु
उने भणावे छे एथी ए महा उपकारी छे अने आचा
र्यजी भगवान शासनना राजा छे तेम श्री उपाध्याय
जी युवराज छे एवा उपाध्यायजी भगवानने नमस्का
र करवो योग्यज छे. ए श्री उपाध्यायजी भगवाननुं
नीलवर्णे ध्यान करीए. ए पंचपरमेष्टी मंगलमां चोथुं
मंगल थयुं अने नवकार मंत्रनुं चोथुं पद, अने चोथी
संपदा थइ.

(नमो लोए सव्व साहूणं के०) नमः लोके सर्व
साधुभ्यः आ लोकमां सर्व साधु भगवानने नमस्कार
थाउ. जे ज्ञानादिके करी मोक्षने साधे, अथवा सर्व
प्राणीमात्र उपर समपणुं राखे, शत्रु अने मित्र समा
न गणे तेने साधु कहिये. वली साधु भगवान मोक्ष
मार्गने साधवामां सहाय करनार होवाथी उपकारी छे
तेमने मारो नमस्कार थाउ.

जेम भमरो एक फूलपरथी सुगंधी लेइ बीजा फूलपर जाय पण फूलमांथी कंइ उछुं थतुं नथी, तथा ते तेने कंइ पीडा करतो नथी तेम मुनि पण एक घरथी बेतालीस दोष रहित आहार लेइ बीजे ठेकाणे जाय पण गृहस्थने कंइ पीडा उत्पन्न करे नहि; पंच इंद्रिय ना विषयने जीते, १८००० शीलांग रथने धारण करे, तथा मुनीश्वरोने जयणा सहित वंदीने पोतानो जन्म पवित्र करे. वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति धारण करे एवा साधुउने नमस्कार करवो योग्यज छे.

पांचे इंद्रिउना विषयोने जीते, ने पांचे इंद्रिउने वश राखे, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, अने त्रसकाय, ए छ कायना जीवनी रक्षा सर्व प्रकारे पोते करे, अने बीजा पासे पोते क-रावे, सत्तर भेदे संजम पाले, बीजा पासे पलावे, सर्व जीवपर करुणाभाव राखे, वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्य नी गुप्ति धारण करवामां, तथा बार भेदे तपस्या क-रवामां शुरा, जेमने वंदन पूजननी वांछा (इछा) न थी, एवा मुनीनां दरशन तो पुरो पुण्यनो उदय होय तो पामीए. ए पांचमुं मंगल थयुं तथा नवकारनुं पां

घमुं पद अने पांचमी संपदा थइ.

आ पंचपरमेष्ठि नमस्कारना अनुक्रम विषे आम कह्युं छेः—

पुव्वाणुपुव्वि न कमो, नेवय पच्छाणु पुव्वि एस ज वे ॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआए साहुणो आइं ॥ १ ॥ अरहंता उवएसेणं, सिद्धाणं जंति तेण अरिहाइ ॥ ण वि कोइ परिसाए, पणमित्ता पणमइ रन्नोत्ति ॥ २ ॥

अर्थः—आ पंच परमेष्ठि नमस्कारमां पेहेला श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए री नमस्कार कर्यो छे ए रीते नमस्कार पुर्वानुपुर्वी क्र थी नथी, केमके आ सौमां सिद्ध मुख्य छे, माटे रि छने नमस्कार पहेलो करवो जोइए. तेमज आ बी पश्चानुपुर्वी क्रमथी पण नमस्कार नथी, केमके ते पेहेलो साधुने नमस्कार करवो जोइए, आ ज शंका समाधान ए छे के अरिहंतनेज प्रथम नमस्कार रव योग्य छे केमके श्री अरिहंत भगवानना उपदेश थक ज सिद्धने जाणीए छीए अने वली अरिहंते तीर्थ प्र तावी उपदेश आप्यो तेथी जीवो चारित्र आदरी क रहित थइ सिद्ध थया तेथी अरिहंतनेज प्रथम न

र करवो योग्य छे, वली कोइ पर्षदाने नमस्कार करी राजाने नमस्कार करतुं नथी पण राजानेज प्रथम नमस्कार करे छे तेम अरिहंत ज्ञगवान पण राजा समान छे, तेथी तेमने प्रथम नमस्कार करवो योग्य छे.

(एसो पंच नमुक्कारो के०) एष पंच नमस्कारः एटले ए पांचनो नमस्कार ए नवकारनुं छठुं पद अने छठी संपदा थइ.

(सव्वपावप्पणासणो के०) सर्व पाप प्रणाशनः एटले सर्व पापने नाश करनारो छे ए सातमुं पद अने सातमी संपदा थइ.

(मंगलाणं च सव्वेसिं के०) मंगलानां च सर्वेषां एटले सर्व मंगलोने विषे, ए आठमुं पद थयुं.

(पढमं हवइ मंगलं के०) प्रथमं ज्ञवति मंगलं एटले पेहेलुं मंगलीक छे, एटले ए मुख्य या उत्कृष्ट मंगल छे. मंगल बे प्रकारनां छे. ऽव्य मंगल ते दहीं, अक्षत, दूर्वा, चंदन, कनक, कलश वगेरे लौकिक मंगल आ लोकमां अल्प सुख साधक छे, पण ज्ञाव मंगल जे पंचपरमेष्ठी नमस्कार रुप जे लोकोत्तर मंगल, ते आ लोकमां सुख तथा परलोकमां परंपराए मोक्ष प्रा

ति रुप उत्कृष्ट सुख आपनार छे तेथी अवश्य करवा योग्य छे. ए नवमुं पद थयुं अने आठमा तथा नवमा पदनी एक आठमी संपदा थइ. आ नवकार मंत्रना एकसठ लघु तथा सात गुरु अक्षर मली अडसठ अक्षर थया.

हवे महामंत्र श्री नवकार मंत्रमां पंच परमेष्ठी ने नमस्कार करीने ते पंचपरमेष्ठीना १०८ गुण वखाणे छे.

श्रीअरिहंतना गुण १२

१ अशोकवृक्षः—ज्यां भगवान समोसरे त्यां भगवानना देहमानथी बार गुणो उंचो अशोकवृक्ष एटले आसोपालवनुं झाड देवता रचे ते नीचे बेसीने भगवान देशना दे.

२ सुरपुष्पवृष्टिः—भगवानना एक जोजन प्रमाण समोसरणनी पृथ्वी उपर जल अने थलमां निपजेलां सुगंधीदार पंचवर्णा सचित फुलनी वृष्टि ढींचण प्रमाण देवता करे.

३ दिव्यध्वनिः—देवताओ भगवाननी वाणीने मालवकोशराग वीणा वांसली आदिकना स्वरवडे पूरे

४ चामरयुः—देवो रत्ने जडीत सोनानी डांडीवाळा

धोला चार जोमी चामरो समोसरण मध्ये ज्ञगवंतने वींझे छे.

५ आसनं=सिंहासनः—ज्ञगवंतने बेसवा सारु रत्ने जमीत सुवर्णमय सिंहासन देवताउ रचे छे.

६ ज्ञामंमलंः—(ज्ञा के० तेजनुं, मंमलं के० मांम लुं) ज्ञगवानना मस्तकनी पूंठे शरद ऋतुना सूर्यना किरण जेवुं आकरा तेजवालुं ज्ञामंमल एटले कांति नुं मंमल देवता रचे. ते न होय तो ज्ञगवानना मों सा मुं जोवाय नहीं.

७ डुंडुज्ञिः—देवताउ आकाशमां देवडुंडुज्ञि वि गेरे कोमोगमे वाजींत्रो वगामे छे तेथी जाणे ते एम कहेता न होय के ज्ञो ज्ञव्यो! प्रमादने छांमीने मुक्तिपू रीना सार्थवाह समान आ ज्ञगवानने सेवो.

८ छत्रंः—ज्ञगवानना मस्तक उपर उपरा उपरी शरद्पूनमना चंड जेवां त्रण धोलां छत्रो मोतीनी मा लाए विराजमान एवां देवताउ धरे—समोसरणनी जि श्राए बार छत्र धरे ते जाणे एम जणावतां न होय के त्रण ज्ञुवनना परमेश्वर एवा ज्ञगवानने सेवो. ए रीते आठ प्रातिहार्यना आठ गुण थया, तद्यथा॥अशोकवृक्षः

सुरपुष्पवृष्टि, र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ नामंमलं डुंडुन्निरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥

हवे न्नगवानना चार मूल अतिशय रुप चार गुणो ठे ते आ प्रमाणेः—

ए अपायापगमातिशयः—(अपाय के० नपद्रव अने अपगम के० नाश=नपद्रवनो नाश) ते बे प्रकारे ठे; १ स्वसंबंधि अने २ परसंबंधि. १ स्वसंबंधि अपाया पगमातिशय बे प्रकारे ठे. द्रव्य अने न्नाव. द्रव्यथकी न्नगवानने सर्व रोगनो नाश थयो ठे अने न्नाव थकी न्नगवान अढारदोष रहित थया ठे ते अढार दोषनां नामः— १ अज्ञान २ क्रोध, ३ मद, ४ मान, ५ माया, ६ लोन्न, ७ रति, ८ अरति, ए निद्रा, १० शोक, ११ जुठुं, १२ चोरी, १३ मत्सर, १४ न्नय, १५ जीव हिंसा, १६ राग, १७ क्रीमा प्रसंग, १८ हास्य ए अढार दोष रहित न्नगवान ठे ते विषे आ बे गाथाउ लखी ठे ॥अन्नाण कोह मय माण, माया लोहो रई अरई अ॥ निद्दा सोय अलियवयण, चोरिआ मह्नर न्नया य ॥१॥ पाणिवह पेम कीला, पसंग हासाय जस्स ए दोसा, अढारस विपणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ व

ती पाठांतरे अढार दोष कहेछे. १ दानांतराय, २ लाभां
तराय, ३ वीर्यांतराय, ४ भोगांतराय, ५ उपभोगांतरा
य, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ भय, १० शोक, ११
जुगुप्सा एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अ
ज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष, ए
दोष रहित वीतराग भगवान छे. ए स्वाश्रयी भगवान
नो अपायापगमातिशय थयो. हवे पर संबंधि अपाया
पगमातिशय कहेछे. ज्यां भगवान विहार करे त्यां चा
र दिशाए सवासो जोजनमां प्राये करी सात इतिना
उपद्रव जेवा के अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उंदर, शुक अने
तीडना उपद्रव, मरकी, स्वचक्र एटले पोताना राजाना
सैन्यनो भय अने परचक्र एटले पारकाना सैन्यनो भय;
रोग तथा वैर विगेरे होय नहीं. ए परसंबंधि 'अपाया
पगमातिशय' जाणवो.

१० ज्ञानातिशयः—भगवान केवलज्ञान केवल द
र्शने करी सर्व लोकालोकना भाव जाणे देखेछे, एमना
थी कांइ छानुं नथी.

११—पूजातिशयः—भगवानने बलदेव, वासुदेव,
चक्रवर्ती तथा चारनिकायना देवता ते भवनपति, व्यं

तर, ज्योतषी अने वैमानिक देवता तथा तेमना इंडे वगेरे जगत्रयवासी ज्नव्य जीवो तेमनी सेवा करे छे ते त्रीजो पूजातिशयनामा अग्यारमो गुण थयो.

१२ वचनातिशयः—ज्नगवंतनी वाणी संस्कारादिक गुणे सहित होवाथी देव, मनुष्य अने तिर्यंच पोतपोतानी ज्नाषामां समजे छे ते विषे एक ज्निल्लनुं दृष्टांत कहेछे. कोइ एक ज्निल्ल पोतानी त्रण स्त्रीसाथे एक दिवस वनमां जतो हतो ते वखते पहेली स्त्रीए कह्युं मने हरण हणी आंणी आपो; बीजीए कह्युं मने तरस लागी छे तेथी पाणी लावी आपो; त्रीजीए कह्युं मने कांइ सारुं गीत संज्नलावो. आ त्रणेना उत्तर ते ज्निल्ले एक जवाबथी वाळ्या के 'सरो नहि.' एथी पहेली समजी के तीर नथी ते हरणने मारीने शीरीते लावी आपे; बीजी समजी के सरोवर नथी ते पाणी केम लावी आपे; त्रीजी समजी के तेमनो राग नथी ते सारुं गीत केम करी संज्नलावे. एम एक जवाबथी त्रणे बीउ समजी गइ तेम ज्नगवाननी वाणी सर्वे कोइ पोतपोतानी ज्नाषामां समजी जाय, ए तेमनो चोथो अतिशय अने बारमो गुण थयो.

सिद्ध भगवानना आठ गुण.

१ ज्ञानगुणः—ज्ञानावरणीय कर्म क्षय जवाथी केवलज्ञाने करी सिद्ध भगवान लोकालोकना स्वरुपने समस्त प्रकारे जाणे छे.

२ दर्शनगुणः—दर्शनावरणीय कर्म क्षय जवाथी केवलदर्शन प्राप्त थयुं छे तेथी सिद्ध भगवान लोकालोकना भाव समस्त प्रकारे देखी रह्या छे.

३ अव्याबाध सुखः—वेदनीय कर्म क्षय जवाथी अव्याबाध (सर्व प्रकारनी पीडा रहित) अनंत सुख सिद्ध भगवानने प्राप्त थयुं छे. ते सुख, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती, चार निकायना देवो, ए सरवेनां सुख एकठां करीए तेथी अनंतगुणुं छे. जेम मुंगो माणस गोल खाय अने तेनो स्वाद जाणे पण कही शके नहीं तेम ते सिद्धनां सुख केवलज्ञानी भगवान जाणे छे पण कही शके नहीं, केमके वचनातीत छे.

४ क्षायक समकीतः—मोहनीय कर्म क्षय जवाथकी क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं छे, ते सिद्धने विषे यथावस्थितपणे होय छे.

५ अक्षय स्थितिः—आयु कर्मना क्षय जवाथकी

सिद्धना जीवोने सादि अनंत स्थिति छे. एटले सिद्ध गतिमां गयानी आदि छे, पण अंत नथी.

६ अरुपीगुणः—नाम कर्म क्षय जवा थकी सिद्ध ना जीव, वर्ण, गंध, रस, तथा फरस रहित छे, तेथी अरुपी छे.

७ अगुरुलघुः—गोत्र कर्म क्षय जवा थकी, अगु रु लघु (नहीं हलवो तथा नहीं भारे एवो तथा नहीं नीच कुलना तथा नहीं उंच कुलना एवो) गुण प्रा प्त थयो छे.

८ वीर्य गुणः—अंतराय कर्म क्षय जवा थकी, सिद्ध भगवान अनंतदान, लाभ, भोग, उपभोग वीर्यमय होय. तेमनुं स्वभाविक आत्मानुं वीर्य एवुं थयुं छे के लोकनुं अलोक करे अने अलोकनुं लोक करे परंतु एवुं वीर्य कदी फोरव्युं नथी, फोरवता नथी, अने फोर वशे नहीं. ए रीते सिद्धना आठ गुण थया.

आचार्यना छत्रीस गुण.

१—५ फरसइंद्रि १ रसइंद्रि २ घ्राणइंद्रि ३ चक्षु इंद्रि ४ श्रोतइंद्रि ५ ए पांचे इंद्रीना त्रेवीस विषयोमां जे मनगमता होय तेना उपर राग नहीं अने अणगम

ता होय तेना उपर द्वेष नहीं ते माटे पांच इंड्रियोना विषयने रोकनार कहेवाय.

६ स्त्री पशु अने नपुंसक थकी रहित एवा स्था नकमां रहे.

७ स्त्रीनी साथे सरागपणे कथा वारता करे नहीं.

८ स्त्री बेठी होय ते आसने पुरुष बे घमी सुधी बेसे नहीं ने पुरुष बेठो होय ते आसने स्त्री त्रण पहोर सुधी बेसे नहीं.

९ स्त्रीनां अंगोपांग सरागपणे निरखे नहीं.

१० ज्यां स्त्री पुरुष सूतां होय, तथा काम क्रीमा विषे वातो करतां होय त्यां नींतना आंतरे रहे नहीं.

११ पूर्वे पोते स्त्री साथे नोगवेलां सुखने सं नारे नहीं.

१२ सरस स्निग्ध आहार करे नहीं केमके तेम करवाथी विकार जागे.

१३ नीरस एवो पण अधिक आहार ले नहीं.

१४ शरीरनी शोन्ना न करे.

ए उपर कहेली नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले.

१५ क्रोध न करे.

होय तेपर राग धरे.

२५ दर्शनाचारः—ते पोते समकीत पाले, पला वे अने समकीतथी पमता जीवने हेतु युक्तिवमे स्थिर करे.

२६ चारित्राचारः—ते पोते शुद्ध चारित्र पाले, पलावे अने पालताने अनुमोदे.

२७ तपाचारः—छ बाह्य अने छ अभ्यंतर ए रीते बार भेदे तप पोते करे, करावे अने करताने अनुमोदे.

२८ वीर्याचारः—धर्मानुष्ठान जेवां के पमिक्कमणु, पमिलेहण, देववंदन वीगेरे करवामां बलवीर्य गोपवे नहीं, अने उपर केहला पंचाचार पालवामां वीर्यशक्ति फोरवे.

२९ इर्यासमितिः—बधी दीशाए उपयोग राखतो धोंसरा प्रमाणे दृष्टिए जोतो चाले.

३० भाषासमितिः—सर्वथा सावद्य (पाप सहित) वचन बोले नहीं तथा उघामे मुखे बोले नहीं पण मुखे मुहपत्ती राखी बोले अने क्रोधादिके करी रहित वचन बोले.

३१ एषणासमितिः—आधाकर्मादिक बेंतालीश दोष रहित आहार ले तथा मांमलाना पांच दोष टाले.

३२ आदान भंममत्त निक्षेपणासमितिः—भंमोप

गरण मात्रुं वगेरे दृष्टीए जोइ पूंजीने ले मूके.

३३ पारिष्ठापनिका समितिः—लघुनीति (पेशाब), वडीनीति (झाडो) वगेरे दृष्टिए जोइ पूंजीने 'अणुजाणह जस्स गो' एम कही परठवे अने परठव्या पूंठे त्रण वार वोसिरे कहे.

३४ मनोगुप्ति (मनो=मननी, गुप्ति=देशथी अथवा सर्वथी योगनी निवृत्ति) ते त्रण प्रकारे छे.—असत्कल्पना वियोगिनी, समता भाविनी अने आत्मारामता. १ असत्कल्पना वियोगिनी मनोगुप्ति एटले माठा विचार जेवा के शत्रुओने मारवा, रोगादिकनी चिंता करवी विगेरे आर्त्त ध्यान रौद्र ध्यानना परिणामथी मनने पाछुं वालवानी वखते थाय छे, जेम प्रसन्नचंद्र राजर्षिने थयुं ते. २ समताभाविनी मनोगुप्ति ते सिद्धांतने अनुसारे धर्म ध्यानने अनुयायी भावनाए करी सहित परलोक साधक एवी समता परिणामरूप होय ते. ए गुप्ति शुभ भावना तथा शुभ ध्यानना सन्मुख जीव थयो होय त्यारे होय. ३ आत्मारामता मनोगुप्ति—शैलेशीकरण काले सकल मनोयोगनी निवृत्ति थाय छे ते.

३५ वचन गुप्तिः—एना बे ज्नेद छे? मौनावलंबिनी वचन गुप्ति=सर्व प्रकारे मौन धारण करी रहेवुं. हौंकारो, खोंखारो, कांकरो फेंकवो, संज्ञा करवी. विगेरे छांरुवाथी पूजा तथा ध्याननी वखते होय ते. २ वाग्नियमिनी वचन गुप्ति=ज्ञान ज्नणवुं ज्नणाववुं ते संबंधि पूछवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो इत्यादि काम करतां शास्त्रानुसारे मुखे मुहपत्ती राखी यतना पूर्वक सावद्य वचन न बोलवुं ते.

उपाध्यायजी ज्नगवानना २५ गुण.

११ अंग तथा १२ उपांग सम्यग् रीते ज्नणे ज्नणावे. १ चरण सित्तरी, २ करण सित्तरी शुद्धरीते पाले पलावे. ए गुणो जुदा जुदा नामवार कहेछे.

अगीयार अंग.

१ आचारांग, २ सूयगडांग ३ ठाणांग, ४ समवायांग, ५ ज्नगवती ६ ज्ञातासूत्र, ७ उपासक दशांग. ८ अंतगड, ९ अनुत्तरोववाइ १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक सूत्र.

बार उपांग.

१ उववाइ, २ रायपसेणी, ३ जीवाभिगम, ४ पन्नवणा, ५ जंबुद्वीप पन्नत्ति, ६ चंद पन्नत्ति, ७ सूर्य पन्नत्ति, ८ कप्पिया, ९ कप्पवडंसिया, १० पुप्फीया, ११ पुप्फचुलिया, १२ वन्हिदशांग. ए तेवीस गुण थया.

२४ [१]चरणसित्तरी पाले. २५ [२]करणसित्तरी पाले.

---

१ चरणसित्तरीना सित्तेर भेद छे; तद्यथा:—वय समणधम्म संजम, वेयावच्चं च बंभगुत्तिओ ॥ नाणाइतियं तव कोह, निग्गहाइंइ चरणमेयं ॥ १ ॥

अर्थ—वय के० ५ महाव्रत, समणधम्म के० १० प्रकारे श्रमण धर्म, संजम के० १७ प्रकारे संजम, वेयावच्चं के० १० प्रकारे वैयावच्च, बंभगुत्तिओ के० ९ प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति, नाणाइतियं के० ज्ञानादिक त्रिक, तव के० १२ प्रकारे तप, कोहानिग्गहाइं के० क्रोधादि ४ कषायनो निग्रह तेना छुटाछुटा ७० भेद बतावे छे.

१ प्राणातिपात विरमण, २ मृषावाद विरमण, ३ अदत्तादान विरमण, ४ मैथुन विरमण ५ परिग्रह विरमण ६ क्षमा ७ मार्दव (कोमलपणुं), ८ आर्जव (सरलपणुं), ९ मुत्ति (लोभत्याग) १० तव (तप) ११ संयम (आश्रवनो त्याग) १२ सत्य (जुठनो त्याग) १३ शौच (पवित्रता), १४ आकिंचन (द्रव्यरहितपणुं), १५ ब्रह्मचर्य (मैथुनत्याग), १६ पृथ्वीकाय जीवनी हिंसा न करवी, १७ अपकाय जीवनी हिंसा न करवी, १८ अग्निकाय जीवनी हिंसा न करवी, १९ वाउकाय जीवनी हिंसा न करवी, २० वनस्पतिकाय जीवनी हिंसा न करवी, २१ बेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २२ तेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २३ चउरिंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २४ पंचइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २५ अजीव संयम

साधु नगवानना ९७ गुणो.

१ प्राणातिपात विरमण, २ मृषावाद विरमण,

(सोना प्रमुख निषेध करेली अजीव वस्तुनो त्याग) २६ प्रेक्षासंयम (जयणापूर्वक वर्त्तवुं) २७ उपेक्षासंयम (आरंभ तथा उत्सूत्र प्ररुपणा न करे ते) २८ प्रमार्जन संयम (सर्व वस्तु पूंजीने वापरवी ते) २९ परिष्ठापना संयम (जयणापूर्वक परठववुं ते) ३० मनः संयम (धर्मवृत्तिमां मन राखवुं ते) ३१ वचन संयम (सावद्य वचन न बोलवुं ते) ३२ काया संयम (उपयोगथी काम करवुं ते) ३३ अरिहंतनो वैयावच्च, ३४ सिद्धनो, ३५ जिनप्रतिमानो ३६ श्रुत सिद्धांतनो ३७ आचार्यनो ३८ उपाध्यायनो ३९ साधुनो ४० चारित्र धर्मनो ४१ संघनो ४२ समकित दर्शननो वैयावच्च, (पाठांतरे नीचे लखेला दश पण गणाय छे. १ आचार्य २ उपाध्याय ३ तपस्वी ४ शिष्य ५ ग्लान साधु ६ स्थविर ७ समनोज्ञ (सरखा समाचारीवाळा) ८ चतुर्विध संघ ९ कुल, चंद्रादि १० गोत्र. ए दशनोविनय) ४३ स्त्री पशु ने नपुंसक ज्यां रहेतां होय ते जग्यानो त्याग, ४४ सरागे स्त्री साथे कथा वार्त्ता न करवी ४५ स्त्रीना आसने बे घडी सुधी बेसवुं नहीं, ४६ सरागे स्त्रीनां अंगोपांग जोवां नहीं, ४७ स्त्री पुरुष ज्यां क्रीडा करतां होय त्यां भींत प्रमुखना अंतरे रहेवुं नहीं, ४८ भोगव्यां सुख न संभारवां ४९ सरस अहार न करवो, ५० अति मात्राये अहार न करवो, ५१ शरीरनी शोभा न करवी. ५२ ज्ञान, ५३ दर्शन, ५४ चारित्र, ५५ अणसण, ५६ उणोदरी, ५७ वृत्तिसंक्षेप (अनेक प्रकारना अभिग्रह करवा ते), ५८ रसत्याग, ५९ कायक्लेश ६० संलीनता (इंद्रिओने वश राखवी ते) ६१ प्रायश्चित्त, ६२ विनय, ६३ वैयावच्च, ६४ स्वाध्याय (सज्झायध्यान करवुं), ६५ धर्मकथा, ६६ काउस्सग्ग, ६७ क्रोधत्याग, ६८ मानत्याग, ६९ मायात्याग, ७० लोभत्याग.

२ करणसित्तरीना सित्तेर भेद छे तद्यथाः—पिंडविसोही स

मिइ, भावण पडिमाय इंदियनिरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तिओ, अभिग्ग हं चेव करणं तु ॥ १ ॥ ४ पिंडविशुद्धि, ५ समिति, १२ भावना, १२ पडिमा, ५ इंद्रियोनो निरोध, २५ प्रतिलेखना, ३ गुप्ति, ४ अभिग्रह ए सर्व मळी सितेर थया ते नामवार कहे छे.

१ आहार. २ उपाश्रय. ३ वस्त्र. ४ पात्र. ए चार बेतालीस दोष रहित ले. ५ इर्या समिति. ६ भाषासमिति. ७ एषणासमिति. ८ आदानभंडमत्त निखेपणा समिति. ९ पारिष्ठापनिका समिति. १० अनित्य भावना. ११ अशरण भावना. १२ संसार भावना. १३ एकत्व भावना. १४ अन्यत्व भावना १५ अशुचि भावना. १६ आश्रव भावना. १७ संवर भावना. १८ निर्जरा भावना. १९ लोकस्वभाव भावना. २० बोधिदुर्लभ भावना. २१ धर्मना कथक अरिहंत छे ते भावना २२ एक मासनी प्रतिमा. २३ बे मासनी प्रतिमा. २४ त्रण मासनी प्रतिमा. २५ चार मासनी प्रतिमा. २६ पांच मासनी प्रतिमा. २७ छ मासनी प्रतिमा. २८ सात मासनी प्रतिमा. २९ सात दिन रातनी. ३० सात दिन रातनी. ३१ सात दिन रातनी. ३२ एक दीन रातनी. ३३ एक रातनी. ३४ फरस इंद्रिनिरोध. ३५ रसइंद्रि निरोध. ३६ घ्राण इंद्रिनिरोध. ३७ चक्षु इंद्रिनिरोध. ३८ श्रोत इंद्रि निरोध. हवे पचीस पडिलेहणा कहे छे. ३९ मुहपत्ति. ४० चोलपट्ट. ४१ उननुं कल्प. ४२-४३ सुतरनां बे कल्प. ४४ रजोहरणनुं अंदरनुं सुतरनुं निषिझ्झ. ४५ बहारनुं पग लुछवानुं निषिझ्झ. ४६ ओघो. ४७ संथारो. ४८ उत्तरपट्टो. ४९ दांडो. ए ३९ थी ४९ सुधीनी अगियार चीजोनी पडिलेहणा प्रभातमां सुर्य उदय पेहेलां कराय छे बाकीनी चौद उपगरणनी पडिलेहणा. त्रीजे पहोरने अंते करवामां आवे छे ते कहे छे. ५० मुहपत्ति. ५१ चोलपट्ट. ५२ गोच्छक. ५३ पात्र. ५४ पात्रबंध. ५५ पडलाओ. ५६ रजस्त्राण. ५७ पात्र स्थापन. ५८ मात्रक. ५९ पतद्ग्राह. ६० रजोहरण. ६१ उननुं कल्प. ६२-६३ सुतरनां बे कल्प ए पचिस पडिलेहणा छे तेनी

विरमण, ६ रात्रि भोजन विरमण, ७ पृथ्वीकाय रक्षा, ८ अपकाय रक्षा, ९ तेउकाय रक्षा, १० वाउकाय रक्षा, ११ वनस्पतिकाय रक्षा, १२ त्रसकाय रक्षा, १३ फरस इंद्रि निग्रह (वश करवी), १४ रस इंद्रि निग्रह, १५ घ्राण इंद्रि निग्रह, १६ चक्षु इंद्रि निग्रह, १७ श्रोत इंद्रि निग्रह, १८ लोह निग्रह, १९ क्षमा, २० भाव विशुद्ध ते चित्तनी निर्मलता, २१ वस्त्र विगेरे पडिलेहवामां विशुद्धि, २२ संजम जोग (५ समिति अने ३ गुप्तिने आदरवां अने विकथा, अविवेक, निद्रा प्रमुख छांडवां), २३ माठे ठामे जतां मनने रोकवुं, २४ माठे ठामे वचन प्रवर्ततुं होय तेने रोकवुं, २५ माठे ठामे काया प्रवर्तती होय तेने रोकवी, २६ शीतादिपरिसह सहेवा, २७ मरण उपसर्ग सहन करवो ए सरवे मली पंच परमेष्टिना १०८ गुणथया.

गाथा १ मूल॥मुहपोति चोलपट्टो, कप्पतिगंदोनिसिज्ज रयहरणं॥ संथारुत्तरपट्टो, दसपेहा उग्गएसूरे ॥ गा. १ ली ॥ अन्ने भणंति एक्कारसमो दंड उत्ति, ॥ गाथा २ जी मूल ॥ उवगरण चउद्दसगं, पडिलेहिज्जइ दिणस्स पहरातिगे ॥ उग्घाडपोरिसीए उपत्तानिज्जोग पडिलेहा. गा. २ जी ॥ विस्तार प्रवचन सारोद्धारथी जोइ लेवो. ६४ मनगुप्ति. ६५ वचनगुप्ति. ६६ कायगुप्ति॥अभिग्रह. ६७ द्रव्यथी अभिग्रह. ६८ क्षेत्रथी अभिग्रह. ६९ कालथी अभिग्रह. ७० भावथी अभिग्रह ए चार प्रकारे अभिग्रह एटले प्रतिज्ञा एम सर्व मळी सित्तेर भेद करण सित्तेरीना थया.

नवकारनो महिमा.

नवकारना एक अक्षरवमे सात सागरोपमनां पापनो, एक पदवमे पचास सागरोपमना पापनो, अने आखो नवकार नणवाथी पांचसें सागरोपमनां पापनो नाश थाय छे. वली जे माणस एक लाख नवकार गणे अने जिनेश्वर नगवाननी विधि सहित पूजा करे ते पुरुष तीर्थंकर नाम गोत्र बांधे एमां कांइ संदेह नथी. जो कोइ माणस ८०००८८०८ आठ क्रोम आठ हजार आठसें आठ नवकार नक्ति सहित गणे तो ते शाश्वत स्थानकने (मोक्ष) पामे. ए नवकारने नाव सहित गुरुए आपेली आम्नाय साथे विधि सहित जपतां आ लोकमां अने परलोकमां वांछित फलनी सिद्धि थाय. आ लोके देवता सानिध्य करे जेम श्रीमतीने देवताये सानिध्य कीधुं तेनी कथा.

आ नरतक्षेत्रमां पोतनपुर नगरमां सुगुप्त नामे एक श्रावक रहेतो हतो तेनी श्रीमती नामे पुत्री हती. ते धर्मवंत तथा रुपवंत हती. तेने देखीने, एक मिथ्यात्वी शेठनो पुत्र व्यामोह पाम्यो, अने तेने परणवानी इच्छा थइ. तेथी पोताने घेर जइ, पोताना बाप पासे

ते कन्यानुं मागुं कराव्युं. पण ते सुगुप्त (कन्यानो बाप) मिथ्यात्वीने कन्या आपे नहीं. पछी ते मिथ्यात्वी कपटे श्रावक थइ श्रीमतीने परणी पोताने घेर लेइ गयो. तेने घेर सौ कुटुंब मिथ्यात्वी छे. त्यां श्रीमती सर्व घरनां काम करे. पण कोइ रीते पोते मिथ्यात्वमां प्रवर्त्ते नहीं, जैन धर्म पाले, अने शंका कंखादि अतिचार रहित शुद्ध समकित पाले ते देखी सासु नणंद वारे घणी ए खीजे. पण श्रीमती धर्म न मूके, अने पोताना कर्मने दोष दे, अने आत्माने निंदे; पण धर्म चुके नहीं. कुटुंबनो प्रेम श्रीमती उपर नहीं होवाथी तेनो भरतार उद्वेग धरे अने तेने मारीने बीजी परणवानी इछा करे. एक दिवस तेना भरतारे एक मोटा विकराल सरपने घमामां घाली तेने ढांकी सूवाना उरमामां एक ठेकाणे मूक्यो, अने सूवानी वखते पथारी उपर बेठेला पोताना स्वामीए श्रीमतीने हुकम कर्यो के, पेलो घमो उघामी फुलनी माला लाव. आ सांभली महा विनीत श्रीमती तरत त्यां जइ नवकार जपतां ढांकणुं उघामी घमामां हाथ घाल्यो. नवकारना प्रभावे तुष्टमान थएली शासन देवीए सरप फेमीने फुलनी

माला कीधी. ते फुलनी माला श्रीमतीए लेइ ज्नरता रने आपी. ते देखी तेनो ज्नरतार चमत्कार पाम्यो. जे आ शुं थयुं? ज्नरतारे त्यां जइ घमो जोयो, जुए तो घमा मांहे साप नहीं अने घमो फुलथी महमहे बे. ते देखीने जाएयुं के एने देवताये सहाय करेली बे, अने में तेना ज्नपर माठुं चिंतव्युं बे. एनो धर्म रूमो बे. एम विचारी पोताना स्वजन कुंटुंबने सर्व वृतांत कह्यो. ते सांज्नली सर्व कुंटुंबे श्रीमती आगल पोतानो अपराध खमाव्यो, अने तेनी प्रशंसा करी तेना गुए ज्नपर अनुराग धरे. एक दिवस अवसर पामी श्रीमतीए ज्नरतारने जैन धर्म समजाव्यो. पुन्य ज्नदयथी शुद्ध समकित सहित बार व्रत धारी श्रावक थयो यावत् जीव धर्म पाली मुक्ति पहोच्यो.

हवे साधु, साध्वी अने श्रावक श्राविकाने समकितनी शुद्धिने अर्थे त्रिकाल देव वंदन करवुं कह्युं बे अने सांजे तथा सवारे ए बे वखते ब आवश्यक रूप प्रतिक्रमण करवुं कह्युं बे तेथी सर्वे दोष दूर टली जाय बे अने आत्माने ज्नपकार थाय बे. ते ब आवश्यकनां नाम:—सामायक, चज्नविसत्थो, वंदण, पमिक्कमण, का-

ऊसग्ग अने पच्चख्खाण. ए ठ आवश्यकरूप प्रतिक्रमण करवाथी आत्मा निर्मल थाय ठे. जेम जांगुलि मंत्रना प्रभावथी सर्पनुं विष ऊतरी जाय ठे तेम आवश्यकनुं आराधन करवाथी पाप दूर जतुं रहे ठे. वली जेम म जुर पोताने माथे मुकेलो भार मुकाम आवेथी माथे थी ऊतारे ठे त्यारे तरत हलवो थाय ठे अने सुखी थाय ठे तेम पमिक्कमणामां अतिचार आलोयतां मनुष्यना आखा जन्मना दोष जता रहे ठे अने हलुकर्मी थाय ठे. ए ठ आवश्यकरूप पमिक्कमणुं, गुरुनी समक्ष करवुं जोइये अने गुरुजीना अभावे स्थापनाचार्य मांमी करवुं जोइये; जो स्थापनाचार्य न होय तो नवकारवाली अथवा पुस्तकनी स्थापना करवी पमे ठे ते स्थापनानो पाठ लखीए ठीए.

पंचिंदियना ठुटा शब्दना अर्थ.

पंचिंदिय—पांच इंद्रियो.	गुत्ति – गुप्ति.
संवरणो—रोकनार,वशकरनार.	धरो – धारण करनार.
तह=तथा, तेमज.	चउ – चार.
नव – नव.	कसाय – कषाय.
विह = विध, प्रकार.	मुक्को = मुक्त, मुकाणा.
बंभचेर – ब्रह्मचर्य, शीलव्रत.	इअ = ए.

अट्ठारस = अढार.
गुणेहिं = गुणोए.
संजुत्तो = सहित.
पंच = पांच.
महव्वय = महाव्रत.
जुत्तो = युक्त, सहित.
आयार = आचार.
पालण = पालवाने.
समत्थो = समर्थ, शक्तिवान.
समिओ = समितिवालो.
ति — त्रण.
गुत्तो – गुप्तिवालो.
छत्तीस – छत्रीश.
गुणो – गुणवालो, गुण.
गुरु = गुरु.
मज्झ = मारा.

---

२ ॥ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायार पालण समत्थो, पंच समिउ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

अर्थः—पंचिंदिय संवरणो के० पांच इंद्रियोने वश राख

नार एटले पांच इंद्रियोना त्रवीश* विषय अने ब सें बावन* विकारने रोकनार.

तहनवविह बंभचेर गुत्तिधरो:—तथा नव प्रकार नी ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने धारण करनार एटले शि यलव्रतनी नव वाडोने पालनार.

* ५ इंद्रियोनां नाम तथा अर्थ.	विषय २३.	विकारो २५२.
१ फरस इंद्रि=चामडी	१ हलवो, २ भारे, ३ लुखो, ४चोपडो, ५खडबचडो, ६ सुंवालो, ७ टाढो, ८ उन्हो.	८ विषयने सचित, अचित अने मिश्र ए त्रणे गुणतां २४ थाय. ते सारा अने नरसा ए बेए गुणतां ४८, ते राग अने द्वेष ए बेए गुणतां ९६ थाय.
२ रस इंद्रि=जीभ	१ मीठो, २ खाटो, ३खारो,४कडवो,५ कषायलो,६तीखो.	६ रस, सारा अने नरसा मली १२, सचित, अचित, मिश्र अने ते रागद्वेषे गुणतां ७२ थाय.
३ घ्राण इंद्रि=नाक	१ सुरभिगंध=सुगंधीदार अने २ दुरभिगंध=दुरगंध वालो.	बे गंधने सचित, अचित अने मिश्र गुणतां ६ थाय, तेने राग अने द्वेष ए बेवडे गुणतां १२ थाय.
४ चक्षु इंद्रि=आंख	१ सफेद, २कालो, ३ लीलो, ४ पीलो, ५ रातो.	ए पांच रंगने शुभ अने अशुभ ए बेए गुणतां १० थाय, तेने सचित, अचित अने मिश्र गुणतां ३० थाय. तेने राग अने द्वेष ए बेए गुणतां ६० विकार थाय.
५ श्रोत इंद्रि=कान	१ सचित, २अचित अने३ मिश्रशब्द.	ए त्रण विषयने शुभ अने अशुभे गुणतां ६ थाय अने राग, द्वेषे गुणतां १२ थाय.
५ इंद्रियो.	२३ विषयो	२५२ विकारो.

चउ विह कसाय मुक्को के० क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकारना कषायथी मुंकाणा छे एवा.

इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तोः के० ए अढार गुणे करी सहित. ॥ १ ॥

पंचमहव्वय जुत्तो के० पांच महाव्रते करीने सहित.

पंचविहायार पालण समथ्थो के० पांच प्रकारना आचार पालवाने समर्थ.

पंचसमिउ तिगुत्तो के० पांच समिति अने त्रण गुप्तिवाला.

छत्तीसगुणो गुरु मज्झ के० ए छत्रीस गुणे करीने सहित मारा गुरु छे ए छत्रीस गुणोनो विस्तार पा. २६ थी ३२ सुधीमांथी जोइ लेवो. ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणना छुटा शब्दना अर्थ.

इच्छामि = हुं इच्छुं छुं.
खमासमणो=क्षमावंत साधु.
वंदिउं = वांदवाने.
जावणिज्जाए=शक्ति सहित.
निसीहिआए = शरीरवडे.
मथ्थएण = मस्तकवडे.
वंदामि = वांदु छुं.

॥ ३ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जाव णिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि ॥

अर्थः—हे क्षमादि गुणे करी सहित एवा श्रमण (साधुजी), तमने जावणिज्जाए के० शक्ति सहित एवा निसीहिआए के० प्राणातिपातादिक निषेध थयां छे जे मांथी एवा नैषेधिकया के० शरीरवडे वंदिउं के० वांदवाने इच्छामि के० इच्छुं छुं.

उन्ना थका हाथ जोडी जरा नीचा नमी उपर लख्या प्रमाणे कही बे संडासा पडिलेही, बे जानु (ढींचण) बे हाथ, ने ललाट (कपाल) ए पंचांगे करी भूमिफरसतो मथ्थएण के० मस्तके करीने वंदामि के० वांदु छुं एम कहे.

पछी उन्ना थइ बे पगनी वच्चे आगलथी चार आंगलनुं अने पाछलथी त्रण आंगल ऊणुं अने चार आंगल माहुं एवुं अंतर राखी एम पगे जिनमुद्रा साचवतो तथा बे हाथनी आंगलीउ एक एकमां थापी कमलना डोडाना आकारे हाथ जोडी मुख आगल राखी हाथनी कोहोणीउ पेट उपर राखी एवी योग मुद्रा

साचवतो इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिया वहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं.

इरियावहियंना छुटा शब्दना अर्थ.

इच्छाकारेण = इच्छाथी.
संदिसह = आदेश आपो.
भगवन् = हे भगवंत.
इरियावहियं = रस्ते चालतां.
पडिक्कमामि = पाछो वळुं छुं.
इच्छं = प्रमाण.
पडिक्कमिउं = छोडवाने.
इरियावहियाए=मार्गमां चालतां.
विराहणाए=विराधना थइ होय
गमणागमणे = जतां आवतां.
पाण = जीव.
क्कमणे = चांपवे.
बीय = बीज.
हरिय = लीली वनस्पति.
ओसा = ठार.
उत्तिंग = किडीआरुं.
पणग = पांच वर्णनी सेवाल.
दग = पाणी.
मट्टी = माटी.
मक्कडा = करोलिआनां पड.
संताणा = जाल.
संकमणे = चांप्या.
जे = जे.
मे = में.
जीवा = जीव.
विराहिया – विराध्या.
एगिंदिया – एक इंद्रिवाला.
बेइंदिया – बे इंद्रिवाला.
तेइंदिया – त्रण इंद्रिवाला.
चउरिंदिया–चार इंद्रिवाला.
पंचिंदिया – पांच इंद्रिवाला.
अभिहया–सामा आवता हण्या.
वत्तिया=धुलवडे ढांक्या.
लेसिया–भोंय साथे घश्या.
संघाइया–शरीरे शरीर मेलव्यां.
संघट्टिआ=पीडा करी.
परियाविया–दुखी कर्या.

किलामिया – थकव्या.	जीवियाओ – आवखाथी.
उद्दविया–भय पमाड्या.	ववरोविया – चुकाव्या.
ठाणाओ–एक ठेकाणेथी.	तस्स – ते.
ठाणं – बीजे ठेकाणे.	मिच्छामि – मारे मिथ्या.
संकामिया–मुक्या.	दुक्कडं – पाप.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं, पडि क्कमामि, (गुरु कहे पडिक्कमह,) (शिष्य कहे) इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं. ॥ ४ ॥ अथ इरियावहियं.

इरिया वहियाए, विराहणाए, गमणागम णे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग, पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संक मणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइं दिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभि हया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, प रियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ, ठाणं, संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, त स्स मिच्छामि दुक्कडं.

विस्तार अर्थः—इच्छाकारेण के० तमारी इच्छापूर्वक पण मारी दाक्षिणताए के बलात्कारे नहीं. भगवन् संदिसह के० हे भगवंत आदेश आपो. इरियावहियं के० १ चालवानो मार्ग, तथा २ साधु श्रावकनो सर्वविरति देशविरति रूप मार्ग, तेने विषे जे पाप लाग्युं होय तथी पडिक्कमामि के० निवर्त्तुं? पाछो वलुं? त्यारे गुरु कहे पडिक्कमह के० निवर्त्तो. तेवारे शिष्य कहे. इच्छं के० एमज, आपे आज्ञा आपी तेमज. इच्छामि पडिक्कमिउं के० हुं पडिक्कमवाने इच्छुं छुं. इरियावहियाए के० १ चालवाना मार्गमां, तथा २ साधु श्रावकना आचारमां, जे कोइ जीवोनी, विराहणाए के० विराधना थइ होय, गमणागमणे के० जतां आवतां, पाण के० त्रिगलेंद्रि जीवोने, कमणे के० पगे करी चांपवाथी, बीयक्कमणे के० बीज सुकां ली लां चांपवाथी, हरियक्कमणे के० हरित एटले लीली वनस्पति चांपवाथी, ए बे पदे करी सर्व *वनस्पतिने जीवपणुं कह्युं.

---

* जीवनां लक्षण सर्व वनस्पतिमां दीठामां आवे छे ते आ प्रमाणे मनुष्यना शरीरनी पेठे वनस्पतिनुं शरीर कोमल, तरुण, तथा वृद्धता प्रमुख सहित दीठामां आवे छे. तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोए करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे तेम शाखादिक अवयवोएकरी वृक्षनी वृद्धि थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिं

तथा जेसा के० सर्व त्रेह ते गार एथी सूक्ष्म अ

क प्राणीओमां जाग्रत तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम धुंआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रत् अवस्था दीठामां आवेछे तथा लोभ, हर्ष, लज्जा, भय, मैथुन, क्रोध मान, माया, आहार, ओघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार वृक्षोने पण मनुष्यनी पेठे थता दीठामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष पलाशादिक वृक्ष, भूमिगत निधानने पोताना मूलने जडेकरी वींटी लिये छे ते लोभनो भाव जाणवो; वर्षाकालनेविषे मेघनी गर्जना सांभलीने शीतल वायुना फरसेकरी अंकुर उत्पन्न थाय छे ते हर्षनो भाव जाणवो. लज्जालू वेल मनुष्यना हाथ विगेरे अंगनास्पर्शथी संकोचाई जायछे; ए लज्जा तथा भयनो भाव कहेवाय; अशोकवृक्ष बकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौवनस्वरूप सालंकार कामिनीना पगनी पान्हिना प्रहारेकरी; मुखनुं तांबूलछांटवाथी; सस्नेहालिंगन वडे तथा हावभाव कटाक्षेकरी तत्काल फलता दीसे छे; ए मैथुन संज्ञा जाणवी. कोकनदवृक्षनो कंद मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूकेछे; ए क्रोधनो भाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं छतां आ लोको दुःखी कां थायछे? एवा अहंकारेकरी निरंतर अश्रुपात करे छे केम के, तेनाथी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटे ए माननो भाव जाणवो. घणुं करीने बधी वेलीओ पोतपोतानां फलोने पांदडांएकरी ढांकी लियेछे ए मायानो भाव जाणवो. तथा भूमिका जलादिक आहारना योगे वृक्षोनी वृद्धि थायछे; अने ते विना कुमलाई जायछे. मनुष्यनी पेठे नागरवेलि प्रमुखने निलवट गोमय तथा दुग्धादिकना डोहला उपजे छे ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसंज्ञा जाणवी. वृक्षने पांडु, गांव, सोजो तथा दुर्बलपणुं प्रमुख रोगेकरी फूल, फल, पान, त्वचाने विकार दीसे छे. सर्व वनस्पतिनां झाडखां पोतपोतानां नियत ऋतुज होय छे; इष्ट तथा अनिष्टआहारनी प्राप्तिए करी वृक्षो अपुष्ट

एकायनुं पण ग्रहण करवुं. ए सूक्ष्म अपकायनी वि
ना पापनुं कारण छे. ते कहे छेः—एगंमि उदग बिं
जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसव
जंबु दीवे न मायंति ॥ अर्थः—एक पाणीना बिं
र देखाए जे जीवो कह्या छे, ते जीवोनुं
नुं रूप करीए तो जंबुद्वीपमां न
आकार जीवो भूमिने विषे वृ
रीने रहे, अर्थात् भूमिने विषे
नुं भुइया एवुं नाम होय छे, ते
ग शब्दे करी, कीमीजना नागरा

मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चडेछे; ए ओघ संज्ञानो भाव जाणवो इत्यादिक युक्तिए करी श्री आचारांग ना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थाप्युं छे. अहीं कोइ पूछे के, जो वनस्पति जीवरूप होय तो छेदन तथा भेदन प्रमुख करतां केम रोतां नथी अथवा नाशी जतां नथी? एनो उत्तर ए छे के, मनुष्यनी पेठे वनस्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अभाव छे. अने स्थावर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी. तोपण तेओने अव्यक्त वेदना होयज छे. जेम कोइ एक आंधलो, बेहेरो, बोबडो, ठुंठो, पांगलो, अने विषम वायुना विकारे करी थंभाणो थको सर्व अंगोपांगना व्यापार रहित एवो पुरुष होय तेने कोइ ताडन प्रमुख करे तो तेनाथी ते सहन थाय नहीं, पण मुखादिकना अभावे रोई शके नहीं, तथापि तेने वेदना तो थायज छे. ते माटे कोइ मोटा अवश्यना कारण विना वनस्पतिनी विराधना करवी नहीं, अने सर्वे जीवोने सरखा जाणी यतना करवी.

पण जाणवां. पणग के० पनक एटले पांच वर्णी नी लफूल जाणवी. दग के० पाणी. मट्टी के० माटी अथवा दगमट्टी के० पाणी अने माटीना जेगा थवाथी जे कीचम थाय ठे, ते पण जाणवो. मक्कमा के० मर्कट एटले करोलिआ. तेनी संताणा के० जाल. संकमणे के० पगे करी चांप्या थकी जे कांइ विराधना थइ होय.

इछाकारेण संदिसह जगवन् त्यांथी ते इछं इछामि पमिक्कमिउं सुधी पेहेली अन्युपगम संपदा जाणवी. अन्युपगम संपदा एटले आलोयणा. लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं ते. अने इरिया वहियाए, विराहणाए ए बे पदनी (अंगीकार करेली वस्तुने उपजवानां कारण रूप) निमित्त संपदा जाणवी. तथा गमणागमणे ए पदनी (प्रायश्चित उपजाववा रुप) उघ ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी. अने पाणक्कमणे त्यांथी संताणा संकमणे सुधी चार पदनी चोथी इत्वर (विशेष) हेतु संपदा जाणवी. केमके पाणक्कमणे बीयक्कमणे एम दरेकनां नाम दइ दइने विशेष कह्युं. ते माटे ए चार पदनी विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे मे जीवा विराहिया के० जे कोइ जीवो मे विराध्या होय, उप

मांहे पाड्या होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्य कह्युं. पण विस्तारे नाम दे‍इ दे‍इने न कह्युं माटे ए सघला जीवना परिताप रूप एक पदनी पांचमी संग्रह संपदा जाणवी. एगिंदिया के० जेने शरीर रुप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी पाणी, अग्नि, वायु, अने वनस्पतिरूप पांच प्रकारना स्थावर (थिर रहे एवा) जीवने एकेंद्रिय कहीए. हवे त्रस (एक ठेकाणेथीबीजे ठेकाणे जइ शके तेवा) जीव कहेछे. बे इंदिया के० जने शरीर अने जीभ ए बे इंद्रियोज होय. एवा करमीया, शंख, छीप, जलो, गंडोला, अलसीया, प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंद्रिय जीव कहीए. तेइंदिया के० जेने शरीर, मुख तथा नाक ए त्रणज इंद्रियो होय एवा गद्दहिया, कुंथुआ, जू, लीख, मांकण, कीडी, मंकोडा वगेरे जेने आठथी अधिका पग होय अथवा जेने मों आगल शींग होय तेवा जीवने तेइंद्रिय जाणवा. चउरिंदिया के० जेने शरीर, मुख, नाक, अने आंख ए चारज इंद्रिय होय. एवा कंसारी, करोलीआ वींछी तथा माखी, फुदां म च्छर, डांस, चांचड, भमरी, टीड वीगेरे जे जे तरुना जीव होय. जेने छ अथवा आठ पग होय, तथा

मस्तके शींग होय, ते चार इंडिवाला जीव जाणवा. पंचिंदिया कें० जेने शरीर, जीभ, नाक, आंख अने कान ए पांच इंडिय होय तेने (मनुष्य देव पशु पंखी अने नारकीने) पंचिंदिय कहीए. ए पांच बोल मध्ये सर्व संसारी जीव आवी गया, एमां एकेंडि बेंडिय एम जीवनां नाम कह्यां तेथी ए पांच पदनी बधी जीव संपदा जाणवी. अभिहया कें० सामा आवता पगे क री हण्या. वत्तिया कें० धूलवके ढांक्या अथवा एक ढगले कर्या, लेसिया कें० भोंय घस्या तथा लगार म सल्या, संघाइआ कें० शरीरे शरीर मेलव्यां संघट्टिआ कें० थोमो हाथ अमाडी फुख दीधुं, परियाविया कें० परिताप (फुख) उपजाव्यो अथवा पीट्या, किलामि या कें० थकवीने मरण तोल कर्या, उद्दविआ कें० त्रा स पमामी हाली चाली शके नहीं एवा कीधा, ठाणा उ ठाणं कें०एक स्थानकेथी बीजे स्थानके संकामिया कें० मुक्या, जीवियाउ ववरोविया कें० आवखाथी चु कव्या (मार्या) तस्स कें० ते संबंधी मिच्छामिडुक्कडं कें० जे कोइ पाप लाग्युं होय ते निष्फल थाउ. ए अ भिहयाथी तस्स मिच्छामिडुक्कडं सुधी विराधनानां ना

म दीधां माटे ते विराधना नामे सातमी*संपदा थइ.

तस्स उत्तरीना छुटा शब्दना अर्थ.

उत्तरी = विशेषे शुद्ध
करणेणं = करवे, करवावडे
पायच्छित=आलोयणनुं तप
विसोही = वधारे शोधवुं
विसल्ली = शल्य रहित.
पावाणं = पापोनुं
कम्माणं = कर्मोनुं
निग्घायणठ्ठाए = टाळवाने अर्थे
ठामि = रहुं छुं
काउस्सग्गं = काउस्सग्गमां

हवे एनी विशेष शुद्धिने अर्थे काउस्सग्ग करवा वांछतो थको तस्स उत्तरी कहे छे ॥

---

* आ सात संपदानां नामवार अक्षरोनी गणत्रीनो कोठो.

संख्या	संपदा	लघु	गुरु	सर्व अक्षर.
१	अभ्युपगम संपदा.	६	२	८
२	निमित्त सं०	१२	०	१२
३	ओघ सं०	६	०	६
४	विशेषहेतु सं०	३२	६	३८
५	संग्रह सं०	८	०	८
६	जीव सं०	२१	०	२१
७	विराधना सं०	५१	६	५७
		१३६	१४	१५०

॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणठ्ठाए, ठामि काउस्सग्गं

अर्थः—तस्स उत्तरी करणेणं एटले जे पाप पावल आलोव्यां पडिक्कम्यां तेने उत्तरी करणेणं के० तेनी विशेष शुद्धि करवा सारु काउस्सग्ग करुं छुं; ते शुद्धि शाथी थाय ते कहे छे. पायच्छित करणेणं एटले गुरु पासे प्रायश्चित्त कर्याथी गुरुये दीधो जे आलोयणानो तप ते करिये तेने प्रायश्चित कहिये अने काउस्सग्ग ते पण अंतरंग तप छे ते माटे काउस्सग्गने करवे करीने आत्मा पापरहित थाय, तथा विसोही करणेणं एटले विशोधी कर्वाथी एटले पापरूप मलने टालवाथी; विसल्ली करणेणं एटले माया शल्य, नियाण शल्य, अने मिथ्यात्व शल्य ए अंतरंग त्रण शल्यने टालवा थकी (अथवा एथी रहित थवा माटे काउस्सग्ग करुं छुं.) पावाणं कम्माणं एटले संसार हेतु ज्ञाना

वरणी आदिक जे पाप कर्मो छे तेउने, निग्घायणठा ए एटले निर्घातन अथवा फेम्रवाने अर्थे, ठामि काउस्स ग्गं एटले एक ठामे रही काउस्सग्ग करुं. ए पम्कि मण संपदा आठमी थइ. तस्स उत्तरीकरणेणं इत्यादि कमां पम्किमवाना शब्दो कह्या ते माटे ए छ पदनी संपदा आठमी छे ए सूत्रोनो गद्य पाठ छे, गाथाबंध नथी. एमां संपदा आठ, पद बत्रीश, गुरु चोवीश लघु एकशो ने पंचोतेर, सर्व मली एक शो नवाणुं अक्षरो छे.

ए इरियावहि मन सुद्धे पम्किमतां अढार ला ख चोवीश हजार एक सो ने वीश *मिछामिदुक्कमं देवाय छे.

---

* त्यां प्रथम पांचसें त्रेशठ स्थानके जीव उपजे छे ते भेदोनुं विवरण करे छेः–पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चार सूक्ष्म तथा बादर मली आठ भेद थाय अने वनस्पतिकायना त्रण भेद छेः–एक सूक्ष्म निगोद रूप तथा बे प्रकारनी बादर, एक प्रत्येक ने बीजी साधारण. ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार भेद थया; तथा बेइंद्रिय तेइंद्रिय ने चउरिंद्रिय ए विकलेंद्रिय कहेवाय छे. ए समुर्च्छिमज होय छे. ए त्रण पेला अग्यारनी साथे मेलवी ए, एटले चौद भेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मली अठ्ठावीश भेद थाय. हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना दश भेद कहेछेः–तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादि जलचरनो

अन्नत्थ उससिएणंना छुटा शब्दना अर्थ.

अन्नत्थ = अन्यत्र, बीजे ठेकाणे	अंग = शरीर
उससिएणं = उंचा श्वासवडे	संचालेहिं = संचारवडे
नीससिएणं = नीचा श्वासवडे	खेल = कफ-गलफा
खासिएणं = खांसीवडे	दिठ्ठि = दृष्टि
छीएणं = छींकवडे	एवम् = ए प्रकारे
जंभाइएणं = बगासा वडे	आइएहिं = इत्यादि लइने
उड्डुएणं = ओडकार वडे	आगारेहिं = आगारोवडे
वायनिसग्गेणं = वा सरवा वडे	अभग्गो = अखंड
भमलिए = तमर आवे, फेर आवे	अविराहिओ = नहीं विराधेलो
पित्त = पित्तना	हुज्ज = होजो
मुच्छाए = मुर्च्छा आवे, जोरे	काउस्सग्गो = काउस्सग्ग
सुहुमेहिं = सूक्ष्म-रीते-वडे	जाव = ज्यां सुधी

एक भेद, थलचरना त्रण भेद तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पद आशीविष प्रमुख उरपरि सर्प, अने गोह पमुख भुजपरि सर्प ए थलचरना त्रण भेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक भेद ए म लीने ए पांच गर्भज अने पांच समुर्छिम मली दश भेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीए त्यारे वीश भेद थाय. ए वीशमां पेला अठावीश मेलवीए त्यारे अडतालीश थाय. ए तिर्यंचना भेद जाणवा. हवे नारकीना भेद, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुका प्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा, तथा तमतमा प्रभा, ए सात नरकना, नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद भेद थाय; तेमां पाछला अडतालीश मेलीए त्यारे बासठ थाय. हवे मनुष्यना भेद आ प्रमाणेः--पांच भरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए कर्मभूमिना पंदर भेद; पांच हेमवंत पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तर कुरु ए अकर्मभूमिना

भगवंतांणं = भगवंतोने
नमुक्कारेणं = नमस्कारवडे
न = नहीं
पारेमि = पारुं
ताव = त्यां सुधी
कायं = शरीरने

ठाणेणं = स्थानक वडे
मोणेणं = मोन वडे
झाणेणं = ध्यान वडे
अप्पाणं = आत्माने-मारीकायाने
वोसिरामि = वोसरावुंछुं

त्रीशभेद; अने छप्पन्न अंतर द्वीपो कहेवाय छे. ए छप्पन्ननी साथे पेली कर्मभूमिनां पंदर तथा अकर्मभूमिना त्रीश मेलवीए त्यारे एकशोने एक भेद मनुष्य जातिना थाय. एमां गर्भज मनुष्यना पर्यांप्ता तथा अपर्यांप्ता मली वसें ने वे भेद थाय अने तेनी साथे एकसो एक समुर्च्छिम मनुष्यना भेद मेलवीए त्यारे त्रणसें त्रण भेद थाय. अने बासठ प्रथम तिर्यंचना कह्या ते सर्व एकठा करवाथी त्रणसें पांसठ भेद थाय.

हवे देवताना एकसो अठाणुं भेद कहिये छैयेः—प्रथम परमाधामीना पंदर, दश भुवनपति; आठ व्यंतर; आठ वाण व्यंतर; दश ज्योतिषी तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्विषिया, दश तिर्यक्जृंभक, नवलोकांतिक, वार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर विमानना ए सर्वमलीने नवाणुं थया ते पर्यांप्ता तथा अपर्यांप्ता ए वे मली एकसो ने अठाणुं भेद थाय. ते पाछला त्रणसेंने पांसठमां मेलीए त्यारे पांचसें त्रेसठ सर्व जीवोनी उत्पत्ति स्थान थाय. तेने अभिहयाथी ववरोविया सुधीना दश पदवडे दशगुणा करिये त्यारे पांच हजार छसेंने त्रीश थाय; ते वली रागने द्वेषथी बमणा करिये त्यारे अग्यार हजार वसेंने साठ थाय; ते मन वचनने कायाए करी त्रण गुणा करिये त्यारे तेत्रीश हजार सातसें ने एंसी थाय; ते करवा कराववा तथा अनुमोदनाी त्रण गुणा करिये त्यारे एक लाख एक हजार त्रणसेंने चालीरा थाय. ते अतीत अनागत तथा वर्त्तमान काले करी त्रण गुणा करिये, त्यारे त्रण लाख चार हजारने वीश थाय. ते अरिहं-

॥ अथ अन्नह उससिएणं. ॥

अन्नह उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंजाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, जमलिए पित्तमुछाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अजग्गो अविराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, जगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि,॥१॥

अर्थः—अन्नह के० अन्यत्र के० बीजे ठामे एटले हवे जे आगारो कहेशे ते आगारो वर्जीने बीजे ठेका

तनी साखे सिद्धनी साखे, साधुनी साखे, देवनी साखे गुरुनी साखे तथा आत्मानी साखे ए छनी साथे छ गुणा करिये त्यारे अढार लाख चोवीश हजार एकसोने वीश मिच्छामिदुक्कड थाय एवी रीते जीवने खमत खामणां कीजे. इरियावहि पडिक्कमतां शुभ ध्याने करी अनेक घोर पाप विलय जाय.

एे कायानो व्यापार करवानो नियम करुंबुं. उससिए
एां के० मुखे नासिकाए ऊंचो श्वास लेतां म्हारो का
उस्सग्ग न नांगे; नीससिएणं के० नीचो श्वास मूकतां,
खासिएणं के० उधरस आवे, गीएणं के० गींक आवे,
जंनाइएणं के० बगासुं आवे, उड्डुएणं के० उड्कार आ
वे, वायनिसग्गेणं के० अधो द्वारे वा सरवे, नमलिए
के० भ्रमरी आवे, फेर आवे, पित्तमुछाए के० पित्तने
प्रकोपे मूर्छा आवे, एटलां वानां थयेथी काउस्सग्ग न
नांगे; इहां अन्नछउससिएणंथी आंहीसुधीमां एकेका
आगारनां नाम दीधां ते माटे ए नव पदनी प्रथम
आगार संपदा थइ.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं के० सूक्ष्मशरीरने हला
ववेकरी शीतादिक वेदनाए रोम उन्नां थवाथी काउ
स्सग्ग न नांगे, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं के० सूक्ष्म
श्लेष्म चलाववे कफगलवादिके करी काउस्सग्ग न
नांगे, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं के० सूक्ष्म दृष्टी चलाववे
करी मीचवा उघाड्वाथी काउस्सग्ग न नांगे एमां
सुहुमेहिं अंग संचालेहिं प्रमुख मांहे बहुआगारनां ना

म दीधां तेमाटे ए बहुआगार संपदा बीजी जाणवी.

एवमाइएहिं आगारेहिं के० ए पूर्वोक्त बार आगार आदे देइने आदि शब्दवमे बीजा पण आगारेहिं के० आगार लेवा ते कहे ठेः—वीजलीनुं अथवा दीवानुं अजवालुं थाते उंढवाने वस्त्र लेतां, अने उंदर बिलामी आमी थवाथी आगल पाठल थवुं पमे, तथा चोर अथवा राजाना नयथी आघा पाठा थतां, अग्नि लागे अथवा नींत पमते तथा सर्प मंश मारे तेथी आघो पाठो थतां, काउस्सग्ग पारतां थोमी विराधना थतां अन्नग्गो अविराहिउ के० काउसग्ग नागे नहीं, अण विराध्यो रहे, ए रीते हुज्ज मे काउस्सग्गो के० एवो मुऊप्रते काउस्सग्ग होजो; इहां एवमाइ इत्यादिकमां आगार कह्या माटे ए त्रीजी आगंतुक (नवा) आगार संपदा जाणवी.

हवे काउस्सग्गनो वखत आंके ठे, एटले एवो काउस्सग्ग केटली वार सुधी होय ते कहे ठे. जाव अरिहंताणं के० ज्यांलगे अरिहंत नगवंताणं के० नगवं नमुक्कारेणं के० नमस्कारे सहित एटले नमो अरि

हंताणंनो नमस्कार करी काउस्सग्गने न पारेमि के० न पारुं समाप्त न करुं त्यांसुधी जाणवुं. इहां जाव अरिहंताणं इत्यादिकमां काउस्सग्गनुं मान कह्युं. ए कायोत्सर्गविधि नामे चोथी संपदा थइ.

ताव कायं के० त्यांलगे शरीरने ठाणेणं के० एकठामे नक्की राखवुं, मोणेणं के० मौनपणे रहेवे करी झाणेणं के० धर्मध्यान सहित रहेवे करी मनने स्थिरपणे राखी, अप्पाणं वोसिरामि के० (काउस्सग्ग रहित पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणाथकी) आत्माने वोसिरावुंछुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवुं कह्युं माटे ए स्वरूप संपदा पांचमी जाणवी.

लोगस्सना छूटा शब्दना अर्थ.

लोगस्स—लोकने—ना
उज्जोअगरे—उद्योतना करनारा
धम्मतित्थयरे—धर्मतीर्थना करनारने
जिणे—जिनेश्वरभगवानने
अरिहंते—अरिहंत भगवानने
कित्तइस्सं—स्तुति करीश
चउवीसंपि—चोवीशने पण
केवली—केवलज्ञान पामेलाने
उसभं—ऋषभ देवने
अजियं — अजित नाथने
वंदे — वांदुछुं
संभवं — संभवनाथने
अभिणंदणं — अभिनंदन स्वामीने
सुमइं — सुमतिनाथने

पउमप्पहं – पद्मप्रभने
सुपासं – सुपार्श्वनाथने
जिणं–रागद्वेष जितनारने
चंदप्पहं – चंद्रप्रभने
सुविहिं – सुविधिनाथने
पुप्फदंतं – पुष्पदंतने
सीयल – शीतलनाथने
सिज्जंस – श्रेयांसनाथने
वासुपुज्जं – वासुपुज्य स्वामीने
विमलं – विमलनाथने
अणंतं – अनंतनाथने
धम्मं – धर्मनाथने
संतिं – शान्तिनाथने
कुंथुं – कुंथुनाथने
अरं – अरनाथने
मल्लिं – मल्लिनाथने
मुणिसुव्वयं – मुनिसुव्रत स्वामीने
नमिजिणं – नमिनाथने
रिट्ठनेमिं – अरिष्टनेमिने
पासं – पार्श्वनाथने
वद्धमाणं – वर्द्धमान स्वामीने
मए – म्हारे जीवे
अभिथुआ – स्तुति कराया
विहुय – टाल्या
रय मला – रज अने मेल

पहीण – अति क्षय कर्या
जर – जरा एटले घडपण
मरणा – मरणो
तित्थयरा – तीर्थंकरो
पसीयंतु – प्रसन्न थाओ
कित्तिय – स्तव्या
वंदिय – वांद्या
महिया – पूज्या
उत्तमा – उत्तम
आरुग्ग – रोगरहितपणुं
बोहिलाभं – समकित बोधि बीजनो लाभ
दिंतु – आपो
चंदेसु – चंद्रथकी
निम्मलयरा – घणाज निर्मल
आइच्चेसु – आदित्यथी–सुरजथी
अहियं – वधारे
पयासयरा – प्रकाश करनार
सागर – समुद्र
वर – प्रधान, श्रेष्ट
गंभीरा – गंभीर
सिद्धि – सिद्धिने
मम – मने
दिसंतु – आपो

॥ अथ लोगस्स ॥

गस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिछयरे
ाणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवी
पि केवली ॥ १ ॥ उसज मजिअं
वंदे ॥ संजवमजिणंदणं च सुमइं
॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चं
प्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं॥
सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विम
लमणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वं
दामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि
रिठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अजिथुआ ॥ विहुयरयमला
पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणव
रा ॥ तिछयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कि
त्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स

उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलाभं ॥ समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

अर्थः—लोगस्स के० पंचास्तिकायात्मक लोकमां हे केवलज्ञाने करी उज्जोअगरे के० उद्योतना करनार, धम्मतित्थयरे के० धर्मतीर्थना करनार, चतुर्विधसंघना प्रवर्त्तावणहार, जिणे के० राग द्वेषना जीतनार एहवा अरिहंत के० श्री अरिहंत भगवंत प्रते नाम लेइने कित्तइस्सं के० कीर्त्तना स्तवना करीश. चउवीसंपि केवली के० चउवीसे जिनवर जे केवली छे तमने. इहां अपिशब्दे ऐरवतक्षेत्रे तथा महाविदेहक्षेत्रे जे केवली छे तेउने पण स्तवुं छुं. ॥ १ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनां नाम अनुक्रमे करी कहे छे. प्रथम उसभं के० श्रीऋषभदेव, विनता नगरी, नाभिराजा पिता, मरुदेवी माता, वधा तीर्थंकरोनी,

माताए पहेला स्वप्ने हाथी देखे अने श्रीमरुदेवीजी ए पहेला स्वप्ने वृषभ दीठो एवो गर्भनो महिमा जाणी श्रीऋषभ नाम दीधुं, तथा धर्मनी आदिना प्रवर्त्तावनार तेथी बीजुं आदिनाथ नाम कहिये. पांचसे धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख पूर्वनु आयु, सुवर्ण वर्ण, वृषभ लांछन.

बीजा अजियंच के० श्रीअजितनाथ, अयोध्या नगरी, जितशत्रुराजा पिता, विजयाराणी माता; प्रथम राजा राणी बाजी पासे रमतां त्यारे राणी हारी जती अने राजानी जीत थती हती अने भगवंत गर्भे आव्या पछी राणी जीते अने राजा हारे एवो गर्भनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं. साडा चारसें धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोत्तेर लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण, हाथीनुं लांछन; तेमने वंदे के० हुं वांदुंछुं.

त्रीजा संभवं के० श्रीसंभवनाथ. श्रावस्ति नगरी जितारि राजा पिता, सेना राणी माता, देशमां दुकाल हतो ते भगवंत गर्भे आव्याथी अणचिंतव्यो पृथ्वीमां धाननो संभव थयो तेथी संभवनाथ नाम

दीधुं चारसें धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, अश्व (घोमा)नुं लांछन.

चोथा अभिनंदणं च के० श्रीअभिनंदनस्वामी. अयोध्यानगरी, संवर राजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी इंद्र महाराज आवीने भगवंतनी माताने घणी वार स्तवीने जता हता; ते वारे राजा प्रमुखे जाण्युं जे ए गर्भनोज महिमा छे माटे अभिनंदन नाम दीधुं. साढात्रणसें धनुष्य प्रमाण शरीर, पचास लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, वानरनुं लांछन.

पांचमा सुमइं च के० श्रीसुमतिनाथ. अयोध्यानगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला माता, प्रभु गर्भमां रह्या पछी ते गाममां एक वणिकनी बे स्त्रीउ हती तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने म्होटी वंध्या हती पण ते छोकरानुं प्रतिपालन बन्ने माताउ करती हती. एम करतां ते वाणीयो ज्यारे मरण पाम्यो त्यारे म्होटी स्त्री धननी लालचे कहेवा लागी जे पुत्र महारो छे, माटे जेनो पुत्र तेनुं धन थाय छे एवो चाल

छे, तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतो तेथी तेणे कह्युं के ए पुत्र म्हारो छे, अने धन पण म्हारुं छे; एम बन्ने सोक्योनो टंटो थयो. ते वढती वढती दरबारमां आवी तेवारे गर्न्नना महिमाथी राणीने चुकादो करवा नी न्नली बुद्धि उत्पन्न थइ, तेथी राणीये कह्युं जे बन्ने मलीने धन अर्धो अर्द्ध वहेंची लो अने छोकराना पण बे न्नाग करी अर्धो अर्द्ध वहेंची लो. ते सांन्नली न्हानी स्त्री बोली के मारे द्रव्य जोइतुं नथी, अने छोकराना कांइ बे विन्नाग थाय नहीं माटे ए छोकरो एनो छे ते महा रोज छे. ते सांन्नली राणी बोली के ए छोकरो न्हानी स्त्रीनो छे, केमके पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यांसुधी पण म्होटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीये मारवानी मनाइ करी; माटे पुत्र अने धन एने हवाले करो, अने म्होटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. ए गर्न्नना महिमाथी न्नगवंतनी माताने एवी बुद्धि उपनी, ते माटे सुमति नाम दीधुं. त्रणसें धनुष्य प्रमाण शरीर, चालीस लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, क्रौंच लांछन.

छठा पउमप्पहं के० श्री पद्मप्रन्नस्वामी कौशां

वी नगरी, धरराजा पिता, सुषीमा राणी माता, ज्ञ गवंत गर्भे आव्या पछी माताने कमलनी सझाए सुवानो डोहोलो ऊपन्यो, ते देवताए पूरण कर्यो अने ज्ञगवंतनुं शरीर पद्म (कमल) सरखुं रक्तवर्णे हतुं माटे पद्मप्रज्ञ नाम दीधुं. अढीसें धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख पूर्वनुं आयु, रक्तवर्ण, पद्म लांछन.

सातमा सुपासं के० श्री सुपार्श्वनाथ. वणारसी नगरी, सुप्रतिष्ठराजा पिता, पृथ्वीराणी माता. माता नां बन्ने पासां रोगे करी कोढीयां हतां ते ज्ञगवंत गर्भे आव्या पछी बन्ने पासां सुवर्णवर्णां घणां सुकोमल थयां माटे सुपार्श्व नाम दीधुं. एक प्रतमां ज्ञगवंतना पितानां बे पासां कोढ रोग वालां हतां तेने ज्ञगवंतनी माताये हाथ फेरव्याथी सुकमाल निरोगी थयां एवो पाठ लख्यो छे. बसें धनुष्य प्रमाण शरीर, वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, स्वस्तिक (साथीया)नुं लांछन.

आठमा जिणं च के० वली जिन वीतराग चंदप्पहं के० श्रीचंद्रप्रज्ञस्वामी. चंद्रपुरी नगरी, महसेन

राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता, ज्ञगवंत गर्ज्ने आ व्या पछी माताने चंद्रमाने पान करवानो डोहोलो ऊपन्यो ते प्रधाने बुद्धिये करी पूर्ण कस्यो एवो गर्ज्न नो प्रज्ञाव जाणी चंद्रप्रज्ञ नाम दीधुं, एकसो पचास धनुष्य प्रमाण शरीर, दशलाख पूर्वनुं आयु, श्वेत वर्ण, चंद्रनुं लांछन, तेमने वंदे के० हुं वांदुछुं.

नवमा सुविहिं च पुप्फदंतं के० श्री सुविधिना थ, अने बीजुं नाम पुष्पदंत छे. काकंदी नगरी सुग्रीव राजा पिता, रामाराणी माता, ज्ञगवंत गर्ज्ने आव्या पछी माता तथा पिता ज्ञली विधिए करी धर्म करवा लाग्या. एवो गर्ज्ननो प्रज्ञाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं, अने मचकुंदनां फूलनी कली सरखा प्रज्ञुना उज्वल दांत हता. माटे बीजुं पुष्पदंत नाम दीधुं, ए कसो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, श्वेत वर्ण, मगरमच्छनुं लांछन.

दसमा सीयल के० श्रीशीतलनाथ. ज्ञद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदाराणी माता, पिताना शरीरे दाहज्वर हतो ते ज्ञगवंत गर्ज्ने आव्या पछी रा

जाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी शरीरे शीतलता थइ. एवो गर्न्नो महिमा जाणी शीतलना थ नाम दीधुं. नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, श्रीवछ लांछन.

अगियारमा सिझंस केण श्रीश्रेयांस जिन. सिंह पुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणी माता, देरासरमां परंपरागत देवता अधिष्टित सज्जानी पूजा थती हती ते सज्जाए जे बेसे अथवा सुवे तेने उपद्रव उप जे ते न्नगवंत गर्न्ने आव्या पछी माताना मनमां आव्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय ते तो खरुं छे, पण सज्जानी पूजा तो क्यांये सांन्नली नथी. एम चिंतवी सज्जानी रक्षा करनार पुरुषे मनाई कस्या छतां पण प्रन्नुनी माता ते सज्जा उपर बेठां तथा सुतां ते छतां गर्न्नना प्रन्नावथी अधिष्टित देवता सज्जा मूकी जतो रह्यो. त्यार पछी राजा प्रमुखे ते सज्जा वपराशमां लीधी. एवो गर्न्नो महिमा जाणी श्रेयांस नाम दीधुं एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षनुं आय, सुवर्ण वर्ण, गेंमीनुं लांछन.

बारमा वासुपुज्जं च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वामी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी इंद्रमहाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा करता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष (पाडा)नुं लांछन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी तेमना नगरमां कोइ स्त्री भर्त्तार देहरे आवी उतर्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं तेथी कामक्रीडा करवानी अभिलाषा थइ; पछी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पोतानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रभाते बन्ने स्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण छे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो भर्त्तार अने बीजी बोली के ए महारो भर्त्तार छे. एम वढतां वढतां सर्व राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बन्ने बेहु स्त्रीने

जाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी शरीरे शीतलता थइ. एवो गर्भनो महिमा जाणी शीतलना थ नाम दीधुं. नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, श्रीवछ लांछन.

अगियारमा सिंझंस केण श्रीश्रेयांस जिन. सिंह पुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणी माता, देरा-सरमां परंपरागत देवता अधिष्टित सज्जानी पूजा थती हती ते सज्जाए जे बेसे अथवा सुवे तेने उपद्रव करे जे ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताना मनमां आ व्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय ते तो खरुं छे, पण सज्जानी पूजा तो क्यांये सांभली नथी. एम चिं तवी सज्जानी रक्षा करनार पुरुषे मनाई कस्या छतां पण प्रभुनी माता ते सज्जा उपर बेठां तथा सुतां ते छतां गर्भना प्रभावथी अधिष्टित देवता सज्जा मूकी ज तो रह्यो. त्यार पछी राजा प्रमुखे ते सज्जा वपराशमां लीधी. एवो गर्भनो महिमा जाणी श्रेयांस नाम दीधुं, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षनुं आ यु, सुवर्ण वर्ण, गेंडीनुं लांछन.

बारमा वासुपुज्जं च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वामी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता, ज्ञगवंत गर्ज्ने आव्या पढी इंद्रमहाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा करता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष (पाडा)नुं लांढन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, ज्ञगवंत गर्ज्ने आव्या पढी तेमना नगरमां कोइ स्त्री ज्ञर्त्तार देहरे आवी ऊतस्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं तेथी कामक्रीडा करवानी अज्ञिलाषा थइ; पढी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पोतानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रज्ञाते बन्ने स्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण ढे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो ज्ञर्त्तार अने बीजी बोली के ए महारो ज्ञर्त्तार ढे. एम वढतां वढतां सर्व राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बन्ने बेहु स्त्रीने

समान देखी कोइ रीते निवेमो करी शक्या नही पण राणीये पुरुषने दूर जन्नो राख्यो अने बन्ने स्त्रीउने प ण दूर जन्नी राखी ने बोलीके जे पोताना सत्य वच नना प्रन्नावथी न्नर्त्तारने स्पर्श करे तेनो ए न्नर्त्तार जा णवो. ते सांन्नली व्यंतरीए देवशक्तिना प्रन्नावे पोतानो हाथ लांबो करी न्नर्त्तारने स्पर्श कर्यो. तेवोज राणीये तेनो हाथ पकमी लेईने कह्युं के तुं तो व्यंतरी बेमाटे ताहेरे स्थानके जती रहे. एवी रीते चूकादो थवाथी विमल मतिवाली राणी केहेवाणी ते गर्न्ननोज प्रन्नाव जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, साठ धनुष्य प्रमाण श रीर, साठ लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सूकर (सु अर, न्नुंरु)नुं लांछन.

चक्रदमा मणंतं च के० श्री अनंतनाथ. अयोध्या नगरी, सिंहसेन राजा पिता, सुयशाराणी माता, स्व प्नमां जेनो अंत न आवे एवुं एक महोटुं चक्र न्नम तुं राणीए आकाशने विषे दीठुं अने अनंत रत्ननी मा ला दीठी तथा अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी लोकोना ताव गया एवो गर्न्ननो प्रन्नाव जाणी अनंत

नाथ नाम दीधुं, पचास धनुष्य शरीर, त्रीस लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंचाणानुं लांछन.

पंदरमा जिणं के० वीतराग धम्मं के० श्रीधर्मनाथस्वामी. रत्नपुर नगर, भानुराजा पिता, सुव्रताराणी माता राजा राणीने पूर्वे धर्म ऊपर अल्प राग हतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी बन्नेने धर्म ऊपर अत्यंत राग थयो एवो गर्भनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं, पिस्तालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, वज्र लांछन.

सोलमा संतिं च के० श्री शांतिनाथ. गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिराराणी माता, ते देशमां मरकीनो ऊपद्रव घणो हतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताए अमृत छांटयुं तेथी मरकीनी शांति थई, एवा प्रभावथी शांतिनाथ नाम दीधुं. चालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, मृग लांछन, तेमने वंदामि के० वांदुं.

सत्तरमा कुंथु के० श्रीकुंथुनाथ. हस्तिनागपुर नगर, सूरराजा पिता, श्रीराणी माता. भगवंत गर्भे

आव्या पछी माताजीए स्वप्नमां रत्ननो थुन्न पृथ्वीने वि षे दीठो, तथा शत्रु हता ते कुंथुआनी पेठे न्हाना थया अथवा कुंथुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ति तेथी कुंथुनाथ नाम दीधुं. पांत्रीस धनुष्य शरीर, पंचाणु हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, छाग (बोकडा)नुं लांछन.

अढारमा अरं च केण श्री अरनाथ. गजपूर नगर, सुदर्शन राजा पिता, देवी राणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी राणीए स्वप्नमां हे रत्नमय आरो तथा थुन्न दीठं. एवो गर्भनो महिमा जाणी अरनाथ नाम दीधुं, त्रीस धनुष्य शरीरनुं मान, चोरासी हजार वर्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, नंदावर्त्त लांछन.

ओगणीसमा मल्लिं केण श्रीमल्लीनाथ. मिथिला नगरी, कुंभराजा पिता, प्रभावतीराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने एक रात्रीये, छए ऋतुना फूलनी शय्याए सुवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवताए पूर्यो. एवो गर्भनो प्रभाव जाणी, श्रीमल्लीनाथ नाम दीधुं, पचीश धनुष्य शरीरनु मान, पंचावन हजार

वर्षनुं आयु नील वर्ण, कुंन्न लांछन.

वीसमा वंदे के० वांदुं छुं. मुणिसुव्वयं के० श्रीमुनि सुव्रत स्वामीप्रते. राजगृहनगर, सुमित्रराजा पिता, प द्मारांणी माता, ज्ञगवंत गर्न्ने आव्या पछी मातापिता मुनिराजनी पेरे सुव्रत के० ज्ञलां बारव्रत श्रावकनां साचववा लाग्यां. एवो गर्न्नेनो प्रज्ञाव जाणी, मुनिसु व्रत नाम दीधुं. वीश धनुष्य शरीर मान, त्रीश हजार वर्षनुं आयु, कृष्णवर्ण, काचबानुं लांछन.

एकवीसमा नमिजिणं च के० श्रीनमिजिनेश्वर ने. वंदामि के० वांदुं छुं. मिथिलानगरी, विजयराजा पिता, वप्राराणी माता, ज्ञगवंत गर्न्ने आव्या पछी सीमाडि आ राजा ज्ञगवंतना पिताना शत्रु हता, ते चढी आ व्या; गामना किल्लाने चारे बाजु लश्करनो पडाव ना खी विंटी लीधुं. राजाने घणी बीक लागी पण राणीयें किल्लाउपर चढीने शत्रुउने वांकी नजरे जोया ते रा णीनुं तेज वयरी राजाउथी खमायुं नहि, तेथी सर्व आवीने ज्ञगवंतनी माताने नमस्कार करी कहेवा लाग्या के अमारा उपर सौम्यदृष्टीये जूउ. राणीये तेमना उपर सौम्य नजरे जोइ माथे हाथ राख्यो. सर्व राजाउ, अने

ईीने पगे लागी आज्ञा मागी पोतपोताने नगरे गया. एवो प्रभाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. पन्नर धनुष्य शरीरनुं मान, दश हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, नीला कमलनुं लांछन.

बावीसमा अरिष्टनेमि के० श्रीअरिष्टनेमि प्रभु, सौरीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवीराणी माता, प्रभु गर्भे आव्या पछी मातायें स्वप्नमां अरिष्ट एटले काला रत्ननी रेल दीठी तथा आकाशमां चक्र ऊछलतुं दीठुं एवो प्रभाव जाणी अरिष्टनेमि नाम दीधुं. बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. दस धनुष्य शरीर मान. एक हजार वर्षनुं आयु, श्याम वर्ण, शंख लांछन.

त्रेवीसमा पास के० श्रीपार्श्वनाथस्वामी, वणारसीनगरी, अश्वसेनराजा पिता, वामाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी माताये अंधारी रात्रे पोतानी पासे सर्प जतो दीठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीये ऊंचो कीधो तेथी राजा जागी ऊठ्यो ने बोल्यो के शा माटे हाथ ऊंचो की ... र्प दीठो कह्युं. राजा बोल्यो, तमे जुठुं बो ... मंगावी जोयुं तो सर्प दीठो. ते वारे

विस्मय पामी राजाये विचार्युं जे में न दीठो ने राणीये दीठो ए गर्भनो प्रभाव छे. एम जाणी श्री पार्श्वनाथ नाम दीधुं. नवहस्त प्रमाण शरीर, एकसो वर्ष आयु, नील वर्ण, सर्प लांछन.

चोवीशमा तह के० तेमज वद्धमाणं च के० श्री वर्द्धमानस्वामी, क्षत्रियकुंड नगर, सिद्धार्थराजा पिता, त्रिसलाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी माता पिता समस्त ऋद्धियें वृद्धि पाम्यां. धन धान्यादिकना भंडार तथा देश नगरादिकनी वृद्धि थई, सर्व राजा आज्ञामां वर्तवा लाग्या. एवो प्रभाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं. वली बाल्यावस्थामां मेरुपर्वत अंगुठे चांप्यो, तथा आमल कीडा करतां देवता हार्यो माटे इंद्रमहाराजे श्री महावीर एवुं बीजुं नाम दीधुं. सात हाथ शरीर, बहोतेर वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंह लांछन. ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एवमए के० ए रीते में चोवीश तीर्थंकरने विशेषे जुदे जुदे नामे करी अभिथुआ के० स्तव्या. विहुयरयमला के० टाल्या छे पापरूप रज अने मल जेणे तेमां रज ते तत्काल आ भवनां बांध्यां कर्म, अने

मल ते घणा कालनां पूर्व नवनां बांध्यां कर्म जाणवां. वली पहीण के० क्षय गया ठ जरमरणा के० जरा, रोग अने मरण जेमनां एवा, चनवीसंपि जिणवरा के० चोवीश जिनवर वर्त्तमान काले थया ते, अपि शब्दथकी महाविदेह तथा ऐरवत क्षेत्रोने विषे जे तीर्थंकरो ठ ते पण लेवा. एवा तिछयरा के० तीर्थंकर ते मेके० मुजने पसीयंतु के० प्रसन्न थान ॥ ५ ॥

ए तीर्थंकरोने नामे करी कित्तिय के० स्तव्या, वंदिय के० वांद्या, महिआ के० पूज्या; जे ए लोगस्स के० जे तीर्थंकर ए लोकने विषे, नत्तमा सिद्धा के० नत्तम सिद्ध थया ते मुजने आरुग्ग के० आरोग्यता एटले नीरोगता आपो; केमके नीरोगता होय तो धर्म साधन थाय. वली बोहिलाजं के० बोधबीजनो लान एटले नवांतरे सम्यक्त्व रूप धर्मनी प्राप्ति थाय, अने समाहिवरं के० प्रधान समाधि ते मननुं स्वस्थपणुं नत्तमं के० नत्तम ते मुऊप्रते दिंतु के० द्यो आपो ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा के० चंड्माथकी अत्यंत निर्मल, वली आइच्चेसु के० आदित्य जे सूर्य ते थकी पण हयं के० अधिक पयासयरा के० प्रकाशना करनार

छे. सागरवरगंजीरा के० स्वयंजूरमण समुद्रथी पण अत्यंत गंजीर छे एवा सिद्धा के० सिद्ध ते सिद्धिं के० मोक्षप्रते मम्मदिसंतु के० मुजने द्यो. संपदा अठावीस, पद अठावीस, गुरु अक्षर अठावीस, लघु अक्षर बसेंने बत्रीस, सर्व मली. सव्वलोए सहित लोगस्सना बसें साठ अक्षरो छे ॥ ७ ॥

विधि.

प्रथम उंचा आसने आचारजी पधरावीने, ते न होय तो पुस्तक, नवकारवाली प्रमुख वाजोठपर मूकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहुपत्ति, चवलो लेइ शुद्ध वस्त्र धारण करी तथा जग्या पूंजी कटासणापर वेसी मुहपत्ति डाबा हाथमां मुख पासे राखी जमणो हाथ आपनाजी सामो अवलो राखी एक नवकार गणी पंचिंदिअ कही इच्छामि खमासमणो वंदिउं जाव णिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि एम खमासमणुं देइ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं एम कही इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नथ्थ उससिएणं कहीएक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी,

प्रगट लोगस्स कही, खमासमणुं देइ, इच्छाकारेण संदि सह भगवन् सामायक मुहपत्ति पडिलेहुं, इच्छं एम कहि मुहपत्ति पडिलेहीए, एना पचाश बोल नीचे मुजब.

अथ मुहपत्ति पडिलेहवाना ५० बोल.

२५ मुहपत्तिनी पडिलेहणाना बोल.

सूत्र अर्थ तत्व करी सद्दहुं १ समकित मोहनी २ मिश्र मोहनी ३ मिथ्यात्व मोहनी ४ परिहरुं. कामराग ५ स्नेहराग ६ दृष्टिराग ७ परिहरुं. सुदेव ८ सुगुरु ए सुधर्म १० आदरुं. कुदेव ११ कुगुरु १२ कुधर्म १३ परिहरुं ज्ञान १४ दर्शन १५ चारित्र १६ आदरुं. ज्ञानविराधना १७ दर्शन विराधना १८ चारित्र विराधना १ए परिहरुं. मनगुप्ति २० वचनगुप्ति २१ कायगुप्ति २२ आदरुं. मनदंड २३ वचनदंड २४ कायदंड २५ परिहरुं.

२५ अंगनी पडिलेहणा.

हास्य १ रति २ अरति ३ परिहरुं. भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ परिहरुं कृष्णलेश्या ७ नीललेश्या ८ कापोतलेश्या ए परिहरुं रिद्धिगारव १० रसगारव ११ सातागारव १२ परिहरुं. मायाशल्य १३ नियाणशल्य १४ मिथ्यात्वशल्य १५ परिहरुं. क्रोध १६ मान १७ परि

हरुं. माया १७ लोन्न १९ परिहरुं. पृथ्वीकाय २० अपकाय २१ तेउकाय २२ नीजयणा करुं. वाउकाय २३ वनस्पतिकाय २४ त्रशकाय २५ नी रक्षा करुं.

मुहपत्ति केम पम्लिेहवी तथा ते वमे अंग केम पम्लिेहवुं ते विषे विशेष विवरणनी पांच गाथा तथा तेनो सविस्तर अर्थ लखीये गीए.

॥ अथ मुहपत्तिनी पचीश तथा शरीरनी पचीश मलीने पचाश पम्लिेहणा विवरीने लखिये बैये.॥

॥ सुत्तब तत्त दिठी, दंसण मोहयतिगं च रागतिगं ॥ देवाईतत्ततिगं, तह य अदेवाइतत्ततिगं ॥ १ ॥ नाणाइतिगं च तह्वि, राहणायं तिन्निगुत्ति दंमतिगं ॥ इअ मुहणंतगपम्लिे, हणाइ कमसो विचिंतिज्जा ॥ २ ॥ हासो रइ अरइ तिगं, न्नय सोग डुगंबया य वज्जिज्जा ॥ न्नुअजुअलं पेहंतो, सीसे अपसबलेस तिगं ॥ ३ ॥ गारवतिगं च वयणे, उअरि सल्लतिगं कसायचउ पिठे॥ पयजुअले बजीववहं ॥ तणुपेहाए विजाणविणं ॥ ४ ॥ जइवि पम्लिेहणाए ॥ हेउ जिअरस्कणं जिणाणाय ॥ तहवि इमं मण मक्कम, निजंतणछं मुणि बिंति ॥ ५ ॥

६

अर्थः—सुत्तअ के० मुहपत्तिने पहेले पासे सूत्र अने बीजे पासे अर्थ तत्त के० सम्यक् प्रकारे तेनुं तत्त्व हृदयने विषे धरुं. ए प्रथम दिठी के० दृष्टी पमिलेह ए जाणवी.

पछी त्रणवार खंखेरिए, त्यां शुं चिंतवीए ? ते कहेछे. दंसणमोहयतिगं के० सम्यक्त्व मोहनी, मिश्र मोहनी, अने मिथ्यात्व मोहनी, ए त्रण मोहनी छांरुं. रागतिगं के० काम राग, स्नेह राग अने दृष्टी राग ए त्रण राग छांरुं. एवं सात थइ पछी मुहपत्तिये एकपम वालीने आंगुलनी वच्चे मुहपति नरावीने हाथ उपर पखोमा अखोमा करे, त्यां जे चिंतवे ते कहे छे. देवाई तत्ततिगं के० देवादिक तत्त्व त्रण एटले देवतत्त्व, गुरुत त्त्व ने धर्मतत्त्व ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रण वार खंखेरीए एवं दश थइ. तहय के० ते मज वली अदेवाइतत्ततिगं के० अदेवादिक तत्त्व त्रण एटले कुदेव, कुगुरु ने कुधर्म ए त्रण तत्त्व छांरुं, ए त्र ण पखोमा हाथ उपर पुंजीयें एवं तेर थइ. नाणाइ तिगं के० ज्ञान, दर्शन ने चारित्र ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. च के० व

ली तव्विराहणायं के० तेनीज विराधना एटले ज्ञान वि राधना, दर्शन विराधना अने चारित्र विराधना, ए त्रण विराधना ठांरु. ए त्रण पखोमा हाथ उपर मुहपत्तिये करी त्रण वार पुंजीए; एवं उगणीश थइ. तिन्निगुत्ति के० मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति आदरुं ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. दंमतिगं के० मनदंम, वचनदंम ने कायदंम ए त्रण दंम ठांरुं. ए त्र ण पखोमा हाथ उपर त्रण वार मुहपत्तिए पुंजीये इ अमुहणंतगपमिलेहणाइ के० ए मुखानंतक एटले मुहपत्ति तेनी पचीश पमिलेहणा कही ते कमसो वि चिंतिज्जा के० पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पमिलेहणा कहेठे. तेमां प्रथम बे भुजानी पमिलेहणा कहेठे; हासोरइअरइ तिगं के० हास्य, रति अने अरति ए त्रण परिहरुं. अ हीं माबा हाथनी भुजा त्रणवार पुंजीए अने भय सो ग उगंठयायवज्जिज्जा के० भय, शोकने उगंठा ए त्रण वर्जुं. अहीं जमणा हाथनी भुजा त्रणवार पुंजीये. ए भुअजुअलं के० भुजा जुगलने पेहंतो के० पमिलेहतो थको ए ठ बोल कह्या ते चिंतवे. हवे सिसे के० मस्त

कनी त्रण पडिलेहणा करतो थको अपसत्थलेसतिगं के० अप्रशस्त जे त्रण लेश्या एटले कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण माठी लेश्याने टाळुं; एवं नव थइ. हवे वयणे के० वदन जे मुख तेनी पडिलेहणा करतो थको गारवतिगं के० ऋद्धि गारव, रस गारव अने साता गारव ए त्रण गारवने टाळुं. अने उअरि के० हृदयनी पडिलेहणा करतो थको हृदय थकी सल्लतिगं के० माया शल्य, नियाण शल्य अने मिथ्यात्व शल्य ए त्रण शल्य काढुं; एवं पंदर थइ. तथा कसाय चउ के० क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कषाय ते पिठे के० पुठे बे पासांनी पडिलेहणा करतो टाळुं. अने पयजुअले के० बे पगने पडिलेहतो थको छ जीववहं के० पृथ्वीकायादिक जीवोनी जे छ निकाय छे, तेनी जयणा करुं; एवं पचीश, ते तणु के० शरीरनी पेहाए के० पडिलेहणा करतो थको विजाणविणं के० मन ठामे राखवाने एवी रीते मनमां चिंतवे. जइवि पडिलेहणाए के० जोपण ए पडिलेहणा जे छे ते जिअरक्खणं के० जीव रक्षानो हेउ के० कारण भव्य जीवने छे. एम जिणाणाय के० तीर्थंकरनी आज्ञा छे, तहवि के० तोपण

ए ध्यान ते मनस्कर्म के० मनरूप मांकमाने निज्जंत णाउं के० वश राखवाने अर्थे छे, इमं के० ए रीते मुणि विंति के० पूर्वाचार्य कहे छे.

ए शरीरनी जे पचीश पमिलेहणा कही तेमाथी स्त्रीनुं मस्तक ढांक्युं होय माटे मस्तकनी त्रण तथा हृदय ढांक्युं होय माटे हृदयनी त्रण तथा बे पासां ढांक्यां होय माटे बे पासांनी चार, ए रीते दश पमिलेहणा शरीरनी उंगी थाय छे.

अने साध्वीनुं तो मस्तक उघाडुं होय माटे मस्तकनी त्रण पमिलेहणा करे, तेवारे साध्वीना शरीरनी अढार पमिलेहणा थइ शकेछे. ॥ इति मुहपत्ति पमिलेहण विचार समाप्तः ॥

विधिः—मुहपत्ति पमिलेह्या पछी खमासमणुं देइ पछी इच्छाकारेण संदिसह ज्ञगवन् सामायक संदिसाहु, इच्छं एम कही खमासमणुं देइ इच्छाकारेण संदिसह ज्ञगवन् सामायक ठाउं, इच्छं एम कही बे हाथ जोमी नवकार गणी इच्छकारी ज्ञगवन् पसाय करी सामायक दंम उचरावोजी. पछी गुरु के वमिल करेमिज्नंते कहे.

करेमिभंतेना छुटा शब्दना अर्थ.

करेमि – करुं छुं
भंते – भदंत–कल्याणकारी
सामाइयं – सामायिक
सावज्जं – सावद्य–पापवाला
जोगं – योगने
पच्चख्खामि – त्याग करुं छुं
नियमं – नियमने
पज्जुवासामि – सेवीश–सेवुं
दुविहं – बे प्रकारना
तिविहेणं – त्रण प्रकारे करीने
मणेणं – मने करीने
वायाए – वचने करीने
कायेणं – कायाए करीने
कारवेमि – करावुं
निंदामि – निंदुं छुं
गरिहामि – निंदु छुं (गुरुनी साक्षीए)

॥ अथ करेमिभंते ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं, पच्चख्कामि, जाव निअमं, पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि, इति ॥

अर्थः–करेमिभंते सामाइयं के० करूंछु हे भगवं

त (वे घमीनुं) सामायक व्रत; जीवने समता परि
णाममां राखवुं तेने सामायक कहियें ते सामायकमां
सावज्जं के० जेणे करी पाप लागे तेने सावद्य कहिये त
नो जे जोगं के० व्यापार तेने पच्चरकामि के० पचखुंछुं
एटले निषेधुं छुं. जाव नियमं के० ज्यां लगे सामायक
सेववानो नियमछे त्यां लगें पज्जुवासामि के० ते सेवुंछुं डु
विहंके० बे प्रकारनो सावद्य व्यापार ते तिविहेणं के०
त्रण प्रकारे न करवो. ते त्रण प्रकार कहेछे एक मणेणं
के० मनेकरी बीजो वायाए के० वचनेकरी त्रीजो का
एणंके० कायायेंकरी. हवे पूर्वोक्त बे प्रकारनो सावद्य
व्यापार जे कह्यो ते न करेमि के० सावद्य व्यापार हुं
न करुं न कारवेमि के० बीजा पासें सावद्य व्यापार
करावुं नहीं, पण पुत्र स्त्री वाणोतर प्रमुख जे सावद्य
व्यापार करेछे तेमाटे अनुमति मोकली छे ए द्विविध
त्रिविध कहिये तस्स के० ते सावद्य व्यापारथी भंते के०
हे भगवंत हुं पडिक्कमामि के० पडिक्कमुंछुं निवर्त्तुंछुं के
वी रीते जे निंदामि के० आत्मानी साखे निंदुंछुं, गरि
हामि के० गुरुनी साखे गरहुंछुं; अप्पाणं के० पापनो

करनार एहवो जे म्हारो आत्मा तेने पाप थकी वो सिरामि के० वोसिरावुं छुं. इति ॥

विधिः—पछी खमासमणुं देइने इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाहु, इच्छं. खमासमणुं देइ, इच्छा० बेसणे ठाउं; इच्छं. खमासमणुं देइ, इच्छा० सझाय संदिसाहु. इच्छं खमासमणुं देइ, इच्छा० सझाय करुं एम कही बे हाथ जोडी त्रण नवकार गणवा. पछी बे घडी सामायकमां रहे, ज्ञान भणे, के नवकार वाली गणे, शास्त्र सांभले वगेरे संवरमां रहे. बे घडी थइ रहे त्यारे सामायक पारे ते वखते खमासमणुं देइ इरियावहि पडिकमीए त्यांथी लोगस्स कहीए त्यां सुधी सामायक लेवा प्रमाणे करवुं पछी खमासमणुं देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहु, इच्छं एम कही मुहपत्ति पडिलेही पछी खमासमणुं देइ इच्छाका० सामायक पारु, यथाशक्ति; खमासमणुं देइ इच्छाका० सामायक पार्युं, तहत्ति; एम कही जमणो हाथ चरवलापर स्थापी माथुं नमावी सामाइअ वयजुत्तो भणे.

सामाइय वय जुत्तोना छुटा शब्दना अर्थ.

सामाइय – सामायक–ना	सामाइअंमि / सामायिके – सामायिकने विषे
वय – व्रत	उ – तो
मणे – मन	कए – कर्ये
होइ – होय	इव – जेम–पेठे
नियम – नियम	सावओ – श्रावक
छिन्नइ – छेदे	जम्हा – जेकारणमाटे
असुहं – अशुभ	एएण – एणे
कम्मं – कर्मने	कारणेणं – कारणे करीने
जत्तिआ – जेटली	बहुसो – घणीवार
वारा – वार	कुज्जा – करवुं जोइए

॥ अथ सामाइय वयजुत्तो ॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ
नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं,
सामाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥
सामाइअंमि उ कए, समणो इव सा
वओ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं,
बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सा

मायिक विधिं लीधूं, विधिं पायुं, विधि करतां जे कोइ अविधि हुन होय॥ ते सविहुं मन वचन कायायें करी॥ मिच्छामिडुक्कडं ॥ इति

अर्थः—सामाइयवयजुत्तो के० बे घमीनुं जे सामायकव्रत तेणेकरीने युक्त, जाव मणे के० ज्यांलगें मन मनमांहे नियमसंजुत्तो के० ए नियम सहित होय त्यांलगे, छिन्नई असुहं कम्मं के० अशुन्नकर्मने छेदे. सामाइअ जत्तिआ वारा के० सामायक जेटली वार करे तेटली वार अशुन्न कर्मने टाले ॥ १ ॥

वली, सामाइअंमि उ कए के० सामायक कर्ये छते, समणो इव के० साधुनी परे, सावउ हवइ के० श्रावक पण निष्पापी होय, जम्हा के० जे माटे, सामायक करवाथी एवा परिणाम थाय छे तो, एएण कारणेणं के० ए कह्युंजे कारण ते कारणे करी, बहुसो सामाइअं कुज्जा के० घणां सामायक करियें ॥ २ ॥

सामाइय पोसहसं, छिअजीवस्स

जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बो

धव्वो, सेसो संसार फल हेऊ ॥ १ ॥

अर्थः—सामाइअके० सामायक अने पोसह के० पोसह तेने विषे संठिअ के० रह्यो थको जीवस्स के० जीवनो जाइ जो कालो के० जे काल जाय छे सो सफलो के० ते कालने सफल बोधव्वो के० जाणवो अने सामायक तथा पोसहविना शेष जे काल छे ते संसार फलहेऊ के० संसारना फलनो हेतु जाणवो ॥ २॥

विधिः—देवसि पडिक्कमणुं करतां सामायक लीधा पछी सद्याय करवानो आदेश माग्या पछी बे हाथ जोडी त्रण नवकार गणी पछी पाणी पीधुं होय ते मुहपत्ति पडिलेहे अने खाधुं होय तो मुहपत्ति पडिलेही बे वांदणां दे ते (सुगुरु) वांदणासूत्र लखीए छीए.

वांदणाना छुटा शब्दना अर्थः—

अणुजाणहः—आज्ञा आपो.
मिउग्गहं—मित अवग्रह.
३॥ हाथ प्रमाण जग्या.
निसीहि—निषेधुं छुं.
अहो—अधो—नीची.
कायं—शरीर.
संफासं—फरस, संस्पर्श.
खमणिज्जो—खमजो.

सा यिक
विधि क
होय॥ ते
री ॥ मिच्छा

अर्थः—सामाइ
यकव्रत तेणेकरीने
मन मनमांहे नियमस
त्यांलगे, छिन्नई असुहं
सामाइअ जत्तिआ वारा के
तेटली वार अशुभ कर्मने

वली, सामाइअंमि उ
ते, समणो इव के० साधुनी
वक पण निष्पापी होय, जम्हा
करवाथी एवा परिणाम थाय
के० एकह्युं जे कारण ते कारणे
कुज्जा के० घणां सामायक करिये

सामाइय पोसहसं, छि

अन्नयराए-अनेरी, बीजी.
जंकिंचि-जे कांइ.
मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप
आशातना) वडे.
मण-मन (नी)
दुक्कडाए-पापरूप(आशातनाए
वय-वचन (नी)
काय-शरीर (नी)
कोहाए-क्रोधे करी
माणाए-माने करी
करी
करी
संबंधी
उपच
म

णिजाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाण
ह, मे, मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो, का
यं, काय, संफासं, खमणिज्जो, भे, कि
लामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे,
दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, भे ॥४॥ ज, व,
णि, ज्जं, च, भे ॥५॥ खामेमि, खमासमणो,
देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए,
पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसि
आए, आसायणाए, तित्तीसन्नयरा
ए, जंकिंचि, मिछाए ॥ मणउक्कडाए, व
यउक्कडाए, कायउक्कडाए, कोहाए, मा
णाए, मायाए, लोभाए, सबकालिआ
ए, सब मिछोवयाराए, सब धम्माइक्क
मणाए, आसायणाए, जो मे अइआ
रो कउ, तस्स, खमासमणो, पडिक्क
मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

भे-भगवंत.
किलामो-किलामणा, थाक.
अप्प-अल्प, थोडा.
किलंताणं-थाकेलाने. थोडा श्रमवालाने.
वहु सुभेण-बहु शुभवडे, घणे कुशलपणे.
दिवसो-दिवस.
वइक्कंतो-वीत्यो, गयो.
जत्ता-यात्रा (तप, संयम नियमरूप.)
जवणिज्जं-शरीर, (इंद्रियो अने मन.)
खामेमि-खमावुंछुं, खामुंछुं.
देवसियं-दिवस संबंधी.
वइक्कम्मं-व्यतिक्रम. अपराध.
आवसिआए-अवश्यकर्तव्यथी
खमासमणाणं-क्षमाश्रमणोनी (संबंधी.)
देवसिआए-दिवस संबंधी.
आसायणाए-आशातनाए करीने.
तित्तीस-तेत्रीश.
अन्नयराए-अनेरी, बीजी.
जंकिंचि-जे कांइ.
मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप आशातना) वडे.
मण-मन (नी)
दुक्कडाए-पापरूप(आशातनाए
वय-वचन (नी)
काय-शरीर (नी)
कोहाए-क्रोधे करी
माणाए-माने करी
मायाए-मायाए करी
लोभाए-लोभे करी
कालिआए-काळ संबंधी
मिच्छोवयाराए-मिथ्या उपचारवडे, कुडकपटवडे.
सव्वधम्म-सर्व धर्म ते आठ प्रवचन मातारूप.
अइक्कमणाए-ओळंघवा रूप.
जो-जे.
मे-में, मारे जीवे
अइआरो--अतिचार
कओ--कर्यो

॥ अथ सुगुरु वांदणां ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं, जाव

णिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो, कायं, काय, संफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, भे ॥४॥ ज, व, णि, ज्जं, च, भे ॥५॥ खामेमि, खमासमणो, देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मिच्छाए ॥ मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स, खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥

बीजी वारने वांदणे 'आवसिआए' पद न कहेवुं राइ पक्खि चउमासी संवत्सरीए आम पाठ कहेवो ॥ राइ वइक्कंता, चउमासी वइक्कंता, पक्खो वइक्कंतो, संवच्छरो वइक्कंतो, एम कहेवुं.

अर्थ—इच्छामि के० इच्छुं छुं—वांछुं छुं. खमासमणो के० हे क्षमा श्रमण तमने. वंदिउंथी निसीहिआए सुधी उभां थकां कहेतो थको वंदन करवानी इच्छा जणावे; पछी ते शिष्य लगारेक नीचो नमी उभो रहे त्यारे गुरु कहे के, छंदेण के० तमारी इच्छाथी वंदना करो. पछी शिष्य कहे. अणुजाणह के० अनुमति ते आज्ञा आपो, मे के० मने मिउग्गहं के० मित एटले मळ्यो जे अवग्रह साडात्रण हाथ रूप तेमां आववानो, त्यारे गुरु कहे के अणुजाणामि के० आज्ञा आपुं छुं. वली शिष्य कहे जे निसीहि के० पाप व्यापारनो निषेध करीने विधिए युक्त वांडुं छुं. एम कहीने भूमिने पूंजतो थको आघो आवी संडासा पुंजीने बेसे. पछी

शिष्य कहे के अहोकायं के० अधःकाय एटले तमारां चरण रूप जे हेठेनी काय छे ते, काय संफासं के० मारा मस्तकरूप कायाये करी फरसुं; ते तमारे खम-णिज्जो ने के० खमवुं. हे नगवन्, किलामो के० पग फरसतां जे किलामणा उपनी होय ते. एम खमावी माथे हाथ चढावी कुशलता पूछे; अप्पकिलंताणं के० किलामणारहित एवा तमने थोडा श्रम एटले थोडा प्रयासे करी बहुसुनेणं के० घणी निराबाध संयम क्रि या समाधीए करी, ने के० नगवन् तमारो दिवसो व इकंतो के० दिवस व्यतिक्रम्यो के० वीत्यो ते वारे गुरु कहे, तहत्ति के० जेम तें कह्युं तेमज अमारो दिवस वीत्यो छे. वली शिष्य बे हाथ जोडी, जत्ता ने कहेतो थको त्रण आवर्त्त करे. ते केम—दश आंगलीउ समी राखी गुरुना पगने हाथ लगाडतो थको पहेलो (ज) अक्षर नीचे सादे कहे अने बीजो (त्ता) अक्षर मध्यम सादे कहे. त्रीजो (ने) अक्षर निलाडे के० कपाले फ रसतो उंचे सादे कहे. एटले त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त जत्तान्ने के० सुखे संयमनी यात्रा छे तमने ? तवारे गु रु कहे तुप्नंवि वट्टए के० तुजने पण यात्रा वर्त्ते छे. ए

जेम त्रणे प्रकारे पहेलो आवर्त्त कह्यो तेम बीजो अने त्रीजो आवर्त्त पण शिष्येज कहेवो. ते आ प्रमाणे–ज व णि ज्जं च भे के॰ तमारां पांच इंद्रिय अने नोइंद्रिय एटले मन ए छ वानां तमारे वश छे ? अथवा तमारुं शरीर निराबाध छे ? तेवारे गुरु कहे एवं के॰ एमज निराबाध छे–वश छे. वली शिष्य बे हाथ अने मस्तक गुरुना पगे लगाडीने कहे खामेमि खमासमणो के॰ खमावुं छुं हे क्षमाश्रमण, क्षमाने विषे उद्यमवंत, देवसियं वइक्कमं के॰ दिवस व्यतिक्रम्यो ते संबंधी अपराध. त्यारे गुरु कहे अहमवि खामेमि तुम्हं के॰ हुं पण तमने खमावुं छुं. पछी शिष्य उभो थइ अवग्रह थी बाहेर नीकलतो कहे आवस्सियाए के॰ अवश्य क्रिया जे पडिलेहणादिक ते करवाने अर्थे अवग्रह बाहेर नीकली उभो थइ कहे पडिक्कमामि के॰ पडिक्कमुं छुं, निवर्त्तु छुं खमासमणाणं के॰ हे क्षमावंत यति तमने देवसिआए आसायणाए के॰ दिवस संबंधी आशातना, तित्तीसन्नयराए के॰ तेत्रीशमांनी अनेरी कोइ एके आशातना कीधी होय, जं किंचि मिछाए के॰ जे काइ मिथ्यात्व एटले खोटा भावथी वेयावच्च विषे सर्व वल

छतां नही करवानी बुद्धिथी निर्बलपणुं देखाम्तो मुखे खोटा उपचारे करी आशातना कीधी होय, मण डुक्कमाए के० गुरुनी उपर मने करी माठुं चिंतव्युं होय, वयडुक्कमाए के० वचन डुष्कृत एटले असंबंधवचने करीने, काय डुक्कमाए के० कायाए करी माठुं करयुं होय, कोहाए के० क्रोधे करी, माणाए के० मान अहंकारे करी, मायाए के० मायाये करी, लोहाए के० लोभे करी, सब्ब कालियाए के० सर्वकाल अतीत अनागत तथा वर्त्तमान कालने विषे, मिछोवयाराए के० सर्वे मिथ्या उपचार जे उपाय–तेणे करी जे खोटा मने विनय साचव्यो होय, सव्वधम्माइक्कमणाए के० जेणे करी सर्व जिनधर्मनो अतिक्रम थयो होय, एटले आठ प्रवचन मातारूप सर्व धर्मने अतिक्रमवे करी, इत्यादिक आसायणाए के० आशातनाए करी जो मे अइयारो कउ के० जे में अतिचार अपराध कीधो होय, तस्स के० ते अपराध खमासमणो के० हे क्षमाश्रमण, क्षमावंत गुरु, पडिक्कमामि के० ते अपराधने हुं तमारी साखे पडिकमुंछुं. निंदामि के० ए पापोने आत्मानी साखे निंडुंछुं. गरिहामि के० गुरुनी साखे गरहा करुंछुं,

अप्पाणं वोसिरामि के० पापनो करनारो एवो मारो आत्मा तेने वोसिरावुंछुं. एटले आशातनानिमित्त जे काले तपनी जे मति ते रूप आत्माने तजुंछुं.

ए प्रमाणे बे वार वांदणां देतां २५ आवश्यक साचववा ते पच्चीश आवश्यकनी गाथा लखीएं छीएं.

दोवणायमहाजाय,आवत्ता बारचेव

सिर तिगुत्तं ॥ दुप्पवेसिग निख्क

मणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥१॥

अर्थ—दोवणाय के० बे वार शरीरने नमाडवुं, त्यां एक तो इच्छामिखमासमणो—निसीहिआए एम कहीने नमे ते वारे एक अवनत, एमज बीजी वारने वांदणे बीजो अवनत, ए बे अवनत एटले नमवाना बे आवश्यक थया. अहाजाय के० यथाजात एटले बा लकने जन्म अवसरे बे हाथ जोडीने कपाळे लगाडे ला होय एवी स्थितिमां वांदणां लेवां ए त्रीजुं यथा जात आवश्यक. आवत्ता बार के० बार आवर्त्त ते अ—हो, का—यं, का—य ए बवे अक्षरे त्रस आवर्त थाय ते अ अक्षर कहेतां दश आंगुलीउ ऊंधी गुरु चरणे ल गाडे अने हो अक्षर कहेतां ते सीधी करी पोताने

ललाट देश फरसे ए रीते का—यं, का—य एम त्रण आवर्त थयां ते पछी संफासंथी वश्कंतो सुधी यथा जात मुझाए त्रणी पछी ज—त्ता—त्ते, ज—व—णि, जं, च,—त्ते ए त्रण आवर्त वांदणाना अर्थमां बताव्या प्र माणे करे, ए ठ आवर्त थयां; अने बीजा वांदणानां ठ आवर्त मळी बार आवर्तना बार आवश्यक थया ते पहेलाना त्रण साथे मेळवतां पंदर आवश्यक थया. चउसिरके० चार वार मस्तक नमाम्वुं एटले पहेले वांदणे बे वार अने बीजे वांदणे बे वार मस्तक नमाम्वुं, ए रीते चार आवश्यक एवं उगणीश. त्रण गुप्तिः—मन, वचन अने कायाने ड्व्य तथा नावथी अयत्नाए न प्रवर्ता वे ते त्रण आवश्यक एवं बावीश.

डुप्पवेस के० बे वार गुरुनी आज्ञा मागीने अवग्रहमां पेसवुं ए बे आवश्यक अने पहेला वांदणामां आवसिआ ए कहेतोबहार निकले ते इगनिरकमणे के० एक वार नि कलवानो एकआवश्यक एवं पचीश आवश्यक थया. ए पचीश आवश्यक वांदणां देतां अवश्य साचववा.

विधिः—बे वांदणां दीधा पछी यथाशक्ति प च्चरकाण करवुं.

सांजना पच्चक्खाणना छुटा शब्दना अर्थ.

पाणहार-उष्ण पाणीनोआहार	महत्तर-मोटा (रहे छते)
चरिमं-छेडो (त्याग करे)	सव्वसमाहिवत्ति-सर्वअसमाधि
पच्चक्खाइ-पच्चक्खाण करे,	
अन्नथ्थ-अन्यत्र, विसरी जवाथी	असणं-खोराक
अणाभोगेणं-अजाणपणे	पाणं-पाणी
सहसा-सहसात्कारे	खाइमं-खादिम
आगारेणं-आगारवडे	साइमं-स्वादिम

तिविहारा अठम, छठ, उपवास करे ते तथा आंबिल नीवी एकासणुं बेसणुं करनार सांजे पाणहारनुं पच्चक्खाण करे. खाधुं होय ने रातरे तांबुल तथा पाणी वापरवुं होय ते दुविहारनुं, एकलुं पाणी वापरवुं होय ते तिविहारनुं, अने पाणीए न वापरवुं होय ते चउविहारनुं पच्चक्खाण करे.

पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चक्खाण

पाणहार [1]दिवसचरिमं [2]पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा[3]भोगेणं, [4]सहसागारेणं, [5]महत्तरागारेणं,

---

१ दिवस चरिमं=दिवसना छेडाथी मांडीने नवो सुरज उगे त्यां सुधी.

[६]सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, [७]वोसिरे ॥ १ ॥

दिवसचरिम चउविहार

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ [८]चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ २ ॥

तिविहार.

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ [९]तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ३ ॥

दुविहार.

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ [१०]दुविहंपि आहारं [११]असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ ४ ॥

---

२ पच्चक्खाइः=पच्चखुं छुं त्यागकरुंछुं. गुरु पच्चक्खाई कहे अने पच्चक्खाण करनार पच्चक्खामि कहे.

३ अन्नत्थ=बीजे ठेकाणे एटले पच्चक्खाणनो उपयोग विसरवाथी-अणाभोगेणं=अजाणपणे अनुपयोगे कोइ वस्तु मोंमां मुकवाथी पच्चक्खाण न भांगे, परंतु वचमां पच्चक्खाण सांभरे त्यारे तरत म्होंमांथी थुंकी काढे, म्होंथी हेठुं उतर्युं पछी तरत अथवा मोडुं सांभरे तो पण पच्चक्खाण न भांगे. पण शुद्ध व्यवहार माटे

विधिः—पच्चक्काण कर्या पछी इच्छामिखमासमणो० इच्छाकाo चैत्य वंदन करू, इच्छं एम कहे, वगेरा के पोते चैत्यवंदन करे. प्रसंगथी आखु चैत्यवंदन थोय सुधी लखीए छीए.

फरी निश्शंक न थाय, माटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए रीते सर्वे आगारोने विषे जाणी लेवुं.

४ सहसा०—करेला पच्चख्खाणनो उपयोग तो विसर्यो नथी पण काममां प्रवर्तता सहसात्कारे एटले एकाएक मुखमां पेसी जाय, जेम भेंस दोहतां, दही वलोवतां, घी तोलतां अचानक मुखमां छांटो पडे अथवा चउविहार उपवासे चोमासामां मेघना छांटा मुखमां पडे तो पच्चख्खाण न भांगे.

५ महत्तरा०—मोहोटी निर्जराने लाभे अथवा वडेराना कहेवाथी बहु निर्जराना कारणे पच्चख्खाण न भांगे.

६ सव्वसमाहि०—सर्व प्रकारे शरीरमां असमाधि रहे, एटले पच्चख्खाण कर्या पछी तीव्र शूळादिक रोग उपने थके अथवा साप डश्यो होय तेथी जीव आर्तिमां पडे, अथवा ज्यारे अकस्मात् कष्ट थाय त्यारे सर्व इंद्रियोनी समाधिने अर्थे अपूर्ण पच्चख्खाणे पण पथ्यऔषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्चख्खाण भागे नहीं; अने समाधि थया पछी पूर्वनी परे रहे.

(७) वोसिरे=त्याग करे-गुरु वोसिरे कहे अने पच्चख्खाण करनार वोसिरामि कहे एटले हुं त्याग करुं छुं.

(८) चउविहंपिआहारं०—चार प्रकारना पण आहार जेवा के, अशन, पान, खादिम अने स्वादिमरुप.

(९) तिविहंपिआहारं०—त्रण प्रकारना पण आहार ते अशन, खादिम, स्वादिम.

(१०) दुविहंपिआहारं=बे प्रकारना पण आहार ते अशन अने खादिम.

चैत्यवंदनो (१–२–३–४)ना छूटा शब्दार्थ.

विमल–निर्मल
कमला–लक्ष्मी
कलित–सहित

त्रिभुवन–त्रण भुवन (स्वर्ग, मृत्युलोक, पाताल)
हितकरं–सुखकारक

---

(११) असणं=अशन ते शालि, जुवार, घउं बंटी प्रमुख सर्व जातिनां धान्य, चोखा, मग अने तूवर प्रमुख सर्व कठोळ तथा साथूआदिक सर्व जातिना लोट तथा मोदकादिक सर्व जातनां पक्वान्न तथा सूरणादिक सर्व जातनां कंद, तथा मांडा प्रमुख सर्व जातनी केलवेली वस्तु तेमज वेसण वीगेरे ते पण अशन कहीए.

पाणं=पाणी–कांजी, जव चोखा अने काकडी प्रमुखनां धोवण, तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहीए.

खाइमं-खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, कोपरां, द्राक्ष तथा अखोडादिक सर्व जातनो मेवो, तथा काकडी, आंबा, फणस, नालियर प्रमुख सर्व जातनां फळ तथा धाणी, पहुआ वगेरे शेकेलां धान्य, तथा पापड प्रमुख सर्व खादिम कहीए.

साइमं–स्वादिम ते दातण, शुंठ, हरडे, पीपर, मरी, जायफळ, काथो, खसखस, जेठीमध, तमालपत्र, तज, एलची, लवंग, जावंत्री, सोपारी, पान बीडलवण (वलवण), पीपलीमूळ, चिणिकबाला, कचुरो मोथ कांटाशेलीओ, कपूर, संचळ बेहेडां, आंवळां, हिंगळाष्टक, हिंग, त्रिविसो, पुष्करमूळ, जवासामूळ, आपचीबावची, बावळनी, धवनी, खेरनी अने खीजडानी, छाल, पान, तुलसी, कोठपत्र, कोठवडी, आंबागोटली वगेरे स्वादिम कहीए.

(अणहारी वस्तुनां नाम.)

लिंबडानां फळ, फुल, छाल, मूळ अने पत्र तथा गायनुं मूत्र गळो, कडु, करीआतुं, अतिविष. सुखड, राख, हलदर, रोहिणी, उपलेट, वज, त्रिफळा, धमासो, नाही, आसंध, एळीओ, गुगळ, कंथेरमूळ, पूंआड, मजीठ, कुंदरू, तमाकु प्रमुख अनिष्टस्वादवाळी वस्तु ए सर्वे अणहारी वस्तु छे ए अहींआं प्रसंगथी लखी छे.

सुरराज–देवतानाराजा (इंद्र)
संस्तुत–स्तवन करेल.
चरण–पग
पंकज–कमळ
आदि–पहेला
गिरिवर–मोटो पर्वत
शृंग–शिखर
मंडण–शोभावनार, घरेणुं
प्रवर–उत्तम
गण–समुह
भूधरं–पर्वत
सुर–देव
असुर–दैत्य
किन्नर–गवैया देव
सेवित–सेवेला
किन्नरी–अप्सरा, गानारी देवी
मनहर–मनने हरण करे तेवी
निर्जरावलि–देवतानी श्रेणी
अहनीश–रात दिवस
पुंडरीक–रीखवदेवना पहेला गणधरनुं नाम
गणपति–गणधर
साध्य–साधवानुं (मोक्ष)
साधन–साधवाने माटे
सुर–शुरा

वर–उत्तम
कोडिनंत–अनंत क्रोड
रमणी–स्त्री
सुरलोक–देवलोक
गिरिवरतो–गिरिवरथी
अपरं–बीजुं
तीर्थपति–तीर्थंकर
विहंडण–नाश करनार
परम–उत्कृष्ट
ज्योति–तेज
निपाइए–निपजावीए
जीत–जीत्या छे
कोह–क्रोध
विछोह–वियोग
निद्रा–उंघ
परमपद–मोक्षपद
स्थित–रहेलुं
तत्पर–तैयार
दोहग–दौर्भाग्य, दरिद्रता
जपतां–जाप करतां
अष्टोतर–आठ वधारे
सय–सो
प्रवचन–सिद्धांत
थेराणं–स्थविर मुनि
पाठक–उपाध्याय

गरिट्ठ–गरिष्ठ, सौथी मोटा
नाणस्स–ज्ञानने
ध्याव–ध्यान करवुं
बंभवय–ब्रह्मचर्यव्रत
धारिणं–धारनारने,
किरियाणं–चारित्रनी क्रिया
तवस्स–तपने
गोयम–गौतम
सुअस्स–श्रुतने
तित्थस्स–तीर्थने
सुखखाणी–सुखनीखाण

पचवीश–पचीश
पणवीश–पचीश
अडवीस–अठावीश
गुणीश–गुणवंत
द्वादश–बार
संच–संचय (जथ्थो)
संक्षेपथी–टुंकामां
लेश–लगार
पद–पग–चरण
पद्म–कमळ–अथवा पद्मविजय

॥ १ ॥ श्री शत्रुंजय तीर्थनुं चैत्य वंदन.

॥ *विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण प्रवरगुण गण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमे अहनिस, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि,

---

* निर्मळ केवळ ज्ञानरुपी लक्ष्मी वडे सहित स्वर्ग मृत्युलोक अने पाताळ ए त्रण भुवनने हित करनार अने देवोना राजा जे इन्द्रो तेमणे सम्यक् प्रकारे स्तव्या छे चरण कमळ ते जेमना एवा आदीश्वरभगवानने नमस्कार थाओ ॥ १ ॥

मो थेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए सव्व साहूणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दरशन मन जावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंजवय धारिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेंए, नमो तीत्थस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, छत्रीशनो करिये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरिये ॥ १ ॥ पंच सम्मसठि दश वली, सितेर नव पणवीश ॥ बार अम्मवीश लोगस्सतणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. छादशने पंच ॥

॥ एणि पेरे काउस्सग्ग

॥ ३॥ अनुक्रमे काउस्सग

श; ॥ स्थानक

जाव धरी मनमां

उत्तम पद पद्मनें

जंकिंचिना छुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तित्थं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां
माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
बिंबाइ-बिंबो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सव्वाइं-सर्वे

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबा
इं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥इति ॥१५॥

अर्थः—जं किंचि नाम तित्थंके० जेकोई नामेकरी तीर्थ छे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन बिंबाइंके. जे कांइ जिन तीर्थंकरना बिंब छे ताइं सव्वाइं वंदामि के० ते सर्व बिंबने हुं वांदुं छुं. इति.

नमुथ्थुणंना छुटा शब्दना अर्थ.

नमुथ्थु-नमस्कार हो [अव्यय
णं-वाक्यनो अलंकार बतावनार
आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

मो थेराणं पांचमे, पाठक गुण छे ॥ नमो लोए सव्व साहूणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दरशन मन भावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंभवय धारिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेंए, नमो तीत्थस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, छत्रीशनो करिये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरिये ॥ १ ॥ पंच सरूसठि दश वली, सितेर नव पणवीश ॥ बार अठ्ठवीश लोगस्सतणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. द्वादशने पंच ॥ ॥ एणि पेरे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भवसंच ॥ ३॥ अनुक्रमे काउस्सग्ग मन धरो, गुणि लेजो वीश; ॥ स्थानक एम जाणिए, संक्षेपथी लेश. ॥ ४ ॥ भाव धरी मनमां घणो, जो एक पद आराधे, ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें. नमी निज कारज साधे ॥ ५॥ इति

जंकिंचिना छुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तित्थं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां
माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
बिंबाइं-बिंबो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सव्वाइं-सर्वे

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबा
इं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥इति ॥१५॥

अर्थः—जं किंचि नाम तित्थंके० जेकोई नामेकरी तीर्थ छे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन बिंबाइंके. जे कांइ जिन तीर्थंकरना बिंब छे ताइं सव्वाइं वंदामि के० ते सर्व बिंबने हुं वांदुं छुं. इति.

नमुथ्थुणंना छुटा शब्दना अर्थ.

नमुथ्थु-नमस्कार हो [अव्यय
णं-वाक्यनो अलंकार बतावनार
आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

तित्थयराणं–तीर्थंकरोने
सयं–पोते (पोतानी मेळे
संबुद्धाणं–बोध पामेलाने
पुरिस–पुरुष
उत्तमाणं–उत्तमने
सिहाणं–सिंहोने
वर–श्रेष्ठ उत्तम (जेवा) ने
पुंडरीयाणं–पुंडरीककमळ
गंधहत्थीणं–गंधहस्ती (जेवा) ने
लोगुत्तमाणं–लोकमां उत्तमने
लोग–लोक (ना)
नाहाणं–नाथोने, स्वामीने
हिआणं–हित करनारने
पईवाणं–दीवा (समान) ने
पज्जोअगराणं–प्रकाशकरनारने
अभय–अभय (भयरहितपणुं),
दयाणं–आपनाराने
चक्खु–चक्षु–आंख
मग्ग–मार्ग–रस्तो
सरण–शरण
बोहि–बोधि, समकित
धम्म–धर्म
देसियाणं–उपदेश करनारने
नायगाणं–नायकने (नारने)
सारहीणं–सारथीने, रथ हांक-

चाउरंत–चार [गति]नो अंत करनार]
चक्कवट्टीणं–चक्रवर्तीने.
अप्पडिहय–अप्रतिहत एटले कोइथी हणाय रोकाय नही एवुं
नाण–ज्ञान
दंसण–दर्शन
धराणं–धारणकरनारने
वियट्ट–निवर्त्युं छे
छउम–छद्मस्तपणुं–कपटपणुं आवरणपणुं
जिणाणं–जिनोने, रागादि शत्रुओने जीतनाराने
जावयाणं–रागादि शत्रुओथी जीतावनारने
तिन्नाणं–तरेलाने
तारयाणं–तारनारने
बुद्धाणं–[पोते] बोधपामेलाने
बोहयाणं–बोधकने, बोधकरावनारने
मुत्ताणं–मुक्तने, मोक्षे गएलाने
मोअगाणं–(कर्मथी) मुकावनारने
सव्वन्नुणं–सर्वज्ञोने
दरिसिणं–दर्शीओने, देखनारने
सिवं–कल्याणकारीउपद्रवविनानुं

अयलं-अचळ, स्थिर
अरुअं-रोग रहित
अणंतं-अनंत
अक्खयं-अक्षय
अव्वाबाहं-पीडारहित
अपुणरावित्ति-फरी पाछु आ
वबुं नथी
सिद्धि-मोक्ष
गइ-गति
नामधेयं-नामवाळुं
ठाणं-स्थानक, ठेकाणुं.
संपत्ताणं-पामेलाने
जिअ-जीतेला(ने)
भयाणं-भयोने
जे-जेओ
अईआ-अतीतकाळ. गयो
भविस्संति-थशे.
णागए-अनागत, भविष्यकाळे
काले-कालने विषे
संपइ-संप्रति-हमणां
वट्टमाणा-वर्तता.

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोग हिआणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभय दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग

दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्म वरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अ प्पडिहय वर नाण दंसण धरा णं, विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जा वयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ स व्वन्नूणं, सव्व दरसिणं, सिव मय ल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबा ह, मपुणरावित्ति सिद्धिगइ, नाम धेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणा णं, जिय भयाणं॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा ॥ जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ स व्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥

अर्थः—नमुत्थुणं के० नमोस्तु नमस्कार हो, णं ए वाक्यालंकारने वास्ते छे. अरिहंताणं के० आठ कर्मरूप वैरीने हणया ते अरिहंतने तथा अरहंताणं के० चोशठ इंद्रनी करेली पूजाने योग्य तथा अरुहंताणं के० फरी संसारमां अवतरवुं नथी एवा ज्ञगवंताणं के० ज्ञानवंत ज्ञगवंत तेने नमस्कार थाउ. एम एमां विवेकीने स्तववा योग्य अरिहंत कह्या ते माटे ए बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी. ॥ १ ॥

आइगराणं के० धर्मनी आदिना करनार श्रुत धर्म ने चारित्र धर्मना दातार छे, तित्थयराणं के० चतुर्विध संघरूप तीर्थना करनार छे. सयंसंबुद्धाणं के० स्वयमेव पोतानी मेले प्रतिबोध पाम्या. इहां धर्मनी आदिना करनार ते सामान्ये कह्या. ए त्रण पदनी उधहेतु संपदा बीजी जाणवी. ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं के० पुरुषमांहे उत्तम छे वली सिंह जेम हस्तिनुं मर्दन करे छे तेम ज्ञगवंत परदर्शनरूप वादीना मदरूप हस्तिनुं मर्दन करे छे माटे पुरिससीहाणं के० पुरुषमांहे सिंहसमान कह्या छे. पुरिसवरपुंम-

रीआणं केण पुरुषमांहे वरप्रधान पुंमरीक कमल स-
मान ठे केमके मातानुं रुधिर ने पितानुं वीर्य एने काम
रूप कादव कहियें तेमां परमेश्वर आवी उत्पन्न थया
अने पांचे इंडियना न्नोगरूप पाणिये करी वृद्धि पाम्या
ठतां पण ते कामरूप कादवथी अने न्नोगरूप पाणीथी
कमलनीपेरे वेगला रह्या माटे. वली पुरिस वरगंधहत्थी-
णं के० पुरुषमांहे प्रधान गंधहस्ति समान ठे. जेम गंध
हस्तिना मदना गंधेकरी बीजा हस्तिना मद गली
जाय ठे तेम परमेश्वरथी सातईतिरूप हस्तिना उपड्व
रूप मद ते गली जायठे. ईहां पुरिसुत्तमाणं इत्या-
दिकमां पुरुषमांहे उत्तम ठे एम कह्युं ते माटे ए इत्वर
हेतु नामनी चार पदनी त्रीजी संपदा जाणवी.

लोगुत्तमाणं के० समस्त लोकमांहे उत्तम ठे. अने
ज्ञानादिक गुण अणपाम्याने पमाडे अने जे न्नव्य
जीवो ज्ञानादिक गुणने पाम्या होय तेनी रक्षा करे,
माटे; लोकनाहाणं के० लोकना नाथ ठे. ड्व्यथकी इह
लोकनी संपदा आपे अने न्नावथकी परलोकनां सुख
आपे माटे; लोगहियाणं के० लोकना हितना करनार

छे. ज्ञव्य जीवोना समूहने मिथ्यात्व रूप अंधकारना टालवाथी लोग पईवाणं के० लोक प्रत्ये देशनादिक करवे करीने मिथ्यात्वरुप अंधकार टालवा माटे दीपक समान छे. ज्ञव्यजीवोना समूहनेविषे ज्ञगवंत सूर्यनीपरे नुद्योतना करनार छे जेम सूर्य सर्व वस्तुनो प्रकाश करे छे तेम ज्ञगवंत जीवाऽजीवादिक पदार्थना प्रकाश करनार होवाथी लोगपज्जोयगराणं के० लोकने विषे प्रद्योत एटले विशेष प्रकाशना करनार छे. ईहां लोगुत्तमाणं इत्यादिके करी लोकमां नत्तम कह्या. ए पांच पदे करी चोथी नपयोग हेतु संपदा जाणवी. ४

ज्ञगवंतना दर्शनथी ज्ञव्यजीवोने संसारमां ज्ञमवारूप ज्ञयनो नाश थाय, माटे सर्व जीवोने अज्ञय दयाणं के० अज्ञयदानना देवावाला जाणवा. जेम आंखने विषे आवेला पमलोने वैद्य औषध लगामी साजां करे छे, तेम ज्ञगवंत ज्ञव्यजीवोना मिथ्यात्वरूप पमलो नतारी सम्यक्त्वरूप चक्षुनी प्राप्ति करी देखता करे छे माटे; चक्खुदयाणं के० ज्ञानरूप चक्षुना दातार छे. जेम ज्ञूला पमेला वटेमार्गुनुं धन चोर लोकोये लुंटीने तेने उन्मार्गे पाम्यो होय, तेने कोइ सत्पुरुष

वस्त्र धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखामी तेना स्था नके पहोचामे, तेम ज्ञगवंत मिथ्यात्व कषायरूप चो रोथी लुंटायला जनोने कुमार्गथी मूकावी ज्ञानादिक रत्नत्रयरूप लक्ष्मी आपी मोक्षमार्ग देखामे छे माटे मग्गदयाणं के० मोक्षमार्गना दातार छे. जेम वयरी थी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम ज्जुर्गतिथी बीक पामेला पुरुषने ज्ञगवंत शरणना देवावाला छे; माटे सरणदयाणं कहिये. बोधबीज रूप सम्यक्त्वना दातार छे; माटे बोहिदयाणं कहिये. ईहां अन्नयदयाणं इत्यादिकमां जे वस्तु कहि छे तेना दातार छे ते माटे ए पांच पदनी तद्धेतु संपदा पांचमी जाणवी ॥ ५ ॥

धम्मदयाणं के० चारित्ररूप धर्मना आपनार छे. धम्मदेसिआणं के० सर्वविरति देशविरतिरूप धर्मना उ पदेशक छे. धम्मनायगाणं के० चतुर्विध संघना प्रवर्त्ताव नार माटे धर्मना नायक छे. धम्मसारहीणं के० धर्मरू प रथना सारथी छे केमके जे धर्मथी चूके तेने पाछा मेघकुमारनी पेरे धर्ममां स्थिर करे, माटे सारथी छे ध

म्मवरचानरंतचक्कवट्टीणं के० धर्मने विषे वरप्रधान छे. चानरंत एटले चार गतिना अंतनुं करनार एवुं जे धर्म रूप चक्र तेणे करी धर्मनी आज्ञा प्रवर्त्तावनार छे, अथवा धर्मने विषे प्रधान चार गतिना अंतना करनार चक्रवर्त्ति समान छे. इहां धम्मदयाणं इत्यादिकमां धर्मना देवावाला एम विशेषनपयोगे कह्युं ते माटे ए पांच पदनी सविशेष नपयोग हेतु नामा छठी संपदा थइ॥६॥

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं के० अप्रतिहत्त वर प्रधान ज्ञान दर्शन एटले पर्वतादिके करी न्नेद्युं जाय नही, लोकालोक सुधी विस्तारने पामे, एवा वर प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार छे. विअट्टछनमाणं के० व्यावृत्त एटले गया छे छद्म के० घनघातीआं कर्म तथा कामक्रोधादिक छ अंतरंग वयरी जेना; इहां अप्पडिहयवरनाण इत्यादिकमां अस्खलित प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार कह्या ते माटे ए बे पदनी स्वरूपहेतु नामे सातमी संपदा थइ.

जिणाणं के० पोते रागद्वेषथी रहित जिन थया छे, तथा न्नव्यजीवोना रागद्वेषरूप वयरीने जीपावे, माटे

जावयाणं कहिये. तिन्नाणं के० पोते संसारसमुद्र थकी तर्या अने बीजाने तारयाणं के० संसारसमुद्र थकी तारवाने समर्थ छे. बुद्धाणं के० सर्वतत्त्वना पोते जाण थया अने बोहयाणं के० परने तत्त्व समजाववाने समर्थ छे. मुत्ताणं के० पोते आठ कर्मरूप बंधनथी मुकाणा अने बीजा भव्य जीवोने मोअगाणं के० आठ कर्मरूप शत्रुथी मूकाववाने समर्थ छे. इहां जिणाणं इत्यादिकमां बीजाने पोता सरखा फलना आपनार कह्या, ते माटे ए स्वतुल्य फलकारी चार पदनी आठमी संपदा थइ॥८॥

सव्वन्नूणं के० लोकालोक सर्वने केवल ज्ञाने करी जाणे. सव्वदरिसीणं के० समस्त वस्तुउनुं सामान्य स्वरूप केवलदर्शने करी देखे. सिव के० उपद्रवरहित. मयल के० अचल एटले जेने चलायमान थवुं नथी. मरुय के० अरुज, रोगरहित. मणंत के० अनंतज्ञान दर्शन सुख वीर्य सहित, मक्खय के० अक्षय. एटले जेनो क्षय नथी. मव्वाबाह के० अव्याबाध, बाधा पीमा रहित, म पुणरावित्ति के० अपुनरावर्त्ति एटले ज्यां थकी फरी आववुं नथी. ए साते गुणकरी सिद्धिगइ नामधेयं के० सि

ध्गति एवुं छे नाम जेहनुं. ठाणंसंपत्ताणं के० एवा स्थान कने संप्राप्त थयाछे एटले मोक्षनगरे पहोंच्या छे. नमो जिणाणं के० एवा जिनेश्वरने म्हारो नमस्कार हो जो. जियन्नयाणं के० १ इहलोकन्नय ते मनुष्यने मनुष्यनो न्नय. २ परलोकन्नय ते मनुष्यने देवतादिकनो न्नय. ३ आदान न्नय ते रखेने म्हारू कोइ लेई ले. ४ आजीविकान्नय ते रखेने म्हारी आजीविका हणाइ जाय. ५ अकस्मात् न्नय ते न्नींत प्रमुख पमचाने शब्दे बीक राखे. ६ मरणन्नय ते रखेने मुऊने मरण आवे ७ अपयशन्नय, ए सात न्नय जेणे जीत्या छे. इहां सव्व न्नूणं इत्यादिके करी मोक्षमां तेवुं स्वरूप छे एम कह्युं ए त्रण पदे करी मोक्ष सिद्धावस्था नामे नवमी संपदा थइ ॥ ए ॥

हवे त्रिकालवर्त्ति देव वांदवाने पूर्वाचार्य कृत गाथा कहे छे जेअ अईआ सिद्धा के० जे अतीतकाले तीर्थंकर थइ सिद्धपर्यायपणुं पाम्या. जे अ न्नविस्संतिणागए काले के० जे अनागतकाले तीर्थंकर पर्याय पामी सिद्धपणुं पामशे अने संपइ अ वट्टमाणा के० संप्रति ते हमणां वर्त्तमानकाले जे अरिहंत छे, एटले वर्त्तमाने

जे महाविदेहमां तिर्थंकर विचरे छे ते. सव्वे के० स र्वे तीर्थंकर प्रते, तिविहेण के० मन वचन ने काया ए त्रिविधे करी वंदामि के० हुं वांदु छुं. ए सर्व मली नव संपदा थइ. गाथा एक. पद तेत्रीस. गुरू अक्षर ३३ लघु अक्षर २६४ सर्वाक्षर २९७ इति शक्रस्तव समाप्तः

जावंतीना छुटा शब्दना अर्थ.

जावंति–जेटला
चेइआइं–चैत्य, जिनप्रतिमा
उड्ढे–ऊर्ध्व (लोकमां)
अहे–अधो (लोकमां)
तिरिअ–तिर्च्छा
इह–अहीं
संतो–छतो. रहेलो थको
तथ्थ–त्यां
संताइं–छती, रहेली
जावंत–जेटला
केवि–कोइ
भरह–भरत
एरवय–(पांच) ऐरव्रत
महाविदेहे–(पांच) महाविदेहमां
सव्वेसिं–सर्वेने
तेसिं–तेमने
पणओ–नमस्कार थाओ
तिदंड–त्रण दंड [मन, वचन अने कायाना]
विरयाणं–विराम पामेला, रहित.

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ
तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे॥
इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—जावंति के० जेटला चेइआइं के० चैत्य अने प्रतिमा छे, ते क्यां छे उड्ढेअ के० ऊर्ध्वलोकने विषे, अहेअ के० अधोलोकने विषे, अने तिरिअलोए अ के० तिर्च्छालोकने विषे, ए त्रण लोकमां जे जिन चैत्य छे, सव्वाइं ताइं वंदे के० ते सर्वने हुं वांदुं छुं. इह संतो के० हुं इहां रह्यो थको पण तत्थ संताइ के० तीर्थंकरोनां चैत्य त्यां रह्यां थकां छे तो पण ते प्रत्ये हुं वांदुं छुं. पछी इच्छामिखमासमणो कही.

॥ अथ जावंत केविसाहु ॥

जावंत केवि साहु ॥ भरहेरवय म
हाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ॥
तिविहेण तिदंड विरयाणं॥१॥इति॥

अर्थः—जावंतकेविसाहु के० जे कोइ साधु शुद्ध चारित्रना पालनार, चारित्रना खप करनार, भरहेरवयमहाविदेहे अ के० पांच भरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेह ए पन्नर कर्म भूमिने विषे छे. सव्वेसिं तेसिं के० ते सर्व साधुजनेने हुं, पणओ के० प्रणमुं छुं, नमस्कार

करुंछुं, तिविहेण केʼ मन, वचन अने काया ए त्रण प्रकारे करी नमस्कार करुं छुं, ते साधु केवा छे के तिदंडविरयाणं केʼ मनोदंड, वचनदंड अने कायदंड ए त्रण दंडथी विरम्या छे. इति ॥ ॥

॥ अथ नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु
भ्यः ॥ इति ॥

अर्थः—अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुउने नमस्कार थाउ.

उवसग्गहरंना छुटा शब्दना अर्थ.

उवसग्ग—उपसर्ग, दुःख संकटादिक
हरं—हरण करनार
पासं—१ पार्श्वनाथने २ पार्श्व नामे यक्ष छे जेमने ३ आशा (तृष्णा) रहित.
कम्म—कर्मना
घण—समूहथी (ढगलाथी)
मुक्कं—मुकाएलाने
विसहर—विषधर, साप

विस—विष, झेर
निन्नासं—नाशकरनारने
मंगल—दुखनी निवृत्ति
कल्लाण— सुखनी वृद्धि
आवासं—घर
फुलिंग— फुलिंग नामनो
मंतं—मंत्रने
कंठे—कंठने विषे
धारेइ—धारण करे
जो—जे

सया–सदा–हमेशां
मणुओ–मनुष्य
गह–ग्रह (चंद्र सूर्य वगेरे नव ग्रह)
रोग–रोग
मारी–मरकी.
दुट्ठ–दुष्ट, निर्दय
जरा–ज्वरो, ताव
जंति–पामे छे
उवसामं–शांति, नाश
चिट्ठउ–रहो
दूरे–दूर
मंतो–मंत्र
तुज्ज–तने, तारो
पणामो–प्रणाम
बहुफलो–घणा फलवालो
होइ–थाय छे
नर–पुरुष
तिरिएसु–तिर्यंचने विषे
जीवा–जीवो
पावंति–पामे छे
न–नहीं
दुःख–दुख

दोगच्चं–माठीगति, दरिद्रता
तुह–तमारा
सम्मत्ते–समक्त्व
लद्धे–पामे छते
चिंतामणि–चिंतामणि रत्न
कप्पपायव–कल्पवृक्ष
अप्भहिए–अधिक (वधारे)
अविग्घेण–विघ्नरहितपणे
अयरामरं–अजरामर, जरा अने मरणरहित
संथुओ–स्तव्यो, स्तुति कर्यो
महायस–हे मोटा यशवाला
भत्ति–भक्ति
भर–समूह
निप्भरेण–पूर्ण भरेला
हिअएण–हैयावडे
ता–ते कारण माटे
देव–हे देव
दिज्ज–आपो
बोहिं–बोधि, समकित.
भवेभवे–भवोभव
पास–हे पार्श्वनाथ
जिणचंद–हे जिनचंद्र

॥ अथ उवसग्ग हरं ॥

उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि

कम्म घण मुक्कं ॥ विसहर विस नि
न्नासं ॥ मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥

अर्थः—उवसग्गहरंपासं के० जेना शासनने विषे उपसर्गनो हरनार पार्श्वनामा यक्ष छे एहवा अथवा उपसर्गना हरनार एवा अने पासं के० गइ छे आशा ते जेनी एवा एटले तृष्णा रहित एवा, पासंवंदामि के० श्री पार्श्वनाथ स्वामीने हुं वांडुं छुं. पण ते श्री पार्श्वनाथ केवा छे कम्मघणमुक्कं के० आठ कर्मना घण जे समूह, ते थकी मूकाणा छे, मुक्त थया छे, वली विसहरविस के० विषधर जे सर्प एटले द्रव्य थकी तिर्यंच जातिनो सर्प अने भावथकी मिथ्यात्वरूप सर्प तेनुं जे विष तेने, निन्नासं के० नाशना करनार छे. वली मंगल के० वर्त्तमान सुख अने कल्लाण के० परंपराये जे स्वर्गमोक्षादि सुख तेना आवासं के० स्थानक रूप छे.

विसहर फुलिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ
जो सया मणुउ॥ तस्स गह रोग मा
री ॥ उठ जरा जंति उवसामं ॥२॥

अर्थः—विसहरफुलिंगमंतं के० विषधर स्फूलिंग नामे मंत्र जे एज स्तोत्रमांथी निकले छे, ते मंत्रने कंठे धारेई जो सया मणुउ के० जे मनुष्य सदैव कंठने विषे धारण करे, तस्स गह के० ते मनुष्यना ग्रह, रोग मारी के० अनेक जातना रोग अने मरकीना विकार तथा डुठजरा के० डुष्ट एवा जे जरा के० ताव ते जंति उवसामं के० जाय नाशपामे, उपशांत थाय ॥ २ ॥

चिठउ दूरे मंतो ॥ तुझ प्पणामो वि ब
हुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जी
वा ॥ पावंति न डुरकदोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः—चिठउ डुरे मंतो के० ते पाछली गाथामां कह्यो जे मंत्र ते तो चिठउ एटले तिष्टतु रहो दूरे अथवा वेगलो रहो, पण तुझप्पणामोवि के० तुजने प्रणाम जे नमस्कार करवो तेथी पण बहुफलो होइ के० घणां एवां जे मोक्ष प्रमुखनां फल तेनो देनार होय छे. नर तिरिएसु वि जीवा के० नर ते मनुष्यने विषे तथा तीर्यंचने विषे पण जीवा जे जीव ते पावंति न डुरकदो

गच्चं के० डुःख ते रोगनां तथा वल्लननां वियोगनां ई त्यादिक डुःख जाणवां, अने दोगच्चं ते दरिद्रपणुं ते न पावंति एटले न पामे.

तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणिकप्प
पायवप्पहिए ॥ पावंति अविग्घेणं॥
जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः—तुह के० ताहरा धर्मनी जे आस्था तेने सम्मत्ते के० सम्यक्त्व कहिये. ते लद्धे के० पामे थके ते ताहरूं सम्यक्त्व केवुं छे चिंतामणिकप्पपायवप्पहि ये के० चिंतामणिरत्न अने कल्पपादप ते कल्पवृक्ष तेथ की पण अधिक छे, एथी पावंति के० पामे अविग्घेणं के० विघ्नरहितपणे जीवा के० नव्य जीव अयरामरंठाणं के० अजरामर स्थानक जे मोक्ष स्थानक ते प्रते पामेछे.४

इअ संथुज महायस ॥ नत्तिप्भर नि
प्भरेण हिअएण॥ता देव दिज्ज बोहिं॥
नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

अर्थः—इअ के० ए रीते संथुज के० संस्तव्यो, म

हायस के० त्रण जगतमां व्याप्त एवा महोटा यशनो धणी एवो जे श्री पार्श्वनाथ ज्ञगवंत ते प्रते केवी रीते स्तव्यो ते कहे बेः—ज्ञत्तिज्ञर के० ज्ञक्तिनो ज्ञर जे समुदाय तेणे करी निप्भरेण के० पूरीत एटले परिपूर्ण ज्ञरयुं एवुं जे हिअएण के० हृदय तेणेकरी स्तव्यो ता देव के० ते माटे हे देव! हे ज्ञगवंत! दिज्ज बोहिं के० द्यो मुऊने, बोधबीज एटले धर्मनुं पामवुं ते, ज्ञवेज्ञवे के० ज्ञवज्ञवने विषे द्यो, पासजिणचंद के० हे पार्श्वनाथ सामान्य केवलीउमां चंड्मा समान ॥ ५ ॥ इति श्री ज्ञड्बाहु स्वामिविरचितं उपसर्गहरस्तोत्रं समाप्तं. एमां पद वीस, संपदा वीस, गुरु अक्तर वीस, लघुअक्तर एकसो पांसठ सर्वाक्तर १८५ बे.

श्री स्तवनोना बूटा शब्दना अर्थ.

जास–जेनी
परे–पेठे
तास–तेने
नयन–आंख
भृंग–भमरो
उरग–साप
प्रतिहत–हणाएलो–हारी गएलो
प्रस्वेद–परसेवो
राग–प्रेम; लाल रंग
चित्र–अजाएब जेवुं
रुधिर–लोही
आमिष–मांस
सहोदर–जेवुं, सरखुं
लोकोत्तर–असाधारण, आश्चर्यकारक

निहार–झाडे फरवुं	संकेत–वायदो
चरमचक्षु–चामडानी आंख	अनुसरीये–चालीए, पाळीए
अवदात–शुद्ध (गुण) आचरण	भातपाणीनो–खावापीवानो
अतिशय–लोकोत्तर गुण	विच्छेद–वियोग–रोकवुं

श्री ऋषभदेवनुं स्तवन.

प्रथम जिणेसर प्रणमीये, जास सुगंधी रे काय ॥ कल्पवृक्ष परे तास, इंद्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे, जगमां तुमशुं रे वाद ॥२॥ विगर धोइ तुज निरमली, काया कंचन वान ॥ नहिं प्रस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं रे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मनथकी, तेमां चित्र न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जनमथी, दूध सहोदर होय ॥४॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार निहार, चरम चक्षु धणी, एहवा तुज अवदात॥५॥ चार अतिशय मूलथी, उगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे

निज अंग ॥ पद्म विजय कहे एह समय प्रनु पालजो, जिम थाउं अखय अन्नंग* ॥ ७ ॥ इति ॥

प्रथम व्रत पूजानुं स्वतन. १.

आवो आवो जशोदाना कंत, अम घर आवोरे ॥ न्नक्ति वत्सल न्नगवंत, नाथ शे नावो रे ॥ एम चंदनवा

---

* स्तवन १ नो अर्थ.

पहेला तीर्थंकर भगवान जेमनुं शरीर सुगंधमय छे. तेमने नमस्कार करीए. कल्पवृक्षने भमराओ सुगंधी लेवा आश्रय करे छे. तेम तेमने नीरखवाने इंद्राणीओना नेत्रो एक नजरे जोइ रहे छे ! हे भगवंत रोगरुपी सर्प तमने नडता नथी, केमके तमने जन्मथी अमृतनो आस्वाद छे. ते रोगरुपी सर्पथी हारी गएला एवा अन्य देवो तमारी साथे जगतमां वाद करी शकता नथी एम हुं मानुंछुं. २ वगर धोएली एवी पण तमारी काया मेल रहीत अने सुवर्ण वर्णी छे. तेमां लगार मात्र पण परसेवो थतो नथी एवा एवा अतिशयवंत आपनुं जे ध्यान धरे छे, तेने आप तारो छो.३. तमारुं मन रागराहित छे, एटलुंज नहीं पण तमारां रुधिर अने मांसमांथी पण जन्मथीज राग (लाल रंग) गयो छे, तेथी दूधना जेवां छे. ४ तमारो श्वासोश्वास कमळ जेवो छे. एवुं तमारुं लोकोत्तर चरित्र छे. वळी चर्मचक्षुवाळा प्राणी तमारो आहार अने निहार जोइ शकता नथी-ए तमारा अतिशयनुं महात्म्य छे. ५ चार अतिशय मूळथीज होय छे. तथा देवताना करेला ओगणीश तथा, ज्ञानावरणी आदि चार घन घातीआं कर्म खप्याथी अगीआर अतिशय ए रीते बधा मळीने चोत्रीश अतिशयो समवायांग सूत्रमां वर्णवेला छे. ५ उत्तम तीर्थंकर भगवानना गुण गातां आपणा अंगमां गुण आवे. पद्म विजयजी महाराज कहे छे के आ वखते हे प्रभु मने पाळजो, के जेथी हुं अखय अने अभंग थाउं अर्थात् मोक्ष मेळवुं.

लाना बोलडे, प्रभु आवी रे ॥ मुठी बाकुल माटे पाछा, वळीने बोलावी रे* ॥ आ० ॥ १ ॥ संकेत करीने स्वा

---

* स्तवन २ ना अर्थ.

ज्यारे चंदनबाळाने घेरथी भगवान पोताना सर्व अभिग्रहमां रुदन न देखावाथी पाछा वळया, त्यारे हे जसोदाना कंत! मारे घेर पधारो. हे भक्तवत्सल भगवंत, शा माटे तमे नथी आवता? एवुं चंदनबाळानुं रुदन युक्त बोलवुं सांभळी पोताना सर्व अभिग्रह पूरण थएला जोइ मुठी बाकळा माटे पाछा वळीने बोलावी. पछी जाणे आज वखते तमे वायदो करी वनमां गया हो नहीं! तेम जो चंदन बाळाने पोते (आ मारी पहेली साध्वी थशे एम) मनमां राखी तो ज्यारे तमने केवळज्ञान थयुं त्यारे तमे दीक्षा आपी छे वट केवळज्ञानी करी. हुं केसरना कीच करी पुजुंछुं तोपण पहेला व्रतना अतिचार थकी हुं ध्रुजुछुं. २ वळी जीव हिंसाना पच्चक्खाण थूलथी करुछुं. अने मन, वचन, अने कायाए करवुं नहीं, करावचुं नहीं, ए छ कोटि पच्चक्खाण हमेशां पाळुछुं. वासी, बोळो, विदल, रात्रीभोजन ए हिंसा टाळुंछुं, अने सवाविश्वानी जीवदया नित्य पाळुंछुं. ३ वळी चुलापर (१) पाणीयारे (२) खांयणीयांपर (३) घंटी उपर. (४) सुवाना ओरडामां (५) जमवाने ठेकाणे (६) देरासरमां (७) पोषधशाळामां (८) नहावाने ठेकाणे (९) वलोणा उपर. (१०) ए रीते दश ठेकाणे दश चंदरुआ बांधीने रहुंछुं. अने जीव जाय एवी वात कोइने कहेवी नहीं. ते व्रतना पांच अतिचार कहे छे, वध के० मारवुं. (१) गाढे बंधने बांधवुं (२) छविछेद-व ळदने नाथवो खांसी करवो वगेरे अंगनो छेद करवो.३, अतिशय गजा उपरांत भार भरवो. (४) तेने चारो पाणी न नीरवुं (५) ए रीते पशुने पीडा न करवी. ४ लौकिक देवगत, गुरुगत ए त्याशी भेदे मिथ्यात्व छे. ते तमारुं आगम सांभळतां आज तेनो नाश थाय छे. वळी चोमासामां घणां कामोमां जतना पाळुं अने

मी गया तुमे वनमां रे ॥ थइ केवली केवली कीध, धरी जो मनमां रे ॥ अमे केसर केरा कीच, करीने पूजुं रे ॥ तोहे पहेले व्रत अतिचार, थकी हुं धूजूं रे॥ आ० ॥ २ ॥ जीव हिंसानां पच्चरकाण, थूलथी करियें रे ॥ डुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनुसरियें रे ॥ वासी बोलो विदल निशिन्नक्त, हिंसा टालुं रे ॥ सवा विश्वा केरी जीव, दया नित्य पालुं रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दश चं दरुआ दश ठाण, बांधीने रहियें रे ॥ जीव जाये एह वी वात, केने न कहियें रे ॥ वध बंधनने छविच्छेद, न्ना र न न्नरियें रे ॥ न्नात पाणीनो विच्छेद, पशुने न करियें रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ लौकिक देव गुरु मिथ्यात्व, त्र्याशी न्नेदे रे ॥ तुज आगम सुणतां आज, होय विछेदे रे ॥ चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ॥ पगले पगले महाराज, व्रत अजुवालुं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ एक

आ रीते डगले डगले मारा व्रतने निरमळ करुं. ५ एक श्वास लेउं तेटलामां सो वार तमने याद करुं अने विनंति करुंछु के चंदनबाळानी पेठे अमने पण मोक्ष आपो, माछी हरिबळे एक माछलानी दया पाळी तेथी तेने ए व्रत फळदाता थयुं, तेम हुं ए व्रत पालुं, अने शुभ वीर स्वामीना चरण कमळना पसायथी नित्य मारे दीवाळी हो. ६

सास मांहे सो वार, समरुं तुमने रे ॥ चंदन बाला ज्युं सार, आपो अमने रे ॥ माठी हरिबल फलदाय, ए व्रत पाली रे ॥ शुभ वीर चरण सुपसाय, नित्य दीवाली रे ॥ आ० ॥ ६ ॥

जयवीयरायना छुटा शब्दना अर्थ.

जय–जयवंता वर्तो
वीयराय–वीतराग
जग–जगत
गुरु–गुरु
होउ–होजो
ममं–महारे
तुह–तारा
पभावओ–प्रभावथी
भयवं–हे भगवन्
भव–संसारनो
निव्वेओ–निर्वेद–उदासीपणुं
मग्गाणुसारिआ–मार्गानुसारेपणुं
इट्ठ–इष्ट, इच्छित (वांछित)
फल–फल
सिद्धि–सिद्धि (प्राप्ति)
विरुद्ध–अवलुं, उलटुं.
चाओ–त्याग
गुरुजण–मातापितादि वडेरा
पूआ–पूजा
परत्थ–बीजानो अर्थ
करणं–करवुं
सुह–सारा
तव्वयण–तेमनां वचन
सेवणा–सेवा
आभवं–महारे संसार होय त्यां सुधी
अखंडा–निरंतर–हमेशां
वारिज्जइ–वार्युं छे
जइवि–जोपण
निआणं–नियाणा (नुं)
बंधणं–बांधवुं, करवुं.
समय–सिद्धांतने विषे
तह–तो
सेवा–भक्ति
तुम्ह–तमारा
चलणाणं–पगनी, चरणनी
दुक्ख–दुःख (नो)

खओ–क्षय	सर्व–सर्व
कम्म–कर्म (नो)	मंगल–मंगल
समाहि–समाधि	मांगल्यं–मांगलिक
मरणं–मरण	कारणं–कारण
बोहिलाभो–बोधिबीजनो लाभ	प्रधानं–मुख्य, उत्तम
संपज्जओ–थाओ	धर्माणां–धर्मोमां
मह–महारे	जैनं–जिनदेवनुं
एअं–ए (चार)	जयति–जयवंतु वर्त्ते छे
नाह–नाथ	शासनं–शासन–हुकम
पणाम–प्रणाम	

॥ अथ जयवीयराय. ॥

जय वीयराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठ फल सिद्धी॥१॥

अर्थः–जय के० जयवंता वर्त्तो वीयराय के० श्री वीतराग राग द्वेषरहित, जगगुरु के० त्रण जगतना गुरु; ए भगवंतने आशीष दीधी. हवे पोताना मननो अभिप्राय कहे छे. होउममं के० होजो मुजने तुह्प भावउ के० तमारा प्रभावथी भयवं के० हे भगवन् भवनिव्वेउ के० भवनो निर्वेद एटले भवरूप बंदीखाना थी विरक्तपणुं, मग्गाणुसारिया के० (कदाग्रहनो त्या

ग करी) ताहरा मार्गने अनुसारे चालवुं. तथा इठफल सिद्धि के० इष्टफल वांछित फलनी सिद्धि एटले प्राप्ति थाउ. ॥ १ ॥

लोगविरुद्ध च्चाउ ॥ गुरुजणपूआ
परह्वकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्व
य ॥ ण सेवणा आन्नवमखंडा॥२॥

अर्थः—लोगविरुद्ध के० लोक विरुद्ध कर्त्तव्य एवी जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक तेनो च्चाउ के० त्याग एटले छांमवुं थाउ, वली गुरुजणपूआ के० मातापिता तथा धर्मना दातार जे सद्गुरु तेमनी पूजा न क्ति करवी अने परह्वकरणंच के० परोपकार करवो तथा परना अर्थनुं करवुं. सुहगुरुजोगो के० सद्गुरु जे शुद्ध प्ररूपक कालानुसारे शुद्ध क्रियाना खप करनारा गुरु तेनो जोग एटले समागम थाउ, अने तव्वयण सेवणा० तेज रुमा गुरुना वचननी सेवा एटले वानां ते आन्न वमखंमा के० आन्नव जे संसार एटले संसारावस्थाल गे ज्यांसुधी संसारमां रहुं त्यांसुधी मुजने अखंमा के० अखंम परिपूर्ण होजो. ॥ २ ॥ ए प्रणिधान मननी स

माधिनी याचना करी. ए बे गाथा गणधरजीनी करे ली छे. हवे आगली त्रण गाथा पूर्वाचार्यकृत छे. तेनो अर्थ लखिये छैये.

वारिज्जइ जइवि निआ, ण बंधणं वी
अराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज
सेवा ॥ नवे नवे तुम्ह चलणाणं॥३॥

अर्थः—वारिज्जइ के० वार्युं छे एटले निवारण कर्युं छे जइवि के० यद्यपि नियाणानुं बांधवुं, वीयराय के० हे वीतराग तुहसमए के० ताहरा सिद्धांतने विषे, एटले हे वीतराग तारा सिद्धांतोमां नियाणानुं बांधवुं निषेध्युं छे, तहवि के० तथापि एटले तोपण एटलुं मागुं छुं के मम के० मुजने हुज्ज सेवा के० होजो सेवा नवेनवे के० नवनवने विषे तुम्हचलणाणं के० तमारा चरणकमलनी सेवा ते मने नवनवमां होजो एटलुं मांगुछुं. ॥ ३ ॥

उक्कक्कर कम्मक्कर ॥ समाहि मर
णंच बोहिलानो अ ॥ संपज्जउ मह

एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥

अर्थः—डुरकरकउ के० मननां डुःख तथा शरीर संबंधी जे संसारादिक डुःख तेनो क्षय, कम्मरकउ के० अशुभ कर्मनो क्षय. समाहिमरणं च के०समाधि मरण, बोहिलाभो अ के० वली बोधबीजनो लाभ. ते भवांतरे जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं ते संपज्जउ के० संपजो, प्राप्त थाउ. मह के० मुजने एअं के० ए पाछल कह्या जे बोल ते, तुह के० तुजने नाह के० हे नाथ, पणामकरणेणं के० प्रणाम करवे करीने. ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्या
ण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां॥
जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—हवे जिनशासनने मंगलिकने अर्थे संस्कृत श्लोके करी आशीर्वाद आपे छे. सर्व मंगलमांगल्यं के० सर्व मंगलिकमां उत्कृष्ट मंगलिक, अने सर्व कल्याणनुं कारण छे, अने जेमां जीव दयानी मुख्यता छे माटे सर्व धर्मोमां प्रधान छे, एवुं जिनेश्वरनुं शासन जयवंतु वर्त्तो ॥५॥ एमां पद सोल, श्लोक एक, गुरु अक्षर वा

वीस, लघु अक्षर १४० सर्वाक्षर १६१.

अरिहंत चेइआणंना छुटा शब्दना अर्थ.

अरिहंत–अरिहंत प्रभु
चेइआणं–चैत्योनां
वंदण–नमस्कारना
वत्तिआए–फळने अर्थे
पूअण–पूजन
सक्कार–सत्कार
सम्माण–सन्मान
निरुवसग्ग–उपसर्ग रहीत
सद्धाए–श्रद्धा वडे
मेहाए–बुद्धि वडे
धीईए–धीरज वडे
धारणाए–धारणा वडे
अणुप्पेहाए–वारंवारसंभारवावडे
वड्ढमाणीए–वधती

॥ अथ अरिहंतचेइआणं ॥

अरिहंतचेइआणं ॥ करेमि काउस्स. ग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ सद्धाए, मेहाए, धीईए ॥ धारणाए, अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ अन्नत्थ ॥

अर्थः—अरिहंत चेइआणं के० श्री अरिहंत तीर्थं करनां जे चैत्य प्रतिमा छे. ते निमित्ते, करेमि काउस्स ग्गं के० हुं काउस्सग्ग करुंछुं, ते वास्ते तेनां कारण क हेछे. ईहां अरिहंत चैत्य वांदवा निमित्त काउस्सग्ग कर शे. ते माटे अभ्युपगम एटले अंगीकार संपदा वे प दनी प्रथम संपदा थई.

वंदणवत्तिआए के० मनशुद्ध प्रणामनुं करवुं ते निमित्ते एटले तीर्थंकरना चैत्यने वांदतां जे फल होय ते फल काउस्सग्ग कस्याथी थजो. पूअणवत्तिआए के० फूलचंदनादिके करी पूजा कस्याथी जे फल होय तेने अर्थे, सक्कारवत्तिआए के० वस्त्र आभरणादिके करी स त्कार करवाथी जे निर्जरा थाय तेने अर्थे, सम्माणव त्तिआए के० सन्मान ते स्तवन स्तोत्रादिक गुण वर्ण व्याथी जे फल थाय तेने अर्थे, बोहिलाभवत्तिआए के० इहभवे तथा परभवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति सुखे थाय तेने अर्थे, निरुवसग्गवत्तिआए के० ज्यां जन्म जरा ने मरणरूप उपसर्गनो नाश थइ गयो छे एवुं जे मोक्ष ते पामवाने अर्थे काउसग्ग करुं, एमां वंदण वत्तिआए इत्यादिक काउस्सग्ग करवानां निमित्त कह्यां ते माटे

ए बीजी निमित्त संपदा ब पदनी जाणवी.

हवे काउस्सग्ग जे रीते सफल थाय ते रीत क हे छे. ए काउस्सग्ग हुं सद्धाए के० श्रद्धाये करी सहित, ज्ञावे करुं, पण कोइना बलात्कारे न करुं. मेहाए के० मेधा ते रूडी बुद्धिये करी लाजालाज्ञ जाणी करुं, प ण माठी बुद्धिये नही करुं. धीइए के० धृति ते मननी समाधिये करुं, पण राग द्वेषे करी करुं नही, धारणा ए के० अरिहंतना गुण हृदयमां धारण करतो छतो काउस्सग्ग करुं. अणुप्पेहाए के० अरिहंतना गुण म नने विषे वारंवार संज्ञारतो थको काउस्सग्ग करुं. ए म वढ्ढमाणीए के० ए श्रद्धा, मेधा धृति, धारणा ने अनुप्रेक्षा ए पांच बोल वृद्धिवंत थाय एम ज्ञावनी वि- शेषे वृद्धि करवाने अर्थे. ठामि काउस्सग्गं के० हुं का उस्सग्ग करुंछुं. ईहां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंत थ वाने अर्थे काउस्सग्ग करुं. ते माटे ए सात पदनी त्रीजी हेतु संपदा थई. बधां मली पद १५, संपदा ३, गुरुअक्षर १६, लघु अक्षर ७३, सर्वाक्षर ७७. ईहां अ न्नब उससिएणं इत्यादिक केहवुं तेना अर्थ आगल क ह्या छे. तेनी पांच संपदा एनी साथे मेलवीये त्यारे

वधी मली आठ संपदा थाय, ने तेतालीस पद थाय गुरुअक्षर १९ थाय लघुअक्षर २०० थाय. सर्वाक्षर २१९ थाय.

विधिः—अरिहंत चेइआणं पछी अन्नथ उससि-एणं केहेवुं पछी एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कही एक थोय केहेवी इति चैत्यवंदन विधिः

कल्लाण कंदंना छुटा शब्दना अर्थ.

कंदं—मूल
जिणंदं—जिनेंद्रने
तओ—ते पछी
मुणिंदं—मुनिओना इंद्रने
पयासं—प्रकाश करनारने
सुगुण—उत्तम गुण
ठाणं—स्थानकने
भत्तीइ—भक्तिये करीने
सिरि—श्री
समुद्द—समुद्र
पत्ता—पाम्या
दितु—आपो
सुइ—शुचि. पवित्र
सारं—सारने
विंद—वृंद
वंदा—वांदवा योग्य
वल्लीण—वेलोना
विसाल—विशाळ—मोटा
निव्वाण—निर्वाण
जाण—रथ
कप्पं—जेवुं
पणासिय—नाश कर्याछे
असेस—समस्त
कुवाइ—कुवादि (पाखंडी)
दप्पं—दर्प (अहंकार)
मयं—मत
बुहाणं—पंडितोना
निच्चं—नित्य, हमेशां
जग—जगत्

पहाणं–प्रधान
कुंद–मचकुंदनुं फुल
इंदु–चंद्र
गो–गाय
खीर–दूध
तुसार–हिम
वन्ना–वर्णवाळी
सरोज–कमल
हथ्था–हाथ वाळी
कमले–कमलने विषे
निसन्ना–बेठेली
वाएसिरि–वागीश्वरी
पुथ्थय–पुस्तक
वग्ग–वर्ग (समूह)
सुहाय–सुखने माटे
सा–ते
अम्ह–अमने
पसथ्था–उत्तम

॥ अथ कल्लाणकंदनी स्तुति. ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं तउ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पया सं सुगुणिक्कठाणं ॥ भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥

अर्थः–कल्लाणकंदं के० मंगलिकना कंद रूप एवा प्रथम जिनेंद्र श्री ऋषभदेव प्रत्ये तथा श्री शांतिनाथ तउ के० तेवारपछी नेमिजिणंद मुनींद्र प्रत्ये, वली श्री पार्श्वनाथ ते लोकालोकना पयासं के० प्रकाश करना र, तथा सुगुणिक्कठाणं के० भलाज्ञानादिक गुणना एक अद्वितीय स्थानक छे ते प्रत्ये, अने शासनाधीश्वर

श्री वर्द्धमानस्वामी प्रत्ये जत्तीइवंदे के० जक्तिये करी ने वांडुहुं. ॥ १ ॥

अपार संसार समुद्दपारं ॥ पत्ता सि
वं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा
सुरविंदवंदा ॥ कल्लाण वल्लीण वि
सालकंदा ॥ ए ॥

अर्थः—हवे समस्त तीर्थंकरनी बीजी थोय कहे ठे. अपार के० नथी जेहनो ठेमो एवो जे संसाररूप समुद्द तेना पारने पत्ता के० पाम्या ठे ते मुऊ प्रते सुइक्कसारं के० जलुं जे अनुष्ठाननुं एक अद्वितीय फलरूप सिवं के० मोक्ष ठे ते दिंतु के० द्यो. सव्वजिणंदा के० ते समस्त जिनेंद्रो कहेवा ठे ? सुरविंदवंदा के० देवता उना वृंद तेने वांदवा योग्य ठे, वली कल्याणरूप वेली ना विसाल के० महोटा कंद ठे. ॥ २ ॥

निव्वाणमग्गे वर जाण कप्पं ॥ पणा
सियासेसकुवाइदप्पं ॥ मयं जिणा
णं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं ति
जगप्पहाणं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे ज्ञान वर्णनरूप त्रीजी थोय कहे छे. जे निव्वाणमग्गे के० मोक्षमार्ग तेने विषे वर के० प्रधान, जाणकप्पं के० यानकल्प एटले रथ सदृश छे अने जेणे पणासियासेसकुवाइदप्पं के० अशेष समस्त कुवादिक अन्यदर्शनीनो जे दर्प एटले अहंकार तेने पणासिय एटले नाश पमाड्यो छे. एवो मयं के० मत ए श्री सिद्धांत ते जिणाणं के० जिन श्रीवीतरागनो नाषेलो ते सरणं बुहाणं के० पंमितोने आधारजूत अने तिजग के० त्रण जगतने विषे पहाणं के० प्रधान एवुं जे ज्ञान तेने हुं निच्चं के० नित्यप्रत्ये सदैव नमामि के० नमस्कार करुंछुं. ॥ ३ ॥

कुंदिंदु गोरक्कीर तुसार वन्ना ॥ सरो
ज हन्ना कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी
पुच्छय वग्ग हत्ता ॥ सुहाय सा अ
म्ह सया पसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—हवे शासनना अधिष्टायक देव देवीना वर्णननी चोथी थोय कहे छे. कुंद के० मचकुंदनुं फूल, इंदु के० चंद्रमा, गोरक्कीर के० गायनुं दुध अने तुसार के० हिम, एना सरखो जेना शरीरनो वन्ना के० वर्ण

छे. जेना हत्था के० हाथने विषे सरोज के० कमल छे, वली कमलेनिसन्ना के० कमलने विषे बिराजमान छे. वली पुछयवग्ग हत्था के० हाथने विषे पुस्तकोनो समुह छे जेने एवी वाएसिरी के० वागीश्वरी नामे देवी ते अम्ह के० अमने सुहाय के० सुखने अर्थे सया के० सदा सर्वदा पसत्था के० प्रशस्त छे प्रधान छे. इति पंचतीर्थिनी स्तुति समाप्त. ॥ ४ ॥

अथ–सिद्धचक्रनी थोय.

सिद्धचक्र नमी पूजी थूणीऍं, अरिहंतादिक नव पद जाणियें, श्रीपाल चरित्र सदा सूणी ऍं, विमलेसर वीर विघन हणियें ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ आ थोय चार वार कही शकाय ॥

अर्थः–सिद्धचक्रजीने नमी पूजीने स्तवना करीए अने अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्श ज्ञान, चारित्र अने तप ए नव पदनो जाप करीए अ हमेशां श्रीपाल चरित्र सांभळीए तो सिद्ध चक्र अधिष्ठायक श्री विमलेश्वर देव श्रीपाल अने मय सूंदरीनी पेठे विघ्ननो नाश करे अने सुख संपत्ति आ

संसारदावाना छुटा शब्दना अर्थ.

संसार—संसार
दाव—वन (नो)
अनल—अग्नि
दाह—ताप
नीरं—पाणी
संमोह—मोह
धूली—रज—धूल
हरणे—काढवामां
समीरं—वायरो
माया—कपट
रसा—पृथ्वी
दारण—उखेडवाने
सीरं—हल
वीरं—महावीरने
गिरिसार—मेरु पर्वत
धीरं—धीर—अचल
भाव—भाव
अवनाम—नमवुं
मानव—माणस (ना)
इन—स्वामी
चूला—मुगट
चलोल—देदीप्यमान
आवलि—श्रेणी

मालितानि—पूजेला
संपूरित—पूर्या
अभिनत—नमेला
लोक—लोक (भक्तलोक)
समीहितानि—मनोवांछित
कामं—यथेच्छपणे
पदानि—पग
बोध—ज्ञान (वडे)
अगाधं—गंभीर
सुपद—सुंदर पद
पदवी—रचना
पूर—समूह
अभिराम—मनोहर
जीव—जीव (नी)
अहिंसा—दया, रक्षा.
अविरल—अंतररहित
लहरी—लेहेर, तरंग
संगम—मलवे
अगाह—अगाध, अपार
देहं—शरीर
चूला—चूलिका
वेलं—वेली
गुरु—मोटा

गम–सरखा पाठ
मणि–रत्न
संकुलं–भरेलुं
दूर–छेटे
पारं–पार
आगम–सिद्धांत
जलनिधि–समुद्र
सादरं–आदरसहित
साधु–रुडे प्रकारे
सेवे–सेवुंछुं
आमूल–मूलसुधी
आलोल–चपल, डोलतुं.
बहुल–घणा
परिमल–सुगंध
आलीढ–आसक्त
लोल–चपल
अलि–भमरो
माला–श्रेणी
झंकार–गुंजार
आराव–शब्द
अमल–निर्मल
दल–पांदडुं
आगार–भुवन
भूमि–जमीन
निवासे–निवास (वसतुं)
छाया–कांति
संभार–समूह
करे–हाथवाली
तार–देदीप्यमान
हार–हार
वाणी–जिनवाणी
संदोह–समूह
देहे–देहवाली
विरह–वियोग, विरह
वरं–वरदान
देहि–आप

॥ अथ संसारदावानी स्तुति. ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोह
धूलीहरणे समीरम् ॥ माया
रसादारणसारसीरं, नमामिवीरं

गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भा
वावनामसुरदानवमानवेन, चूला वि
लोलकमलावलिमालितानि ॥ संपू
रिताभिनतलोकसमीहितानि, का
मं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥
बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभि
रामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंग
मागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगम
मणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागम
जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥
आमूलालोलधूलीबहुलपरिमला
लीढलोलालिमाला, झंकारारा
वसारामलदलकमलागारभूमीनि
वासे ॥ छायासंभारसारे वरकम
लकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदो
हदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि

सारं ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—संसारदावानल के० संसाररूप वननो जे अग्नि. तेना तापने उलववाने पाणी समान, अज्ञानरूप रजने हरवाने वायु समान, कपटरूप जे पृथ्वी तेने उखेरूवाने तीक्ष्ण हल समान अने मेरु पर्वतनी पेठे अचल, एवा श्री वीर जगवान प्रत्ये हुं नमस्कार करुं. १

जावावनाम के० जावे करीने नम्या एवा जे सुर (वैमानिक अने ज्योतिषिक देवता), दानव (ज्ञवनपति तथा व्यंतर देवता) अने मनुष्य, तेना जे इन के० स्वामी, तेना मुकुट उपर रहेली देदीप्यमान एवी जे कमलनी श्रेणि तेणे पूज्यां छे एवां, वली त्रिकरण शुद्धिए करी नमनार जव्यजीवोनां मनोवांछित जेणे सम्यक् प्रकारे पूर्यां छे एवां, ते श्री जिनराजनां चरण प्रत्ये यथेच्छपणे हुं नमुं छुं. ॥ २ ॥

बोधागाधं के० ज्ञाने करीने गंजीर छे, तथा मंगलसुक्किदं इत्यादि सुंदर पदोनी श्रेणी रचनारूप वाणीनो जे समूह, तेणे करीने मनोहर छे एवा, तथा

जीवोनी रक्षारूप अंतर रहीत एवा जे तरंगो, तेना परस्पर मलवे करीने अपार छे देहस्वरूप जेनुं एवो, तथा सिद्धांतनी चूलिकारूपिणी वेलो छे जे समुद्रने विषे एवो, तथा मोटा एवा सरखा पाठरूप जे रत्नो तेणे करी नरेलो छे एवो, तथा जेनो कांठो घणो दूर छे (एटले समुद्रनी पेठे सिद्धांतनो पार पामवो महा दुर्लन्न छे. एटले संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलज्ञानी सिवाय वीजाथी जेनो पार पमाय नहीं) एवो, तथा प्रधान छे, पूज्य छे, एवो जे श्री वीरजिन संबंधी सिद्धांतरूप समुद्र ते प्रत्ये आदर सहीत सम्यक् प्रकारे हुं सेवुंछुं. ॥ ३ ॥

आमूलालोल के० मूललगे मोलतुं एवुं, वली मकरंद सुगंधना कणीया तेमां घणा सुगंधने विषे मग्न एवा चपल नमराजनी श्रेणीना गुंजार तेना शब्दोए करीने जे प्रधान छे एवुं; तथा निर्मल पांदमांए करी सहित एवा कमलनी उपर घर छे जेनुं, तेना मध्य नागनी नूमिने विषे शय्या छे, तेने विषे वसवुं छे जेनुं एवी, (१) वली कांतिना समूहे करी प्रधान छे एवी, (२) वली प्रधान कमल छे जेना हाथने विषे एवी, (३) वली

दीप्यमान हारे करीने सुंदर छे हृदय जेनुं अथवा जेना नेत्रनी कीकी सुरनरने हरावनारी छे एवी, (४) तथा द्वादशांगी रूप वाणीनो समूह एज छे शरीर जेनुं एवी, (५) हे श्रुत देवि ? मुजने प्रधान एवुं जे मोक्ष ते संबंधी वरदान आप. ॥ ४ ॥

स्नातस्याना छुटा शब्दना अर्थ.

स्नातस्य–नवरावेला, नाहेला–ना
अप्रतिमस्य–निरूपम
शिखरे–शीखर उपर
शच्या–इंद्राणीए.
विभोः–प्रभुना
शैशवे–बालपणमां
रूप–रूप
आलोकन–जोवुं
विस्मय–आश्चर्य
आहृत–भोगव्यो
रस–रस, पारो.
भ्रांत्या–भ्रांतिवडे
भ्रमत्–भमती
चक्षुषा–आंखवडे
उन्मृष्ट–लूछ्युं
नयन–नेत्र, आंख
प्रभा–कांति
धवलितं–धोळुं करेलुं
क्षीर–क्षीरसमुद्र
उदक–पाणी
आशंकया–आशंकावडे
वक्त्रं–मुख
यस्य–जेनुं
पुनःपुनः–वारंवार
हंस–राजहंस
अंस–पांख, खभो.
आहत–उडाडी
पद्म–कमल
रेणु–रज
कपिश–रातुं पीळुं
अर्णव–समुद्र
अंभो–जल

भूतैः-भर्या
कुंभैः-कलशोए, घडाओए
अप्सरसां-अप्सराओनां
पयोधर-स्तन
भर-समूह
प्र-अति
स्पर्द्धिभिः-स्पर्धा करनारा
कांचनैः-सोनाना
येषां-जेमना
मंदररत्न-मेरु
शैल-पर्वत
जन्म-जन्म
अभिषेक-अभिषेक
कृतः-करेलो
तेषां-तेमना
नतोऽहं-नमेलो हुं
क्रमान्-चरण कमलोने
प्रसूतं-उत्पन्न थयुं
गणधर-गणधरे
रचितं-रच्युं, रचेलुं
द्वादश-बार
अंगं-अंग (सूत्र) } द्वादशांगी
चित्रं-आश्चर्यकारक
बह्वर्थ-घणा अर्थ (वडे)
युक्तं-सहित

वृषभैः-नायकोए, धोरीओए
धारितं-धारण करेलुं
बुद्धिमद्भिः-बुद्धिवानोए
अग्र-मुख्य
द्वार-बारणुं
भूतं-समान
फलं-फल
ज्ञेय-जाणवायोग्य
भाव-भाव, पदार्थ.
प्रदीपं-दीवो (तेने)
भक्त्या-भक्तिये
नित्यं-सदा, हमेशां.
प्रपद्ये-अंगीकार करुंछुं
श्रुतं-सिद्धांत
अहं-हुं
अखिलं-समस्त, आखुं
निष्पंक-वादलरहित
व्योम-आकाश
नील-श्याम
द्युति-कांति
अलस-मदघूर्णित
दृशं-आंखवाला
बाल-नानो (बीजनो)
चंद्र-चंद्र, चांदो.
आभ-कांतिवाला

दंष्ट्रं–दाढोवाळा
मत्तं–मदोन्मत्त
घंटा–घंट (ना)
रवेण–शब्द
प्रसृत–प्रसरतुं
मद–मद (नुं)
जलं–पाणी
पूरयंतं–पूरतो
समंतात्–सर्व ठेकाणे
आरूढो–उपर बेठेलो. चढेलो
दिव्य–दिव्य
नागं–हाथी (उपर)
विचराति–विचरे छे, चाले
गगने–आकाशमां
काम–इच्छा, मनोरथ.
दः–देनारो
कामरूपी–स्वेच्छाचारी
यक्षः–जक्ष
सर्वानुभूति–सर्वानुभूति(वि॰
दिशतु–बतावे, आपे
कार्येषु–कार्योमां

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति. ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे श
च्या विभोः शैशवे, रूपालोकनवि
स्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोद
काशंकया, वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स
जयति श्री वर्द्धमानो जिनः॥ १॥
हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्ण
वांभोभृतैः, कुंभैरप्सरसां पयोधर

भरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः,सर्वैःसर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमात् ॥ १ ॥ अर्हद्वक्त्र प्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगण वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभाव प्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत महमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥२॥ निष्पंकव्योमनील द्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं,मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु

सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—स्नातस्या के० इंद्राणीए मेरु पर्वतना शिखर उपर न्हवराव्या एवा, अने उपमा नहीं आपी शकाय एवा, प्रभु वीर भगवानना बालपणाने विषे, तेमना रूपने जोवाथी उपजेलो जे आश्चर्य तद्रूप भोगव्यो एवो जे रस तेनी भ्रांतिथी जेनी आंखो भमी रही छे, एवी इंद्राणीए नेत्रनी कांतिथी उजलुं कर्युं एवुं जे प्रभुनुं मुख, ते क्षीर सागरना जलनी आशंकाये करीने लुब्ध्युं होयनी एवुं लागे छे एवा श्री वीर भगवान वारंवार जयवंता वर्त्ते छे ॥ १ ॥

हंसांसाहत के० राजहंसनी पांखोथी उडाडेली कमलनी रजथी रातुं पीलुं थएलुं एवुं क्षीरसागरनुं जल ते वडे भरेला, अने अप्सराउना स्तनना समूहोनी साथे स्पर्द्धा करनार एवा सोनाना कलशो वडे मेरु पर्वतना शिखर उपर जे तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक सुर असूरना इंद्रोना समूहोए करेलो छे, ते सर्व तीर्थंकरोना चरणकमल प्रत्ये हुं नमेलो छुं. ॥ २ ॥

अर्हच्चक्र के० अरिहंत प्रजुना मुखथी प्रगट थ युं, अने गणधरोए रचेलुं तथा आश्चर्यकारक अने घ णा अर्थोए करी सहित, तथा बुद्धिमंत एवा साधुजना समुदाय तेना नायकोए धारण कर्युं एवुं, अने मोक्ष रूपी घरना मुख्य द्वार समान तथा व्रत अने चारित्र नुं फल छे जेमां एवुं, अने जाणवा योग्य जे जाव तेने विषे दीवा समान एवुं, तथा सर्व लोकने विषे सारजूत एवुं मोटुं द्वादशांग रूप समस्त सिद्धांत तेने जक्तिये करीने निरंतर हुं अंगीकार करुंछुं. ॥ ३ ॥

निष्पंकव्योम के० वादले रहित एवुं जे आका श तेनी कांतिना जेवी श्याम छे कांति जेनी एवो, तथा मदघूर्णित छे नेत्र जेनां, तथा बीजनाचंद्रमानी कांति सरखी दाढो छे जेनी एवो, मदोन्मत अने घं टना शब्दनी साथे प्रसरतुं एवुं जे मदवारि ते प्रत्ये सर्व जगायें पूरतो एवो दिव्यस्वरूपी जे हाथी ते उपर बेठो एवो स्वेच्छाचारी तथा मनोरथने आपनारो एवो सर्वानुजूति नामा यक्ष आकाशने विषे विचरे छे ते म ने निरंतर सर्व कायान विषे सिद्धि देखाडो. ॥ ४ ॥

पुख्खरवरदीवड्ढेना छुटा शब्दना अर्थ.

पुख्खरवर-पुष्करवर
दीवड्ढे-अरधा द्वीपमां
धायइ-धातकी
खंडे-खंडमां
जंबुदीवे-जंबुद्वीपमां
विदेहे-महाविदेह क्षेत्रमां
धम्माइगरे-धर्मनी आदिना करनारने
नमंसामि-नमस्कार करुंछुं
तम-अज्ञान (रूप)
तिमिर-अंधकार
पडल-समूह
विद्धंसणस्स-नाश करनारने
सुरगण-देवसमूह
नरिंद-चक्रवर्त्ती (ओए)
महिअस्स-पूजेलाने
सीमा-मर्यादाने
धरस्स-धारण करनारने
पप्फोडिअ-अत्यंत तोडी नाखी
मोहजालस्स-मोहजालने
जाइ-जन्म, जाति
सोग-शोक
पणासणस्स-नाश करनारने
पुख्खल-पुष्कल, घणुं.
विसाल-विशाल
आवहस्स-लावनार, करनारने.
को-कोण
दाणव-दानव
अच्चिअस्स-पूजेला
उवलब्भ-पामीने
करे-करे
पमायं-प्रमाद, आलस
सिद्धे-सिद्ध एवा
भो-हे (लोको)
पयओ-आदरवालो
जिणमए-जिनमतने
नंदी-समृद्धि
देवं-वैमानिक देवने
नाग-नागदेव
सुवन्न-ज्योतिषिदेव
किन्नर-व्यंतरदेव
सब्भूय-सद्भूत, सत्य
लोगो-लोक,प्रकाश,त्रिकालज्ञान
जथ्थ-ज्यां
पइठ्ठिओ-रहेलुं
जगमिणं-आ जगत

तेलुक्क-त्रण लोक
मच्च-मनुष्य
असुर-भवनपति
वड्डउ-वृद्धि पामो
सासओ-शाश्वत
विजयओ-विजयवंत थाओ
उत्तरं-प्रधान
सुअस्स-श्रुत सिद्धांतने
भगवओ-भगवंत

॥ अथ पुरक्खरवरदीवड्ढे लिख्यते ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥ भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सणस्स सुरगण नरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खल विसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्ससारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं

नाग सुवन्न किन्नरगण, सप्नूय न्नाव च्चिए ॥ लोगो जहू पइठिउ जगमिणं, तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढउ ॥ ४ ॥ सुत्रस्स न्नगवउ ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए० ॥

अर्थः—पुस्करवर दीवढ्ढे के० अरधा पुष्करवर द्वीपने विषे वे वे, धातकि खंरूने विषे वे वे, तथा जंबुद्वीपने विषे एक एक ए रीते अढीद्वीपने विषे पांच न्नरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेह क्षेत्र. सर्व मली पंदर कर्मन्नूमि क्षेत्रने विषे धर्मनी आदिना करनार एवा श्री तीर्थंकर देवने हुं नमस्कार करुं हुं. ॥ १ ॥

तमतिमिर के० अज्ञान रूप जे अंधकार, तेनो समूह तेनो विनाश करनार एवो, वली देवताना समूह अने राजाउ तमणे पूज्यो एवो, अने मोहमिथ्यात्व रूप जालना स[illegible] [illegible] नेणे फोड्यो ठे एवो,

अने नय निक्षेपादिक मर्यादानो धरनार. एवो जे सिद्धांत ते प्रत्यें हुं वांदु बुं. ॥ २ ॥

जाइ जरा के० जन्म, जरा, मरण अने शोग. ते नो नाश करनार, वली मंगलिकनो करनार अने सं पूर्ण विशाल एवा आनंदरूप मोक्ष सुखनो करनार छे. वली वैमानिक अने पाताल वासी देवो तथा राजा ते मना जे समूह तेमणे पूज्यो एवो जे श्री सिद्धांत, ते नो रहस्यपामीने कोण जव्य जीव (विवकी पुरुष) प्रमाद करे. ॥ ३ ॥

सिद्धेनो के० हे ज्ञानवंत लोको उपर वर्णवेलो एवो नयनिक्षेप प्रमाणादिके करी जे सिद्ध एटले नि ष्पन्न करेलो एवो जिनमत एटले श्री तीर्थंकरनो प्रका शेलो जे सिद्धांत, ते जिनमतना प्रसादथी मारे चारि त्रने विषे हमेशां सदा समृद्धि थाउ. ते संयम केवुं छे के वैमानिक देवता, पाताल वासी नागेंद्र, जेनो सुव र्ण जेवो वर्ण छे एवा ज्योतषी, तथा व्यंतरना जे समूह, तेमणे साचा जावे करीने पूज्यो एवो छे. वली लोका

लोकनुं त्रिकाल विषयी ज्ञान, जे सिद्धांतने विषे रह्युं छे एवो, त्रणे जग एटले उर्ध्व, अधो, अने तिर्गो ए त्रण लोक मध्ये मनुष्य, देव, तिर्यंच, अने नारकी इत्यादिक आ जगमिणं के० आ सर्व जगत जे सिद्धांतना बले करी जणाय छे, एवो सिद्धांत रूप धर्म वृद्धिने पामो. ते श्रुत धर्म अर्थथी सदैव शाश्वतो छे. पर वादीउने जीतवाथी विशेषपणे करी विजयवंतो छे वली जेम चारित्र धर्मने घणुं उत्तरोत्तर प्रधानपणुं थाय, तेम सिद्धांत वृद्धिने पामो. सुअस्स के० (१) वली ते श्रुतज्ञान केवुं छे ? महिमावंत छे. तेने आराधवाने अर्थे काउस्सग्ग करुं छुं; (२) हे भगवंत श्रुत सिद्धांतने आराधवा भणी काउस्सग्ग करुं छुं; (३) एवा श्रुत सिद्धांत रूप भगवंतने आराधवाने अर्थे काउस्सग्ग करुं छुं. ॥ ४ ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणंना छुटा शब्दना अर्थ ॥

गयाणं-गएलाने, पामेलाने
परंपर-परंपराए
लोअ-लोक(ना)
अग्गं-अग्रभागने
उवगयाणं-पामेलाने
देवाण-देवताओना

वि-पण
पंजलि-हाथ जोडीने
तं-तेने
देवदेव-देवताना राजा
महिअं-पूजेलाने
सिरसा-माथावडे
महावीर-महावीरस्वामीने
इक्को-एक
वसहस्स-वृषभ सरखाने
वद्धमाणस्स-वर्द्धमानस्वामीने
सागराओ-समुद्रथी
तारेइ-तारे छे
नरं-पुरुष
व-वली
नारिं-नारीने, स्त्रीने.

उज्जिंत-गिरनार
सेल-पर्वतना
सिहरे-शिखर उपर
दिक्खा-दिक्षा
नाणं-केवल ज्ञान
निसीहिआ-मोक्ष कल्याणक
जस्स-जेमनुं
अरिट्ठनेमि-अरिष्टनेमि
चत्तारि-चार
अट्ठ-आठ
दो-बे
परमट्ठ-परमार्थे करी
निट्ठिअट्ठा-सिद्ध थया छे अर्थ जेमना
दिसंतु-आपो

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति तं देवदेवमहिअं, सिरसा

वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमु
क्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमा
णस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ
नरं व नारीं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत से
लसिहरे, दिक्का नाणं निसीहि
आ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरि
ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि
अठ दस दो, अ वंदिआ जिणव
रा चउव्वीसं ॥ परमठनिठिअठा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥५॥इति॥

अर्थः—सिद्धाणं बुद्धाणं के० सिद्ध थया छे तेमने, ज्ञान वडे समस्त वस्तु तत्त्वना जाणनारा, संसार समुद्रना पारने पामेला, पेहेला मिथ्यात्व गुणठाणाथी अनुक्रमे चौदमा गुणठाणा सुधी चडवुं अथवा क्षपक श्रेणीथी शुद्ध, ज्ञान, दर्शन, चारित्रने [illegible] पामवुं तेने परंपरा कहीए. ते परंपराए करी सिद्ध [illegible]

या छे, अने चौद राजलोकना अग्रन्नागने विषे एटले सिद्धशिलानी जपर योजनने चोवीसमे न्नागे पहोंच्या छे. एवा सर्व सिद्धोने निरंतर नमस्कार होजो. ॥ १ ॥

जो देवाणवि देवो के० जे देवोना पण देव छे, जेमने देवताज हाथ जोमी नमस्कार करे छे. ते देवताजना इंड वमे पूजाएला एवा श्री महावीर स्वामीने हुं मस्तके करी वांडु छुं. ॥ २ ॥

इक्कोवि के० जिणवर एटले सामान्य केवलीने विषे वृषन्न समान एटले प्रधान एवा श्री वर्द्धमान स्वामीने एक पण नमस्कार न्नावे करीने कर्यो छतो संसार रूपी समुडथी पुरुषोने, वली स्त्री प्रत्ये, जपलक्षणथी कृत्रिम नपुंसक प्रत्ये तारे छे. अहींआं जे दिगंबरो कहे छे के स्त्रीने मोक्ष नथी पण ते जूठुं छे, केमके ज्ञान, दरशन, चारित्र आराधवा आश्री स्त्री पण पुरुषनी पेरेज छे एम समजवुं. ॥ ३ ॥

जज्जिंत सेल सिहरे के० गिरनार पर्वतना शिखरने विषे सहस्राम्रवनमांहे दिक्षा कब्याणक, तथा

ज्ञान कल्याणक अने निर्वाण कल्याणक ए त्रणे क ल्याणक जे स्वामीनां थयां छे, ते धर्मने विषे चक्रव र्त्ती समान, एवा बावीसमा श्री अरिष्टनेमिनाथ भग वानने हुं नमस्कार करुं छुं. ॥ ४ ॥

चत्तारिअठ्ठ० के० हवे अष्टापद तीर्थने विषे नम वाने अर्थे कहे छे. अष्टापद पर्वतने विषे भरत चक्रव र्त्तिए जे चतुर्मुख प्रसाद कराव्यो छे, तेने विषे थाप्या छे दक्षिण दिशाए चार, पश्चिम दिशाए आठ, उत्तर दिशिने विषे दश, अने पूर्व दिशाने विषे बे, सर्व मली वर्त्तमान चोवीस तीर्थंकरो ते परमार्थे करी नि ष्ठितार्थ थया एवा ऋषभादि चोवीस तीर्थंकर भग ते मने मोक्ष द्यो. ॥ ५ ॥

ए गाथा जे प्रकारे श्री गौतम स्वामीए पद उपर देवनी वंदना करतां करी छे, ते निबंधन थएली छे आ सिद्धस्तवनी वधी मली गाथा, वीस पद, वीस संपदा, लघु अक्षर एकसो ए वन, अने गुरु अक्षर पचीस, मली कुल छोतेर अक्षरो छे.

॥ वेयावच्चगराणंना छुटा शब्दना अर्थ ॥

वेयावच्च-वैआवच्च
गराणं-करनारने
संति-शांति
समदिठ्ठि-समकित दृष्टि
समाहि-चित्तनी समाधि

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्म
दिठ्ठिसमाहिगराणं, ॥ १ ॥ इति ॥
करेमि काउस्सग्गं अन्नछ० ॥

अर्थः—सवळ उचित्त करणं एम भगवंते कह्युं छे. ते माटे उचित करवा भणी श्री वीतरागना वैआवच्च करनार देवताना प्रत्ययने अर्थे काउस्सग्ग करवा सारु आवी रीते कहेवुं, ते कहे छे. वेयावच्च गराणं के० वीतरागना शासननी भक्ति करनार गोमुख यक्ष आदे देइने रक्षारूप जे वेयावच्च सानिध्यना करनार, तथा सर्व संघने शांतिना करनार तथा सम्यक् दृष्टि भव्य जीवोने समाधिना करनार, ते देवोने आश्रयीने तेने निमित्ते हुं काउस्सग्ग करुंछुं. अहीआं अन्नछ उससिएणं कहीए, केमके देवता अविरति छे, तथी वांदवा

पूजवा योग्य नथी. माटे.

विधिः—पच्चरकाण कर्या पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही, वमेरा अथवा पोते चैत्यवंदन कहीने पछी जंकिंचि नमुत्थुणं कही उन्ना थइने अरिहंत चेइआणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कहीने प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए, अरिहंत चेइआणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय कहेवी. पछी पुरकरवरदी कही सुअस्स न्नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी, नमोऽर्हत्० कही चोथी थोय कहेवी. पछी बेसी हाथ जोमी नमुत्थुणं कहेवुं, पछी चार खमासमण देवा पूर्वक न्नगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु प्रत्ये थोन्न वंदन करीए. पछी इच्छा कारेण० ॥ देवसि प्रतिक्रमणे ठाउं, एम कही जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीने इच्छं सव्वसवि देवसिअ० कहेवुं.

देवसिअ पडिक्कमणेठाउंना छुटा शब्दना अर्थ.

सव्वस्स–सर्वने
दुच्चिंतिअ–माठुं चिंतवेलुं
दुब्भासिअ–माठुं बोलेलुं
दुच्चिट्ठिअ–माठी चेष्टारुप
इच्छं–हुं इच्छुंछुं

॥ अथ देवसिअ प्रतिक्रमणे ठाउं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्
देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥
इच्छं सव्वस्सवि, देवसिअ, दुच्चिंतिअ,
दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, तस्स
मिच्छामि दुक्कडं ॥

अर्थः–इच्छाकारेण के० आपनी इच्छाए करीने हे भगवंत आदेश आपो के हुं देवसिअ पडिक्कमणामां रहुं. एम कहे एटले गुरु आदेश आपे, त्यारे इच्छं एम कही चवला कटासणापर जमणो हाथ थापी नीचो नमी सव्वस्सवि कहे.

सव्वस्सवि के० दिवस संबंधी अतिचार ते दुश्चिं

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्भा षित ते उपयोग रहित माठी भाषा बोलवा थकी थयो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा थकी थयो होय, ते सर्व पण अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देउं छुं.

विधिः—पछी उभा थइने करेमिभंते कहेवुं पछी इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० कहेवुं.

जो मे देवसिउना छुटा शब्दना अर्थ.

जो—जे
मे—म्हारे जीवे
देवसिओ—दिवस संबंधी
अइआरो—अतिचार
कओ—कर्यो
काईओ—काया संबंधी
वाईओ—वचन संबंधी
माणसिओ—मन संबंधी
उस्सुत्तो—उत्सूत्र संबंधी
उमग्गो—अवला मार्गथी
अकप्पो—अविधिथी करेलुं
अकरणिज्जो—नहीं करवायोग्य
दुज्जाओ—दुर्ध्यान
दुविचिंतिओ—माठुंकार्यविचार्युं
अणायारो—अनाचार
अण—नहीं
इच्छियव्वो—इच्छवा योग्य
अ—नहीं
सावग—श्रावक
पाउग्गो—प्रायोग्य, उचित.
नाणे—ज्ञानने विषे
दंसणे—दर्शनने विषे
चरित्ताचरित्ते—देश विरति चरित्रने विषे

सुए–सूत्रने विषे
तिण्हं–त्रण(नुं)
गुत्तिणं–गुप्तिओना
चउण्हं–चार (ना, मां)
कसायाणं–कषायोनो
पंचण्हं–पांच(नो)
अणुव्वयाणं–अणुव्रतोनुं
गुणव्वयाणं–गुणव्रतोनुं
सिक्खा–शिक्षा
बारस–बार
विहस्स–प्रकारना
खंडियं–खंड्युं
विराहियं–विराध्युं

॥ अथ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे
देवसिउ अईयारो कउ काईउ
वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दु
व्विचिंतिउ अणायारो अणिच्छि
अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्व
याणं चउण्हं सिक्खावयाणं बार

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्भा षित ते उपयोग रहित माठी जाषा बोलवा थकी थयो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा थकी थयो होय, ते सर्व पण अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देउं छुं.

विधिः—पछी उजा थइने करेमिजंते कहेवुं पछी इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० कहेवुं.

जो मे देवसिउना छुटा शब्दना अर्थ.

जो—जे	दुज्जाओ—दुर्ध्यान
मे—महारे जीवे	दुविचिंतिओ—माठुंकार्यविचारवुं.
देवसिओ—दिवस संबंधी	अणायारो—अनाचार
अइआरो—अतिचार	अण—नहीं
कओ—कर्यो	इच्छियव्वो—इच्छवा योग्य
काईओ—काया संबंधी	अ—नहीं
वाईओ—वचन संबंधी	सावग—श्रावक
माणसिओ—मन संबंधी	पाउग्गो—प्रायोग्य, उचित.
उस्सुत्तो—उत्सूत्र संबंधी	नाणे—ज्ञानने विषे
उमग्गो—अवला मार्गथी	दंसणे—दर्शनने विषे
अकप्पो—अविधिथी करेलुं	चरित्ताचरित्ते—देश विरति चारित्रने विषे
अकरणिज्जो—नहीं करवायोग्य	

सुए–सूत्रने विषे
तिण्हं–त्रण(नुं)
गुत्तिणं–गुप्तिओना
चउण्हं–चार (ना, मां)
कसायाणं–कषायोनो
पंचण्हं–पांच(नो)
अणुव्वयाणं–अणुव्रतोनुं
गुणव्वयाणं–गुणव्रतोनुं
सिक्खा–शिक्षा
बारस–बार
विहस्स–प्रकारना
खंडियं–खंड्युं
विराहियं–विराध्युं

॥ अथ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे
देवसिउ अईयारो कउ काईउ
वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो डुज्जाउ डु
व्विचिंतिउ अणायारो अणिच्छि
अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्व
याणं चउण्हं सिक्खावयाणं बार

सविहस्स सावगधम्मस्स जं खंमि
अं जं विराहिअं तस्स मिछामि
डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—जोमे देवसिउ के० जे में दिवस संबंधी अतिचार कर्यो होय, ते अतिचार केवी रीते लाग्यो, ते कहे छे. काया संबंधी, वचन संबंधी, अने मन संबंधी, ते अतिचार विगते करीने कहे छे. जे कांइ सिद्धांत विरुद्ध बोलायुं, तेणे करीने उत्पन्न थयुं जे उन्मार्गनुं प्र वर्त्तावबुं, तेथी नीपनो जे अकल्प एटले अकल्पनीय कार्य करवे करीने अकरणिज्जो एटले जे नहीं करवा योग्य तेवा कार्यने करवे करीने जे अतिचार लाग्यो. ते रीते काया अने वचन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप कह्युं. हवे मन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. उपर कहेलुं नहीं करवा योग्य काम करवाथी दुर्ध्यान ते चि त्तनुं एकाग्रपणे आर्त्त, रौद्र ध्याननुं ध्यावबुं, जे माटे उ र्ध्यान, ते माटेज डुर्विचिंतित एटले चल चित्तपणे करी अशुद्ध कार्यने मनमां चिंतवबुं; जे माटे ते डुर्विचिंतित, ते माटेज अनाचार कहीए. एटले जे थकी व्रतादि

कनो सर्वथा ज्नंग थाय, जे माटे ते अनाचार, ते माटे ज इछवा वांछवा योग्य नथी; जे माटे ते वांछवा योग्य नथी ते माटेज ते श्रावकने प्रायोग्य एटले उचित्त न थी, इति मन संबंधी अतिचार. ए सर्व अतिचार शाने विषे लगाड्या होय ? ते कहे छे.

नाणे के० वस्तुनुं यथार्थ जाणपणारूप जे ज्ञान तेने विषे, देवादिक त्रण तत्त्वनुं साचुं श्रद्धान रूप जे दरशन तेने विषे, चरित्ताचरित्ते के० कांइ एक विरति रूप कांइ एक अविरतिरूप एवुं जे देशविरतिरूप श्रावकनुं चारित्र तेने विषे, अथवा ज्ञानादिक निज गुण मांहे देश थकी जे स्थिरता, ते रूप जे चारित्राचारित्र तेने विषे. सुए के० श्रुत सिद्धांतने विषे अकाले ज्नणवाथी अतिचार लगाड्यो होय, सम्यक्त्वरूप सामायकने विषे जिन वचनमां शंकादिक अतिचार लगाड्यो होय, मनो गुप्ति, वचन गुप्ति, अने काय गुप्ति ए त्रण गुप्तिने अणपालवे करी, क्रोध, मान, माया, अने लोज्न ए चार कषायने करवे करी, पांच अणुव्रतमांथी तथा त्रण गुणव्रतमांथी तथा चार शिक्षाव्रतमां

हेथी घणुं शुं कहीए ? ए पूर्वोक्त बार प्रकारना व्रत रूप, श्रावक संबंधी जे धर्म ते मांहेथी मारे जीवे जे खंड्युं एटले देश थकी भाग्युं, जे विराध्युं एटले सर्व थकी विराध्युं, तेनुं दुष्कृत एटले पाप जे मने लाग्युं होय ते मिच्छा मि० मिथ्या थाओ एटले निष्फल थाओ.

विधिः—पछी तस्सउत्तरी, अन्नथ उससिएणं कही अतिचारनी आठगाथानो काउस्सग्ग करवो ना आवडे तेणे आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो.

नाणंमि दंसणंमिअना छुटा शब्दना अर्थ.

नाणंमि—ज्ञानने विषे
दंसणंमि—दर्शनने विषे
चरणंमि—चारित्रने विषे
तवंमि—तपने विषे
तह—तेमज
विरियंमि—वीर्यने विषे
आयरणं—आचरण, व्यापार
आयारो—आचार
पंचहा—पांच प्रकारे
भणिओ—कह्यो
काले—काल
विणये—विनय
बहुमाणे—बहुमाने
उवहाणे—उपधान
अनिन्हवणे—(गुरु)नहींओळववा
वंजण—शुद्ध उच्चार
अथ्थ—अर्थ
तदुभये—ते बे
अठ्ठविहो—आठ प्रकार
निस्संकिअ—शंकारहीत
निक्कंखिअ—वांछारहीत
निव्वितिगिच्छा—फलना संदेह रहीत
अमूढदिठ्ठीअ—अमूढ द्रष्टि

उववूह-प्रशंसा करवी
थिरीकरणे-स्थिर करवुं
वच्छल-भक्तिभाव, मैत्रीभाव
प्पभावणे-प्रभावना
पणिहाण-प्रणिधान
जोग-योग
पंचहिं-पांचवडे
समिईहिं-समितिवडे
तिहिं-त्रणवडे
गुत्तीहिं-गुप्तिओवडे
चरित्तायारो-चारित्राचार
नायव्वो-जाणवो
वारस-वार
विहंमि-प्रकारने विषे
तवे-तपने विषे
सभ्यंतर-अभ्यंतर साथे
वाहिरे-वाह्यने विषे
कुसल-तीर्थंकरोए
दिठ्ठे-प्रकाश्युं
अगिलाइ-दुगंच्छारहीत
अणाजीवि-आजीविकारहीत
सो-ते
तवायारो-तपाचार

अणसणं-अनशन
ऊणोयरिया-ऊणोदरी
वित्ती-वृत्ति, आजीविका
संखेवणं-संक्षेप, संकोच
रस-रस
च्चाओ-त्याग
किलेसो-क्लेश, दमवुं
संलीणया-संलीनता
वज्जो-वाह्य
पायच्छित्तं-प्रायश्चित्त
विणओ-विनय
सज्झाओ-सज्झाय
झाणं-ध्यान
उस्सग्गो-काउस्सग्ग
अभ्भितरओ-अभ्यंतर
अणिगूहिअ-अणढांकेलुं
वल-वल
पडिक्कमइ-उद्यम करे छे
जहुत्तं-यथोक्त
आउत्तो-सावधान थको
जुंजइ-जोडे
जहाथामं-यथाशक्ति

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि त
वंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं
आयारो, इअ एसो पंचहा भणि
उ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥ वंज
ण अत्थ तदुभए, अठविहो नाण
मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ नि
कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढ दि
ठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, व
छल्ल प्पभावणे अठ ॥३॥ पणि
हाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं
तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो,
अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥
बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर बा
हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अ

णाजीवी, नायव्वो सो तवायारो॥५॥
अणसण मूणोयरिआ, वित्ती सं
खेवणं रसच्चाउ कायकिलेसो सं
लि, णयाय बच्चो तवो होइ॥ ६॥
पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव
सच्चाउ॥ जाणं उस्सग्गो विअ,
अप्रिंतरउ तवो होइ ॥ ७ ॥ अ
णिगूहिअ बल विरिउ, परक्कम
इ जो जहुत्तमाउंत्तो ॥ जुंजइ अ
जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो॥८॥

अर्थः—नाणंमि के० ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्य ए पांचने विषे आचरवुं तेने आचार कहीए. एम ते आचार पांच प्रकारे ज्ञानीए कह्यो छे. एटले ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार.।१। तेमां प्रथम ज्ञानाचार कहे छे.काले विणए के० जे अवसरे जे नणवानुं होय तेज नणवुं तेने काल कहीए, विनय पूर्वक ज्ञान नणवुं, ज्ञान तथा ज्ञानीने विषे

अंतरंग प्रेम करवो तेने बहुमान कहीए, नवकारादि सूत्रोना तपो विशेष उपधान योगनुं वेहवुं तेने उपधान कहीए, तेमज जणावनार गुरुने उलववो नहीं; सूत्रनो अक्षर शुद्ध जणवो, खोटुं न जणवुं,शुद्ध उच्चार करवो, अर्थ शुद्ध जणवो, सूत्र अने अर्थ ए बंने शुद्ध जणवां, ए आठ प्रकारे ज्ञानना आचार जेम कह्या छे तेमज करीए, तेने ज्ञानाचार कहीए. अने तेथी विपरीत करीए ते वारे अतिचार लागे.॥१॥हवे दर्शनाचार कहेछे.

निस्संकिय के० जगवंते कहेलां जे तत्त्व तेने विषे शंका करवी नहीं, एकांते साचुं मानवुं ते पहेलो निःशंकित गुण. बीजो बीजा दर्शननी वांछा करवी नहीं, लगारेक तप,क्षमादिकनो गुण देखी पर दर्शननो अजिलाष करवो नहीं, ए निकांक्षित गुण. जिनधर्मने विषे क्रियानुष्ठानादिकना फलने विषे संदेह करवो नहिं, अथवा साधु साधवीना मल मलीन शरीर तथा वस्त्र देखी निंदा करवी नहीं, ए त्रीजो निर्विजीगुप्सा गुण कहीए. चोथो अमूढ दृष्टिपणुं एटले मिथ्यात्वीना धर्मनो प्रजाव देखीने आज धर्म साचो हशे एवुं मनमां

चिंतवन करवुं नहीं, एटले एवा मूढ दृष्टि न थवुं. पांचमो उपवृंहणा एटले सम्यकूत्व धारी गुणवंतना थोमा पण गुणनी प्रशंसा करवी. छठो स्थिरिकरण एटले जिनधर्मथी पमता प्राणीने सहाय आपी धर्मने विषे स्थिर करवो ते. सातमो वात्सल्य एटले साधर्मीनी उपर एकांतपणे हित अने भक्ति करवी ते. आठमो जेणे करी जिनशासन दीपे एवां काम करवाथी घणा लोको बोधिबीज पामे, तेम करवुं, जे देखीने मिथ्यात्वी पण पुण्य उपार्जे तेने प्रभावना कहीए. ए आठ प्रकारे दर्शनाचार जाणवो तेथी विपरीत चाले तो दर्शनाचारना अतिचार लागे. ॥ ३ ॥

हवे चारित्राचार कहे छेः—पणिहाण के० एकाग्र सावधानपणे करी, मन वचन तथा कायाना योगयुक्त एवो, पांच समिति अने त्रण गुप्तिए करी आठ प्रकारे ए चारित्राचार थाय छे, एम जाणवुं. ए आठ बोले प्रवर्त्ते त्यारे चारित्राचारना अतिचार न लागे, अने तेथी विपरीत करे तो लागे. ते माटे साधुने निरंतर अने श्रावकने सामायक पोसह लीधे अवश्य पांच समिति अने त्रण गुप्ति पालवी ॥ ४ ॥

हवे तपाचार कहे छे. बारस विहंमि वि तवे के० बार प्रकारनुं तप छे. छ भेदे अभ्यंतर अने छ भेदे बाह्य तप बे मली बार प्रकारनुं तप तीर्थंकरे कहेलुं छे. ते तप, ग्लानी भावे एटले दुगंछा भाव रहित करे, आजीविकाने अर्थे तप करे नहीं, एटले जो हुं तप करुं तो तपस्वी कहेवाउं पेट भराइ चाले, मने लोको त पसी जाणी धन प्रमुखवडे मारी भक्ति करे, एवी बुद्धिथी तप न करवुं, एम शुद्ध रीते करे तेने तपाचार जाणवो, एथी विपरीतपणे प्रवर्त्ते तो अतिचार लागे।५।

हवे बाह्य तपना छ भेद कहे छे. अणसण के० पहेलुं अनशन ते, उपवासादि करवुं ते आहारनो त्याग थोडा वखत सुधी, अथवा जावजीव सुधी ते अणसण, बीजुं पांच सात कोलीआ उणा जमवा, वस्त्र पात्र उणां राखवां वगेरे ते उणोदरि. त्रीजुं वोहोरवा जतां साधु घरनी संख्या नक्की करे, एटले पांच सात के आठ लांज घरथी सूझतो आहार मले तो लेवो नहीं तो उपवास करवो, तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए, अने तो सवारे पच्चख्काण करतां दश के पंदर जेटलां मोकलां राख्यां होय, तेउमांथी बे अथवा त्रण के

धारे उगां करे तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए. ७ विगयमांथी एक बे विगय तथा लीलोतरी प्रमुखना जे नियम ल इए तेने रस त्याग तप कहीए. टाढ तथा तापनी आ तापना लेवी, लोच करावबो, उघाडा पगे चालवुं, भू मि उपर सूवुं एम शरीरने कष्ट देवुं तेने कायक्लेश तप कहीए. कूकडीनी पेठे हाथ, पग, प्रमुख अंगो पांग संवरी राखवां, विषय कषायने उदीरवा नहीं, उ दय आवे तेने निष्फल करवा, तेने संलीनता तप क हीए, ए ७ प्रकारनुं बाह्य तप छे. ॥ ६ ॥

हवे अभ्यंतर तपना ७ भेद कहे छे. पायच्छित्तं के० गुरुनी पासे पाप अपराधनुं प्रकाशवुं, ते निवारण क रवाने अर्थे गुरुनुं कहेलुं जे तप ते करवुं तेने प्रथम प्राय श्चित्त तप कहीए. बीजो विनयतप ते गुरुनो विनय आठ प्रकारे करवो, (१) गुरुने देखीने उन्ना थवुं, (२) गुरुने आवता देखी सामा जवुं, (३) गुरुने देखीने हाथ जोडी मस्तके चढावीए, (४) गुरुने बेसवाने आसन आपवुं अने पोते आसने बेसवानुं मूकी देवुं, (५) ज्यां सुधी गुरु उन्ना होय त्यां सुधी बेसवुं नहीं, (६) गुरुने वांद णां देवां, (७) गुरुनी पर्युपासना करवी, सेवा करवी,

विसामण करवा, (८) तथा गुरु जाय त्यारे तेमनी पा
छल वोलाववा जवुं, ए आठ प्रकारे विनय तप कहीए.

वैयावृत्य तप ते आहारादिक आणी आपवां के
ऋ पग चांपवा प्रमुख आचार्यादिक दश पुरुषनी ज्ञ
क्ति करवी एटले आचार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तप
स्वी, नवदीक्षित साधु, साधर्मी, कुल (एक आचार्य
ना संताननें कुल कहे छे), गछ (घणा आचार्यना सं
तान एकठा थएला होय ते), अने संघ (साधु, सा
धवी, श्रावक, श्राविका). ए दशनुं जे वैयावच्च करवुं
तेने वैयावच्च तप कहीए.

तेमज वली सज्ञाय तप पांच प्रकारे छे. वांचना
(ज्ञणवुं) पूछना (संशय टालवाने पूछवुं), परावर्त्तना
(विसरेलुं संज्ञारवुं), अनुप्रेक्षा, (तत्त्वचिंतवना करवी)
अने धर्मकथा, (गुणीजननी कथा करवी) ए पांच ज्ञेद
सज्ञाय तपना जाणवा.

पांचमुं ध्यान तप तेना बे ज्ञेद छे. आर्त्त रौ
ध्यान निवारीए (१) धर्म ध्यान (२) शुक्ल ध्यान ए बे
शुज्ञ ध्यान ध्याइए.

छठुं कर्मना क्षय निमित्ते काउस्सग्ग करवो

कायोत्सर्ग तप. ए छ प्रकारे अभ्यंतर तप थाय छे. ॥७॥

हवे वीर्याचार कहे छे. अणिगुहिअ के० अणढां केलुं एटले प्रगट छे बल वीर्य जेनुं, वली जे मनमां उत्साह धरतो थको अने वचने धर्मव्याख्यान करतो छतो, खेद न पामे एवो छतो, धर्मने विषे पराक्रम फोरवतो वर्त्ते; जे अवसरे जे क्रिया करवानुं जेम भगवंते कह्युं छे तेम करवाने उद्यमवंत थयो थको वर्त्ते, अने वली जुंजइ के० जोमे जहाथामं के० बलने अनुसारे यथाशक्तिए धर्मने विषे मन वचन तथा कायानो व्यापार प्रयुंजे, ए त्रण भेदे वीर्याचार जाणवो. एथी विपरीत जो धर्मने विषे बलवीर्य गोपवे तो अतिचार लागे.८

विधिः—काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी वांदणां बे देइने उभा थइने इच्छा० देवसिअं आलोउं इच्छं आलोएमि जो मे देवसिउ कहेवा.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देव
सिअं आलोउं ॥ इच्छं आलोए
मि जो मे देवसिउ अइआरो० ॥

अर्थः—इच्छाकारेण के० पोतानी इच्छाए करी पण कोइना बलात्कारे नहीं. संदिसह भगवन् के० हे भगवंत मने आदेश आपो. देवसिअं आलोउं के० दिवस संबंधी जे अतिचार लाग्या होय ते प्रत्ये समस्तपणे करी प्रकाशुं ? ए रीते शिष्य कहे ते वारे गुरु कहे के आलोह एटले आलोचो प्रकाशो, पछी शिष्य कहे इच्छं के० हुं पण इच्छुं छुं, तमारुं वचन प्रमाण छे, आलोएमि जो मे देवसिउ के० हुं आलोउं छुं संपूर्ण भावे प्रकाशुं छुं जे मारे जीवे दिवस संबंधी वगेरे.

विधिः—ए संपूर्ण कह्या पछी सात लाख कहीने अढार पापस्थानक कहेवां.

सात लाखना छुटा शब्दना अर्थ.

पृथिवीकाय—माटी पाषाणादिकना जीव
अप्पकाय—पाणीनाजीव
तेउकाय—अग्निना जीव
वाउकाय—वायराना जीव
प्रत्येक—एक शरीरमां एक जीववाळी
साधारण—एक शरीरमां अनंत जीववाळी
वनस्पतिकाय—शाक, भाजीपाला वीगेरेना जीव
योनि—उत्पत्तिस्थान
हण्यो—मार्यो
हणाव्यो—मराव्यो
अनुमोद्यो—वखाण्यो

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात ला ख अप्पकाय, सात लाख तेउका य, सात लाख वाउकाय, दश ला ख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंड्रिय, बे लाख तेंड्रिय, बे लाख चौरिंड्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंड्रिय, चौद लाख मनु ष्य, एवंकारे चोराशी लाख जी वायोनिमांहे महारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणाता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचनें, कायाये करी त स्स मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ ए नो अर्थ सुगम छे.

अढार पापस्थानकना छुटा शब्दना अर्थ.

प्राणातिपात-जीवहिंसा	कलह-कजीओ
मृषावाद-जूठुं बोलवुं	अभ्याख्यान-आल चढाववुं
अदत्तादान-चोरी	पैशुन्य-चाडी
मैथुन-विषय सेववो	रति-सुख
परिग्रह-धन, धान्य संघरवुं	अरति-दुख
क्रोध-गुस्सो	पर-पारकी
मान-अहंकार	परिवाद-निंदा
माया-कपट	१मायामृषावाद-कपटसाथे जूठ
लोभ-तृष्णा	मिथ्यात्व-देवगुरु धर्मनी अ-श्रद्धा
राग-हेत	
द्वेष-तिरस्कार	२शल्य-साल

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इगियारमे द्वेष, बारमे

---

१ अंतरमां बीजी वात होय अने बाहार मुखथी मीठुं बोलवुं इत्यादिक अनेक प्रकारे करी लोकोने ठगवाना परिणाम.

२ पांच प्रकारे मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम ते रूप साल.

कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौद
मे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति,
सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया
मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य,
ए अढार पापस्थानक मांहे मह्या
रे जीवे जे कोइ सेव्युं होय, सेव
राव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं
होय, ते सर्वे मनें, वचनें, कायायें
करी तस्स मिच्छामि ङुक्कडं ॥इति॥
एनो अर्थ सुगम छे ॥

विधिः—पछी सव्वस्सवि, देवसिअ, ङुच्चिंतिअ ङुप्भा
सिअ, ङुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं त
स्समिच्छामि ङुक्कडं. एम कहीने बेसी जमणो पग पूंजी
(ऊभो राखी) एक नवकार गणी करेमिभंते कही इ
च्छामि पडिक्कमिउं जोमें देवसिउ० कही वंदित्तु कहेवुं.

वंदिता सूत्रना छुटा शब्दना अर्थ
गाथा १ थी ५ सुधी.

वंदित्तु–वांदीने
सव्व–सर्व (सर्वज्ञ)
सिद्धे–सिद्धोने
धम्मायरिये–धर्माचार्य
अ–अने, वळी
अइआरस्स–अतिचारने
सुहुमो–सुक्ष्म
बायरो–बादर, मोटो
निंदे–निंदुछुं
दुविहे–बेप्रकारना
परिग्गहंमि–परिग्रहने विषे
सावज्जे–पापसहित, सावद्य
बहुविहेअ–घणा प्रकारना
आरंभे–आरंभने विषे
कारावणे–करावबाथी
करणे–करवाथी
पडिक्कमे–प्रतिक्रमुंछुं
देसिअं–दिवससंबंधी
बद्धं–बांध्युं होय
इंदिएहिं–इंद्रियोवडे
चउहिं–चार (वडे)
कसाएहिं–कषायोवडे
अप्पसत्थेहिं–माठाभावे करी
रागेण–रागे करीने
दोसेण–द्वेषे करीने
आगमणे–आवतां
निग्गमणे–जतां
ठाणे–स्थानके
चंकमणे–फरतां
अणाभोगे–अनुपयोगे
अभिओगे–आग्रहथी
निओगे–आज्ञाथी

॥ अथ वंदित्ता सूत्र ॥

वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ
सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमि

नं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंस
णे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो
वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुवि
हे अ आरंभे ॥ कारावणे अ
करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥
जं बद्धमिंदिएहिं,चउहिं कसाएहिं
अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व,
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकम
णे अणाभोगे ॥ अभिओगे अ नि
ओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥

अर्थः—वंदित्तु सव्वसिद्धे के० सर्व तीर्थंकर, अने सिद्ध जे मोक्षे पहोच्या छे, तथा श्रुत चारित्ररूप धर्म ना पालक, तथा धर्मना दातार ते धर्माचार्य, अने उ

पाध्याय, तथा मोक्षना साधक सर्व साधु ए पंचपरमे ष्ठिने वांदीने श्रावक धर्मने विषे जे अतिचार (आत्माना गुणने मलीन करनार) लाग्या होय, तेथी पडिक्कमवा ने हुं इच्छुं छुं ॥ १ ॥

हवे सामान्य प्रकारे सर्व अतिचार पडिक्कमे छे. जो मे वयाइआरो के० जे मुजने व्रत आश्री अतिचार लाग्या होय, तेमज ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचा र, अने अ के० च शब्द थकी तपाचार, वीर्याचार त था संलेखना एटले मरणांत आराधना संबंधी नानो अथवा मोटो अतिचार, ए सर्व एकसो चोवीस अतिचा रो मांही नानो अथवा मोटो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रते आत्मानी साखे निंदु छुं, अने गुरुनी साखे गरहुंछुं.२

दुविहे परिग्गहंमि के० प्राये परिग्रहज पापनुं मूल छे, माटें प्रथम परिग्रह आश्रयी कहे छे. ते बे प्र कारनो छे. एक सचित्त, (जानवर ते द्वीपद चतुष्पदरू प) अने बीजो अचित्त, (द्रव्य, आभुषणादि) अथवा एक अभ्यंतर, (कषायादि चौद प्रकारे) अने बीजो बा ह्य, (धनधान्यादि नव प्रकारे) जेनी उत्पत्तिने विषे पा हित अनेक प्रकारे जीवहिंसादिक आरंभ छे एवा

आरंभ करतां, करावतां अने अनुमोदना करतां जे दि
वस संबंधी अतिचार लाग्यो होय ते हुं पडिक्कमुहुं.॥३॥

हवे ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे छे.

जंबद्धमिंदिएहिं के० जे अशुभ कर्म पांच इंद्रि
ये करीने तथा चार कषाये करी बांध्युं ते कषाय घणा
माठा छे तेणे करी तथा रागे करी अने द्वेष करी
ज्ञानाचारना जे अतिचार रूप अशुभ कर्म बांध्युं
होय, ते प्रत्ये हुं आत्मानी साखे निंदुं छुं, वली गुरुनी
साखे गरहुं छुं. ॥ ४ ॥

हवे दर्शनाचारना अतिचार आलोवे छे.

आगमणे निग्गमणे के० अणउपयोगथी, अथवा
राजाना हुकमथी तथा घणा लोकना आग्रह वगेरे अ
भियोग आगारथी, वली पराधीन नोकरी करतां पोता
ना शेठनी आज्ञाथी, मिथ्या दृष्टि संबंधी रथयात्रा वगेरे
कौतूक जोवाने जवुं आववुं करवुं पड्युं होय, तेथी,
तथा मिथ्यात्वीना ठेकाणे ऊभां रहेतां आम तेम फ
रतां जे अतिचार रूप पाप बांध्युं होय ते दिवस संबं
धी सर्व पापने हुं पडिक्कमुं छुं. ॥ ५ ॥

अहीं आं सर्वत्र देसिअं सव्वं, केहवुं एम कहुं छे,

पण देवसिअं सव्वं एम कह्युं नथी कारण के प्राकृत
भाषाना वशथकी वकारनो लोप थाय छे माटे. अहींआ
प्रभातना पडिक्कमणमां राइयं सव्वं कहेवुं, अने पखि
पडिक्कमणमां पक्खिअं सव्वं, तथा चउमासिए चउम्म
सियं तथा संवच्छरिए संवच्छरियं सव्वं एवा पाठ कहीए

गाथा ८ थी १० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

संका-शंका
कंख-कांक्षा, इच्छा
विगिच्छा-फलनो संदेह, दुगंच्छा
पसंस-वखाण, प्रशंसा
संथवो-स्तुति
कुलिंगीसु-मिथ्यात्वीने विषे
सम्मत्तस्स-समकितना
छक्काय-छ काय
समारंभे-आरंभने विषे
पयणे-रांधवामां
पयावणे-रंधावतां
दोसा-दोषो
अत्तट्ठा-पोताने अर्थे
परट्ठा-पारकाने अर्थे
उभयट्ठा-बेने अर्थे
चेव-निश्चे
थूलग-मोटा

अणुव्वयंमि-अणुव्रतने विषे
पाणाइवाय-प्राणातिपात
विरइओ-विरतिथी
आयरिअं-उलंघवुं, आचर्युं
अप्पसत्थे-माठाभावे
इत्थ-अहींआं
प्पसंगेणं-प्रसंगवडे
वह-वध
बंध-बांधवुं
छवि-शरीरनां अंग
च्छेए-छेदवाथी
अइ-अति, घणां
भारे-भारवडे
भत्त-खोराक
पाण-पाणी
वुच्छेये-अंतराय
वयस्स-व्रतना

संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इ आरे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ ६ ॥
छक्काय समारंभे, पयणे अ पयाव णे अ जे दोसा ॥ अतठा य पर ठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचन्हमणुवयाणं, गुणवयाणं च तिन्हमइयारे ॥ सिरकाणं च चउ न्हं, पडिक्कमे देसिअं सवं ॥ ८ ॥
पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइ वाय विरईउ ॥ आयरिअमप्पसढे, इछ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥ वह बंध छवि छेए, अइभारे भत्तपा ण वुछेए ॥ पढमवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ १० ॥

अर्थ—संका कंख केण प्रथम जिन वचनने विषे सं

देह करवो तेने शंका कहीए, बीजो अन्य दर्शनीमां थो डीक क्षमा, अहिंसादिक गुण देखी तेना पर अभिलाष धरे तेने कंखा कहीए, त्रीजुं दानादिक धर्म कर्यानुं फ ल हशे के नहीं एवो संदेह धरवो तथा साधु साधवी नां शरीर वस्त्र मलीन देखी डुगंछा करे तेने विगिछा क हीए, चोथो मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे तेने प्रशंसा कहीए, तथा पांचमो तेनो संस्तव परिचय करे तेने संस्तव कहीए.

ए दर्शन मोहनीय कर्मना क्षयोपशमादिकपणा थी उत्पन्न थयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मा नो शुभपरिणाम. तेने सम्यक्त्व कहीए, तेना उपर क ह्या ते पांच अतिचार छे. ते आश्रयी जे दिवस संबंधी पाप बांध्युं होय ते सर्व हुं पडिक्कमु छुं. ॥ ६ ॥

हवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे छे.

छकाय के० पृथ्वीकायादिक छ कायजीवोनो सं घट, परिताप, उपद्रव, ते समारंभ कहीए ते पोताने अर्थे तथा परने (बीजाने) अर्थे. तथा पोताना अने परना बे उना अर्थे रांधतां, रंधावतां तथा रांधनारने अनुमोदन करते निरर्थक राग द्वेषादिके करी जे दोष लाग्या होय

ते दोषने चेव के० निश्चे हुं निंडुं बुं. ॥ ७ ॥

हवे बारे व्रतना अतिचार कहे ठे. पंचन्हमणुव्व याणं के० पांच अणुव्रतने विषे, वली त्रण गुणव्रतने विषे, तथा चार शिक्षाव्रतने विषे, वली तप संलेषणादिक ने विषे आ बार व्रत संबंधी जे अतिचार लाग्या होय ते आश्रयी दिवस संबंधी सर्व पापने पमिक्कमुं बुं. ॥ ७ ॥

पढमे अणुव्वयंमि के० पहेला अणुव्रतने विषे मोटा प्राणातिपातनी विरति थकी जे पांच प्रकारना प्रमादना प्रसंगवमे माठा नावे उल्लंघन थयुं होय, अथवा माठा नावे जे आचर्युं होय, ते अहींआं अतिचार जाणवो, ते आगली गाथामां पमिक्कमीश. ॥ए॥

वहबंध के० कषायने वश थको हिपद चतुष्पदादि जीवोने निर्दयपणे लाकमी पाटु प्रमुखे करी मारे तेने वध कहीए, बीजो दोरमादिके करी बांधवुं, त्रीजो बलद समारवा, तथा नाक कानादि शरीरना अवयवोने ठेदवा, चोथो लोन्नना वशथकी गजा उपरांत नार न्नरवो, पांचमो न्नात पाणीनो अंतराय करवो, एटले वराबर वेलासर चारो पाणी न आपे, ए प्रथम व्रतना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

तिचार लाग्यो होय ते सर्व पडिक्कमुं हुं निंदुं हुं. ॥१०॥

आ ठेकाणे कोइ शंका करे के. प्राणातिपात विरमण वालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहि, कारण के प्राणातिपात शब्दे करी वधादिक आवी जता नथी, तेथी वधादिक करे तो पण पेहला व्रतना अतिचार लागे नहीं. तेनो उत्तर के मुख्यताए तो प्राणातिपातनुंज पच्चख्काण कर्युं छे वधादिकनुं कर्युं नथी, तो पण परमार्थे करी वधादिकनुंज पच्चख्काण जाणवुं; केमके ते वधादिक प्राणातिपातनुं कारण छे, माटे ते करवाथी प्राणातिपात व्रतनो भंग थाय छे तेथी ते व्रत वालाने वधादिकनुं पच्चख्काण करवुं योग्य छे.

वंदित्तानी गाथा ११ थी १८ सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

बीए–बीजा (मां)
परि–समस्त प्रकारे, अतिशय
अलिय–जूठुं
वयण–वचन
सहस्सा–अणविचार्युं
रहस्स–छानुं
दारे–स्त्री
मोस–मृषा, जूठो
उवएसे–उपदेशे
कूड–जूठा
लेहे–लेखने विषे
तइए–त्रीजा (मां)
पर–पारकुं
दव्व–द्रव्य, धन.

तेन–चोरे
आहड–चोरी आणेली
प्पओगे–प्रयोगे
तप्पडिरूव–तत्प्रतिरूप, तेना जेवी
विरुद्ध–उलटुं
गमणे–आचरवामां
तुल–तोल
माणे–माप
चउत्थे–चोथा (मां)
परदार–परस्त्री

हवे बीजुं अणुव्रत कहे छे.

बीए अणुवयंमि, परिथूलग अलिअवयण विरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीअ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे

अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण

विरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे,

इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थः—बीए अणु०वयंमि के० एक कन्यालिक एटले जे निर्दोष कन्याने सदोष कहे, एमां बेपगां संबंधी जे जूठुं बोलवुं ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गोवालिक एटले थोडा दुधवाली गायने घणा दुधवाली कहेवी अने घणा दुधवालीने थोडा दुधवाली कहेवी, एमां कोइ पण चोपगा जानवर संबंधी जूठुं बोलवुं ते सर्व जाणी लेवुं. त्रीजु भूम्यालिक ते पारकी जमीनने पोता नी कहेवी, तथा द्रव्यादिक संबंधी जे जूठुं बोलवुं ते सर्वनो एमां समावेश थाय छे. चोथो न्यासापहार ए टले पारकी थापण राखीने जूठुं बोलवुं जे मे तो नथी राखी. अने पांचमुं कूडी साख ते मत्सरने लीधे अ थवा लांच लइने जूठी साक्षी आपे, तथा कुडाकरहा काढे, तथा विश्वासघात करे, ए सर्व एमां आव्युं इत्या दिक जेमां राजा दंडे, लोक भंडे, एवा अतिशये करी मोटा अलिक वचन मृषावाद तेनी विरति ते थकी

मादना प्रसंगे करी माठा त्र्यावे जे कांइ आचरण कर्युं होय अथवा उल्लंघन कर्युं होय तेथी जे अतिचार लाग्यो होय, ते आगली गाथाए पमिक्कमीश ॥ ११ ॥

सहस्सा रहस्स केण सहसात्कारे अणविचार्युं को इने जूठुं आल देवुं एटले कलंक चढाववुं ते प्रथम सहसाभ्याख्यान अतिचार. कोइने ठानी वात करतां देखीने कहे के तमे अमुक अमुक राज्य विरुद्ध विचार करो छो ? ते बीजो रहस्याभ्याख्यान नामे अतिचार, पोतानी स्त्रीए अथवा मित्रादिके पोतानी कांइ ठानी वात कही होय, ते वात बीजा आगल प्रगट करे एटले साचुं वचन पण परने पीमाकारी थवाथी जूठुं जाणवुं, ए त्रीजो स्वदारमंत्रभेद अतिचार, तथा मंत्र उषधादिक बतावे अथवा कोइने कष्टमां पाम्वा कूमी बुद्धि आपे, ए चोथो मृषाउपदेश अतिचार. तथा कूमा लेख लखवा, खोटां खत करवां, इत्यादि सर्व सपिभेद एमां आवे छे, ते पांचमो कूट लेख अतिचार कहीए. ते पांच बीजा व्रतना अतिचार आश्रयी जे मने अतिचार लाग्यो होय ते दिवस संबंधी सर्व अतिचार प्रत्ये हुं पमिक्कमु छुं ॥ १२ ॥

तइए अणुव्वयंमि के० जेथी राजा दंमे एवी चोरी, गांठ छोरूवी, तालां तोमवां, जमेली वस्तु धणी जाणी राखवी, मार्गे जताने लूटवो, ए रीते प्रमाद तथा कषायादिने वशथका पारकुं धन हरण करवानी विरतिने उल्लंघवाथी त्रीजा अणुव्रतने विषे जे अतिचार थाय ते आगली गाथाये कहे छे. ॥१३॥

तेनाहमप्पउगे के० चोरनी चोरेली वस्तु सोंघी जाणी लेवी, ते प्रथम स्तेनाहृत अतिचार, तथा चोरने सहाय संबल आपवुं ते बीजो प्रयोगातिचार, तथा खोटी वस्तुने खरी करीने वेचवी, तथा सारी खोटी वस्तु भेल संभेल करीने साराना भावे वेचवी, जूनुं वस्त्र नीखरावी रंगावी नवाने मूले वेचे, सूत्र कपासादिक पाणीए भीजावीने वेचे, लविंग जायफलादिक मांहे डुधनुं पोतुं दीए ए त्रीजो तत्प्रतिरूप अतिचार. तथा दाण चोरी, राजा दंमे एवुं राज्य विरुद्ध आचरवुं, ए चोथो विरुद्धगमन अतिचार, तथा पांचमो तोल तथा माप उंगां वत्तां राखवां एटले वधारे लेवुं, उंचुं आपवुं, ए कूमतोलकूममाण अतिचार. ए त्रीजा व्रतना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

तिचार लाग्यो होय ते सर्व हुं पडिक्कमुं छुं निंदु छुं.॥१४॥

चउत्थे अणुव्वयंमि के० निरंतर बीजानी स्त्री साथे कामभोग भोगववानी विरति तेने प्रमादना प्रसंगे करी तथा अशुभ भावे करी उल्लंघन करवाथी चोथा अणुव्रतने विषे जे अतिचार लाग्या होय ते आगली गाथामां नाम लइने पडिक्कमीश. ॥१५॥

गाथा १६ थी २० सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

अ–नही
परिग्गहिआ–परणेली, राखेली
इत्तर–इत्वर, थोडा काळने वास्ते राखेली
अणंग–कामक्रीडा
विवाह–विवाह
तिव्व–तिव्र, आकरो
अणुरागे–अनुराग; अभिलाष
इत्तो–ए उपरांत
पंचमंमि–पांचमामां
अप्पसथ्थंमि–माठा (मां)
परिमाण–परिमाण
परिच्छेए–ओलंगवाथी
धण–धन
धन्न–धान्य,

खित्त–खेतर
वथ्थु–घर, हाट (वास्तु)
रुप्प–रूपुं
सुवन्ने–सोनुं
कुविअ–हलकी धातु
दुपये–वे पगवाळामां
चउप्पय–चार पगवाळा
गमणस्स–जवाना
उ–तो
दिसासु–दिशाओमां
उड्ढं–उंची
वुड्ढि–वृद्धि, वधारो
सइ–स्मृति यादि
अंतरद्धा–मार्गमां
मज्जंमि–मदिरा, दारु (मां)

मंसंमि–मांस (मां)
पुष्फे–फूल,
फले–फलमां
गंध–सुगंधी पदार्थ

मल्ले–माला
उवभोग–उपभोग
परिभोग–परिभोग

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू रुप्प सुवन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअंच ॥ वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ

मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंध
मल्ले अ ॥ उवभोगपरिभोगे,
बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—अपरिग्गहिआ के० प्रथम अपरिगृहिता ते कोइए परणेली न होय एटले कुमारिका अथवा विधवा होय तेनी साथे मैथुन सेववुं तेमज श्राविका पण कुंवारा अथवा रांम्हेला पुरुषनी वांछा करे तो पेहेलो अतिचार लागे. बीजो इत्वर एटले कोइ पुरुषे वेश्यादिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय तेनी साथे मैथुन सेववुं, तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं निवारण करी भर्त्तारने सेवे तेने बीजो अतिचार लागे. त्रीजुं कामक्रीडा ते परस्त्रीनी साथे हास्य, कूतुहल करवां तथा तेनुं कुच मर्दन, मुखचुंबन, उष्टदशन आलिंगनादिक कामनां चोरासी आसन सेववां, तथा पुरुष चिन्ह टाली साथल अंगुष्टादिके करी मैथुन सेववुं ते त्रीजो. चोथो विवाहकरण ते पोतानां छोरु टाली पराया विवाह जोडावया. पांचमुं कामभोगने विषे अति अभिलाषनुं करवुं, तथा काम दीपाववाने

माटे धातु पुष्टी पदार्थो (डुध, दहीं, घी त्रांबुं, बंग) खावा, ए पांच चोथा व्रतना अतिचार आश्रयी जेमा रे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अति चार हुं पडिक्कमुं छुं. ॥१६॥

इत्तो अणुव्वए के० ए चोथा व्रत उपरांत स्थूल परिग्रह परिमाण नामे पांचमुं अणुव्रत कहीए छीए. ए पांचमा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहना परिमाण रूप अणुव्रतने विषे प्रमादने प्रसंगे करीने अशुभ भाव थये छते जे अतिचार आचर्यो होय, ते आगली गाथा मां पडिक्कमीश ॥ १७ ॥

धण धन्न के० चार प्रकारनां धन छे. प्रथम गणि म ते गणवारूप धन, नालीएरादिक जे गणीने वेचा य ते. बीजुं धरिम एटले गोल, खांडरूप तोलीने वेचा य ते. त्रीजुं मेय एटले कापड, जमीन, तेल, डुध, वगेरे जे मापीने वेचाय ते. चोथुं परिछेद्य एटले सोनुं, रुपु, नाणुं, धन, रत्नादिक मोती प्रमुख कसीने तथा छेदथी परीक्षा करी शकाय ते जाणवां, ए चार प्रकारे धन. अने धान्य ते गहूं, चोखा, अडद प्रमुख जाणवां. ए त्रे ज परिमाण उपरांत थयां देखीने ज्यां सुधी आगलुं

वेचाय नहीं त्यां सुधी वीजाने घेर रखावे, अथवा कोइ कोठीनुं परिमाण कीधुं होय तो न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्य परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो.

बीजो खित्त के० क्षेत्र, ते त्रण प्रकारे छे. एक रेंटना पाणीए नीपजे ते सेतु क्षेत्र. बीजुं वरसादना पाणीए नीपजे ते केतु क्षेत्र. त्रीजुं बेहुना पाणीथी नीपजे ते उन्नय क्षेत्र. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. वत्थू के० वास्तु ते, घर, हाट, वखार प्रमुखनी भूमि ते त्रण प्रकारे छे. एक जमीन अंदर भोंयरु करीए ते खात भूमि. बीजी मालियादिक जे उंचां चणावीए ते उच्छ्रित भूमि. त्रीजी ज्यां भोंयरु पण करीए अने उपर माल पण चणावीए. तेमां गामनगरादिक पण आवे ते खातोच्छ्रित भूमि जाणवी. ए बेहुना परिमाणथी उलंघवुं ते आवी रीते केः—एक क्षेत्र मोकलुं होय ने बीजुं लेवरावे ते वखते नियम भंगना भयथी प्रथमना खेतरनी वाड भागी बेउनुं एक करावे तथा घर, हाट प्रमुखनुं पण तेज प्रमाणे वचमांनी भींत अथवा मोभ पाडीने एक करी मूके. ए क्षेत्रवास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजो रुपुं सोनुं ए बे

ना परिमाणथी उलंघवुं एटले रुपुं सोनुं अधिक थतुं देखी स्त्री पुत्र आदिना नामनुं करे, ते रुप्पसुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. वली थाल कचोलां प्रमुख एटले सोना रुपा सिवायनी धातुनां वासण थाली, वाटका, खाटला, पाटला प्रमुख घरवाखरानी वस्तुउ नियम उपरांत थतां देखी नानां नांगावी मोटां करावे अने संख्याए तेटलां राखे ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो द्विपद ते दासी, दास, वाणोतर प्रमुख, अने चतुष्पद ते गाय, घोडा, नेंस प्रमुख जाणवां. तेने नियम उपरांत थता देखी गर्न्न ग्रहण घणुं मोडुं करावे, तथा वेचे ते पांचमो द्विपदचतुःपद परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार आश्रयी माहारे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अतिचार प्रते हुं पडिक्कमुं छुं. ॥ १८ ॥

गमणस्स के० उर्ध्व दिशि, अधो दिशि अने पूर्व पश्चिम, दक्षिण, उतर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि ए आठने तीर्छि दिशि कहीयें, तेने विषे अमुक जोजन सुधी जवानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम

गुणव्रतने विषे तु शब्द थकी जे अतिचार लाग्यो हो य ते आगल निंदिये बैए, प्रथम ऊंची दिशिना परिमा ण प्रते उलंघवुं, बीजुं अधो एटले नीची दिशिना प रिमाण प्रत्ये उलंघवुं, वली त्रीजुं तीर्छि दिशिना परि माण प्रते उल्लंघवुं अथवा नियमभंगनी बीकथी वा णोतर प्रमुखने मोकलवो. चोथुं दिशिउने विषे जवा नुं जेटलुं परिमाण कीधुं होय तेथी कोइ कार्य पमे आघुं जवुं होय त्यारे एक तरफ उबी करी बीजी त रफ वधारे ते क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो. पांच मो स्मृत्यंतर्द्धा एटले मार्गने विषे संदेहकारी विचार उपजे के आ दिशि मारे सो योजन मोकली राखी बे? के पच्चास जोजन मोकली राखी बे? एवी शंका बते पच्चास जोजन उपरांत जवुं ए पांचमो अतिचार अने सो योजन उपरांत जवुं ए अनाचार व्रतभंग जाण वो. ए पांचमो स्मृत्यंतर्द्धा अतिचार जाणवो. ए प्रथम गुणव्रतने विषे उपर कहेला पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय ते हुं निंडुं. ॥ १ए ॥

मज्जंमि के० खान पान फूल विलेपन प्रमुख जे वस्तु मुखादिकमां तथा शरीरमां प्रवेश कराय एटले

एकवार सेवाय एवी वस्तु तेनो ज्ञोग ते उपज्ञोग कहेवाय, तथा परि एटले बहारथी वारंवार सेविये ते परिज्ञोग वस्तु ते वस्त्र, आज्नरण, घर, स्त्री प्रमुख जाणवां. ए उपज्ञोग परिज्ञोग परिमाणनामा बीजुं गुणव्रत बे प्रकारे छे. एक ज्ञोजनथी; बीजुं कर्मथी. तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदिये छीए. मज्जंमिअ के० मदिरा तथा मंसंमिअ के० मांस वीगेरे बीजां पण अज्नक्ष जेवां के मध, मांखण, अनंतकाय प्रमुख. पुप्फे के० महुम्रादिकनां फूल तथा कुंथुआदिक त्रसकाय जीवे करीने सहित नागरवेलीनां पान प्रमुख जाणवां, तथा फले के० जांबू, बीलां, पीलूनां, पीचु, बोर, पाकां करमदां, ए अज्नक्ष्य वस्तु श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी, ए खाधामां आवे माटे अंतज्ञोगनी वस्तु कही. हवे बहारना ज्ञोगमां आवे ते वस्तु कहे छे. गंध के० बरास, अत्तर, अबीर, कपूर, धूपादि जाणवां, तथा मल्लेअ के० फूलनी माला ए वगेरे जाणवी, तथा च शब्दथी बीजी सर्व ज्ञोग्य वस्तु जेवी के सचित्तकाय विगयादि वस्तु करेला प्रमाणथी वधारे ज्ञोगवतां उपज्ञोगपरिज्ञोग नामे बी

जा गुण व्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व प्रत्ये निंदुं. ॥ २० ॥

गाथा २१ थी २५ सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

सच्चित्ते–सचित्त
पडिबद्धे–लागेली, वळगेली
अपोल–काची
दुप्पोलिअं–काचुंपाकुं
आहारे–भक्षण
तुच्छ–हलकी
ओसहि–औषधि
भक्खणया–भक्षण
इंगालि–अंगार कर्म
वण–वनकर्म
साडी–शकटकर्म
भाडी–भाडुं खावुं
फोडी–जमीन फोडवी ते
सु–अत्यंत
वज्जए–छोडे
वाणिज्जं–वेपार
दंत–दांत
लक्ख–लाख
रस–रस
केश–वाळ
विस–झेर
विसयं–शस्त्रादिकनो विषय
खु–निश्चे
जंत–यंत्र
पिल्लण–पीलवानुं
निल्लंछणं–निर्दयपणानां काम
दव–दव, अग्नि.
दाणं–आपवुं
सर–सरोवर
दह–धरा, द्रह
तलाय–तलाव
सोसं–शोषण करवुं
असई–असति
पोसं–पोषण
वज्जिज्जा–वर्जवुं
सथ्थ–शस्त्र
अग्गि–अग्नि
मुसल–सांबेलु
जंतग–यंत्र (घंटीप्रमुख)
तण–तरणां

कट्ठे–काष्ट
मंत–मंत्र
मूल–मूळ, जडीबूटी
भेसज्जे–ओसड
दिन्ने–देवा थकी
दवाविए–अपाववामां
वा–अथवा

न्हाण–न्हावुं, स्नान.
उवट्टण–पीठीए मेल उतारवो
वन्नग–अलतो वगेरे
विलेवणे–विलेपन
सद्द–शब्द
वथ्थ–वस्त्र
आसण–आसन

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पो लिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि ज्ज रकणाया, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ॥ २१ ॥ इंगाली वण साडी, जाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव य दंं, त लरक रस केस विस विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्ल ण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं सरदह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमु सलजंतग, तण कट्ठमंत मूल ज्जे

सज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किक्कमे
देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ न्हाणुवट्टण
वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे ॥
वत्थासण आजरणे, पम्किक्कमे दे
सियं सव्वं ॥ १५ ॥

अर्थः—सच्चित्ते के० सचित्तनो त्याग करीने अथ वा सचित्तनुं परिमाण करीने प्रमादने वशे तेथी उप रांत ते वस्तुनो आहार करे, ते प्रथम सचित्ताहार नामे अतिचार जाणवो. बीजो सचित्तप्रतिबद्ध ते सचित्तनी साथे बांधेली वस्तु एटले जोमे लागेलो गुंदर, ठलिया सहित रायण, अने गोटली सहित केरी प्रमुख मुखमां घाले, तथा काममांथी गुंदर उखेमीने अचित्तनी बुद्धिये वापरे ते. त्रीजो अपोल के० अपक्वाहार एटले रांध्या वगरनी होय एवी सचित्त मिश्रित काची वस्तु जेवी के तुरतनो दलेलो तथा अणचालेलो लोट, ए विषे सिद्धांतमां कह्युं ठे के अणचाल्यो लोट श्रावण अने जादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे, आसो मासमां चार दिवस मिश्र रहे, कार्त्तिक मागश

र अने पोस मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे, माहा अने फागणमां पांच पहोर, चैत्र वैशाखे चार पहोर, तथा जेठ अशाडे त्रण पहोर मिश्र रहे, अने त्यार पछी अचित्त थाय; ते लोटने अचित्त जाणी वापरे. इत्यादि सचित्त शंकित वस्तुनुं नक्षण करवुं ते अपक्वौषधि नक्षण नामे त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो दुःपक्वौषधिनक्षण एटले अरधी काची अने अरधी पाकी ते जुला, जंबी, पुंख, पापडी प्रमुख वस्तु खावी ते अतिचार. पांचमो तुच्छौषधि नक्षण ते मग प्रमुखनी कोमल शींग तथा बोर प्रमुख तुच्छ एटले घणी खावाथी पण संतोष न थाय, एवी वस्तुने अचित्त करी वापरे ते पांचमो अतिचार जाणवो, जेने सचित्त खावानो नियम होय तेने ए पांच अतिचार लागे. ए बीजा गुणव्रतना नोजन संबंधी पांच अतिचार ते आश्रयी दिवस संबंधी जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्वने हुं पडिक्कमुं.

हवे जे गृहस्थ आजीविकाने अर्थे कुव्यापार करे ते पण नोगोपनोगज कहीए ते पांच (इंगालादि) कर्म, पांच (दंतादि) वाणिज्य अने (यंत्रादि) पांच सामान्य, एम पंदर कर्मादान ठे तेने श्रावके जाणवां, पण आच

रवां नहीं. ते आश्रयी पंदर अतिचार बे गाथाए कहे छे.

इंगाली के० प्रथम काष्ठ बाली अंगारा करी वेचवा, तथा सोनी, कुंनार, नामनुंजादिकनां जे अग्नि संबंधी कर्म ते अंगारकर्म; बीजुं वण के० वामी, वन, वनस्पति नीपजाववां, तथा तेनां फल फुल वेचवां, तथा आखां वन वेचवां, तथा दांणा दलाववा ते वनकर्म; त्रीजुं शकटकर्म ते गामां तथा तेनां अवयव धोंसरा, समोल, प्रमुख बनावीने वेचे वेचावे ते सामी के० शकट कर्म; चोथुं नामी के० बलद घोमा, घर, हाट प्रमुख राखीने आजीविका निमित्ते नामे आपवानुं करे ते नाटिक कर्म; पांचमुं फोमी के० जव चणा तुवेर प्रमुख अनाजनो साथवो करवो तथा तेनी दाल करवी, तथा मांगर प्रमुखना चोखा काढवा, तथा जमीन फोमवी ते कूवा वाव तलाव विगेरे कराववां, तथा उम, सलाट विगेरेनुं काम करवुं, तथा हल प्रमुखे करी जमीन खेमवी इत्यादि जेटलो पृथ्वीनो आरंन ते सर्व स्फोटिक कर्म जाणवुं. ए पांच सामान्य कर्म ते श्रावक अत्यंतपणे वर्जे.

हवे पांच कुवाणिज्य कहे छेः—प्रथम दांत, नख,

चामडुं, शिंगडादिकना व्यापार एटले हाथीदांत, चमरी गायना वालना चमर, मत्स्यादिकना नख, शंख, मोती, तथा वाघ मृगादिनां चामडां, हिंग, हांस रु प्रमुख रोम इत्यादि त्रस जीवोना अंगनो जेमां वेपार आवे छे, तेने जो देशांतर जइ वोहोरे तो तेमां घणो दोष लागे, तेने दंत कुवाणिज्य कहे छे. बीजुं लाख, धावडीनां फुल, कसुंबो, हडताल, गली तथा टंकण खारादिकनो व्यापार जे थकी बहारना जीवोनुं मृत्यु थाय ते सर्व लख्क के० लाख कुवाणिज्य जाणवुं. त्रीजुं विगय महाविगय एटले घी, तेल, गोल, मद्य, दूध, दहीं विगेरेनो वेपार ते सर्व रसकुवाणिज्य जाणवुं. चोथुं द्विपद ते मोर, सूडा, तथा मनुष्य प्रमुखना व्यापार अने गाय घोडा प्रमुख चतुष्पदना वेपार ते केशकुवाणिज्य. पांचमुं अफीण, सोमल विगेरे झेरी चीज, तथा छरी कटारी विगेरे शस्त्र, जेना बले करी घणा जीवोनो संहार थाय तथा हल कोदालादिक जे सर्व कुवस्तुनो वेपार ते विसविसय के० विस एटले झेर तथा लक्षणथी शस्त्रादिकनो विसय के० विषय छे जेमां, तेने विसविसय कुवाणिज्य कहीए; ए पांच कुवाणिज्यने

श्रावके वर्जवां. ॥२१॥

एवं खु के० हवे पांच सामान्य कहे छे. एवं खु के० एम निश्चे शिला, लोढी, उखल, मुसल, घंटी, चरखो आदि अनेक जातिनां यंत्र करी वेचे ते सर्व यंत्र कर्म, तथा सेलडी प्रमुख पीलवानां कोहलुं, घाणी प्रमुख यंत्रथी जे कर्म लागे तेने जंतपिल्लण के० यंत्रपीलन कर्म कहीए. बीजुं बालकनां नाक कान वींधाववा, नपुंसक करवा, ऊंट बलद घोडा प्रमुखनां नाक वींधवां, आंक पडाववा, समराववा, कर्ण कंबल पूछडां छेदावे, इजारे गाम लेइ आकरा कर करे, कोटवालपणुं करवुं इत्यादि जेटलां निर्दयपणानां काम छे तेने निर्लंछन कर्म जाणवुं. त्रीजुं धरमनी बुद्धिए अथवा मोकली भूमिने विषे सुखथी सग्रांम थाय, अथवा स्वन्नावे अथवा तृणादिक वाळ्या पछी नवा अंकुरा उगे तो गायो चरे, एवा हेतुथी वन झाडी प्रमुखने दव लगाडे, तथा कोइने अग्नि आपे तेने दवदान कर्म कहीए. चोथुं सरोवर खोदाया विना जे जग्यामां पाणी रहे तेवा ठेकाणाने सर कहे, ते सर तथा द्रह तथा तलाव कुवा वाव इत्यादि पाणीनां स्थानको शोषण करवां,

तेमांनुं पाणी उलेचावे, त्यां अनेक जलचर पंचेंद्रि जीवनी हिंसा थाय छे तथा नील फुल प्रमुख घणा जीवोनो विनाश थाय छे तेने सरदहतलायसोसण कर्म कहीए. पांचमुं असइ पोसं के० असती पोषण कर्म ते कुतरां, बिलाडां, मोर, कूकडा, मेनां, सिंचाणा, सूडा प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवुं, अथवा व्यभिचारिणी स्त्रीनुं, तथा दुष्ट पुत्रादिक, दुष्ट दास दासीनुं पोषण करवुं, तथा कसाइ, माछी, वाघरी, तलीनी साथे वेपार करवो; ए वगेरे जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं तेने असती पोषण कर्म कहीए. ए पांच सामान्य कर्म कह्यां. एम सर्वे मलीने पन्नर कर्मादान जे छे तेने निश्चे करी श्रावके वर्जवां. ए पंदर अतिचारमां जे कोइ अतिचार जाणतां अजाणतां लाग्यो होय ते सर्वेने हुं निंदुं छुं.

हवे अनर्थ दंड विरमण नामा त्रीजुं गुणव्रत कहे छे. जे थकी निरर्थक आत्मा दंडाय, पाप लागे तेने अनर्थ दंड कहीए. ते चार प्रकारे छे; प्रथम अपध्यानाचरित ते मनमां एवी चिंतवना करे के वैरीने बांधुं मारी नांखुं, अने राजा थाउं तो वैरीनां गाम बाली

नांखुं, विद्याधर थाउं तो स्वेछाए ज्यां न्नावे त्यां जाउं, मन मानती स्त्रीनी साथे विलास करुं, इत्यादिक जे माठुं ध्यान धरे ते अपध्यानाचरित अनर्थ दंरू कहीए. बीजो प्रमादाचरित अनर्थदंरू ते पापविकथा करवी, दूध, दहीं, तेल इत्यादि वस्तुने ढांकवानुं आलस करवुं ते. त्रीजो हिंसप्रदान अनर्थदंरू ते घंटी, मूशल, चाकु प्रमुख पाप अधिकरण कोइने आपवां ते हिंस प्रदान अनर्थदंरूनो त्रीजो न्नेद. चोथो पापकर्मोप देशअनर्थदंरू ते न्हाउ, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो, खेती करो, वाछमाने समरावो अमुकने कूटो, मारो, बांधो, इत्यादिक उपदेश देवा ते चोथो न्नेद. तेमां पोतानी नातनाने, गोत्रीने अर्थे पाप करवुं ते व्यवहा रद्दष्टिए अर्थदंरू छ; माटे अहींआं तेनो त्याग नथी, एन अनर्थदंरूविरमण नामे त्रीजुं गुणव्रत कहीए. ।२३।

सछग्गिमुसल के० शस्त्र, अग्नि, मुशल, घंटी, सावरणी, लाकमी, मंत्र ते (साप खीलवा प्रमुखना) नागदमणी प्रमूख जमी बूट्टी तथा गन्नेपातन प्रमुख जाणवा, तथा बे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उ पजे एटले गोली, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवका

री वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली बीजाने आपवाथी, अपाववाथी, आपनारने अनुमोद वाथी जे अतिचार लाग्या होय ते सर्व दिवस संबंधी अतिचार प्रत्ये हुं प्रतिक्रमुं छुं. ॥ २४ ॥

न्हाणुवट्टण के० स्नान ते अभ्यंग करीने तल चोपडीने नाहीये, त्यां अजयणाए जीवाकूल भूमिका ए न्हाय, अथवा अणगल पाणीए न्हाय तथा उवट्टण के० पीठी प्रमुखे करी शरीरनो मल उतारे. अबील, गुलाल, केसर, चंदन, कंकु वगेरेनुं विलेपन जाणवुं, तथा वांसली विणादिकना शब्द कौतुकें सांभलवा, त था पहोर रात उपरांत उंचे शब्दे बोलवुं, रूप के० स्त्री प्रमुखनां रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, रस के० मीठो खाटो वगेरे रस, गंध के० वास एटले सुगंध कपूर, कस्तूरी, प्रमुखना जाणवा. वत्थ के० वस्त्र आस ण के० बेसवानां आसन तेने संबंधे शय्या पण जाण वी. तथा आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायना दिक विषयभोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां. आ भरण ते भूषण, मुकुट, कुंडल वगेरे तथा जूगटुं, म दिरापान, हींचका खावा वगेरे दुष्ट काम करवां, जो

वां, एम अनेक उपभोग परिभोग वस्तुउ संबंधी अजयणाए अण उपयोगे जे अतिचार मारे लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अतिचारप्रते हुं पडिक्कमुं छुं. ।२५।

गाथा २६ थी ३० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

कंदप्पे–कंदर्प्प
कुक्कुइए–कुचेष्टा, भांडचेष्टा.
मोहरि–वाचालपणुं
अहिगरण–घंटीमुसल अधिकरण
भोग–भोगनी वस्तु
अइरित्ते–खपथीवधारे
दंडंमिअणट्ठाए–अनर्थ दंडने विषे
दुप्पणिहाणे–दुःप्रणिधान, सावद्य वेपार
अणवट्ठाणे – अनवस्थान, सामायक वरावर न पारखुं.
तहा–तथा

सइ–स्मृति, यादी
विहूणे–रहित
वितह–खोटुं
आणवणे-अणाववामां
पेसवणे–मोकलवामां
सद्दे–शब्द करवो
रूवे–रूप देखाडवुं
पुग्गल–पुद्गल
रूखेवे–नांखवुं
देसावगासिअंमि–देशावकासिकमां
संथार–शय्या वीगेरे संथारो
उच्चार–झाडो पेसाव परठववो
विहि–विधि

भोअण–भोजन
आभोए–चिंतववुं
पोसह–पोषध
विवरीए–विपरीते
निक्खिवणे–मूकवुं
पिहिणे–ढांकवुं
ववएस–व्यपदेशकरवो फेरफार बोलवुं.
मच्छरे–मतसर, इर्ष्या
अइक्कम–आतिक्रम, ओलंघवुं
दाणे–दानने विषे

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगर
ण नोगअइरित्ते ॥ दंमंमि अण
ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे॥२६॥
तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे
तहा सइविहूणे, सामाइअ वितह
कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥२७॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पु
ग्गलरकेवे ॥ देसावगासिअंमि, बी
ए सिरकावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा
रुच्चारविहि, पमाय तह चेव नो
अणानोए पोसहविहि विवरीए,
तइए सिरकावए निंदे ॥ २९ ॥
सच्चित निरिकवणे, पिहिणे ववएस
मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे,
चनठे सिरकावए निंदे ॥ ३० ॥

कंदप्पे के० कंदर्प एटले जे थकी कामविकार

जागे एवुं बोलवुं ते प्रथम कंदर्प अतिचार जाणवो. कुक्कुइए के० ज्ञांमनी पेरे शरीरना अवयवोनी कुचेष्टाए करीने लोकोने अत्यंत हसाववा तथा कोइना चाला पाडवा ते बीजो कौकुच्य अतिचार. विचार रहित घणुं बबडवुं तथा अघटित वचन बोलवां ते त्रीजो मुखरी अतिचार जाणवो. तथा अहिगरण के० शस्त्र, अग्नि, मूशल, घंटी प्रमुख अधिकरण तैयार करी माग्यां आपवां तेमज अग्निप्रमुख सौथी पेहेलां सलगाववां ते चोथो अधिकरण अतिचार जाणवो. तथा उपज्ञोग परिज्ञोगनी वस्तु अइरित्ते के० खप करतां वधारे राखवी एटले ज्ञोगनी वस्तु जेवी के तेल, कंकोडी, पाणी, प्रमुख वस्तु अधिक राखे जे देखीने बीजाने न्हावा प्रमुखनी वांछा थाय तेथी ज्ञोग वस्तुनो दोष लागे, अने उपज्ञोग वस्तु ते जो एक घरनो खप होय तो पण बे चार सामटां करावे तेथी उपज्ञोग वस्तुनो अधिक दोष लागे ते पांचमो ज्ञोगातिरिक्त अतिचार, ए रीते अनर्थ दंडविरमण नामे त्रीजा गुणव्रतने विषे पुर्वोक्त जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं निंदु छुं. ॥२६॥

तिविहे डुप्पणिहाणे के० त्रण प्रकारे सावद्य

व्यापार छे तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमां प्रथम घर, हाट, प्रमुख संबंधी जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं ते मनोदुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कठोर सावद्य भाषाए करी बोलवुं ते बीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. त्रीजो अण उपयोगे कायाने जोया पूंज्या विना बेसवुं, उठवुं, उर्लंगवुं वगेरे पाप व्यापारमां प्रवर्त्ताववी, ते कायदुःप्रणिधान नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा जघन्य बे घमी सामायकनुं कालमान छे तेटलो काल पूर्ण कर्या विना सामायिक पारवुं, तथा आदर रहितपणे सामायक करवुं तथा पारवुं ते चोथो अनवस्थान अतिचार जाणवो. तथा निद्रादि प्रमादथी में सामायक कर्युं के नथी कर्युं, एवुं उपयोगनुं शुन्यपणुं ते पांचमो अतिचार, ए रीते सामायिक प्रत्ये वितह के० जूठुं, कए नाम करे थके प्रथम सामायिक नामे शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं निंदु छुं. ॥ २७ ॥

आणवणे पेसवणे के० हवे बीजा देशावकाशिक शिक्षाव्रतने विषे परिमाण कीधेली भूमिनी वाह

रथी कांइ वस्तु मंगाववी, ते आनयननामा पेहेलो अतिचार जाणवो. बीजो परिमाण उपरांतनी नूमिने विषे चाकर प्रमुखने मोकलवो, वेचवा लेवा आदेश आपवो, ते प्रेषवणनामा अतिचार जाणवो. तथा कोइ कामपडे थके नीमेली नूमिकाथी बाहार रहेला मनुष्यने खुंखारादिक शब्दे करी पोतानुं छतापणुं जणाववुं ते त्रीजो शब्दानुपातिनामा अतिचार जाण्‍वो. तथा उंचो थइ पोतानुं रूप देखाडीने बो ना पण जेने बोलाववुं होय तेनी नजरे पडे, थकी तेनी पासे जाय ए चोथो रूपानुपा अतिचार जाणवो. तथा नीमेली नूमिकाथी रहेला पुरुषने कांकरादिक नांखी पोतानुं छता ाववुं, ते पांचमो पुद्गलोत्क्षेपनामा अतिचार . ए पांच अतिचार मांहेथी देशावकाशिकना जा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, . प्रत्ये हुं निंडुं बुं. ॥ २८ ॥

संथारुच्चारविही के० शय्या संथारो तथा वडी नीति अने लघु नीतिना ठंडिल, एना प्रकारने विषे जे प्रमाद करवो ते अतिचार चतुष्क जाणवो. तेने विवरी

ने कहे छे, तेमां शय्या संथाराने न पडिलेहे, अथवा प
डिलेहण करे, तो कांइक करे कांइक न करे ते पहेलो
अप्पडिलेहिअडुप्पडिलेहिअसज्जासंथारे नामा अति
चार जाणवो. तथा शय्या संथाराने न पूंजे प्रमार्जे,
अथवा पूंजे तो कांइक पूंजे कांइक न पूंजे ते बीजो
अप्पमज्जिअडुप्पमज्जिअशय्यासंथारे नामे बीजो अ
तिचार जाणवो. तथा वडीनीति लघुनीति परठववानी
नूमिने न पडिलेहवी अथवा पडिलेहवी तो कांइक प
डिलेहवी कांइक न पडिलेहवी. ते त्रीजो अप्पडिलेहि
अडुप्पडिलेहिअनच्चारपासवणनूमिनामा त्रीजो अ
तिचार जाणवो, तेमज ते नूमिने न प्रमार्जवी, अथवा
प्रमार्जवी तो कांइक प्रमार्जवी अने कांइक न प्रमार्ज
वी, ए अप्पमज्जिअडुप्पज्जिअनच्चारपासवणनूमिनामे
चोथो अतिचार जाणवो. ए रीते शय्यासंथार तथा
ठंडिलनूमि संबंधी अतिचार चतुष्क थयुं, तेमज नोअ
णान्नोए के० पोसह लीधा पछी क्यारे पारणुं करीशुं
अथवा पारणे असुक नोजन करीशुं एवी चिंतवना
करवी, ते पांचमो नोअणान्नोएनामा अतिचार जाण
वो. आ पांच अतिचाराए करीने पोषधव्रतनी विधि विप

रीत करे अके पोषधोपवासव्रतनामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं निंदुबुं.।२ए।

सच्चित्ते निख्कित्रणे के० साधुने देवा योग्य निर्दोष वस्तुने सचित्त उपर मूकवी ते प्रथम सचित्त निक्षेपण नामा अतिचार जाणवो, तथा तेवी वस्तुने सचित्त वस्तुए (कंद, पत्र) करी ढांकवी, ते सचित्तपिहिण नामा बीजो अतिचार, तथा पोतानी वस्तुने अण देवानी बुद्धिए पारकी केहेवी तथा देवानी बुद्धिए पारकीने पोतानी केहेवी, ते व्यपदेश नामा त्रीजो अतिचार, तथा कोपन्नावे दान आपवुं, तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं तथा परनी इर्ष्या करतां मान धरतां मुनिने दान आपवुं ते मत्सरनामा चोथो अतिचार, तथा निश्चे गोचरीनो काल वीत्या पठी मुनिराजने तेमे केमके हवे मुनिराज वोहोरशे पण नहीं अने मारो नियम पण न्नंग नहीं थाय, ते पांचमो कालातिक्रमदान अतिचार जाणवो ए अतिथिसंविन्नागनामे चोथा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रत्ये हुं निंदु छुं. ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

सुहिएसु–सुहित उपर, सुखीआ उपर
दुहिएसु–दुखीआ उपर
जा–जे
अ–नही
स्सं–पोताने छंदे, रुडे प्रकारे
जएसु–विचरता
अस्संजएसु–गुरुनी आज्ञा प्रमाणे विचरता, असंजती
अणुकंपा–दया
साहूसु–साधुने विषे

संविभागो–संविभाग, वोहोराववुं
चरण–चरण सित्तरी
करण–करण सित्तरी
जुत्तेसु–सहित, वाळा.
संते–छते
फासुअ–निर्दोष
जीविअ–जीववामां
मरणे–मरवामां
आसंस–वांछा
मा–नहीं
मरणंते–मरणना अंते
काइअस्स–काया संबंधी.

वाइअस्स–वचन संबंधी.
मणसा–मनवडे करीने
माणसिअस्स–मन संबंधी
वय–व्रत
गारवेसु–अहंकारने विषे
सन्ना–संज्ञा
दंडेसु–दंडने विषे
गुत्तिसु–(त्रण)गुप्तिमां
समिईसु–(पांच) मसमितिमां

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कउ

तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ संते फासु
अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि
॥३१॥ इह लोए परलोए, जीविअ
मरणे अ आसंसपउगे ॥ पंचविहो
अइआरो मा मज्झं हुज्ज मरणंते
॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्क
मे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा मा
णसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स
॥३४॥ वंदण वय सिक्खा गा, रवेसु
सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ
सामईसु अ, जो अइआरो अ
तं निंदे ॥ ३५ ॥

सुहिएसु अ के० सम्यक् ज्ञान, दर्शन, अने चारित्रनुं जेमने सारी रीते हित छे, तेमने सुहित कहीए, वली दुःखित ते रोगे करीने पीडित, तपे करीने दुर्बल, तुछ, जीर्ण, उपाधिये करीने दुखिया एवा, पोताना छंदे विचरता नथी, पण गुरु आज्ञाए विचरे छे एवा सु

साधु उपर पुत्रादिकना रागे करी एटले आ मारो पुत्र छे के बाप छे, एवा रागे करी दान दीधुं, पण गुणवंत नी बुद्धिए नहीं दीधुं, अथवा द्वेषे करीने एटले आ साधुने नातना लोकोए बहार काढ्यो छे, ए भूख्यो छे, ए बापडाने आपणे आहार पाणी आपवुं जोइए, नहीं आपीए तो ते भूखे मरशे एम द्वेषे करी एटले दुगंछा भावनी बुद्धिए करी मारे जीवे अन्नपानादिकना दाने करी दया भक्ति कीधी होय, ते प्रत्ये आत्म साखे हुं निंदुहुं अथवा गुरुनी साखे हुं विशेषे निंदुहुं. ए पेहेलो अर्थ थयो.

बीजो सुखी एटले वस्त्र पात्रादिके करी सुखीआ अने रोग प्रमुखे करी दुखीआ एवा असंयत एटले जे रुडो उद्यम नथी करता परंतु जीवहिंसादिक कर्म पाशमां पडवाना उद्यम करवावाला वेष विडंबक, असंयती, पासछा, उसन्ना वगेरेने, राग अथवा द्वेषे करीने जे अनुकंपादान आप्युं होय, ते आत्म साखे निंदुहुं अने गुरुनी साखे गरहुंहुं. त्रीजो जे असंयत ते छकायना जीवनो आरंभ करनार अथवा अन्य दर्शनी कुलिंगी, तेने रागे करीने जेमके आ मारा गामना रेनारा छे तथा मारा भाइ छे, मारी ओलखाणना छे,

इत्यादि राग भावे करी दान दीधुं, तथा आ जिनशासनमी हेलना करनारा छे, द्वेषी छे, निर्लज्ज छे, भंरुक छे, इत्यादि द्वेष उपन्यो, तो पण घेर आव्या माटे दान आप्युं इत्यादि मारे जीवे जे दया कीधी होय तेने हुं निंदुछुं अथवा गुरुनी साखे गरहुंछुं ॥ ३१ ॥

साहूसु संविभागो के० तपे करीने तथा चरण सित्तरी अने करण सित्तरीये करीने सहित एवा सुसाधु, तेने विषे देवा योग्य फासु निर्दोष एवुं अन्नपानादिकना दान छते म्हारे जीवे जो संविभाग न कीधो होय, तेथी जे अतिचार हुवो होय, ते प्रते हुं आत्म साखे निंदुछुं वली ते प्रत्ये गुरुनी साखे गरहुं छुं. ए त्रण गाथाये करीने चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ ३२ ॥

हवे संलेखणाना पांच अतिचारनो परिहार करता छता कहे छे. इहलोए परलोए के० आ लोकने विषे आ धर्मना प्रभावे शेठ, सेनापति, राजा प्रमुख ऋद्धिवंत थवानो जे अभिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते इहलोकाशंस प्रयोग नामे पेहेलो अतिचार जाणवो. आ धर्मना प्रभावे परलोक मध्ये देव देवेंद्र

थवानो अभिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते परलोकाशंसप्रयोग नामा बीजो अतिचार जाणवो. अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल जीववानी जे इछा तेनो प्रयोग जे मननो वेपार ते त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अतिचार जाणवो. कठण क्षेत्रने विषे अनशन लेइने कोइ पूजा अर्चा न करता होय तेणे करी अथवा भूखादिके करी पीड्यां थकां उतावली मरणनी जे इछा तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार जाणवो. तथा अ के० च शब्द थकी आ धर्मने प्रभावे आवते भव रुडा शब्द, रूप, रसादिक जे कामभोग तेनो जे अभिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते पांचमो कामभोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो. ए रीते संलेषणा संबंधि ए पांच प्रकारना अतिचार मरणने अंते म्हारे न थाउ ॥ ३३ ॥

काएण काइअस्स के० वधादिकारी एवा शरीरे करी करेला जे अतिचार ते अतिचारने कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक कायाना शुभ व्यापारे करी युक्त एवा शरीरे करीने तथा सहसाभ्याख्यानदानादि

रूप वाणीए करीने कस्यो एवो जे वचन संबंधी अतिचार तेने वचने करीने मिथ्याडुक्कड देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुभ वचननो व्यापार, तेणे करीने, तथा मानसिक एटले देवतत्त्वादिकने विषे मने करी शंकादिकने करवे करी कस्या एवा जे अतिचार तेने मने करी अनित्य भावनादिक जे मनना शुभ व्यापार तेणे करीने, तथा " हा ! में डुष्ट काम कर्युं ?" इत्यादिक आत्मनिंदाए करीने, एम सर्व व्रतना अतिचार प्रत्ये त्रिकरण शुद्ध करीने हुं पडिक्कमुं छुं निवर्त्तुं छुं. ॥३४॥

वंदणवय के० वंदण बे प्रकारे छे; एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन. बीजुं श्रावकनां स्थूल प्राणातिपात विरमणादिक व्रत बार प्रकारे छे. त्रीजी शिक्षा बे भेदे छे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहण शिक्षा कहीए. ते जघन्य नवकारथी मांडीने अष्ट प्रवचन माता गुरु पासेथी भणे अने उत्कृष्टो दशवैकालिक सूत्रना पांचमा छज्जीवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र ने अर्थ बेहु भणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगे प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी; अने जे अर्थ सहित नमुक्कारसहियं प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रि

या अनुष्ठाननी जे समाचारी छे, एटले पहेलो नवकार गणतो थकोज उठे, पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावककुं, मारे केटलां व्रत छे, इत्यादि श्राद्धदिन कृत्य प्रकरण तथा श्राद्धविधिमां जे समाचारी कही छे ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवना शिक्षा कहीए. हवे ऋद्धिगारव रसगारव अने शातागारव ए त्रण प्रकारना गारव छे; तेमां पहेलो धन, सगां संबंधी परिवार घणो देखीने मनमां अहंकार आणे ते ऋद्धिगारव, अने जे सारुं खावापीवाने लोलुपी थाय ते रसगारव, तथा जे वस्त्र घर प्रमुखने मोहने लीधे छोडी शके नहीं तेने शाता गारव कहीए. ए त्रण प्रकारना गारवनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो सन्ना के० आहार, भय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञा उ; बीजी क्रोध, मान माया, लोभ, लोक, उघ, ए छ संज्ञाउ, ते एकेंडियादि सर्व जीवोने होय छे, तथा छठो कसाय के० क्रोधादि चार कषाय, तथा सातमो दंडेसु के० धर्म धनथी जेणे करी आत्मा दंडाय ते दंड, अशुभ मनादिक त्रण भेदे छे. आठमो गुत्तीसु अ के० मनादिक त्रण गुप्ति, नवमो समिईसु के० ईर्यादिक पांच

समिति, अने अ के० च शब्दथी श्रावकनी अगिआर पडिमा. ए नव बोल मध्ये जे बोल निषेध करवा योग्य छे तेना करवाथी अने जे बोल करवा योग्य छे तेना न करवाथी जे अतिचार मने लाग्यो होय. ते प्रत्ये हुं निंदुं. ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना छुटा शब्दोना अर्थ.

हु–तो पण
समायरइ–समाचरे, करे.
किंचि–थोडुं
अप्पो–अल्प, थोडुं.
सि–तेने
बंधो–बंध
जेण–जे माटे
निद्धंधसं–निर्दयपणे
कुणइ–करे
तंपि–ते पण
सपडिक्कमणं–पडिक्कमण सहित
सपरिआवं–परिताप सहित, पश्चात्ताप सहित
सउत्तरगुणं–उत्तर गुण सहित
खिप्पं–क्षिप्र, उतावळो
उवसामेइ–उपशमावे, टाळे.
वाहि–व्याधि
व्व–जेम
सुसिक्खिओ–सारो शीखेलो
विज्जो–वैद्य
कुट्ठगयं–कोठामां गयेलुं
विसारया–विशारद, जाणनार.
हणंति–हणे छे, दूर करे.
मंतेहि–मंत्रोए करीने
तो–सारे
निव्विसं–विष रहित
समज्जिअं–मेळवेलुं
आलोअंतो–आलोवतो
निंदंतो–निंदतो
सु–सारो
कयपावो–पाप करनारो

मणुस्सो—माणस	होइ—थाय	भरु—भार
आलोइअ—आलोइने	अइरेग—अतिरेक, घणो	भार—बोज, भार.
निंदिअ—निंदीने	लहुओ—हळवो	वहो—वेहेनार, लेइ ज-नार.
सगासे—समीपे, पासे	ओहारिअ—उतारीने	

सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि ॥ अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिउ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंत मूल वि सारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अ ट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ॥ आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं ह णइ सुसावउ ॥३९॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरु

सगासे ॥ होइ अइरेग लहुअं, उंह
रिअ जरुव्व जारवहो ॥ ४० ॥

सम्मद्दिठ्ठी के० जो पण सम्यक्दृष्टि एटले यथा अवस्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव ते थोमा खेती प्रमुख आरंजरूप पाप गुजरान चलाववाने माटे करे छे, तो पण ते सम्यक्दृष्टि जीवने अल्प ते पूर्व गुण ठाणानी अपेक्षाये करी थोमो कर्मनो बंध होय; जे कारण माटे, सम्यक्दृष्टि जे श्रावक छे ते निर्दयपणे पाप व्यापार न करे, अने करे तो पण शंका राखीने करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पमो आ गृहस्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पमे छे ? एवी बीक राखीने करे, पण निर्दय परिणाम राखीने न करे तेथी तेने पाप थोमुं लागे छे. ॥३६॥

अहींआं कोइ आशंका करे के, जेम थोमुं पण विष खावाथी जीव जाय छे, तेम थोमुं पण पाप करवाथी डुर्गतिनी प्राप्ति न थाय ? आ आशंकानो उत्तर आगली गाथाये आपे छे.

तंपि हु सपमिक्कमणं के० प्रतिक्रमण जे छ आवश्य

क तेणे करी सहित थको, एटले प्रतिक्रमण करवे करीने, वली परिताप सहित थको, एटले पश्चात्ताप करवे करी वली उत्तरगुणे सहित थको, एटले गुरुए दीधुं जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त, एवो श्रावक निश्चे ते थोमा कर्मना बंधने पण उतावलो उपशमावे छे, टाले छे. कोनी पेरे? तो के सारो शीखेलो वैद जेम रोगोने तरत टाले छे तेम ए पण जाणवुं. ॥३७॥

वली जहाविसं के० जेम मंत्र मूलमां प्रवीण एवा जे वैद्य ते शरीरने विषे व्यापेला सर्पादिकना जेरने मंत्रवमे दूर करे छे ते वारे ते शरीर विषरहित थाय छे. जो के विषे पीमाएलो पुरुष सर्पनी मणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रज्ञाव जाणतो नथी तो पण तेमनो प्रज्ञाव अचिंत्य छे तेथी तेनुं विष निवृत्त थाय छे, तेम अहीं पण श्रावकने गुरुवाक्यना अनुसारे ते अक्षरना सांज्ञलवाथी लाज्ञ थाय छे. ॥३८॥

एवं अठविहं के० ए रीते गुरु पासे पोतानां पाप आलोवतो तथा निंदतो थको, साचा मनथी मिछामि ङुक्कमं देतो थको, ज्ञलो श्रावक जे छे, ते रागद्वेषे करीने बांधेलुं आठ प्रकारनुं कर्म, तेने तरत हणे छे. ॥ ३९ ॥

कयपावोवि केण पापनो करनार एवो पण मनुष्य. गुरु पासे करेला पापने प्रकाश करतो थको, तथा पापनी निंदा करतो थको, एटले मिच्छामि दुक्कड देतो थको, घणा पापथी हलवो थाय. जेम भार लेइ जनार पुरुष भार उतारीने हलवो थाय छे तेम ते पापा कर्मरूप भारे करीने हलवो थाय छे. ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

आवस्सएण–आवश्यके करीने
एएण–एणे करी
बहुरओ–बहु रजवालो, घणा पाप वालो.
दुरकाणं–दुखोनी
अंतकिरिअं– अंताक्रिया, नाशक्रिया.
काही–करशे
अचिरेण–थोडा
कालेण–काले करी
आलोअणा–आलोचना, आलोयण.
न–न
य–वळी
संभरिआ–सांभरी
मूलगुण–मूळ गुण
पन्नत्तस–कहेलो, भाखेलो
अब्भुठ्ठिओमि–उठयो छुं
आराहणाए–आराधनाने माटे
विरओमि–निवर्त्यो छुं
पडिक्कंतो–पाप थकी निवर्त्यो.

आवस्सएण एएण, सावज जइवि बहुरज होइ ॥ दुरकाणमंतकिरि

अं, काही अचिरेण कालेण॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभ रिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगु णउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहा मि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केव लिपन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिउमि आरा हणाए विरउमि विराहणाए ॥ ति विहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआ इं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लो ए अ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे, इह सं तो तत्थ संताइ ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ॥ सव्वेसिं तेसिं पणउ, तिविहेण ति दंडविरयाणं ॥ ४५ ॥

आवस्सएण के० जो पण श्रावक घणो कर्मबंध

रूप रजवालो एटले आरंभ परिग्रहे करी घणा पाप सहित होय तो पण ए पडिक्कमणादि आवश्यके करीने शारीरिक तथा मानसिक दुःखोनो थोडा कालमां विनाश करशे. ॥ ४१ ॥

आलोअणा के० आलोचना एटले गुरु आगल पाप प्रमाद आलोववानी रीत ते घणा प्रकारनी छे, ते मारा पडिक्कमणा करवाना अवसरे न सांभरी होय ते न सांभरवाथी सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत तेने विषे, तथा त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत तेने विषे, जे अतिचार लाग्यो होय, तेने हुं आत्म साखे निंदुछुं, वली ते प्रत्ये गुरु साखे गरहुंछुं ॥ ४२ ॥

ए बेतालीस गाथाउ बेगं कहेवी पछी तस्सधम्मस्स एम कहेतो उभो थइ बे हाथ जोडीने आगली मंगलगर्भित आठ गाथाओ कहे. तस्स धम्मस्स के० ते गुरु पासेथी मलेलो एवो अने केवली भाषित एवो श्रावक धर्म तेनी आराधनाने माटे हुं सारी रीते पालन करवाने उठ्योछुं. ते धर्मनी विराधना थकी हुं निवर्त्यो छुं. त्रिविधे करी एटले मन, वचन, अने कायाए करी अतिचार पाप थकी निवर्त्यो थको चोवीश

जिनने हुं वांडुं ॥ ४३ ॥

जावंति चेइआइंके० ऊर्ध्वलोकने विषे वली अधो लोकने विषे वली तिर्छा लोकने विषे जेटलां चैत्य एटले जिनबिंब छे ते सर्वने अहींआं रह्यो थको हुं वांडुं. ॥ ४४ ॥

जावंत केविसाहू के० पांच भरतक्षेत्रने विषे, पांच ऐरवत क्षेत्रने विषे, तथा पांच महाविदेह क्षेत्रने विषे, अने च शब्दथी अकर्मभूमि क्षेत्रादिकने विषे जघन्य बे हजार कोमी अने उत्कृष्टा नव हजार कोमी साधुउ छे ते सर्व साधु प्रते त्रिविध एटले मन, वचन अने कायाए करी हुं प्रणमुंछुं. ते सर्व साधु केवा छे तो के त्रण दंम थकी एटले अशुभ मन, वचन अने कायाना व्यापारथी विराम पामेला छे. ॥ ४५ ॥

गाथा ४६ थी ५० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

चिर-घणा कालनां	सय-सो	कहाइ-कथाओ
संचिय-एकठां करेलां	सहस्स-हजार	वोलंतु-जाओ
पणासणीइ-नाश करनारी	महणीए-मंथनारी	दिअहा-दिवसो
	विणिग्गय-नीकळेली	पडिसिद्धाणं-निषेध

करेलुं	खामेमि खमावुं छुं	केणइ-कोइनी साथे
किच्चाणं-करवा जोग	खमंतु-खमो	गरहिअ-गुरुनी साखें निंदीने
अकरणे-नहीं करवाथी	मे-मने	दुगंछिअ-घणुं खोटुं जाण्युं.
असद्दहणे-अश्रद्धामां	मित्ती-मैत्रीभावे	सम्मं-सम्यक्प्रकारे
परूवणाए-प्ररूपणाए	भूएसु-प्राणीओमां	
	वेरं-वेरभाव	

चिरसंचियपावपणासणीइ, नवस
यसहस्समहणीए ॥ चउवीस जि
णविणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे
दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि
हंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो
अ ॥ सम्मद्दिठ्ठी देवा, दिंतु समा
हिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धा
णं करणे, किच्चाणमकरणे पडि
क्कमणं ॥ असद्दहणे अ तहा,
विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा ख

मंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केणइ॥४ए॥एवमहं आलो इअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदा मि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥ इति॥

अर्थः–चिर संचिय केº घणा कालनां एकठां करेलां जे पापो तेने विनाश करनारी एवी, संसारना लक्ष भव जे करवा तेने हणनारी एवी, चोवीश तीर्थंकरोथी नीकली जे जिनगुणोनी कथा, ते करवे करीने मारा दिवसो जाउ. ए प्रार्थना करी बे. ॥ ४६ ॥

मम मंगलमरिहंता केº एक श्री अरिहंत, बीजा सिद्ध भगवान्, वली त्रीजा साधु मुनिराज, चोथो श्रुत धर्म, ते अंगोपांगादिक आगम, वली चारित्र धर्म पण लेवो; ए श्रुत धर्म अने चारित्र धर्म एम वे प्रकारे केवलीए प्ररूप्यो जे धर्म ते; ए चार वानां मारे मंगलिक बे. अ शब्द थकी ए चारवानां लोकने विषे उत्तम बे, शरणभूत बे, वली पण एम प्रा

धना करीए ढीए जे सम्यक् दृष्टि देवताउ जे ढे, ते मुजने शुन्न कार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता ते प्रत्ये वली बोधि प्रत्ये एटले परन्नवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति प्रत्ये आपो. ॥ ४७ ॥

पमिसिद्धाणं—के० प्रतिषेध करेलां एटले निषेधेलां काम ते समकित अने अणुव्रत वगेरेने मलिन करवानां हेतु एवां शंका वधादिक अढार पापस्थानादिक अशुन्न कार्य करवे करी, तथा बीजो विधि एटले करवा योग्य कामो जेवां के, देवपूजा, सामायक, विनय, दानादिक अरिहंतनी न्नक्ति प्रमुख जे शुन्न कार्य ढे ते शुन्न कार्यने नहीं करवा थकी, वली त्रीजा अश्रद्धानने विषे एटले निगोदादि सूक्ष्म विचारने नहीं सद्दहवे करी, वली तेमज चोथो विपरीत प्ररूपणा केतां जिनागमथी उलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र बोलवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ढे ते अत्यंत न्नवन्नमणनुं कारण रूप ढे, ते विपरीत प्ररूपणा तो अनान्नोगादिके कर्यं ढते पण प्रतिक्रमण कराय ढे, तेथी ए चार प्रकारे करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार थयो होय, ते पाप दूर करवाने अर्थे प

सीलंगधारा ॥ अरकयायारचरि
त्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थ
एण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—अद्धाइज्जेसु के० अढी द्वीप, बे समुद्र संबंधी जे पंदर कर्मभुमि क्षेत्रने विषे जेटला कोइ पण साधु, रजोहरण एटले उघो, अने गुच्छो ते पातरानी झोली उपरनुं उपकरण, अने पात्रुं, इत्यादि धर्मोपकरणना धारण करनारा छे. ॥ १ ॥

ए साधुनो वेष कह्यो, हवे गुण कहे छे. ते साधु केवा छे ? तो के पांच महाव्रतना धरनार छे. वली अढार हजार शीलनां (चारित्रनां) जे अंग तेना धरनार.

ण ठे, अने मिछामि डुक्कम् ठे. ॥ ४८ ॥

खामेमि सव्व जीवे के० सर्व जीवो प्रत्ये हुं खमा वुं छुं, एटले अनंत नवोने विषे पण अज्ञान ने मोहथी आवृत थवा थकी, जीवोने जे पीमा कीधी होय, ते खमावुं छुं, अने ते सर्व जीवो म्हारा अपराधने खमो (माफ करो), केम के सर्व जीवोने विषे मारे मैत्री नाव ठे, कोइ जीवनी साथे मारे वैरनाव नथी॥४ए॥

एवमहं आलोइअ के० ए प्रकारे में सम्यक् प्र कारे आलोच्युं, सम्यक् प्रकारे अत्यंत खोटुं जाण्युं, आत्म साखे निंद्युं, सम्यक् प्रकारे गर्ह्युं, अने सम्यक् प्रकारे डुगंछ्युं, ते माटे त्रिविधे करी एटले मन वचन अने कायाए करी अतिचारादिक पाप थकी पाठो फ रतो थको एटले पापने पमिक्कमतो एवो जे हुं ते चो वीस जिनने वांडुं छुं. ॥ ५० ॥ इति वंदिता सूत्र ॥

विधिः—पठी बे वांदणां देइने गुरुने अपराध ख मावबाने आ रीते कहे.

अप्भुठिओमिना छुटा शब्दना अर्थ.

अप्भुठिओमि—हुं उ ठ्यो छुं	अपत्तिअं—अप्रीति उ पजावी	परपत्तिअं—विशेष अ प्रीति उपजावी

आलावे–एकवार वो लाववे
संलावे–वारंवार वो लाववे
उच्च–उंचा
सम–सरखा
अंतर भासाए–वच्चे बोलतां
उवरिभासाए–कहेली वात फरीने विशेष पणे कहेवाथी
परिहीणं–रहित
सुहुमं–सूक्ष्म
बायरं–मोटुं
तुब्भे–तमे
जाणह–जाणो छो
याणामि–जाणुंछुं

॥ अथ अप्नुठ्ठिमि गुरुखामणां ॥

इच्छाकारेण संदिसह ज्ञगवन् अ
प्नुठ्ठिमि अप्निंतर देवसिअं खा
मेन्नं॥इच्छं॥ खामेमि देवसिअं॥
जं किंचि, अपत्तिअं, परपत्तिअं,
ज्ञत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आ
लावे संलावे उच्चासणे समासणे
अंतरज्ञासाए उवरिज्ञासाए जंकिं
चि मश्र विणयपरिहीणं सुहुमं
वा बायरं वा तुप्ने जाणह अहं न

याणामि तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—इछाकारेण के० हे भगवन! दिवस मांहे कीधेला अपराध खमाववाने हुं उन्नो थयो छुं, ते खमाववानो मुजने तमारी इछाए करी आदेश आपो. ते वारे गुरु कहे, खामेह (खमावो); ते वारे शिष्य कहे इछं, एटले एज इछुं छुं. दीवस संबंधी अपराध प्रत्ये खामुं छुं. पछी पंचांगे प्रणाम करी, मुखे मुहपत्ति राखी एम कहे के जं किंचि के० जे कांइ अप्रीति उपजावी होय, विशेषथी अप्रीति उपजावी होय, शाने विषे ? तो के न्नातपाणीने विषे, विनयने विषे, (गुरु आवे उन्ना थवुं, गुरुने वेसवा आसन आपवुं तेने विनय कहीए) वेआवच्च (औषधपथ्य आणी विसामणां प्रमुख ते)ने विषे, एक वार बोलाववुं, वारंवार बोलाववुं तेने विषे, विनय चुक्यो होउं, वली गुरुथी उंचे आसने वेसतां, वली गुरुनी पासे सरखा तथा बराबर आसने वेसतां, वली गुरुना वात करतां, बोलतां, वचमां बोली उठ्याथी, वली गुरु वात करी

रह्या पछी तेज वात पोतानी चतुराइ देखाडवाने विशेषपणे केहेवाथी इत्यादि जे कांइ में विनय रहितपणे कीधुं होय, एटले जे कांइ नानो अथवा मोटो अविनय, अपराध, माराथी थयो होय, ते सर्व हे ज्ञानवंत ! तमे ज्ञाने करी जाणो छो अने हुं नथी जाणतो, ते मारुं सर्व पाप मिथ्या थाउ. ए अपराध विधि पूर्वक खमावतां चंडरौद्राचार्यादिक अनेक जीवोने केवल ज्ञान उपज्युं छे. ॥ इति ॥

विधिः—ए रीते अब्भुट्ठिओमि खामीने वांदणा वे देवां, पछी उभा थइने आयरिअ उवज्झाए कहे ते लखीए छीए.

आयरिय उवज्झाएना जुदा शब्दना अर्थ.

सीसे—शिष्यने विषे	समण—श्रमण, साधु	अहयंपि—हुं पण
साहम्मिए—साधर्मिक ने विषे [शिष्य	संघस्स—संघने [डवुं	रासिस्स—समूहने
कुल—एक आचार्यना	अंजलि—वे हाथनुं जो	भावओ—भावथी
गणे—घणा आचार्यना परिवार	सीसे—मस्तके	निहिय—स्थाप्युं छे
	खमावइत्ता—खमावीने	निय—निज, पोतानुं
		चित्तो—चित, मन

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साह
म्मिए कुलगणे अ ॥ जे मे केइ
कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि
॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भ
गवउ अंजलिं करिय सीसे ॥ स
व्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अ
हयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासि
स्स, भावउ धम्म निहिय नियचि
त्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि स
व्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

अर्थः—आयरिअ के० आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, (पोताना सरखा धर्म पालनारा तेने साधर्मिक कहीए) कुल (एक आचार्यना संतान), अने गण (गछ, घणा आचार्योनो परिवार), एटने विषे जे कांइ मारे जीवे क्रोधादि कषाय कीधा होय ते

सर्वे मन, वचन, अने कायाए करी खमावुं छुं. ॥१॥

सव्वस्स समण संघस्स के० सर्व श्रमण संघरूप भगवंतना कीधा जे अपराध, ते सर्व अपराध प्रत्ये बे हाथ जोडी मस्तके चडावीने खमावुं छुं अने ते सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हुं पण खमुं छुं. ॥ २ ॥

सव्वस्स जीव रासिस्स के० सर्व जीवना समूहनो जे अपराध में कीधो ते भाव करी धर्मने विषे पोतानुं चित्त थाप्युं छे एवो हुं ते सर्व अपराध खमावुं छुं अने हुं पण तेमना अपराध प्रत्ये खमुं छुं. ॥३॥

विधिः—पछी करेमि भंते कही इच्छामिठामि काउस्सग्गं जोमे देवसिउ० कही तस्स उत्तरी कही अन्नछ उससिएणं कही, बे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स केहवो. पछी सव्वलोए अरिहंत चेइआणं, वंदण वत्तिआए० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी पुरकरवरदी० सुअस्स भगवउ० करेमि० वंदण० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअदेवयाए करेमिकाउस्सग्गं अन्नछ० कही एक नवकारनो काउ

स्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कही पुरुषे सुअदेवया नी पेहेली थोय केहेवी अने स्त्रीए कमलदलनी पेहेली थोय केहेवी. पछी खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ, कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कही क्षेत्र देवतानी बीजी थोय पुरुषे जीसे खित्ते साहूनी केहेवी अने बाइउए यस्याः क्षेत्रंनी थोय केहेवी.

॥ अथ सुअदेवयादि थोयोना छुटा शब्दना अर्थ ॥

सुअ–श्रुत	जीसे–जेना	दल–पांखडी
देवयाए–देवताने अर्थे	खित्ते–क्षेत्रमां	विपुल–विशाल
देवया–देवता	नाणेहिं–ज्ञाने करीने	नयना–आंखवाली
भगवई–भगवती	चरण–चारित्र	मुखी–म्होंवाली
नाणावरणीय–ज्ञानावरणीय	सहिएहिं–सहित एवां	गर्भ–गर्भ
संघायं–समूह	साहंति–साधे छे	सम–सरखी
तेसिं–तेमनां	मुक्ख–मोक्ष	गौरी–गोरावर्णवाली
खवेउ–खपावो	मग्गं–मार्ग	स्थिता–रहेली
सययं–निरंतर	सा–ते	भगवती–भाग्यशाली
सायरे–सागरमां	देवी–देवी	ददातु–आपो
भत्ति–भक्ति	हरउ–हरो	
	दुरियाइं–पापोने	

स्वाध्याय-सज्जाय	यस्याः-जेणीना	साध्यते-सधाय छे
संयम-चारित्र	क्षेत्रं-क्षेत्रने	क्रिया-क्रिया
रतानां-रागी	सं-सम्यक् प्रकारे	भूयात्-हो
विदधातु-करो	आश्रित्य-आश्रयीने	नः-अमने
भुवन-घरनी	साधुभिः-साधुओए	दायिनी-आपनारी

अथ श्रुत देवतानी थोय.

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेवया जगवई, नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं. जेसिं सुय सायरे जत्ति ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ-श्रुतदेवताने आराधवा अर्थे हुं काउस्सग्ग करु हुं. सुअदेवया के० जव्य पुरुषोनी निरंतर श्रुत सागरने विषे जक्ति ठे, तेमना ज्ञानावरणीय कर्मना समूहने जगवती एवी श्रुत देवता अथवा सरस्वती खपावो. ॥ १ ॥

अथ क्षेत्रदेवतानी थोय.

जीसे जित्ते साहू, दंसण नाणेहिं

चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुस्क म
ग्गं, सा देवी हरज डुरियाइ ॥२॥

अर्थः—जीसे खिते के० जे देवीना क्षेत्रने विषे चारित्र सहित एवां दर्शन अने ज्ञाने करीने, साधु मुनिराज मोक्षना मार्गने साधे छे ते देवी पापने दूर करो. ॥ २ ॥ आ बे थोयो पुरुषने कहेवानी छे.

॥ अथ कमलदलनी थोय. ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमु
खी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले
स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेव
ता सिद्धिम्. ॥ १ ॥

अर्थः—कमलदल विपुलनयना के० कमलनी पांखडी जेवां विशाल नेत्रवाली, तथा कमलना जेवा सुशोभित मुखवाली, तथा कमलना मध्यभागना गर्भ जेनी गौरवर्णवाली, तथा कमलने विषे रहेली, एवी ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी, एवी जे सिद्धांतनी अधिष्टायिका श्रुतदेवी ते अमने सिद्धि प्रत्ये आपो॥१॥

॥ अथ यस्याः क्षेत्रंनी थोय ॥

यस्याःक्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी॥१॥इति॥

अर्थः—यस्याःक्षेत्रं के० जेना क्षेत्रने अंगीकार करीने साधुओ धर्मक्रिया सधाय छे, ते क्षेत्रदेवी अमने निरंतर सुखनी देवावाळी हो. ॥ १ ॥ इति ॥ आ बे थोयो स्त्रीओने कहेवानी छे.

अथ भुवनदेवतानी थोय.

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनां॥१॥

अर्थः--भुवनदेवताने आराधवा अर्थे काउस्सग्ग करुं छुंः ज्ञानादिगुणयुतानां के० ज्ञानादि गुणे करीने सहित तथा निरंतर स्वाध्याय अने संयमने विषे रागी एवा सर्व साधुओने भुवन देवी हमेशां कल्याण करो

॥१॥इति॥ आ थोय अने यस्याःक्षेत्रंनी थोय पाखी पडि कमणामां सुअदेवयानी वे थोयने बदले कहेवाय छे.

विधिः--पछी प्रगट नवकार गणी वेसीने, छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां वे दीजे, पछी सामायिक चउव्विसछो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्स ग्ग, पच्चखाण कर्युं छे जी एम कही पछी इच्छामो अ णुसठिं नमो खमासमणाणं कही नमोऽर्हत्० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्रीउ संसारदा वानी त्रण गाथा कहे.

॥ नमोस्तु वर्द्धमानायना छुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छामो–अमे इच्छिये छीए	तव्–ते (नी)	राज्या–श्रेणीवडे
अणुसठिं–शिक्षा, शिखामण	जय–जीत (थी)	ज्यायः–वधारे सारु
नमः–नमस्कार	अवाप्त मोक्षाय–मोक्षने पामेलाने	क्रम–पग
अस्तु–हो	परोक्षाय–दृष्टिथी दूर	दधत्या–धारण करती
वर्द्धमानाय–वीरस्वामीने.	कुतीर्थिनां–मिथ्यादृष्टि	सदृशैः–सरखानी साथे
स्पर्द्धमानाय–इर्ष्या करनारने	ओनां–ने	इति–ए प्रकारे
	येषां–जेमना	संगतं–मेलाप [यक
	विकच–विकस्वर	प्रशस्यं–वखाणवा ला
	अरविंद–कमल	कथितं–कह्युं छे
		संतु–थाओ

शिवाय-मोक्षने अर्थे	यो-जे	वृष्टि-वरसाद
ते-तेओ [डाएला	जैनमुख-जिननुंमुख	सन्निभो-सरखो
तापार्दित-तापथी पी	अंबुद-मेघ	दत्तातु-करो
जंतु-प्राणीओने	उद्गतः-नीकलेलुं	तुष्टिं-संतोष
निर्वृतिं-सुख	शुक्रमास-जेठ महिनो	मयि-मारे विषे
करोति-करे छे	उद्भव-उपजेला	विस्तरो-विस्तार
		गिरां-वाणीओनो

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इच्छामो अणुसट्ठिं ॥ नमो खमा समणाणं ॥ नमोऽर्हत् नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायःक्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतु निर्वृतिं, करोति यो जैनमुखां

क्षुदोन्नतः ॥ स शुक्रमासोद्भवदृष्टि संनिभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥

अर्थः--इच्छामो अणुसहिं के० अमो शिक्षा प्रत्ये वंछीए छीए, क्षमा श्रमणोने नमस्कार. नमोस्तु वर्द्ध मानाय के० जे कर्मोनी साथे इर्ष्या करनार छे एवा, वली ते कर्मोने जीतीने मोक्ष पाम्या छे एवा, वली मिथ्या दृष्टि जीवोने दृष्टिथी जे दूर छे एवा, श्री व र्द्धमान स्वामीने नमस्कार थाउ. ॥ १ ॥

येषांविकचारविंद के० ते जिनेंद्रो मोक्षने अर्थे थाउ. ते जिनेंद्रो केवा छे ? तो के जेमना ज्यायः—के० अतिप्रशंसवा योग्य एवा चरण कमलनी श्रेणीने धार ण करती एवी, विकचारविंदराज्या के० विकस्वर ए वा देवोए रचेला अरविंद नामे कमल तेनी श्रेणीए क रीने सरखानी साथे मलवुं ते प्रशंसा करवा योग्य छे. इति के० ए प्रकारे कथितं के० कह्युं छे एटले सरखे सरखा मले ते शोभे माटे ते सुवर्णमय नव कमल अने प्रभुना चरणकमल ए बंनेना मलवाथी अ

त्यंत शोभा थइ. ॥ २ ॥

कषायतापार्दित के० जे वाणीउनो विस्तार कषाय रूप तापे पीमित एवा प्राणीउने शांति समाधि प्रत्ये करे ठे. वली जे जिनराजना मुखरूप मेघथी उपज्यो ठे, वली जेठ मासथी उपज्या एवा वरसाद जेवो ठे, ते सिद्धांतरूप वाणीउनो विस्तार मारे विषे संतोष करो. ॥ ३ ॥ इति ॥

विधिः—पठी नमुत्थुणं कही, खमासमणुं देइ इछाकारेण० स्तवन ज्ञणुं एम कही स्तवन कहेवुं.

॥ स्तवनना बुटा शब्दना अर्थ ॥

पंचम—पांचमा	भव्यत्व—भव्यपणुं	मद—गर्व
सुरलोक—देवलोक	सुरपति—इंद्र	मोडी—काढीने
वासी—रहेनार	रयण—रतन	मृगशिर—मागशर
लोकांतिक—नाम छे	सोवन—सोनुं	आली—श्रेणी
सु—घणा	तीर्थ—तीरथनां	वर्या—पाम्या
विलासी—सुखी	उदक—पाणीना	संयम—चारित्र
राशी—ढगलो	कुंभा—घडा	वधु—वहु
उद्धार—रक्षण	ठावे—थापे	रेह—रेख, रजे.
संवत्सरि—वरसी	आभरण—घरेणां	
दारिद्र—गरीबाइ	उवारे—उवारणां ले	

॥ अथ स्तवन ॥

सखी आवी देवदीवालीरे ॥ ए देशी ॥ पंचम सुरलोकना वासीरे, नव लोकांतिक सुविलासीरे, करे विनति गुणनी राशी ॥ १ ॥ मल्लिजिन नाथजी व्रत लीजेरे॥ ज्ञवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मल्लिजिन०॥ ए आंकणी ॥ तुमे करुणा रस ज्ञंमाररे, पाम्या ठो ज्ञवजल पाररे, सेवकनो करो उद्धार ॥ मल्लि०॥ २ ॥ ज्ञवि०॥प्रज्ञु दान संवत्सरी आपेरे, जगनां दारिद्र दुःख कापेरे, ज्ञव्यत्वपणे तस ठापे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ ज्ञवि० ॥ सुरपति सघला मलि आवेरे, मणि रयण सोवन वरसावेरे, प्रज्ञुचरणे शीश नमावे ॥ मल्लि०॥४॥ ज्ञवि० ॥ तीर्थोदक कुंज्ञा लावेरे, प्रज्ञुने सिंहासन ठावेरे, सुरपति ज्ञक्ते नवरावे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ ज्ञवि०॥ वस्त्राज्ञरणे शणगारेरे, फूल माला हृदय पर धारेरे, दुःखमां इंडाणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ ज्ञवि० ॥ मव्या सुरनर कोमा कोमीरे, प्रज्ञु आगे रह्या कर जोमीरे, करे ज्ञक्ति युक्ति मद मोमी ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ ज्ञवि० ॥ मृगशिर शुदिनी अजुवालीरे, एकादशी गु

णानी आलीरे, वर्या संयम वधु लटकाली ॥ मल्लि० ॥ ॥ ८ ॥ नवि० ॥ दिक्षा कल्याणक एहरे, गातां दुःख न रहे रेहरे, लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ए॥ नवि० ॥ इतिश्री मल्लि जिन स्तवनम् ॥

विधिः—पछी वरकनक कही नगवान् आदे वां दवा. पछी जमणो हाथ चवला उपर स्थापी अहाइ जेसु केहवुं.

॥ वरकनकना छुटा शब्दना अर्थ ॥

कनक–सोनुं	सन्निभं–सरखुं [हित	सर्व्व–सर्व
शंख–शंख	विगत मोहं–मोहथी र [तिर	अमर–देवता
विद्रुम–परवालां	सप्ततिशतं–एकसोसीं-	पूजितं पूजायेलुं
मरकत–पानां	जिनानां–जिनोनुं	
घन–मेघ		

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनक शंखविद्रुम, मरकतघन सन्निभं विगतमोहं ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर पूजितं वंदे॥१॥

अर्थः—वरकनक के० जिनेंद्रो संबंधि सप्ततिशत एटले एकसो सीत्तेरना समूह एटले एकसो सीत्तेर जिनेंद्रोने हुं वांदुं; ते सप्ततिशत केवुं छे ? तो के प्रधान एवुं सुवर्ण, शंख, प्रवालां, पानां, तथा सजल मेघ तेना जेवुं पांच वर्णवालुं छे, वली मोहादिके रहित छे. वली सर्व देवता जेने पूजे छे एवुं छे.

॥ अड्ढाइज्जेसुना छुटा शब्दना अर्थ ॥

अड्ढाइज्जेसु—अढीमां	मिमां	सीलंग—शीयळनां अंग
दीव—द्वीप	रयहरण—रजोहरण	अक्खय—संपूर्ण
समुद्देसु—समुद्रोमां	गुच्छ—गुच्छो	सिरसा—ललाटे(कपाळे) करी
पनरससु—पंदर(मां)	पडिग्गह—पात्रुं	
कम्मभूमिसु—कर्मभू-	धारा—धारण करनार	मणसा—मनवडे करीने

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु
कम्मभूमीसु॥जावंत केवि साहू,
रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा ॥१॥
पंचमहव्वयधारा, अढारस सहस्स

सीलंगधारा ॥ अरकयायारचरि त्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मह्ण वंदामि ॥ २ ॥इति ॥

अर्थः—अढ्ढाइज्जेसु के० अढी द्वीप, बे समुद्र संबंधी जे पंदर कर्मभुमि क्षेत्रने विषे जेटला कोइ पण साधु, रजोहरण एटले उघो, अने गुछो ते पातरानी झोली उपरनुं उपकरण, अने पात्रुं, इत्यादि धर्मोपकरणना धारण करनारा छे. ॥ १ ॥

ए साधुनो वेष कह्यो, हवे गुण कहे छे. ते साधु केवा छे ? तो के पांच महाव्रतना धरनार छे. वली अढार हजार शीलनां (चारित्रनां) जे अंग तेना धरनार. वली संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरनार छे. ते सर्वने ललाटे तथा मने तथा मस्तके करीने हुं वांडुं छुं अथवा पंचांग प्रणामे करी वांडुं छुं. ॥ २ ॥

विधिः—इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्गं; अन्नत्थ० कही, चार लोगस्सनो अथवा सो

ज नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहु ? इछं. खमासमण देइ इछाका० सज्झाय करुं ? इछं कही एक नवकार गणी सज्झाय. कहेवी.

॥ सज्झायना छुटा शब्दना अर्थ ॥

रयवाडी–वनक्रीडा(रेवाडी)	परिघल–घणुं	चरचीया–चोपड्या
पेखीयो–जोयो	पूरे–संपूर्ण	उपशमे–मटे
विरतंत–हकीकत	समाधी–सुख	अणगार–साधु
अनाथी–नाथविनाना	गोरडी–स्त्री	पुहतो–पहोंच्यो
निग्रंथ–मुनि	कोरडी–कोरी	गणि–गच्छना आधिपति
पंथ–रस्तो	मोरडी–मारी	
	सार–संभाळ	

अथ श्री अनाथी मुनिनी सज्झाय.

श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनि एकांत॥ वररूप कांते मोहीउ, राय पूछेरे कहोने विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निग्रंथ ॥ तिणे मेंलीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण

कोसंबी नयरी वसेरे, मुज पिता परिघल धन ॥ परिवार पूरे परिवर्यो, हुं हुं तेनोरे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ ॥२॥ एक दिवस मुज वेदना, उपनी ते में न खमाय॥ मातपिता झुरी मरे, पिण समाधि किणे नवि थाय॥ श्रे०॥३॥ गोरडी गुण मणी उरडी, चोरडी अबला नार॥ कोरडी पीडा में सही, न कोणे कीधी मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजे वैद्य बोलावीया, कीधला कोड उपाय ॥ बावनाचंदन चरचीया, तो ए पिणरे समाधि न थाय॥ श्रे०॥५॥ जगमांहि को केहनो नहि रे, ते भणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धर्म सारीखो, नहीं कोइ बीजो रे मुगतिनो साथ ॥श्रे० ॥६॥ वेदना जो मुज उपशमे तो, लेउं संजम भार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत लीधो में हर्ष अपार ॥श्रे० ॥७॥ करजोडी राजा गुण स्तवे, धन धन एह अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामी यो, वांदी पुहतोरे नगर मोजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां, तुटे कर्मनी कोड॥ गणि समय सुंदर ते हना, पाय वंदे रे बे कर जोड ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

एनो अर्थ सुगम छे.

विधिः-पछी नवकार गणी खमासमण देइ इच्छाका० दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं काउस्सग्ग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ० कही चार लोगस्स संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा १ थी ५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

शांतिं-शांतिनाथने
शांति-शांति
निशांतं-घर
शांतं-रागद्वेष रहित
शांत-शांत पामेला
अशिवं-उपद्रव
नमस्कृत्य-नमस्कार करीने
स्तोतुः-स्तुतिकरनारना
निमित्तं-हेतु
मंत्र-मंत्रो(नां)
पदैः-पदोवडे
शांतये-शांतिने (माटे)
स्तौमि-स्तुति करुंछुं
ॐ-रक्षण करवुं; हा.

इति-ए प्रकारे
निश्चित-निश्चय करेलुं
वचसे-वचनवाला
नमो-नमस्कार थाओ
भगवते-भगवानने
अर्हते-योग्यने
पूजां-पूजाने
जिनाय-जिनने
जयवते जयवंतने
यशस्विने-जशवंतने
स्वामिने-नाथने
दमिनां-मुनिओनां
सकल-सघळा
अतिशेषक-अतिशय
संपत्ति-संपदा

समन्विताय-सहित
शस्याय-प्रशंसवायोग्य
त्रैलोक्य त्रणलोके
पूजिताय-पूजेला
देवाय-देवने
ससमूह-समूह सहित
स्वामिक-स्वामि(ओए)
सं-सम्यक् प्रकारे
निर्जिताय-नहींजीतायेला
भुवन-त्रण भुवन
जन-लोक
पालन-पालवामां
उद्यततमाय-घणा सावधान(ने)

सततं–नित्य	कराय–करनारने	भूत–भूत
तस्मै–तेने	प्र–प्रकर्षे करी	पिशाच–राक्षस[ओने
दुरित–पाप	प्रशमनाय–शमावनार	शाकिनीनां–शाकणी
ओघ–समूह	दुष्ट–दुष्ट	प्रमथनाय–अत्यंत ना-
नाशन–नाश	ग्रह–ग्रह	श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिंशांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि॥१॥
ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वाम
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

विधिः—पछी नवकार गणी खमासमण देइ इच्छाका० दुरकरकत कम्मरकत निमित्तं काउस्सग्ग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ० कही चार लोगस्स संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा १ थी ५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

शांतिं—शांतिनाथने	इति—ए प्रकारे	समन्विताय—सहित
शांति—शांति	निश्चित-निश्चय करेलुं	शस्याय-प्रशंसवायोग्य
निशांतं—घर	वचसे—वचनवाला	त्रैलोक्य त्रणलोके
शांतं—रागद्वेष रहित	नमो—नमस्कार थाओ	पूजिताय—पूजेला
शांत—शांत पामेला	भगवते—भगवानने	देवाय—देवने
अशिवं—उपद्रव	अर्हते—योग्यने	ससमूह—समूह सहित
नमस्कृत्य——नमस्कार करीने	पूजां—पूजाने	स्वामिक-स्वामि (ओए)
स्तोतुः-स्तुतिकरनारना	जिनाय—जिनने	सं—सम्यक् प्रकारे
निमित्तं—हेतु	जयवते जयवंतने	निजिताय—नहींजीतायेला
मंत्र—मंत्रो(नां)	यशस्विने—जशवंतने	भुवन—त्रण भुवन
पदैः—पदोवडे	स्वामिने—नाथने	जन—लोक
शांतये—शांतिने (माटे)	दमिनां—मुनिओनां	पालन—पाळवामां
स्तौमि—स्तुति करुंछुं	सकल—सघळा	उद्यततमाय—घणा सावधान(ने)
ॐ—रक्षण करवुं; हा.	अतिशेषक—अतिशय	
	संपत्ति—संपदा	

सततं-नित्य	कराय-करनारने	भूत-भूत
तस्मै-तेने	प्र-प्रकर्षे करी	पिशाच-राक्षस[ोने
दुरित-पाप	प्रशमनाय-शमावनार	शाकिनीनां-शाकणी
ओघ-समूह	दुष्ट-दुष्ट	प्रमथनाय-अत्यंत ना-
नाशन-नाश	ग्रह-ग्रह	श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिंशांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि॥१॥
उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वाम
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

जिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, त
माय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व
दुरितौघनाशन, कराय सर्वाऽशिव
प्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपिशाच,
शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः—शांतिं शांतिनिशांतं के० शांतिना घर अथवा स्थानक रूप एवा तथा रागद्वेष रहित एवा, वली अरिष्ट उपद्रवो जेनाथी उपशमने पाम्या छे एवा, श्रीशांति जिन प्रत्ये नमस्कार करीने, स्तुतिना करनारने शांतिना हेतु एवा शांतिनाथने अक्षर गर्भित मंत्रोनां पदोये करीने उपसर्गनी शांतिने माटे स्तुति करुं छुं.

उमिति के० रक्षण करे छे तेने उँ कहीए अने उँ एटले परम ज्योति ए रीते निश्चित वचनवाला एवा अने पूजाने योग्य एवा भगवंत वली जेने रागादि पराभव करी शकता नथी माटे जयवंत, वली प्रसिद्ध जश छे जेमनो माटे यशस्वी एवा, वली दमिनां के० इंद्रियोने दमी छे वश करी छे जेमणे एवा जे मुनिउ,

तेमना स्वामिने के० नायक एवा श्रीशांतिनाथने नमस्कार थाउ, नमस्कार थाउ. ॥ २ ॥

सकलातिशेषक के० समस्त चोत्रीस अतिशय रूप मोटी संपदाये करीने सहित एवा तथा वखाणवा योग्य एवा, वली स्वर्ग मृत्यु अने पाताल रूप त्रण लोक तेणे पूजित एवा श्री शांतिदेव प्रत्ये नमस्कार थाउ. ॥ ३ ॥

सर्वामर ससमूह के० सपरिवार एवा सर्व देवताउना स्वामी जे चोसठ इंद्रो ठे, तमणे सम्यक् प्रकारे पूजेला तथा कोइथी नहीं जीतायेला एवा तथा त्रण जुवनना लोकोनुं पालन करवाने अत्यंत सावधान एवा ते शांतिनाथजीने निरंतर मारो नमस्कार थाउ. ॥४॥

सर्व डुरितौघनाशन के० सर्व पापनो जे समूह तेनो नाश करनार, वली सर्व उपद्रवने शमावनार, वली आकरा एवा जे ग्रह, जूत, राक्स तथा शाकिनी ए सर्व(थी थता उपद्रवो)ने प्रमथनाय एटले अतिशे नाश करनार ठे अर्थात् मटाम्नार ठे, तेमने नमस्कार थाउ. ॥ ५ ॥

॥ गाथा ६ थी १० सुधी छुटा शब्दना अर्थ ॥

यस्य–जेनुं	अजिते–नहीं जीताय एवी	निर्वाण–मोक्ष
इति–ए रीते	अपराजिते–हे देवी	जननि–करनारी
नाममंत्र–नामरूपी मंत्र	जगत्यां–जगतमां	सत्वानां–भव्यजीवोने
प्रधान–उत्तम	जयावहे–हे जयावहा	अभय–निर्भयपणुं
वाक्य–वचन	भवति–हे तमे	प्रदान–अतिशे देवुं
उपयोग–यादी	सर्वस्य–सर्वने	निरते–तत्पर
कृत–करेलो	अपि–पण	स्वस्ति–कल्याण
तोषा–संतोष	संघस्य–संघने	तुभ्यं–तने
विजया–विजयादेवी	भद्र–सुख	भक्तानां–भक्तोने
कुरुते–करे छे	प्रददे–हे देनारी	जंतूनां जीवोने
हितं–सुखने	सु–सारी	शुभावहे–शुभ पमाडनारने
नुता–स्तवेली	तुष्टि–शांति	नित्यं–हमेशां
नमत–नमो	पुष्टि–पुष्टि	उद्यते–सावधान
भवतु–थाओ	प्रदे–देनारी	सम्यग्दृष्टि–समकित दृष्टिओने
नमः–नमस्कार	जीयाः–तु जयवंती हो	धृति–धीरज
ते–तने	भव्यानां–भव्योने	रति–प्रीति
विजये–हे विजया	कृत–करी छे	प्रदानाय–आपवाने
सुजये–हे सुजया	सिद्धे–सिद्धि जेणे	
पर–मोटा	निर्वृत्ति–चित्त समाधि	
अपर–बीजा देवोए		

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योप
योगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जन
हित, मिति च नुता नमत तं शां
तिं ॥ ६ ॥ ज्ञवतु नमस्ते ज्ञगव
ति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति
जयावहे ज्ञवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, ज्ञद्रकल्याणमंगलप्र
ददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ ज्ञव्या
नां कृतसिद्धे, निर्वृत्तिनिर्वाणज
ननि सत्त्वानां ॥ अज्ञयप्रदाननि
रते, नमोऽस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यं
॥ ए ॥ ज्ञक्तानां जंतूनां, शुज्ञावहे
नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग् दृष्टीना

धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय. ॥१०॥

अर्थः—यस्येतिनाम मंत्र के० हे ज्ञव्यजनो ! त मे ते शांतिजिनने प्रणाम करो. कया शांतिजिन? तो के जे शांतिजिननो ए पूर्वोक्त नाम रूप महा मंत्र तेणे करीने सर्वोत्तम पवित्र एवुं जे वचन तेना उप योग एटले यादीवमे करीने जेणे चितने विषे संतोष कर्यो ठे, एवी विजया नामे जे देवी ठे, त शांतिजि ननुं स्मरण करनारा मनुष्यनुं हित करे ठे. वली ते विजयादेवी केवी ठे? तो के पूर्वे कहेला प्रकारे करी ने शांतिनाथने नमेली ठे. स्तुति करेली ठे. ॥ ६ ॥

ज्ञवतु नमस्ते ज्ञगवति के० हे ज्ञगवति ! वि जयोदवि ! सुजयादेवि ! मोटा एवा बीजा देवोए नहीं जीतायेली एवी अजिता देवि! तथा कोइ ठेकाणे प राज्ञव नहीं पामेली एवी हे अपराजिता देवि ! पृथ्वी ने विषे जयवंति वर्त्तो. एम स्तुति करनारने जयनी लावनारी हे दरेक देवी ? तमने नमस्कार थाउ ॥७॥

सर्वस्यापि च संघस्य के० चतुर्विध एवा सर्व

पण संघने सुख, कल्याण तथा मंगलने आपनार हे देवि ! वली मुनिजने सदा निरुपद्रवपणुं, सारी चित्तनी शांति तथा धर्मनी वृद्धिने देनारी एवी हे देवि ! तुं जयवंती हो. ॥ ८ ॥

नव्यानां कृत सिद्धे के० नव्य जीवोने सर्व कार्योनी निर्विघ्नपणे सिद्धि करी आपी छे जेणे एवी, वली सत्त्वानां के० नव्य प्राणीजने चित्त समाधि तथा मोक्षने उत्पन्न करनारी तथा अनयपणुं देवाने विषे तत्पर एवी तथा कल्याणने देनारी एवी, ए सर्व गुणयुक्त हे देवि ! तने नमस्कार हो. ॥ ए ॥

नक्तानां जंतूनां के० नक्तिवंत एवा जीवोने सर्व प्रकारे शुनने आपनारी, तथा वली सम्यक् दृष्टि जीवोने संतोष, प्रीति, मति के० नविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, तथा बुद्धि के० वर्त्तमानकालना विषयने जाणनारी बुद्धि, ते प्रत्ये अतिशयपणे देवाने निरंतर सावधान, हे देवि ! तमे छो. ॥ १० ॥

॥ गाथा ११ थी १४ सुधी जुदा शब्दना अर्थ ॥

निरतानां-रागवंत	अनल-अग्नि	श्वापद-शीकारी पशु
नतानां नमेलाने	विषधर-सर्प	आदिभ्यः-वगेरेथी
जगति-जगतमां [योने	दुष्ट-माठा	अथ-हवे
जनतानां-जनसमुदा-	ग्रह-ग्रह	रक्ष-रक्षण कर
श्री-लक्ष्मी	राज-राजा	सु-अतिशय
संपत्-ऋद्धि	रण-संग्राम	शिवं-कल्याण
कीर्त्ति-कीर्त्ति	भयतः-भयथी	कुरु-कर
यश-जश	रिपु-वैरी	सदेति-सदा एम
वर्द्धनि-वधारनार	गण-समूह	गुणवति-गुणवाली
विजयस्व-विजयपामो	मारी-मरकी	स्वस्ति-क्षेम
सलिल-पाणी	चौर-चोर	इह-अहींआं

जिनशासननिरतानां, शांतिनता
नां च जगति जनतानाम् ॥ श्री
संपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जय देवि
विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल
विषविषधर, दुष्टग्रहराजरोगरण
भयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौ
रेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ

रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥१३॥ भगवति गुणवति शिव शां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानां॥ ॐमिति नमोनमो ह्रॉँ,ह्रीँ, ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा॥

अर्थः—जिनशासन के० श्रीवीतरागना शासनने विषे रागवंत एवा, वली श्री शांतिनाथने नमेला एवा, जगतने विषे जे जनसमुदायो छे, तेमने लक्ष्मी, ऋद्धिविस्तार, एक दिशा व्यापि कीर्त्ति अने सर्व दिशा व्यापि जश, तेने वधारनारी एवी हे जयानामा देवि! तुं जय पाम, विजय पाम. ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर के० पाणीना, अग्निना, झेरना, सर्पना, कठण ग्रहना, दुष्ट राजाना, रोगना अने रण संग्रामना, ए सर्व भयथी रक्षण कर, रक्षण कर, वली राक्षस, शत्रुना समूह, मरकी

व, चोरना, सात ईतिना भय, हाथी, सिंहादि दुष्ट जीवो, वगेरे सर्वना भयथी रक्षण कर, रक्षण कर.

अथ रक्षरक्ष सुशिवं के० ए उपर कहेला एवा भय थकी हे विजया माता! तुं रक्षण कर, रक्षण कर. वली रुडा एवा निरुपद्रवपणाने कर वली निरंतर शांतिने कर कर. ए प्रकारे वली संतोषपणाने कर कर, तथा पुष्टि एटले शरीरनी पुष्टि कर कर, तथा कल्याण प्रत्ये कर कर. ॥ १३ ॥

भगवति के० हे भगवति! हे गुणवति! एवी हे देवि! तुं आ पृथ्वीने विषे सर्व लोकोने, कल्याण, रोगनी शांति, मननो संतोष, शरिरादिकनी वृद्धि, हृष्टपणुं, केम ते कल्याण, तेने आ जगतने विषे कर, कर. हवे मंत्राक्षरे करीने विजया देविने स्तवेछे. ज्योतिः स्वरूपिणी एवी हे देवी! तने नमस्कार थाउ; तथा ॐ ह्रीं हुं हः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा, ए प्रकारना मंत्र स्वरूपिणी एवी हे देवि! तने नमस्कार थाउ. अहीं फुट् फुट् ए जे शब्द लख्या छे ते विघ्नना शाक मंत्राक्षर छे अने आ ॐ ह्रीं इत्यादि अक्षरो जे छे ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो. ॥ १४ ॥

॥ गाथा १५ थी १७ सुधी छुटा शब्दना अर्थ ॥

यत्-जेना	आदि-वगेरे	पदं-ठेकाणुं
नामाक्षर-नामाक्षरमंत्र	भय-बीक	यायात्-पामे
पुरस्सरं-पूर्वक	विनाशी-नाशकरनार	मानदेवः-मानदेव(नाम छे)
संस्तुता-स्तवेली	करः-करनारो	उपसर्गाः-कष्टो
नमतां-नमताने	भक्तिमतां-भक्तोने	क्षयं-नाशने
निमित्तं-हेतुने	यः-जे	यांति-पामे छे
शांतये-शांतिनाथने	एनं-एने	च्छिद्यंते-छेदाय छे
तस्मै-तेने	पठति-भणे छे	विघ्न-अडचण
पूर्व-पेहेलांना	शृणोति-सांभले छे	वल्लयः-वेलीयो
सूरि-आचार्य	भावयति-भावे छे	मनः-मन
दर्शित-बतावेला	वा-अथवा	प्रसन्नता-प्रसन्नपणाने
विदर्भितः-रचेलो	यथायोगम्-योगने नही ओलंघीने	एति-पामे छे
स्तवः-स्तोत्र	हि-निश्चे	पूज्यमाने-पूजे छते
शांतेः-शांतिनाथनो	शांति-शांतिनुं	

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, (पाठांतरे कुरुते शांति निमित्तं) नमोनमः शांतये तस्मै ॥१५॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः

स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगं ॥ स हि शांतिपदं यायात्, (पाठांतरे शिवशांतिपदं यायात्) सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ १९ ॥

एवं यन्नामाक्षर के० ते शांतिनाथने फरी फरी नमस्कार थाओ, ते कया शांतिनाथने? तो के ए पूर्वोक्त प्रकारे जेना नामाक्षरमंत्र पूर्वक स्तुति करेली एवी

जयानामा देवी, ते शांतिनाथ प्रत्ये नमस्कार करनारा भव्य जीवोने शांति करे छे. पाठांतरे शांति जे सर्वोपद्रव निवृत्ति रूप तेना हेतुने उत्पन्न करे छे.॥१५॥

अर्थः—इति पूर्वसूरिदर्शित के० ए श्रीशांतिनाथजीनुं स्तव अथवा स्तोत्र भक्तिमान प्राणीउने समुद्र, वगेरे पाणीना भय, दुष्ट हाथी, सिंह, संग्राम, शत्रु, चोर, शाकिनी, भूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक एवा भयनुं विनाश करनारुं, वली शांति, सुख, सौभाग्य, ऋद्धि, वृद्धि कल्याण अने जय ए सर्वने करनारुं थाउ. वली ते केवुं छे ? तो के आ प्रकारे पूर्वाचार्ये उपदेश करेलां एवां मंत्र पदवडे रचेलुं छे. ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा के० जे पुरुष योगने उल्लंघन नहीं करीने आ स्तोत्रने हमेशां भणे, सांभळे अथवा भावे तो ते निश्चे शांतिना स्थान प्रत्ये पामे. वली श्री मानदेवसूरि पण शांति पदने पामे आ पदे करीने स्तोत्र कर्त्ताए पोतानुं नाम पण सूचव्युं छे पाठांतरे शीवशांतिपदं यायात् के० शिव जे कल्याण, शांति जे सर्वोपद्रव वगेरेनी निवृत्ति तेनुं स्थानक पामे. ॥१७॥

उपसर्गाः क्षयं यांति के० श्रीजिनेश्वरने पूजे छते देवादिकृत उपसर्गो नाश पामे छे, अने विघ्ननी वेलो ते छेदाय छे; तथा मन प्रसन्नताने पामे छे. ॥ १८ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं के० सर्व मंगल मांहे मांगलिक तथा सर्व कल्याणनुं कारण, तथा सर्व धर्मोमां प्रधान एवुं जिन शासन जयवंतुं वर्त्ते छे. ॥ १९ ॥

॥ इति शांतिना अर्थ ॥

विधिः—पछी लोगस्स कही खमासमणुं दइ इरियावही, तस्सउत्तरी अन्नछ० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो. पछी चउक्कसाय कहेवा.

॥ चउक्कसायना छुटा शब्दना अर्थ ॥

पडिमल्ल—वेरी	गय—हाथी	कंति—कांति
उल्लूरणुं—उछेदनार	गामिउ—गतिवाला	कडप्प—समूह
दुज्जय—दुर्जय	जयउ—जय पामो	सिणिद्धउ—स्निग्ध
मयण—मदन (ना)	पासु—पार्श्वनाथ	सोहइ—शोभे छे
बाण—बाण	भुवण—भुवन	फणि—फेणनुं
मुसुमूरणुं—भागनार	त्तय—त्रण	मणि—मणि (रत्न)
सरस—रसवालो	सामिउ—स्वामी	आलिद्धउ—सहित
पिअंगु—रायण	जसु—जेना	नं—प्रशंसनीय
वन्नु—वर्ण, रंग	तणु—शरीर	नव—नवो

जलहर-मेघ	लंछिउ-सहित	पासु-पार्श्व
तडित्-विजली	सो-ते	पयच्छउ-आपो
लय-लता	जिणु-जिन	वंछिउ-वांछित

॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्ज
यमयणबाणमुसुमूरणु ॥ सरस
पिअंगु वन्नु गयगामिउ, जयउ
पासु भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥
जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्ध
उ, सोहइ फणिमणि किरणालिद्ध
उ ॥ नं नवजलहर तडिल्लयलं
छिउ, सो जीणु पासु पयच्छउ
वंछिउ ॥ २ ॥ इति ॥

अर्थः—चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु के० त्रण भु
वनना स्वामी श्रीपार्श्वनाथ जयवंता वर्त्तो ते पार्श्व
नाथ केवा छे तो के चार कषाय रूप वैरीना उच्छेदना

छे, तथा डुखे जीताय एवो मदन जे कामदेव तेना बाणने भागनार छे, तथा रसवालो लीलो एवो राय णनो वृक्ष तेना जेवा वर्णवाला छे. तथा हाथीना जे वी गति वाला छे. ॥ १ ॥

अर्थः—जसु तणु कंति के० जेना शरीरनी कां तिनो समूह चीकाश सहित छे तेवा पार्श्वजिन महारा वांछित प्रत्ये आपो, ते केवा छे? तो के नागेंद्रनी फणी उपरना मणी रत्न तेना किरणोए करी सहित छे; तथा नवा मेघनी विजलीनी लताए लंछित एवा छे.॥२॥

विधिः—नमुत्थुणं जावंति वे कही उवसग्गहरं, जयवीयराय कही मुहपत्ती पडिलेहवी पछी खमास मण देइ इछा० सामायक पारुं, यथाशक्ति; पछी खमा समण देइ इछा० सामायिक पार्युं, तहत्ति कही, जम णो हाथ उपधी उपर थापी एक नवकार गणीने सा माइअवयजुत्तो केहवो. पछी थापना होय तो एक नवकार गणी उठे ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि क ह्यो. बाकी अंतर विधि वगेराथी समजवो.

॥ अथ राइपडिक्कमण आरंभ ॥

विधिः—प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लइ यावत् सज्झाय करुं एवो आदेश मागी त्रण नवकार गणीए त्यां सुधी केहवुं, पछी इच्छा० कही कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणार्थं राइप्रायश्चितविसोहणडं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, करेमि काउस्सग्गं कही जो खराब स्वप्न आव्युं होय तो चार लोगस्सनो काउस्सग्ग सागरवर गंभीरा सुधी करवो, नहीं तो चंदेसु निम्मलयरा सुधी करवो; पछी काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही एक खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं एम कही जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन कहे.

॥ अथ जगचिंतामणिना छुटा शब्दना अर्थ ॥

जग–जगत	अट्ठावय–अष्टापद	अप्पडिहय–हणाय नहीं तेवुं
नाह–नाथ	संठविय–स्थापेलां	
रख्खण–रखवाल	रूव–रूप, प्रतिमा.	सासण–शासन
बंधव–भाइ	कम्मट्ठ–आठ कर्म	संघयणि–संघयण
सथ्थवाह–साथवाह	विणासण–नाश करनार	उक्कोसय–उत्कृष्ट पदे
विअख्खण–विचक्षण, डाह्या		सत्तरि–सीत्तेर
	जयंतु–जयवंता वर्त्तो	सय–सो

जिणवराण–जिनवरोना	रिसह–ऋषभ	केवि–कोइ पण
विहरंत–विचारता	सत्तुंजि–शेत्रुंजय उपर	तीअ–अतीतकाल
लब्भइ–लाभे	पहु–प्रभु	अणागय–अनागत
कोडि–क्रोड	नेमि–नेमिनाथ	सत्ताणवइ–सताणुं
केवलिण–केवल ज्ञानीओनी	सच्चउरी–सत्यपुरी	लक्खा–लाख
सहस्स–हजार	महण–आभूषण	छप्पन्न–छप्पन
गम्मइ–जाणिये	भरुअच्छहिं–भरुच नगरमां	बत्तीस–बत्रीसें
मुणि–मुनि	मुहरि–मुहरि (गाम)	बासिआइं–ब्याशी
विहुं–बे	दुह–दुख	चेइए–चैत्योने
समणह–साधु	दुरिय–पाप	पनरस–पन्नर
दुअ–बे	खंडण–नाश करनार	सयाइं–सेंकडा
थुणिजिअ–स्तवियें	अवर–बीजा	बायाल–बेंतालीस
निच्च–नित्य	विदेहिं–महाविदेहमां	अडवन्ना–अठावन
विहाणि–वहाणामां	चिहुं–चारे	असिई–एंशी
सामी–स्वामी	दिसि–दिशाओमां	सासय–शाश्वतां
	जिं–जे	पणमामि–प्रणमुं छुं

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जग चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगर

रकण॥ जगबंधव जगसह्रवाह, ज
गन्नावविअरकण ॥ अठावय सं
ठविय, रुव कम्मठ विणासण॥
चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अ
प्पमिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मन्नू
मिहिं कम्मन्नूमिहिं ॥ पढम संघ
यण ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥
जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव
कोमिहिंकेवलिण ॥ कोमि सह
स्स नवसाहु गम्मइ ॥ संपइजिण
वर वीसमुणि ॥ बिहुं कोमिहिं
वरनाण ॥ समणह कोमिसहस
उअ ॥ थुणिजिअ निच्चविहाणि
॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी
॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उजिंत पहु ने
मिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि

मंमण ॥ नरुअह्ाहिं मुणिसुव्वय॥ मुहरि पास डुह डुरिअ खंमण ॥ अवरविदेहिं तिच्छयरा॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ तीआणागय संपइअ, वंडु जिणसवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लरका छप्पन्न अठ कोमीठ ॥ बत्तीस बासिआ इं ॥ पाठांतरं ॥ बत्तीसय बासि आइं, तिअ लोए चेइए वंदे ॥ प नरस कोमि सयाइं, कोमी बायाल लरकअमवन्ना ॥ छत्तीस सहस अ सिई ॥ पाठांतरं ॥ असिआइं, सासयबिंबाइं पणमामि ।४। इति॥

अर्थः—इछा कारेण के० इछाए करीने हे नगवन् चैत्यवंदन करवानो आदेश आपो. इछं के० प्रमाण. ज गचिंतामणि के० श्रीवीतराग देव केवा छे ? तो के

नव्यजीवोने चिंतामणि रत्नसमान मनोरथ पूरनार छे, वली निकट नव्य जीवोना नाथ छे, वली सघला लोकमां मोटा छे, वली छ जीव निकायना रक्षक छे, वली सर्व जीवोना नाइनी पेरे नाइ छे, वली मोक्षानिला षी जीवोना मोटा सार्थवाह छे, वली षट् द्रव्य तथा जीवादिक नव पदार्थना नाव दशार्ववाने विचक्षण छे, माह्या छे; वली अष्टापद पर्वतनी उपर नरतेश्वरे स्था प्यां छे बिंब जेमनां, वली आठ कर्मोनो विनाश कीधो छे जेमणे, कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जेमनुं शा सन छे, एवा चोवीश जिनवर निश्चे जयवंता वर्त्तो.॥१॥

कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं के० असि, मषी, अ ने कृषि रूप कर्म वरू करी ज्यां आजिवीका चाले छे, तेने कर्मनूमिका कहीए. ते कर्मनूमिनां पंदर क्षेत्र ने विषे प्रथम संघयण जे वज्रऋषननाराच तेना ध णी एवा उत्कृष्टपदे सप्ततिशत एटले एकसोने सीत्तेर तीर्थंकरोनो समुदाय विचरतो लाने, ते श्री अजितना थने वारे एटला लाने, वली केवलज्ञानी नगवाननी नवकोटि होय तथा नव सहस्र कोमी साधु जिनाग

मथी जाणीये अने वर्त्तमानकाले वीश जिनवर विच रता पामीए, तथा बे कोम्ह मुनि प्रधान केवलज्ञानना धरनार, वली बे सहस्त्र कोम्हि साधु विचरे छे, ते सर्व ने नित्ये प्रज्ञाते थुणीये स्तविये. ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी के० श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर श्री रुषन्न स्वामी जयवंता वर्त्तो, वली श्री गिरनारजी उपर प्रन्नु श्री नेमिजिनेश्वर स्वामी जय वंता वर्त्तो, वली सत्यपुरी एटले साचोर नगरना आ न्नूषण रूप श्री महावीर स्वामी जयवंता वर्त्तो, वली न्नरूच नगरने विषे श्री मुनिसुव्रत स्वामी, अने मुह रि गामना नायक श्री पार्श्वनाथ; ए जिन पंचक केवुं छे ? तो के दुःख अने पापनुं विनाश करनारुं छे. बी जां पांच महा विदेहने विषे जे तीर्थंकर छे, चार दि शि अने चार विदिशिने विषे जे कोइ पण अतीत अ नागत अने वर्त्तमान काल संबंधी सर्वे जिनेश्वर, ते प्रत्ये पण हुं वांडुं छुं. ॥ ३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा के० आठ क्रोम्ह छप्पन ला ख सत्ताणुं हजार बत्रीसेंने ब्याशी, एटलां त्रण लोक

ने विषे जिन प्रासाद छे, ते सर्व प्रत्ये हुं वांदुं छुं.॥४॥

पनरस कोमि सयाइ के० पंदर अबज बेंतालीस क्रोम, अठावन लाख छत्रीश हजार अने उपर एंशी (१५४२५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिन प्रासादने विषे शाश्वतां जिन बिंब छे. ते सर्व प्रत्ये हुं प्रणमुं छुं. ॥५॥

विधिःपछी जंकिंचि, नमुत्थुणं कही, जावंति बे कही, उवसग्गहरं कही, जयवीयराय केहेवा; पछी चार खमासमण देइ जगवान्, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुने वांदवा; पछी खमासमण देइ इच्छा० सज्झाय संदिसाहु, इच्छं. पछी खमासमण देइ इच्छा० सज्झाय करुं; एम कही एक नवकार गणी जरहेसरनी सज्झाय केहेवी.

॥ अथ जरहेसरनी सज्झायना छुटा शब्दना अर्थ ॥

भरहेसर–भरतेश्वर	कापुत्र	नंदिसेण–नंदिषेण
बाहुबली–बाहुबल	अइमुत्तो–अतिमुक्त	सीहगिरी–सिंहगिरि
कुमारो–कुमार	नागदत्तो–नागदत्त	कयवन्नो–कृतवर्णकु
सिरिओ–श्रीयक, स	मेअज्ज–मेतार्यमुनि	मार
रैओ	थूलिभद्दो–थूलिभद्र	पुंडरिओ–पुंडरिकजी
अणियाउत्तो–अनि	वयररिसी–वज्रऋषि	केसि–केशिकुमार

हल्ल-हल्यकुमार
विहल्ल-विहल्यकुमार
सुदंसण-सुदर्शनशेठ
सालिभद्दो-शालिभद्र
भद्दो-भद्रबाहु सामी
दसन्नभद्दो-दशार्णभद्र
पसन्नचंदो-प्रसन्नचंद्र राजर्षि
जसभद्दो-यशोभद्रसूरि
जंबुपहु-जंबुप्रभुस्वामी
वंकचूलो-वंकचूल
सुकुमालो-सुकुमार
धन्नो-धन्नाशा
इलाइ-इलाची
पुत्तो-पुत्र
चिलाइ-चिलाती
बाहुमुणि-युगबाहु मुनि
अज्ज-आर्य
गिरि-महागिरि
रक्खिअ-रक्षित
सुहत्थी-सुहस्ती

उदायणो-उदायी राजा
मणगो-मनकपुत्र
कालयसूरि-कालकाचार्य
संबो-सांबकुमार
पज्जुन्नो-प्रद्युम्नकुमार
मूलदेवो-मूलदेवराजा
पभवो-प्रभव स्वामी
विन्हु-विष्णु
अद्द-आर्द्र
दढप्पहारी-द्रढप्रहारी
सिज्जंस-श्रेयांसकुमार
मेह-मेघ
एमाइ-इत्यादि
महा-मोटा
सत्ता-सता
सुहं-शुभ, सुख
गणेहिं-समूहवडे
ग्गहणे-ग्रहणकरवाथी
पावपबंधा-पापना स मूह

विलय-विनाश
जंति-पामे छे
मणोरमा-मनोरमा
मयणरेहा-मदनरेखा
नमया-नर्मदा
सीया-सीता
नंदा-नंदा
भद्दा-भद्रा
सुभद्दा-सुभद्रा
रायमइ-राजेमति
रिसिदत्ता-ऋषिदत्ता
पउमावइ-पद्मावती
अंजणा-अंजना
सिरीदेवी-श्रीदेवी
जिट्ठ-ज्येष्ठा
सुजिट्ठ-सुज्येष्ठा
मिगावइ-मृगावती
पभावइ-प्रभावती
चिल्लणा-चेलणा
बंभी-ब्राह्मी
सुंदरी-सुंदरी

रुप्पिणि-रुक्मिणि	सच्चभामा-सत्यभामा	सइओ-सतीओ
रेवइ-रेवती	कन्ह-श्रीकृष्ण	अकलंक-निर्मल
सिवा-शिवा	अट्ठ-आठ	सील-शीयल
देवइ-देवकी	महिसीओ-पटराणीओ	कलिआओ-सहीत
दोवइ-द्रौपदी		अज्जवि-आजपण
कलावई-कलावती	जक्खा-जक्षा	वज्जइ-वाजे छे
पुप्फचूला-पुष्पचूला	जक्खदिन्ना-यक्षादिन्ना	जासिं-जेमनो
गोरी-गौरी	भूआ-भूता	जस-जश
गंधारी-गांधारी	भूआदिन्ना-भूतदिन्ना	पडहो-ढोल
लक्खमणा-लक्ष्मणा	भयणीओ-वेनो	तिहूअणे-त्रणभुवने
जंबुवइ-जांबुवती	इच्चाइ-इत्यादि	सयले-सकल

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय. ॥

भरहेसर बाहुबली, अभय कुमा
रो अ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ
अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो
अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, व
यररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिअ के
सि करकंडु ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल

सुंदसण, साल महासाल सालि
भद्दो अ ॥ भद्दो दसन्नभद्दो, पस
न्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबु
पहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अ
वंतसुकुमालो॥ धन्नो इलाइपुत्तो
चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥४ ॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्ज
सुहत्थी उदायगो मणगो॥ कालय
सूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ
॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो, अद्द
कुमारो अ दढप्पहारी अ ॥
सिज्जंस कूरगडूअ, सिज्जंभव मे
हकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा
सत्ता दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजु
त्ता जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा
विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंद

नवाला, मणोरमा मयणरेहा दम
यंती ॥ नमयासुंदरी सीया, नंदा
जद्दा सुजद्दा य ॥ ८ ॥ रायमई
रिसिदत्ता, पनमावइ अंजणा सि
री देवी ॥ जिठ सुजिठ मिगाव
ई, पनावई चिल्लणा देवी ॥९॥
बंजी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती
सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ
धारणी, कलावई पुप्फचूला य॥१०॥
पनमावई य गोरी, गंधारी ल
क्कमणा सुसीमा य ॥ जंबुवइ स
चनामा, रुप्पिणि कन्हठमहिसीन
॥११॥ जरका य जरकदिन्ना, नूआ
तह चेव नूअदिन्ना य ॥ सेणा वे
णा रेणा, जयणीन यूलिजदस्स

॥ १५ ॥ इच्चाइ महासइत्त, जयंति अकलंकसील कलिआत॥ अ जवि वजइ जासिं, जस पम्हो ति हुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति जर हेसरनी सज्ञाय ॥

अर्थः—जरहेसर बाहुबली के० श्री जरतेश्वर पेहेला चक्रवर्त्ती श्री ऋषजदेवना पुत्र, बीजा बाहुबली ते पण ऋषजदेवना पुत्र, जरतेश्वर करतां पण वधारे बलवान, त्रीजा अजय कुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, वली चो था ढंढण कुमार ते श्री कृष्णजीना पुत्र, पांचमा श्री क, (सरैयो) ते श्री थूलिजइजीना नानाजाइ, ठा अन्निका पुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञा न पाम्या, सातमा अतिमुक्तकुमार, जेणे ठ वरसनी उमरे श्री वीर पासेथी दिक्षा लीधी, वली आठमा ना गदत्त, श्रेष्ठी पुत्र, अदत्तादानना त्यागी जाणवा. ॥१॥

मेअज्ज थूलिजद्दो के० नवमा मेतार्य मुनि, जेने माथे सोनीए वाघर एटले आलां चांवमां वींटयां, दश

ी थूलिभद्र मुनि जेणे कोश्या वेश्याने घेर चो
कर्युं, अने वेश्याने श्राविका कीधी, अगीआर
ाज्रस्वामी, बारमा नंदिषेणजी, जेणे वेश्याने घेर
ने बार वर्ष पर्यंत रोज दश दश जणने प्रतिबोध्या,
ा श्री सिंहगिरिजी महाराज ते वज्रस्वामीना
ऽ, चौदमा कृतवर्ण कुमार ए श्रेष्ठी पुत्र, वली पंदर
। सुकोसल मुनि, जेमनुं शरीर वाघणीए भक्षण की
, सोलमा श्री पुंमरिकजी, श्री प्रथम तीर्थंकरना
थम गणधर, सत्तरमा केशी कुमार, ते प्रदेशी राजा
ा गुरु, अढारमा करकंडु, प्रत्येक बुद्ध मुनि जे घरमा
ालद प्रत्ये जोइने साधु थया. ॥ ३ ॥

हल्लविहल्ल के० उगणीसमा हल्ल कुमार, वी
समा विहल्ल कुमार, ए बे श्रेणिक राजाना पुत्र; एक
वीसमा सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रभावे शूलिमां
थी सिंहासन थयुं; बावीसमा सालमुनि, तेवीसमा
महासाल मुनि, ए बे श्री गौतम स्वामीजीए प्रति
बोध्या; चोवीसमा शालिभद्र प्रसिद्धभोगी, श्रेष्ठीपुत्र;
पच्चीसमा भद्रबाहु स्वामी चौदपूर्वना जाण, छवीस

जे पूर्वभवे संयम विराधवाथी अनार्य देशमां उपन्या अने अभय कुमारे मोकलेली जिन प्रतिमा देखीने जेने पूर्वभव सांभर्यो, साधु थया, उगणपच्चासमा दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि थइने मोक्ष गया; वली पचासमा श्रेयांसकुमार, जेणे श्री ऋषभदेवने सेलडीना रसनुं दान दीधुं, एकावनमा कूरगडू साधु, जेणे गुरुना थुंक साथे खीचडी खातां केवल ज्ञान उपार्ज्युं, बावनमा सिद्धंभव आचार्य, जे णे पूर्व थकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपन मा मेघकुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, जेने वीर प्रभु जीए हाथीनो पूर्वलो भव संभलावीने संयममां स्थिर कर्या. ॥ ६ ॥

ए माइ महासत्ता के० इत्यादि बीजा पण खंध कुमार, खंधक मुनि, कपिल मुनि, हरिकेशी मुनि, संयत मुनि, दमदंत मुनीश्वर, दमसार मुनीश्वर प्रमु ख महा सत्त्वना धरनार केटलाक ते भवेज मोक्षे ग या, केटलाक आगल मोक्षे जशे, ते सर्वे मने शिव ... आपो, ते महासत्ता केवा छे ? तो के ज्ञा

नादि गुणोना समूहे करीने संयुक्त छे, वली केवा छे? तो के जेना नाम ग्रहण करवा थकी पापना समूह विनाश पामे छे. ॥ ७ ॥

सुलसाचंदन बाला के० एक सुलसा, श्री वीर स्वामीनी मुख्य श्राविका, बीजी चंदनबाला, श्री वीर स्वामीनी प्रथम साधवी, त्रीजी मनोरमा, सुदर्शन शेठनी स्त्री, चोथी मदनरेखा, नमिराजर्षिनी माता, पांचमी दमयंति नलराजानी राणी, जेनुं मस्तक दीवानी पेरे प्रकाशकारी थतुं हतुं, छठी नर्मदासुंदरी, सातमी सीता सती, आठमी नंदा, अन्नय कुमारनी माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा जाणवी, दशमी नज्ञ शेठाणी, शालिन्नइनी माता, अगीयारमी अवंतिसुकुमारनी माता पण नज्ञ जाणवी, बारमी सुन्नज्ञ जेणे काचे तांतणे चारणी बांधी कूवामांथी जल काढी चंपानगरीनी पोल उघाडी, तथा तेरमी श्री कृष्णजीनी उरमान नगिनी पण सुन्नज्ञ जाणवी. ॥ ८ ॥

रायमईरिसिदत्ता के० चौदमी राजेमति, जेणे

गिरि गुफामांहे संयमथकी पमता रथनेमिने प्रतिबो धी स्थिर कीधा. पंदरमी ऋषिदत्ता सती, सोलमी पद्मावती, करकंडुजीनी माता, सत्तरमी अंजना सुंदरी, हनुमंत वीरनी माता, अढारमी श्री देवी, अतिमुक्त कुमारनी माता, उगणीसमी ज्येष्ठा, वीसमी सुज्येष्ठा, एकवीसमी मृगावती, बावीसमी प्रन्नावती, त्रेवीसमी चेलणाराणी, ए पांचे चेडा महाराजानी पुत्रीउ जाणवी. ॥ ए ॥

बंन्नी सुंदरी रुप्पिणि के० चोवीसमी ब्राह्मी, न्नरतनी बेन, पच्चीशमी सुंदरी ते बाहुबलनी बेन, छवीशमी रुक्मिणी, जेणे वज्रस्वामीनी पासे कुमारिका पणामां दिक्षा लीधी, सत्तावीशमी रेवती श्राविका, जेणे न्नगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी कुंती, पांडवोनी माता, उगणत्रीसमी शीवा, ते चेडा राजानी पुत्री, त्रीसमी जयंति, श्री वीर स्वामीनी श्राविका, एकत्रीसमी देवकी, श्री कृष्णजीनी माता, बत्रीसमी द्रौपदी, पांडवोनी राणी, तेत्रीसमी धारणी ... ी माता, चोत्रीसमी मेघकुमारनी मा

ता पण धारणी जाणवी, पांत्रीसमी जंबु कुमारनी माता पण धारणी जाणवी, बत्रीसमी कलावती, शीलना प्रन्नावे जेना कापेला हाथ नवपल्लव थया, वली साम्त्रीसमी पुष्पचूला नामे साधवी, अन्निकापुत्र आचार्यनी न्नक्तिना उल्लासथी जेने केवलज्ञान नपज्युं, जे वर्षाद वरसते आहार लावी. ॥ १० ॥

पउमावई य गोरी के० आम्त्रीसमी पद्मावती, नुगणचालीसमी गौरी, चालीसमी गांधारी, एकतालीसमी लक्ष्मणा, बेंहंतालीसमी सुसीमा, वली त्रेतालीसमी जांबुवती, चुम्मालीसमी सत्यन्नामा, पीस्तालीसमी रुक्मिणी ए आठ कृष्णनी पटराणी. ॥ ११ ॥

जरकाय जरकदिन्ना के० बेंतालीसमी यक्षा, सुम्तालीसमी यक्षदिन्ना, अम्तालीसमी न्नूता, नुगणपच्चासमी न्नूतदिन्ना, पच्चासमी सेना, एकावनमी वेणा. बावनमी रेणा, ए सात थूलीन्नद्रनी बेनो जाणवी. १२

इच्चाइ महासइ के० इत्यादिक बीजी पण कमलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंद्रलेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख जे महोटी स

तीयो ते सर्वे जयवंती छे, एटले सर्व स्त्रीयोमां प्रधान थती हवी. केवी होती हवी ? तो के निर्मल शील गुणे करीने सहित होती हवी. वली जेनो जसनो पम्हो सकल त्रिभुवनने विषे आजे पण वाजे छे. ॥ १३ ॥

विधिः—पछी एक नवकार गणी इछकार सुह राइनो पाठ कहेवो.

॥ इछाकार सुहराइना छुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छकार-इच्छाकरुं छुं	सुख—सुखे	संजम—चारित्र (रूप)
सुह—सुखे	तप—तप	जात्रा—जात्रा (मां)
राइ—रात	शरीर—शरीर	निर्वहो—प्रवर्त्तो
देवसि—दिवस	निराबाध—रोगरहित	शाता—सुख

इछकार सुहराइ, (सुहदेवसि) सुखतप, शरीर निराबाध, सुख संजम जात्रा, निर्वहो छो जी, स्वामी शाता छे जी, भात पाणीनो लाभ देजो जी ॥ इति ॥

अर्थः—इछा करुं छुं सुखे रात्रि, सुखे दिवस, सुतपमां, शरीरना रोग रहितपणामां, सुखे संजम

जात्रामां प्रवर्त्तो छो जी, स्वामी शाता छेजी ॥ दीव सना वार वागतां सुधी गुरुजीने वांदतां सुहराइनो पाठ बोलवो अने ते पछी वांदतां सांजे सुहदेवसि नो पाठ बोलवो.

विधिः—पछी इच्छा० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं ? कहीने जमणो हाथ चरवला उपर स्थापीने इच्छं सव्वस वि राइय डुच्चिंतिय० कही, नमुच्छुणं कही उन्ना थइ करेमिभंते कही इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जोमे राइयो० कही तस्सउत्तरी अन्नछ० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग कही पारी प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, पुरकर वरदी० सुअस्स० वंदण० कही अतिचारनी आठ गाथानो अथवा गाथा ना आवमे तेणे आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने वेसी त्रीजा आवश्यक नी मुहपत्ति पमिलेही वांदणां वे देवां त्यांथी ते अप्नुछिन्न खामी वांदणां वे दीजे त्यां सुधी देवसिनी रीत प्रमाणे करवुं, पण जे ठकाणे देवसिअं आवे ते ठकाणे राइयं

कहेवुं, पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी का उस्सग्ग करतां ना आवडे तो चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लो गस्स कही, बेसी छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देवां पछी तीर्थवंदन करवुं.

॥ तीर्थवंदनाना छुटा शब्दना अर्थ ॥

चैत्य–देरासर	सहस–हजार	विहरमान–विचरता
निशि–रात	प्रासाद–देरासर	धार–धरनार
दीस–दहाडो	शत–सो	सार–सारी
अड–आठ	शाश्वता-हमेशांस्थायी	सायर–समुद्र

॥ तीर्थ वंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड्य, जिनवरनामें मंगल कोड्य ॥ पेहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं निशि दीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे वंदू लाखज चार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचा स, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ

हजार, नव दशमे वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बार मे त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकांवली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबा शो जोजन विस्तार, पचास ऊंचां बहोंतेर धार ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, सन्ना सहित एक चैत्ये जाण ॥ शो कोम बावन कोम संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सातसें उपर साठ विशाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥ सात कोमने बहोंतेर लाख, भुवनपतिमां देवलभाख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्यें संख्या जाण ॥ तेरशें कोम नव्याशी कोम, शाठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशेंने ओगणशाठ तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर जयोतिषीमां वलि जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ रुषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुण सेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार॥११॥

संखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥ अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलोने थंज्नण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्धअनंत नमुं निशदीस ॥ १३ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समितिसार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अज्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित नित उठी कीर्त्ति करुं, जीव कहे ज्नवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम छे.

विधिः—इच्छकारि ज्नगवन् पसाय करी पच्चरका णनी आज्ञा देजोजी एम कही पछी यथाशक्ति नवकारसि आदी पच्चरकाण करवुं.

पच्चरकाणना छुटा शब्दना अर्थ.

उग्गए—उगेछते	पच्छन्न—ढंकाएला	पुरिमड्ढं—पेहेलोअरधो (दिवस) वे पहोर
सूरे—सूर्य	कालेणं—वखत वडे	अवड्ढं—त्रणपहोरसुधी
नमुक्कार—नवकार	साढ—दोढ	विगइ—विगय(घी, दुध वगेरे)
सहिअं—सहित	दिसा—दिशा (ना)	
मुट्ठि—मुठि [सुधी	मोहेणं—मोहवडे	
पोरिसिं—पहोरादिवस	वयणेणं—वचने	

सोदराः-सरखी | नैर्मल्य-निर्मलपणुं
चेतो-चित | हेतवः-हेतु

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केव
लश्रिया॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः
सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ स
त्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः
॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ नवरोगा
र्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः
श्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽ
स्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीन्नू
त, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितः ॥ सुरा
ऽसुरनरैःपूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु
व : ॥१४ ॥ विमलस्वामिनो वा
चः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति
त्रिजगच्चेतो,जलनैर्मल्यहेतवः॥१५॥

अर्थः—करामलकवद्विश्वं के० श्री सुविधिनाथ

तमोने सम्यक्त्वने अर्थे थाउ. ते सुविधिनाथ केवाछे? तो के हाथने विषे रहेला निर्मल पाणीनी पेठे सर्व प्राणीउने केवल ज्ञान रूप लक्ष्मीए करी जाणता एवा तथा न चिंतवीशकवा योग्य एवुं जे मोहोटाप णुं तेना निधान छे. ॥ ११ ॥

सत्त्वानां परमानंद के० प्राणीउने उत्कृष्ट आनंद ना अंकुरने प्रगट थवामां नवा मेघ सरखा तथा अने कांत शासनरूप अमृत रसना ऋरनारा, एवा शीतल नाथनामा जिन तमोने रक्षण करो ॥ १२ ॥

ज्ञवरोगार्त्तजंतूनां के० संसाररूप रोगे करी पी माएला प्राणीउने. वैद्यसमान छे सम्यक्त्व दर्शन जे मनुं एवा, अथवा दर्शन एटले देखवुं जेमनुं एवा, तथा मोक्ष रूप लक्ष्मीना स्वामी एवा श्रेयांसनामा जिन तमारा कल्याणने अर्थे थाउ. ॥ १३ ॥

विश्वोपकारकीज्ञूत के० श्रीवासुपूज्यनामा जि न तमोने पवित्र करो. ते वासुपूज्य केवा छे ? तो के विश्वना उपकार ज्ञूत तीर्थंकरनामकर्मनी निष्पत्ति करी छे जेमणे, वली वैमानिक, ज्ञवनपति आदि देवता तथा मनुष्य तेमणे पूजवा योग्य छे. ॥ १४ ॥

विमलस्वामिनो वाचः के० श्री विमलस्वामीनी वाणीओ जयवंती वर्त्ते छे; ते वाणीओ केवी छे ? तो के कतकफलना चूर्ण सरखी छे. तथा त्रण जगतना चित्तरूप जलने निर्मल करवाना हेतु (कारण) छे.॥१५॥

गाथा १६ थी २० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

स्वयंभूरमण-सौथी मोटो समुद्र
स्पर्द्धि-बरोबरी करनारा
करुणा-दया
वारिणा-पाणीवडे
अनंतजित्-अनंतनाथ
अनंता-अंतनहीं एवी
प्रयच्छतु-आपो
कल्पद्रुम-कल्पवृक्ष
इष्ट-वांछित
प्राणौ-प्राणियमां
शरीरिणां-देह धारीओने
चतुर्द्धा-चारप्रकारनो
देष्टारं-देखाडनार
उपास्महे-उपासना करीए छीए
सुधा-अमृत
वाक्-वाणी
ज्योत्स्ना-चांदनी
दिक्-दिग्वाळी
मृग-मृग, हरण.
लक्ष्मा-लक्षण,चिन्ह
सनाथ-सहित
अतिशयर्द्धिभिः-अतिशय रूपऋद्धिवडे
नृ-मनुष्य
चतुर्थार-चोथो आरो
नभः-आकाश(मां)
रवि-सूर्य
विश्वासं-सुखने
वितनोतु-विस्तारो

स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥ १६ ॥ कल्प

द्रुमसधर्माणा, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम्॥ चतुर्धा धर्म देष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै, शांतिनाथजिनो ऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥

अर्थः—स्वयंभूरमणस्पर्द्धि के० अंतिमसमुद्रनी स्पर्द्धा करे एवुं करुणारसरूप जे जल, तेणे करी युक्त एवा श्री अंनतनाथ परमेश्वर, जेनो अंत नथी एवी मोक्ष सुख रूप लक्ष्मीने आपो. ॥ १६ ॥

कल्पद्रुमसधर्माण के० धर्मनाथ जिनने अमे सेविये
छीए ते धर्मनाथ जिन केवा छे ? तो के शरीरधारी
प्राणीउने वांछित फलनी प्राप्तिने विषे कल्पद्रुम समा
न छे धर्म जेमनो एवा छे, तथा दान, शीयल, तप त
था नावरूप चार प्रकारना धर्मने देखामनारा छे ।१७।

सुधासोदरवाग् ज्योत्स्ना के० अमृत सरखी वा
णीरूप चंद्रिकाए करी, दिग्वासी जनोनां मुख जेम
णे निर्मल कर्यां छे एवा, तथा मृगनुं चिन्ह छे जेमने
एवा श्री शांतिनाथनामा जिन तमारी अज्ञाननी शां
तिने अर्थे थाउ. ॥ १८ ॥

श्री कुंथुनाथो नगवान् के० श्री कुंथुनाथ नग
वान तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाउ. ते कुंथु
नाथ नगवान केवा छे ? तो के चोत्रीस अतिशयरूप
ऋद्धिए करी सहित छे. वली वैमानिक तथा नवनपत्या
दिक देवता अने मनुष्य तेमना स्वामी जे इंद्र तथा च
क्रवर्त्यादिक तेमना एक नाथ छे. ॥ १९ ॥

अरनाथस्तु नगवां के० परमेश्वरने घटित एवा
नग शब्दना बार अर्थे करी सहित एवा अरनाथ ना
मा जिन ते तमोने चोथो पुरुषार्थ जे मोक्ष तेनी ल

क्ष्मीना ज्ञोग विलासने विस्तारो. ते अरनाथ जगवान केवा छे ? तो के चोथा आरारूप आकाशने विषे सूर्य समान छे. ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

अधीश–इंद्र	समय–वखत	अंशवः–किरणो
मयूर–मोर	उपमं–उपमा (वाली)	यदुवंश–यादव वंश
वारिदं–मेघ	देशना–उपदेश	इंदु–चंद्र
द्रु–झाड	वचनं–वचनने	कक्ष–वनखंड
उन्मूलने–उखेडवाने	स्तुमः–स्तवीएछीए	हुताशन–अग्नि
हस्तिमल्लं-ऐरावतहाथी	लुठंतः–लोटता	अरिष्ट–नामछे; उपद्रव
अभिष्टुमः–स्तवना करीए छीएं	मूर्ध्नि–मस्तकने विषे	कमठे–कमठ उपर
जगत्–जगत(नी)	कारणं–हेतु	धरणेंद्रे–धरणेंद्रउपर
निद्रा–उंघ	वारि–पाणी	उचित–योग्य
प्रत्यूप–प्रभात	प्लवा–प्रवाह	कुर्वंति–करता
	इव–पेठे	तुल्य–सरखी

सुराऽसुरनराधीश, मयूर नववारिदम् ॥ कर्मद्रून्मूलने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ ११ ॥ जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूपसमयोपमम्॥ मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तु

मः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ॥ वारिप्लवा इव नमेः, पांतु पाद नखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धरणेंद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

अर्थः—सुराऽसुरनराधीश के० हमे श्री मल्लिनाथ प्रत्ये स्तवना करीए छीए. ते मल्लिजिन केवा छे? तो के वैमानिक तथा भवनपति आदि देवता तथा मनुष्य, तेना इंद्र, उपेंद्र अने चक्रवर्त्यादिकरूप मोरने उल्लास करवाने नवीन अषाढना मेघ समान छे; वली कर्मरूप वृक्षने उखेडी नांखवाने हस्ती समान छे॥२१॥

जगन्महामोहनिद्रा के० मुनिसुव्रतनाथना धर्मोपदेशने अमे स्तवियें छीए, ते देशना वचन केवुं छे? तो के

जगतने विषे रहेला एवा जे प्राणीउ तेनो जे महामोह ते रूप जे निद्रा, तेने दूर करवाने प्रन्नात कालनी उप मा छे जेने एवुं छे. ॥ २२ ॥

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि के० नमिनाथना चरणना नखनां जे कीरणो छे ते तमारुं रक्षण करो. ते किरणो केवां छे ? तो के नमस्कार करनार जे प्राणीउ तेना मस्तक ने विषे लुठायमान छे, तथा पाणीना प्रवाहनी पेठे निर्मल एटले पापरहित करवानां हेतुन्नूत छे. ॥२३॥

यदुवंशसमुद्रेंदुः यादववंश रूप समुद्रने उल्लास पमाडवाने चंद्रमासमान एवा, तथा कर्मरूप जे वनखं ड तेने बालवाने अग्नि समान एवा, अरिष्टनेमिनामा न्नगवान् ते तमारा उपद्रवने नाश करनारा थाउ॥२४॥

कमठे धरणेंद्रे च के० श्री पार्श्वनाथ ते तमारी ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थे थाउ. ते पार्श्वनाथ केवा छे ? तो के पोतपोतानुं उचित्त कर्म करे छे एवा कमठ अने धर णेंद्रए बेना उपर बराबरमननी वृत्ति छे जेमनी एवा स मदृष्टिवाला छे. एटले कमठ उपसर्ग करे छे अने धरणेंद्र ते निवारे छे, तो पण श्री पार्श्वनाथजी समर्थ छतां पण बंनेनी उपर समदृष्टिवाला छे. ॥ २५ ॥

गाथा १८ थी १९ सुधी छुटा शब्दना अर्थ

श्रीमते–केवलज्ञानरूपलक्ष्मीवान(ने)
सनाथ–सहित
अद्भुत–नवाइ जेवुं
श्रिया–लक्ष्मीवडे
सरो–सरोवर(मां)
राजमरालाय–राजहंस(ने)
विजित–जीतेला
तेजाः–कांति
सेवितः–सेवाएला
विमल–निर्मल
चूडामणि–मुकुट
महितो–पूजाएला

बुधाः–पंडितो
संश्रिता–आश्रय करी रह्या
वीरेण–वीरस्वामीए
अभिहतः–हण्यो
निचयः–समुदाय
वीराय–वीरस्वामीने
वीरात्–वीरथी
प्रवृत्त–चाल्युं
अतुलं–निरुपम
वीरस्य–वीरनुं
घोरं–कठण
तपो–तप
वीरे–वीरमां

दिश–आपो, बतावो
अवनि–पृथ्वी
तल–सपाटी
गतानां–रहेला
कृत्रिम–करेलां अशाश्वतां
अकृत्रिमानां–नहीं करेलां, शाश्वत
कृतानां–करायेलां
अर्चितानां–पूजाएलओनां
भावतः–भावथी

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथाया
द्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, म
रालायार्हते नमः ॥ १८ ॥ जय
ति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधी

श सेवितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रा

सविरहित, स्त्रिजुवन चूमामणि

र्जगवान् ॥ २७ ॥ वीरः सर्वसुरा

सुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः;

वीरेणाजिहतः स्वकर्मनिचयो,वी

राय नित्यं नमः॥ वीरात्तीर्थमिदं

प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वी

रे श्री धृतिकीर्तिकांतिनिचयःश्री

वीर जडं दिश ॥२८॥ अवनितल

गतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां. वरजुव

नगतानां दिव्य वैमानिकानाम् ॥ इ

ह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,

जिनवर जुवनानां जावतोऽहं न

मामि ॥ २९ ॥

अर्थः—श्रीमते वीरनाम्नाय के० केवलज्ञानरूप ल

क्ष्मी ठे जेमने एवा तथा आठ महाप्रातिहार्य तथा

चोत्रीश अतिशयादि अद्भुत लक्ष्मीये करीने सहित छे, तथा महानंदरूप सरोवरने विषे क्रीडा करवाने राज हंस नामा पक्षीनी समान छे एवा अरिहंतश्री महा वीर स्वामीने नमस्कार थाउ ॥ २६ ॥

जयति विजितान्यतेजाः के० जेमणे बीजाउनुं तेज विशेषे करीने जीत्युं छे, तथा जेमने सुर असुरना इंद्रोए सेवेला छे, तथा जे केवलज्ञानरूप लक्ष्मीवंत छे, वली निर्मल छे, वली सात प्रकारना जयथी वि शेषे करी रहितछे, वली त्रण भुवनने विषे मुकुट स मान एवा प्रभु जयवंता वर्त्ते छे ॥ २७ ॥

वीरः सर्व सुराऽसुरेंद्र के० श्री वीर स्वामी जे सर्व वैमानिक तथा भुवनपत्यादिक देवताउना इंद्रोए पूजाएला छे, जे वीर स्वामीप्रत्ये पंमितो आश्रय करी रहेला छे तथा जे वीरस्वामीए पोताना कर्मनो समु दाय समस्त प्रकारे हएयो छे, एवा वीर स्वामीने निरंतर नमस्कार थाउ. तथा जेने उपमा नथी एवुं चतुर्विध संघरूप तीर्थ, जे वीर थकी प्रवर्त्युं छे, तथा जे वीरभ गवाननुं तप घणुं कठण छे तथा जे श्री वीरस्वामीने

विषे केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, धैर्य, कीर्त्ति तथा अद्भुत रूप तेनो समूह वर्त्ते छे. एवा हे श्री वीरस्वामिन्! त मो कल्याणप्रत्ये देखाम्डो अर्थात् आपो ॥ २८ ॥

अवनितलगतानां के० पृथ्वीना तलने विषे रहे लां अशाश्वतां अने शाश्वतां एवां जे चैत्य तथा भुव नपति अने व्यंतरादिक देवोना भुवनोने विषे रह्यां एवां तथा दिव्य वैमानिकोनां (विमानोमांना) तथा आ मनुष्य लोकने विषे मनुष्य एटले भरतादिक राजानां करावेलां एवां, अने जेमने देवताना राजा एटले इंद्रो तेमणे पूज्यां एवां, सामान्य केवलीने विषेप्रधान एवा जे श्री तीर्थंकर तेमनां भुवन एटले चैत्यो छे तेमने भावथी हुं नमस्कार करूंछुं ॥ २९ ॥

गाथा ३० थी ३२ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

वेत्तॄणां–पंडितोना(मां)	सिद्धिवधू–मोक्षरूपस्त्री	घटा–घटा
आद्यं–पेहेला(ने)	हृदय–अंतःकरण	निर्भेद–भेदवाने
सर्वज्ञं–केवली(ने)	अलंकार–शणगार	पंचाननो–केसरीसिंह
अर्जित–मेलवेला	उपमः–उपमावालो	ख्यातः–प्रख्यात
ऊर्जित–घणां आकरां	अष्टादश–अढार	अष्टापद } पर्वतोनां
प्रदीप–बालवाने	सिंधुर–हाथी	गजपदः } नामछे

सम्मेतशैल-समेतशिखर
अभिधः-नामवालो
रैवतकः-गिरनार

वैभार-वैभार पर्वत
कनकाचल-मेरु(पर्वत)
अर्बुद-आबु पर्वत
चित्रकूट-चीतोडनो पर्वत

तत्र-तेमां
कुर्वंतु-करो

सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठिनम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥ देवोऽनेक भवार्जितोर्जित महापापप्रदीपानलो, देवः सिद्धिवधूविशालहृदयाऽलंकार हारोपमः ॥ देवोऽष्टादशदोषसिंधुरघटा निर्भेद पंचाननो, भव्यानां विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥ ख्यातोऽष्टापदपर्वतोगजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान्, रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः ॥

वैभार:कनकाचलोऽर्बुदगिरि:श्री
चित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषभादयो
जिनवरा: कुर्वंतु वो मंगलम् ॥३१॥

अर्थः—सर्वेषां वेधसामाद्यं के० सर्व ज्ञाता पुरुषो मां प्रथम मुख्य एवा, तथा आदिम परमेष्टिरूप तथा देवताओना देव जे इंद्र तेना पण देव एवा, तथा सर्व पदार्थने जाणनारा एवा, श्री वीरभगवाननुं प्रकर्षे करी ध्यान धरीए ढीए ॥ ३० ॥

देवोऽनेक के० श्री वीतरागजिन ते भव्य जीवो ने वांछित फलने आपो. ते वीतराग देव केवा छे ? तो के अनेक भवने विषे संचेलां घणां आकरां मोटां पाप तेने प्रकर्षे करी बालवाने अग्नि समान छे, वली जे देव मोक्षरूप स्त्रीना विशाल हृदयने विषे अलंकार एटले हारनी उपमा छे जेमने एवा छे, वली देव केवा छे ? तो के अढार दोषरूप हाथीनी घटाने भेदवाने केसरी सिंह समान छे ॥ ३१ ॥

ख्यातोऽष्टापद के० प्रख्यात एवो अष्टापद पर्वत तथा गजपद पर्वत, वली सम्मेतशिखर नामा पर्वत,

तथा लक्ष्मीवंत एवो गिरनार पर्वत, तथा प्रसिद्ध छे महिमा जेनो एवो सिद्धगिरि पर्वतरूप मंडप, वली वैन्नार पर्वत, तथा मेरुपर्वत, तथा आबु पर्वत, तथा श्री चित्रकूटादिक पर्वतो छे तेमने विषे जे श्रीऋषभादिक जिनवरो छे, ते तमारुं कल्याण करो ॥ ३९ ॥

विधिः-वंदिता पछी खमासमण देइने इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं[1] आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्पक्खिमुहपत्ति पडिलेहुं एम कही मुहपत्ति पडिलेहिए पछी वांदणां वदीजे पछी इच्छाकारेण. संबुद्धाखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अभिंतर पक्खिअं खामेउं; इच्छं खामेमि पक्खिअं. (पंचांग नमस्कार पूर्वक चरवला उपर जमणो हाथ स्थापी) पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही इच्छाकारेण० कही पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि जोमे पक्खिओ अइआरो कओ कही इच्छाका० कही पक्खिअतिचार आलोउं एम कहीने अतिचार कहीए.

---

१ दिवस संबंधि अतिचार आलोईने पापथी पाछो ओसर्यो.

॥ अथ श्री श्रावकपाक्षिकादि संक्षिप्त अतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणि ज ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, वादर जाणतां, अजाणतां, हुउ हुइ, ते सविहुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलायें भणयो, गणयो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधान हीन, अनेरा कन्हें भणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदन वांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय करतां, भणतां गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हा, मात्रें, आगलो उगो भणयो. सूत्र अर्थ विहुं कूडां कह्यां. साधु तणे धर्मे काजो मांडो, अणपडिलेह्यां, काजो अण उद्धरिउ, असज्झाइ अणोझा

मांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो, गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणासूत्र, उपदेश माला प्रमुख कालवेला काजो अणउद्धरिये पढियो. ज्ञानद्रव्य भक्षित, उपेक्षित प्रज्ञापराध विणासियो, विणासतां उवेखियो, सार संभाल न कीधी, तथा ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रत्ये पग लागो, थूंके करी अक्षर मांज्यो, कन्हें छते आहार निहार कीधो. ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी. आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥१॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं, तपोधन, तपोधनी प्रत्ये मलमलिन गात्र देखी दुगंछा कीधी. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टि

पणुं कीधुं, तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति कीधी, तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारण द्रव्य, भक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतो उवेख्यो; छती शक्तिए सार, संभाल न कीधी, तथा साधर्मिक शुं कलहकर्म बंध कीधो, अधोती अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी. वासकूंपी धूपधाणुं कलशतणो ठवको लागो. देहरा पोसालमांहि मल श्लेष्म लूह्यां. हास्य, केलि[1], कुतूहल कीधां. जिनभुवनें चोराशी आशातना, गुरुप्रत्ये तेत्रीश आशातना, ठवणाहारी हाथ थकुं पड्युं, पडिलेहवुं विसार्युं. गुरुवचन तहत्ति[2] करी [3]पडिवज्युं नहीं ॥ दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ३ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभांड निक्षेवणासमि

---

१ रमत. २ तेमज. ३ अंगीकार कर्युं.

ति, पारिठावणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, काय गुप्ति, ए अष्टप्रवचन माता, साधु तणे धर्मे सदैव, श्रा वक तणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रूडी पेरे चिं तव्युं नहीं. खंडण, विराधना कीधी ॥ चारित्राचारव्र त विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बारव्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिच्छाण॥ संकाः—श्री अरिहंत तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चा रित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥ १ ॥ आकांक्षाः— ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आलपाल पादर देवता, गोत्र देवता, देवदेहरानो प्रभाव देखी रोग आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बौद्ध, सांख्य, संन्या सी, भरडा, भगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेरा ए दर्शनीयानुं कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जा ण्या विण भूल्या व्यामोह्या, कुशास्त्र शीख्यां सांभळ्या, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, वलेव, माही पूनम, अजा प ड्वो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विणायगचोथ, नागपं

जीवछठी, शीयलसप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नोलीनव मी, अहवदशमी, व्रतइग्यारसी, वत्सबारसी, धनतेर सी, अनंतचौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तराय न, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या. पींपले पाणी रेडयां, रेडाव्यां; घर, बाहिर, कूइ, तलाव, नदी, द्रह, कुंड, वाव्य, समुद्रे पुण्य हेतु स्नान कीधां ॥ २ ॥ वितिगि छाः—धर्म संबंधीयां फलतणो संदेह कीधो. जिनअरि हंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जाणी पूज्या नहि. इहलोक परलो क संबंधीया जोगवंछित पूजा कीधी रोग आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या, महात्माना जात, पा णी, मल शोजातणी निंदा कीधी ॥३॥ प्रीति मांमी ॥ ४ ॥ तेहनी दाक्षिण लगें, तेहनो धर्म मान्यो ॥५॥ श्री सम्यक्त्व व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अ० प० ॥४॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रते पांच अ तिचार ॥ वहवंध छविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीशवशे गाढो घाय घाल्यो. गाढ बंधण बांध्युं, घणे जारे पीड्यो. निल्लंछण कर्म कीधुं. चारापाणी तणी

वेलाये सार संभाल न कीधी. लेणे, देणे कुणहने भ ढव्युं, लंघाव्युं, तेणे भूखे आपण जम्या, शव्यां धान्य रूडी पेरे जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोव्युं, जीवाणी शूकव्युं. गलतां फालक नांखी, गलणुं रूडुं न कीधुं. इंधण, छाणां, अणशोध्यां वाव्यां. तें मांही साप, ख जूरा, विंछी, सरोला, मांकड, जूवा, गींगोडा, साहतां मूआ, दूहव्या, रूडे स्थानके न मूक्या. कीडी, मंको डी, उधेही, धीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगीया, देड कां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, वि णसतां उवेख्या, चांप्या, दूहव्या, हलावतां, चलावतां पाणी छांटतां, अनेराइ कामकाज करतां, [१]निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी ॥ पहेले स्थूल प्राणा तिपात व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पण॥५॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचा र ॥ सहस्सा रहस्सदारेण ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्यें अयुक्त आल दीधुं. [२]स्वदारा मंत्रभेद कीधो. अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहने [३]अपाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी. कूडो लेख लख्यो, जूठी सा

१ निर्दयपणुं, घातकीपणुं. २ पोतानी स्त्री. ३ कष्टमां.

ख जरी, आपण मोसो कीधो. कन्या, ढोर, नूमि संबंधिया लेहेणे, देहेणे, वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या ॥ बीजे स्थूलमृषावादव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ० ॥ पक्खि० ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पडगेण ॥ घर बाहिर, खेत्रे खले, परायुं अण मोकल्युं लीधुं, वावर्युं. चोराइ वस्तु लीधी, चोर प्रत्यें [1]संबल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं. कूडा मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र [2]कलत्र, [3]वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवा जुना सरस, नीरस वस्तु तणा जेल संजेल कीधा ॥ त्रीजे अदत्तादानव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ख०॥७॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्री विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, काम जोगतणे विषे अति अजिलाष कीधो, दृष्टिविपर्यास कीधो, आठम, चनदशी तणा नियम लइ जांग्या. अ

---

१ भातुं. २ स्त्री. ३ ठगी.

तिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नां तरे हूआ ॥ चोथे मैथुनविरमणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्तवत्थू० ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरं रखाव्युं. सोनुं, रुपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं. पढवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ९ ॥

छठे दिग्विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे० ॥ उर्ध्वदिशें, अहोदिशें, तिर्यग्दिशें, जावा आववा तणा नियम लेइ जांग्या. एक दिशि संक्षेपी, वीजी दिशि वधारी. [१]विस्मृत लगें अधिक जूमि गया. [२]पाठवणी आघी मोकली. वाहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले [३]गामंतरुं कीधुं ॥ छठे दिग्विरमणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोगव्रते पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते पमिवद्धे० ॥ सच्चित्त आहारे, सच्चित्त प्रतिवद्ध आहार, अप्पोलसहिजरकणया, डप्पोलसहिजरकणया, तुछो

---

१ वीसर्यां. २ मोकलवानी चीज. ३ बीजे गाम जवुं.

सहित्नरकणया, सञ्चित्तत्नरकणया, अपक्काहारे, डुःप
काहारे तुबऔषधि कुली आंबली, ऊला, ऊंबी, पहूंक.
पापमीतणां नक्षण कीधां, अनंतकाय, अथाणां तण
नक्षण कीधां, तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पं
पोटा, महूमां, वमबोर, प्रमुख बहुबीज तणां नक्षण
कीधां ॥ गाथा ॥ सचित्त दब विगइ, वाणह तंबोल वब
कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन्न दिसी न्हाण
नत्तेसु ॥१॥ ए चनद नियम दिनप्रत्यें लीधा नहीं. लेइ सं
केप्या नहीं. सचित्त, ज्व्य, विगय, खासमां, वाहन, तंबो
ल, फोफल, बेसण, शयन, पाणी, अंघोलण, फल फू
ल, नोजन, आछादनें, जे कोइ नियम लेइ नांग्या.
बावीश अन्नक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय मांहि आदू, मूला
गाजर, पिंम, पिंमालु, कचूरो, सूरण, खिलोमां, मो
रमा, सेलरां, कुली आंबली, बाधरमां, गिरमर, नीली
गलो. वाल्हाल खाधी. वाशी कठोल, पोली, रोटली,
त्रण दिवसना ऊदन, मधु, महुमां, विष, हिम, करहा,
घोलवमां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुंदां, बोर, अथाणुं,
काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबमां खाधां. लगन्न

ग वेलायें वालू कीधां. दिन जग्याविण शीराव्या. जे कोइ अनेरो अतिचार हुन होय ॥ तथा कर्मतः इंगाल कम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीकम्मे ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लरकवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरद्दहतलायसोसणया, असइपोसणया ॥ ए पांच सामान्य, ए पन्नर कर्मादानमांहि कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरां कांइ सावद्य कर्म समाचस्यां होय ॥ सातमे जोगोपजोग व्रतविषइयो अनेरो० ॥ ५० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंडव्रते पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ अनर्थदंड जे कहियें, कामकाज पाखें [1]मुधा पाप लाग्यां. मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी. निरर्थक लोकने [2]कर्षण, गाडां [3]वाही, ग्रामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी. कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां अनेराइ पापोपदेश दीधा. कोश, कूहाडा, रथ, [4]उखल, [5]मूशल, घर, घंटी प्रमुख [6]सज्ज करी मेल्यां. माग्यां

१ फोगट. २ खेती. ३ चलावी. ४ खांयणीओ, खांयणी. ५ सांबेलुं, मुशली. ६ तैयार.

आप्या. अंघोल नाहणे, पग धोयणे, खालें पाणी ढो ळ्यां अथवा झीलणां झीळ्यां. जूवटुं रम्या. नाटक [१]पे खणां जोयां. पुरुष स्त्रीनारूप, शृंगार वखाण्या. राज कथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा, पराइ तांत कीधी. [२]कर्कश वचन बोल्या, [३]संन्नेका लगाड्या. [४]शरभ, कूकडा, प्रमुख [५]झूझता जोया. कलह करता जोया, लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्त्ति देश लइ चिं तवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविण चांप्या. ते उपर बेठा, [६]आली वनस्पति चूंटी, अंगी ठा काष्ठवणिज कीधां. ठाश, पाणी, घी, तेल, गोल, आम्लवेतस, वेरंजातणां भाजन उघाडां मेहल्यां ते मांहे कीडी, संकोडी, कुंथुआ, उदेही, घीमेल, गिरो ली प्रमुख जे कोइ जीव [७]विणठा. ऊडा, सालही, कीडाहेतु पांजरे घाल्या ॥ अनेराइ जीवने रागद्वेष ल गें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हाणी वां छी ॥ आठमे अनर्थदंडव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अ तिचार पक्ष० ॥ १२ ॥

---

१. जोवानां. २ आकरां, कठोर, ३ साचांजुठां करी लडाववां. ४ हाथी, अष्टापद. ५. लडता. ६ फोकट, कामवगर. ७ नाश पाम्या.

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणेण ॥ सामायिकमांहि मन आहट दोहट चिंतव्युं. वचन सावद्य बोल्युं. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती शक्तिए सामायिक लीधुं नहीं, उघाडे मुखें बोल्या, सामायिकमांहि ऊंघ आवी, [१]वीज दीवा तणी [२]उजेही लागी, विकथा कीधी. कण, कपाशि या, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ. मुहपत्ती संघट्टी, सामायिक अण पूगे पार्युं, पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार॥पण॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, स द्दाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वहियापुग्गलक्खेवे ॥ नीमीभू मिकामांहिथी बाहिर अणाव्युं. आपण कन्हेथी बाहि र मोकल्युं. शब्द संभलावी, रूप देखाडी, कांकरो नां ख्यो. आपणपणुं छतुं जणाव्युं. पुद्गलतणो [३]प्रक्षेप की धो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषइयो अनेरो० पण

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ सं

---

१ वीजली. २ अजवालुं. उजेस. ३ फेंकवुं.

धारुच्चारविहिए ॥ पोसह लीधे संथारातणी भूमि वा हिरलां थंम्मिलां संदीसे रूमां शोध्यां नहीं. पम्मिलेह्यां नहीं. थंम्मिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न कीधी. 'अणुजाणहजस्सगो' न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्युं. देहरा पोसालमांहे पेसतां, निसरतां, निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी. पुढवी, अप्प, तेज, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव कीधा. संथारापोरिसीतणो विधि भणवो विसार्यो. अविधियें संथार्या. पारणादिक तणी चिंता निपजावी. कालवेलाये देव न वांद्या. पोसह असूरो लीधो. सवारों पार्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ पण ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निख्खिवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठां उपर छतां असूजतुं दान दीधुं. वहोरवा वेला टली रह्या. मत्सरलगें दान दीधुं. देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अणकहे दीधी, अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवा तणी

लुंदे सूजतुं फेरी, असूजतुं कीधुं, गुणवंत आवे नक्ति न साचवी, अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां बती शक्तें नुद्धस्यां नहीं, दीन, खीन प्रत्ये अनुकंपा दान दीधुं नहीं. देतां वार्युं ॥ बारमे अतिथिसंविनाग व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार० प० ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामन्नोगासंसप्पउगे. इह लोके धर्मतणा प्रन्नाव लगें राजक्रद्धि नोग वांबया. पर लोकें देव, देवेंद्र चक्रवर्त्ती तणी पदवी वांबी. सुख आवे जीववातणी वांबा कीधी. डुःख आवे मरवातणी वांबा कीधी. काम नोगतणी वांबा कीधी. ॥ संलेषणा व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ प० ॥ १७ ॥

तपाचार बार नेद ॥ ब बाह्य, ब अन्यंतर ॥ अणसणमूणोअरिया० ॥ अणसण नणी उपवासादिक पर्वतिथि तप न कीधुं. उणोदरी वे चार कवल उणा न कर्या. द्रव्य नणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप[1] न की

१ संकोच

धो. रस त्याग न कीधो. कायक्लेश–लोचादि कष्ट कस्या नहीं. संलीणता–अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पच्च क्खाण न्नांग्यां, पाटलो ऊगतो फेरुयो नहीं, गंठसही पच्चक्खाण न्नांग्युं. उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी घाल्युं. विमन हुउं ॥ बाह्य तपव्रत विष इयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणउ० ॥ सूधुं प्राय श्चित्त पमिवज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधि टीप की धी नहीं, सूधो तप पहोंचाम्यो नहीं, साते न्नेदें विनय न कीधो, दश न्नेदें वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्का य न कीधो, कषाय वोसराव्यो नहीं, डुक्खक्खय कम्म क्खय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्म ध्यान, ध्यायां नहीं. आर्त्त, रौड, ध्यान ध्यायां ॥ अन्यं तर तपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि ॥ १ए ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार॥ अणिगूहिय बलविरि यो० ॥ मनोवीर्य, धर्म ध्यान तणे विषे उद्यम न की धो, पमिक्कमणें देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप

भावना, छती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न की
धो. वेळां पडिक्कमणुं कीधुं. रूडां खमासमण न दीधां
॥ वीर्याचार विषयइञ अनेरो० ॥ १० ॥

पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनं
तकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात मृषावाद,
अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ,
राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति,
परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार
पाप स्थानकमांहे कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय ते
सविहुं मन, वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥११॥

॥ अथ श्रावकपाक्षिकादि विस्तारातिचार प्रारंभः ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि तह य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणि
ओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचा
र, वीर्याचार, ए पंचविध आचार मांहे अनेरो जे कोइ
अतिचार, पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अ
जाणतां हुओ होय, ते सविहु मनें, वचनें, कायायें करी

तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए ब हुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभ ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे भणिउ गुणीउ नहीं. अकाले भण्यो. विनयहीन, ब हुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अ नेरो गुरु कह्यो. देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणे सज्झाय करतां, भणतां, गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हे, मात्रे अ धिक उछो भण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ कूडो कह्यो. तदुभय कूडां कह्यां. भणीने विसार्यां. साधु तणे धर्म काजे, काजो अणउद्धर्ये, मांडो अणपडिलेहे, वस्ती अणशोधे, अणपवेसे, असज्झाय, अणोझा मांहे श्री द शवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो, गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणासूत्र, उपदेशमाला. प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो. कालवेला काजो अणउद्धर्ये पढि यो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकर वाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्यें पग लाग्यो. थूंक लाग्युं, थूंकें करी अक्षर मांज्यो. उशीशें धर्यो. कन्हें छतां आहार [१]निहार कीधो, ज्ञा

१ झाडो.

नइय [1]नणतां, [2]उपेक्षा कीधी. [3]प्रज्ञापराधें [4]विणास तो [5]विणास्यो. विणासतो उवेख्यो. छती शक्तियें सार संभाल न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष मत्सर चिंतव्यो. अवज्ञा, आशातना कीधी. कोइप्रत्यें भणतां, गणतां, अंतराय कीधो. आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी [6]असद्दहणा कीधी. कोइ तोतरो, बोबडो हस्यो, [7]वितकर्यो; अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिठ्ठीअ ॥ उववूहथिरीकरणे, वच्छलप्पभावणे अठ्ठ ॥ ३ ॥ देव, गुरु, धर्म तणे विषे [8]निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहिं. साधु, साधवीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा निपजावी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर

---

१ भणतां, २ अखाडा. ३ बुद्धिना दोषे, दोष बुद्धियें. ४ नाश पामतो. ५ नाश पमाड्यो. ६ अश्रद्धा. ७ खोटो तर्क कर्यो. ८ वहेम रहीतपणुं.

अन्नाव हुवे. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी [1]मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी [2]अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अन्नक्ति निपजावी. अबहुमान कीधो. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य. साधारण द्रव्य, न्नक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधें विणास्युं. विणासतां उवेख्युं. उती शक्तियें सार, संन्नाल न कीधी; तथा [3]साधर्मिक साथे कलह कर्म बंध कीधो. [4]अधोती, अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी. [5]बिंब प्रत्यें [6]वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशातणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. [7]उछ्वास, [8]निःश्वास लाग्यो. देहरे, उपासरे, [9]मलश्लेष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधो. पान सोपारी [10]निवेदिआं, खाधां, [11]ठवणाहारि हाथथकी पाडी पडिलेहवुं विसार्युं जिनन्नुवनें चोराशी आशातना गुरु, गुरुणी प्रत्यें ते

---

१ मुरखपणुं. मुरखनी पेठे तेमने गुरु मानवा. २ निंदा. ३ एकज धर्मना, सरखा धर्मवाला. ४ धोया विनाना आठ पडवाला. ५ प्रतिमाजी. ६ वासखेपनी दाबडी. ७ उंचो श्वास. ८. नीचो श्वास. ९ कान वगेरेनो मेल, शलेखम. १० नीवेदनी चीजो. ११ स्थापनाचार्य.

जीश आशातना कीधी होय. गुरु वचन [1]तहत्ति करी [2]पडिवज्युं नहिं ॥ दर्शनाचार व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति० ॥ ३ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ इर्यासमिति ते अणजोए हिंम्या. भाषासमिति, ते [3]सावद्यवचन बोल्या. एषणा समिति, ते [4]तृण, [5]डगल, अन्न, पाणी असूझतुं लीधुं. [6]आदानभंडमत्त [7]निक्खेवणासमिति, ते आसन, शयन, उपगरण, मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुल भूमिकायें मूक्युं, लीधुं. पारिष्ठापनिकासमिति, ते मल. मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलभूमिकायें परठव्युं. मनोगुप्ति, मनमां आर्त्त, रौद्र, ध्यान ध्यायां. वचनगुप्ति, सावद्यवचन बोल्या. कायगुप्ति, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा. ए अष्ट प्रवचन माता. ते साधुतणेधर्मे [8]सदैव, अने श्रावकतणे धर्मे सामा

---

१ प्रमाण तेमज २ अंगीकार कर्युं. ३ पापवालुं. आरंभवालुं. ४ तरणां. ५ डगळां. ६ मातरुं (पेसाब). ७ मुकवुं. ८ निरंतर, हमेशांज.

थिक पोसह लीधे, रूडी परें पाल्यां नहीं. [1]खंडणा वि राधना हुइ॥ चारित्राचार व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ.

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगि छा० ॥ संकाः—श्री अरिहंत तणां बल, अतिशय ज्ञान लक्ष्मी, [2]गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, श्री जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, [3]गोगो, [4]आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, [5]विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वालीनाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूवा देव देहरांना प्रभाव देखी, रोग [6]आतंक कष्ट आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या; मान्या. सिद्ध, विनायक, [7]जीराउलाने मान्युं; इच्छ्युं. बौध सांख्यादिक, संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगिया, जोगि, [8]दरवेश, [9]अनेरा दर्श

---

१ तोडभांग. २ गंभीरता वीगेरे. ३ सापने उतारवानो देव. ४ दिशाना रक्षक देवता जे दिक्पाल ए नामथी ओलखाय छे. ५ गणपति. ६ मंदवाड, पीडा. ७ जीरावला पार्श्वनाथ. ८ फकीर. ९ बीजा.

निया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विना मूल्या, व्यामोह्या. कुशास्त्र शिख्यां; सांभ्रपरूवो, प्रेत बीज, गौरी त्रीज, विनायक चोथ, नागपांचमी, झिलणा छठी, शील सातमी, ध्रुव आठमी, नोली नोमी, अहवा दशमी, व्रत इग्यारसी, वत्स बारसी, धनतेरसी, अनंत चउदशी अने अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, [१]नवोदकयाग, जोग, उतारणां कीधां, कराव्यां. अनुमोद्यां. पिंपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां. घर बाहिर क्षेत्रे, खले, कूवें, तलावें, नदीयें, द्रहे, वावीये, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां ॥ ग्रहण, शनिश्चर, माहामासें, नवरात्री नाहाया. अजाणनां थाप्यां ॥ अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां ॥ वितिगिच्छाः–धर्म संबंधीआ फल तणे विषे संदेह कीधो. जिनअरिहंत धर्मना [२]आगर, [३]विश्वोपकारसागर, मोक्ष मार्गना दातार, इस्या गुण जाणी न मान्या, न पू

[१] नवां जलाशय करतां करेलां होम. [२] खाण. [३] सघला उपकारना समुद्र.

ज्या. महासती माहात्मानी इह लोक, परलोक संबंधिया भोगवांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक, कष्ट आवे, खिन्न वचन भोग मान्या. महात्माना भात, पाणी मलशोभा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुभाव हुओ. मिथ्यात्वी तणी पूजा, प्रभावना देखी प्रशंसा कीधो. प्रीति मांडी. [1]दाक्षिण लगें तेहनो धर्म मान्यो; कीधो ॥ श्री सम्यक्त्व व्रत विषइओ [2]अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ० ॥ ४ ॥

पेहले [3]स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए० ॥ [4]द्विपद, [5]चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें, गाढो घाव घाल्यो. गाढ बंधने बांध्यां. अधिक भार घाल्यो. निलाँछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेलायें सार, संभाल न कीधी. लेहणे, देहणे, किणही प्रत्यें लंघाव्यो. तेणें भूखें आपण जम्या. कन्हें रही मराव्यो. बंधीखाने घलाव्यो. शळ्यां धान्य [6]तावडे नाख्यां. दलाव्यां, भरडाव्यां, शोधी न वावर्यां, इंधण,

---

१ शरम. २ बीजो. ३ जाडुं, मोटुं मोटुं. ४ बे पगां. ५ चो पगां. ६ तडके.

गणां, अणशोध्यां, वाल्यां. ते मांहे साप, विंछी, ख जूरा, सरवलां, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साह्तां मुआ. दुहव्या. ठके स्थानके न मूक्या. कीडी, मंकोडीनां इं डां विगोह्यां. लीख, फोडी. उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरां, चुडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, डांस, मसा, वगतरा, मांखी, तीड प्र मुख जीव [१]विणठ्या. माला हलावतां, चलावतां, पं खी, चकलां तथा काग तणां इंडां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणाड्या, चांप्या, दुहव्या. कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांइ काम काज करतां [२]निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा ठडी न की धी. संखारो शूकव्यो. रुडुं गलणुं न कीधुं. अणगल पा णी वावर्युं. रुडी जयणा न कीधी. अणगल पाणीयें झील्या, लूगडां धोयां. खाटला तावडे नाख्या. झाट क्या. [३]जीवाकूलभूमि लींपी. वाशी गार राखी. दल णे, खांडणे, लींपणे, रुडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या. धूणी करावी ॥ पेहेले स्थू लप्राणातिपात विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अ

१ नाश कर्या. २ निर्दयपणुं. ३ जीववालो जग्या.

तिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्म० ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्सदारे० ॥ सहसात्कारें कुणही प्रत्ये अजुगतुं आल, अभ्याख्यान दीधुं. [1]स्वदारामंत्रभेद कीधो. अनेरा कुणहीनो मंत्र [2]आलोच, मर्म प्रकाश्यो. कुणहीने अनर्थमां पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लखाव्यो. कूडी साख भरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, [3]गौ, भूमि संबंधी लेहणें, देहणें, व्यवसाय वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ, पग तणी गाल दीधी. कडकडा मोडया. मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउ अने०

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेना हडप्पओगे०॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोर धाड प्रत्यें संकेत कीधो. तेने [4]संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो. नवा, [5]पूराणा सरस, विरस, सजीव, निर्जी

---

१ पोतानी स्त्रीनी छानी वात कही दीधी. २ विचार. ३ गाय. ४ भातु. ५ जुना.

व वस्तुना भेल संभेल कीधा. कूडे काटले, तोलें, मानें, मापें, वोहोरयां. दाण चोरी कीधी, कुणहीने [1]लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूडो [2]करहो काढ्यो विश्वासघात कीधो. [3]परवंचना कीधी; [4]पासंग कूडा कीधा. डांडी चढावी. लहके, त्रहके, कूडां काटलां, मानमापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, कलत्र वंची कोइने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. थापण ओलवी. कुणहीने लेखे पलेखे भोलव्युं. पडी वस्तु ओलवी लीधी॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान वि० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन ॥ इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो. सराग वचन बोल्यां. आठम चउदश, अनेरायें पर्वतिथें नियम भांग्या. घर घरणां कीधां. कराव्यां. वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. [5]अनंग क्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जो

---

१ हिसाबमां छेतर्यो. २ करज, देवुं. ३ बीजाने ठगवुं. ४ धडो ५ कामक्रीडा.

स्या. ढिंगला, ढिंगली परणाव्यां. कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाख कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार [1]सुहणे स्वप्नांतरे हुवा. कुस्वप्न लाधां. नट, विट, स्त्रीसुं हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोषव्रत विषइन्नु अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ धणधन्न खित्तवत्थु० ॥ धन, धान्य, खेत्र, [2]वास्तु, [3]रुप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नही. लेइने पढीउं नहिं. पढवुं विसार्युं. अलीधुं मेल्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइनु अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ९ ॥

छठे दिक्परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि यें जावा, आववा तणा नियम लइ भांग्या. [4]अनाभो

---

१ स्वप्ने. २ घर. ३ रूपुं. ४ अजाणपणे.

गे [1]विस्मृत लगें अधिक भूमि गया. पाठवणी आघी पाछो मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले गामतरुं कीधुं. भूमिका एक गमां [2]संक्षेपी. वीजी गमां वधारी ॥ ठंठ दिग्परिमाणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति० ॥ १० ॥

सातमे भोगोपभोग विरमणव्रतें भोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्म हुंती पंदर, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं. [3]अपक्काहार, [4]दुःपक्वाहार, [5]तुछोषधि तणुं भक्षण कीधुं. उला, उंबी, पोंक, पापडी, कीधां ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसी न्हाण भत्तेसु ॥ ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहीं. लेइने भांग्या. बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आदु, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुली आंवली, गलो तथा वाघरडां, खाधां. वाली क

१ ज्यां सुधी भूल्यो त्यां सुधी. २ ओछी करी. ३ काचुं अथवा नहीं चडेलुं. ४ काचुं पाकुं. ५ खावानुं थोडुं तथा नांखी देवानुं वधुं जेवां के बोर शेरडी वगेरे.

गोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं [1]ज्जुदन लीधुं. मधु, महुम्रां, माखण, माटी, वेंगण, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवम्रां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुदां, महोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस तथा कोठिंबम्रां खावां. रात्रिज्ञोजन कीधां. लगज्ञग वेलायें वालु कीधुं. दिवस विण जगे शीराव्य, तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साम्रीकम्मे, ज्ञाम्रीकम्मे, फोम्रीकम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्ज, लरकवाणिज्जे, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्ज ए पांच वाणिज्ज ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंबणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य, ए पांच कर्म, पांच वाणिज्ज, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य महारंज्ञ, रांगणी, लीहाला कराव्या. इंट, निंज्ञाम्रा पचाव्या. धाणी चणा, पकवान करी वेच्यां. वाशी माखण तपाव्यां. तिल वोहोरया. फागुण मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बीलाम्रां, शूम्रा, सालहि, [2]पोश्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खर कर्मा

१ रांधेला चोखा (भात). २ पाल्या.

दिक समाचस्यां. वाशी गार राखी. लींपणे, घूपणं, म हारंभ कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गो ल तथा गश तणां भाजन उघाम्ां मूक्यां. ते मांहि माखी, कुंती, उंदर, के गिरोली पमी. कीमी चमी. ते नी जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोग विरमण व्रत विषइञु० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंम विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्पलगें विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव, भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत कीधी. तथा पैशून्यपणुं कीधुं. आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कुहामा, रथ, उखल, मूशल, अग्नि, घंटी, निसाद, दातरमां प्रमुख [1]अधिकरण मेली, दाक्षिण लगें मा ग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी, चतुर्दशीए खां मवा, दलवा तणा नियम भांग्या. मूरखपणालगें अ संबंध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. [2]अंघोले, नाहाणे, दातणे, पगधोअणे, खेलपाणी तेल ढांट्यां.

---

१ ओजार. २ पीठी चोळवी.

झीलवे झीलया. जूवटे रम्या. हिंचोले हिंच्या. नाटक प्रेक्षणक जोयां. कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्या. आक्रोश कीधा. अबोला लीधा. करकडा मोड्या. मत्सर धर्यो. संभेडा लगाड्या. शराप दीधा. भेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक झूझाड्यां; झूझतां जोया. खादि लगें अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं, कण, कपाशीया काज विण चांप्या. ते उपर बेठा. [1]आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक निपजाव्यां, घणी निद्रा कीधी. राग, द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानि वांछी॥ एआठमे अनर्थदंड विरमणव्रत विषइउ अने० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणेण ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती वेलायें सामायिक न लीधो. सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्या. ऊंघ आवी. वात. विकथा, घर तणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उजेहि हुइ. कण, कपाशिया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरणे

---

१ कुणी.

टो पाषाण प्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल हरिकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभड्यां. स्त्री, तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ. मुहपत्तीयो संघट्टी. सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहि वाहेरथी कांइ अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी, आपणपणुं छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगाशिक व्रतविषइओ अनेरो जे कोइ अति० ॥१४॥

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, सद्या संथारए ॥ अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, उच्चार पासवणभूमि ॥ पोसह लीधे संथारातणी भूमि न पूंजी. बाहिरलां लहुडां, वडां स्थंडिल, दिवसे, शोध्यां नहीं. पडिलेह्यां नहीं. मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी

भूमिकाय परठव्युं. परठवतां अणुजाणह जस्सग्गो, न कह्यो. परठव्या पूंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. पोसहसालामांहि पेसतां निसहि, निसरतां आवसहि, वार त्रण भणी नहीं. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपद्रव हुआ संथारा पोरिसीतणो विधि भणवो विसाय्यो. पोरिसि मांहे उंघ्या. अविधे संथारो पाथर्युं. पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो लीधो. सवेरो पाळ्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ख० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर छतां महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं. देवानी बुद्धे परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धे सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धे आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वोहोरवा वेला टली रह्यां. असूरें करी महात्मा तेड्या. मत्सर धरी दान दीधुं. गुणवंत आवे भक्ति न साचवी

छती शक्तें स्वामिवात्सल्य न कीधुं. अनेराइ धर्मक्षेत्र [1]सीदातां छती शक्तियें उद्धर्या नहि. [2]दीन, [3]क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ० ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रभाव लगें राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार, वांछ्यो. परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ती तणी पदवी वांछी. सुख आवे जीवितव्य वांछ्युं. दुःख आवे मरण वांछ्युं. कामभोगतणी वांछा कीधी. संलेषणाव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि हुवो हुइ० ॥ १७ ॥

तपाचारना बार भेद; छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोयरिआ० ॥ अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथें छती शक्तें कीधो नहीं. ऊणोदरी व्रत को

१ खराब हालतमां आवी पडतां. २ गरीब. ३ नबळा.

लिया पांच, सात, ऊणा रह्या नहिं. वृत्तिसंक्षेप, ते द्रव्य नणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं. रसत्याग तथा विगय त्याग न कीधो. कायक्लेश, लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं. संलीनता ते अंगोपांग संकोचि राख्यां नहिं, पच्चख्काण भांग्यां. पाटलो रुगतो फेर्यो[१] नहिं. गंठसी पोरिसी, साढ पोरिसी, पुरिमढ्ढ, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चख्काण पारवुं विसार्युं. बेसतां नोकार न भण्यो ऊठतां पच्चख्काण करवुं विसार्युं, गंठसीउं भांग्युं. नीवि, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन हुउं ॥ बाह्यतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहे० ॥ १८ ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणउ० ॥ मनशुद्धे गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं. गुरुदत्त[२] प्रायश्चित्त तप, लेखाशुद्धे पहुंचाड्युं नहिं. देव, गुरु, संघ, साहमी प्रत्यें विनय साचव्यो नहिं. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, [३]पृछना,

१ काढ्यो. २ आपेलुं. ३ पूछवुं.

[1]परावर्त्तना, [2]अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्तें लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतरतप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां०॥१ए॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ बल विरिउ० ॥ पढवे, गणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणुं छतुं बल, वीर्य, [3]गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न दीधां. वांदणातणा आवर्त्त विधि साचव्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणे वेगा. उतावळुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां है हुवो होय ते सं० ॥ २० ॥

नाणाइ अठ पइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु ॥ बारस तव विरिअ तिगं, चउवीसं सय अइयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणेः—प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनंत

---

१ फरवी पाल्डुं. २ अर्थ साथे विचारवुं. ३ संतारवुं.

काय, बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधा. जीवा जीवादिक सूक्ष्म विचार [1]सर्दह्या नहिं. आप णी कुमति लगें उत्सूत्र [2]प्ररुपणा कीधी. तथा प्राणा तिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अभ्याख्यान, पै शुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मि थ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध की धुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकार मांहे अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुअ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकितमूल बार व्रत, एक शो चोवीश अतिचार मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुअ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें

---

१ श्रद्धा करी नहीं. २ प्रकाश करवो.

करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इतिश्री श्रावक पक्खी चउमासी संवत्सरि अतिचाराः ॥

अथश्री पाक्षिकादि श्रावकना अतिचार.

नाणंमि दंसणंमिय ॥ चरणंमि तवंमि तहय वि रियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणि उ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपा चार, विर्याचार, ए पंचविध आचार मांहि अनेरो जे को अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सविहुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए वहुमाणे ॥ उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ त दुभये ॥ अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वे लाये भणयो गुणयो ॥ विनयहीन, वहु मानहीन, योग उपधानहीन ॥ अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो ॥ देववंदन वांदणे पडिक्कमणे सज्झाय करतां भणतां गु णतां कूडो अक्षर काना मात्रे आगलो उछो भणयो ॥ सूत्र अर्थ बिहु कुडां कह्यां ॥ साधु तणे धर्मे काजो मां

मो अणपडिलेह्यो, काजो अण उधरे, [१]असझाइ, [२]अ णोजा मांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गु ण्यो ॥ श्रावकतणे धर्मे थिविरावली, पडिक्कमणासूत्र, उपदेशमाला प्रमुख, कालवेला काजो अणउधरिये प ढियो ॥ ज्ञानद्रव्य भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणा सियो, विणसतां उवेखीयो, सार संभाल न कीधी ॥ तथा ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नो कारवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी वही, उलीया प्रत्यें पग लाग्यो थुंक लाग्यो थुंके करी अक्षर मांज्यो, कन्हे छतां आहार नीहार कीधो ॥ ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष मत्सर अंतराय अवज्ञा कीधी ॥ आपणा जाणवा त णो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे

---

१ असझाइना दीनः—कारतक शुदी १४ ना मध्यानथी कारतक वदी २ ना सवार सुधी दीवस २॥, फागण शुदी १४ ना मध्या नथी फागण वदी २ ना सवार सुधी दिवस २॥ असाड शुद १४ ना मध्यानथी असाड वदी २ ना सवार सुदी दिवस २॥, चइतर शुदी ५ ना मध्यानथी चइतर वदी २ ना सवार पर्यंत १२॥ दि वस, आसो शुदी ५ ना मध्यानथी आसो वदी २ ना सवार सुधी १२॥ दिवस, आसो शुदी १० थी मांडीने आदरा न बेसे त्यां सुधी मां वरसादना छांटा थाय तो असझाइ. जे दीवसे छांटा थाय ते दिवस असझाइ. २ जे गाममां जे दिवसो अणोजाना गणाता होय ते अणोजा.

को अतिचार पक्कु० ॥ १ ॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठ्ठिअ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छलप्पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ देवगुरु धर्मतणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं ॥ धर्म संवंधिया फल तणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं ॥ तपोधन तपोधनी प्रत्ये मल मलीन गात्र देखी डुगंछा कीधी ॥ मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रन्नावना देखी मूढ दृष्टिपणुं कीधुं ॥ तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनूपवृहणा कीधी ॥ अस्थिरीकरण, अवाछल्य, अप्रीति, अन्नक्ति कीधी ॥ तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारण द्रव्य, न्नक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणास्यो, विणासतां उवेख्यो, उती शक्तिये सार संन्नाल न कीधी ॥ तथा साधर्मीकस्यूं कलह कर्मबंध कीधो ॥ अधोती अष्टपट मुखकोश पाखे देव पूजा कीधी, वासकूंपी, धूपधाणुं, कलश तणो ठवको लाग्यो, देहरा पोसालमांहि मलश्लेष्म मुक्यां हास्य, केली, कूतुहल कीधां, जिनन्नुवने चोरासी आसातना॥ गुरु प्रत्ये तेत्रीस आसातना ॥ ठवणहारी हाथथकुं पड्युं, पमिलेहवो विसार्यो ॥ गुरु वचन तहत्ति करी प

झिवज्युं नहीं ॥ दंसणाचारव्रत विषइउ अनेरो जे को इ अतिचार पक्खु० ॥ २ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ इर्या सुमति, भाषा सुमति, एषणा सुमति, आदानभंडनिखेवणा सुमति, पारीठावणिका सुमति ॥ मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, कायगुप्ति ॥ ए अष्टप्रवचन माता तणे धर्मे स दैव साधु, श्रावकतणे धर्मे सामायक पोसह लीधे, रूडीपेरे चिंतव्युं नहीं, खंडण विराधना कीधी ॥ चारित्राचारव्रत विषइउ ॥ अनेरो जे को अतिचार पक्खु०॥३॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे ॥ सम्यक्त्व मूल बार व्रत [१]सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ॥ संका कंख

---

१ समकितना अतिचार तो कहेवाय के पोताना देव गुरु धर्मनी पक्की आस्ता छतां कोइ देवी देवलांनी मानता पूजना वगेरे करे छे तेने अतिचार कहे छे.

बार व्रतोमां पोतानुं व्रत जालवतां छतां पण व्रत राखवानी बुद्धिए जे कोइ व्रतमां दुषण लगाववा जेवुं दोष सेवे छे तेने अतिचार कहेवाय छे. तेम जो न होय तो अनाचार थइ जाय. ए विषे अर्थदीपिकामां जोवुं.

विगिछा ॥ संका श्रीअरिहंत तणा बल अतिशय ॥ ज्ञानलक्ष्मी गंभीर्यादिक गुण शाश्वति प्रतिमा चारित्रीयानां चारित्र, जिन वचन तणो संदेह कीधो ॥ आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णुं, महेश्वर क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवती, गोत्रदेवती, देव देहेरांनो प्रभाव देखी रोग आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बोद्ध सांख्य, संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, योगी, दरवेश, अनेराइ दर्शनीयानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विण भूल्या, व्यामोह्या, कुशास्त्र शीख्या, सांभल्यां श्राद्ध, संवछरी, होली, बलेव, माहिपूनेम, अजापडवे, प्रेतबीज, गुरित्रीज, विनायकचोथ, नागपंचमी, भीलणाछठी, शीयलसातमी, डोआठमी, नोलीनुमी, अहवादशमी, व्रतइग्यारसी, वछबारसी, धनतेरसी, अनंतचौदशी, अमावास्या, आदितवार, उतरायन, नैवेद, याग, भोग मान्या, पींपले पाणी रेड्यां रेडाव्यां, घर बाहिर, कूइ, तलाव, नदी, द्रह, कुंड, वाव्य, समुद्र पुन्यहेतु स्नान कीधां, वितिगिछा धर्म संबंधिया फल तणो संदेह कीधो, जिन अरिहंत धर्मना आगार विश्वोपकार सागर मोक्षमार्गना दातार

इस्यागुण तणी पूज्या नहीं, इहलोक परलोक संबंधि या भोगवांछित पूजा कीधी. रोग आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या, महात्मानां भातपाणी मल शोभा तणी निंद्या कीधी, प्रीति मांडी, तेहनी दाक्षि ण लगे तेहनो धर्म मान्यो, श्री सम्यक्त्व व्रत विषइ उ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ४ ॥

पहेले थूलप्राणातिपात विरमणव्रत पांच अतिचा र ॥ वहबंध छविछेए ॥ द्वीपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाय घाल्यो, गाढि बंधण बांध्युं, घणे भारे पी ड्युं, निल्लंछण कर्म कीधुं. चारे पाणी तणी वेलाये सार संभाल न कीधी, लेहणे देणे कुणहने छंड्युं, लं घाव्युं, तेने भूखे आपण जम्या, सद्यां धान ऊडां पेरे जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोल्युं. जीवाणी सूकव्युं. ग लतां झालक नांखो. गलणुं रूडुं न कीधुं. इंधण छाणां अणशोध्यां बाल्यां. ते मांही साप, खजुरा, वींछि सरो ला, मांकण, जुआ, गींगोडा, साहतां मुआ दूहव्या. रूडे स्थानके ना मूक्या. कीडी मंकोडी उद्देही, धीमे ल, कातरा, चुडेल, पतंगीआ, देडकां, अलसिआं, इअ ल, प्रमुख, जे कोइ जीव विणठा, विणसतां उवेख्या,

चांप्या. दूहव्या, हलावतां चलावतां पाणी गंटतां अनेराइ कामकाज करतां निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी पहेले थूलप्राणातिपात व्रत विषइन्न अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षि० ॥ ५ ॥

बीजे थूलमृषावाद विरमणव्रत ॥ पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारे कुणह प्रत्ये अयुक्त आल दीधुं, स्वदारामंत्र भेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पाडवा कुडी बुद्धि धरी, कूडो लेख लख्यो, जूठी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर भूमि संबंधिया लेहणे देहणे वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. बीजे थूल मृषावाद व्रत विषइन्न अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षि० ॥ ६ ॥

त्रीजे थूल अदत्तादान विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे ॥ घर, बाहिर, खेत्रखले, परायु अण मोकल्युं लीधुं वावर्युं, चोराउ वस्तु लीधी. चोर प्रत्ये संबल दीधां. विरुद्ध राज्यादिक कर्म कीधुं. कूडां मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र

वंची कुशाइने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवां जूनां स रस नीरस वस्तुतणुं न्नेल संन्नेल कीधुं. त्रीजे अदत्ता दान व्रत विषइन्न अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष्यु॥७॥

चोथे स्वदारा संतोष परस्त्री विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर ॥ अपरगृहिता गमन कीधुं ॥ अनंग क्रीमा कीधी, वीवाह कारण कीधुं, कामन्नोग तणे विषे अति अन्निलाष कीधो, दृष्टि वि पर्यास कीधो, आठिम चनदसी तणा नेम लेइ न्ना ग्यां ॥ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सु हणे सुपनांतरे हुआ. चोथे मैथुन विरमणव्रत विषइन्न अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष्यु ॥ ७ ॥

पांचमे थूल परिग्रह परिमाणव्रत पांच अतिचा र ॥ धण धन्न खेत्तवत्थू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं रखाव्युं ॥ सोनुं, रुपुं नव वीध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विसार्युं. पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत वि षइन्न अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष्यु ॥ ए ॥

छठे दिग्‌विरमणव्रत पांच अतिचार॥ गमणस्स य परिमाणे ॥ उर्ध्वदिशे, अहोदिशे, तिर्यग्‌दिशे, जावा आववा तणा नेम लेइ न्नाग्या. एकदिशी संक्षेपी वी

जी दिशी वधारी. विस्मृत लगे अधिक भूमि गया. पाठवणी आघी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधुं, व र्षाकाले गामतरुं कीधुं ॥ छठे दिग्विरमणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षण ॥ १० ॥

सातमे भोगोपभोगव्रत पांचअतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे ॥ सचित्त आहारे ॥ सचित्त प्रतिबद्ध आहारे ॥ अप्पोलसहि भक्खणया, दुप्पोलसहि भक्खणया, तुछोसहि भक्खणया, सचित्त भक्खणया ॥ अपक्क आहारे, दुपक्क आहारे, तुछ ओषधी, कुली, आंबली, ओला, ऊंबी, पुंहुंक, पापडी तणां भक्षण कीधां. अनंतकाय, अथाणां तणां भक्षण कीधां, तथा रींगण, वींगण, पीलू, पीचू, पंपो टा, महुडां, वडबोर प्रमुख बहुबीज तणां भक्षण की धां ॥ गाथा ॥ सचित्त दब्बविगइ, वाहण तंबोलवञ्छ कु सुमेसु ॥ वाणही सयण विलेवण, बंभदिसि नाण भ त्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनप्रती लीधा नहीं, लेइ सं खेप्या नहीं ॥ सचित्त, द्रव्य विगय, खासडा, वाहण, तं बोल, फोफल, वेसण, सयन, पाणी, अंघोलणि, फल, फूल, भोजन, आगदनि जे कोइ नेम लेइ भाग्यां ॥

बावीस अन्नक्, बत्रीस अनंतकायमांहि आदुं, मूला, गाजर, पिंरू, पिंकालू, कचूरो, सूरण, खीलोमां, मोरमी, सेलरां, कुंली, आंबली, वाघरमां, गीरमर, नीलीगलो, वाल्होल खाधी, वासी कठोल, पोली रोटली, त्रण दिवसना नुदन, मधु, महुमां, विस, हेम, करहा, घोलवमां, अजाएयां फल, टींबरुं, गुदां, बोर, अथाएुं, काचुमीठुं, तील, खसखस, कोठंबमां खाधां, लगन्नग वेलाये वालू कीधां, दिन नग्या विण सिराव्यां, जे कोइ अनेरो अतिचार हुन होय ॥ तथा कर्मतः ॥ इंगालकम्मे, वन्नकम्मे, सामीकम्मे, न्नामीकम्मे, फोमीकम्मे, ए पंचकर्म ॥ दंतवाणिज्य, लरकवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केसवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंगणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह तलाय सोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पंनर कर्मादान मांहि कीधां कराव्यां अनुमोद्यां, अनेराइ कांइ सावद्य कर्म समाचर्यां होय ॥ सातमे न्नोगोपन्नोगव्रत विषइन अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंरू व्रत पांच अतिचार ॥ कंदप्पे

कुक्कुइए ॥ अनर्थदंम जे कहीए, कांमकाज पाखे मुहीयां पाप लाग्यां, मुखहास्यखेल, कुतुहल, अंगकुचेष्टा कीधी. निरर्थक लोकने करसण गाम्रां वाही गामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी. कणवस्तु, ढोर लेवरान्यां अनेराइ पापोपदेशे दीधा. कोसि, कुहामा, रथ उखल, मुशल, घर, घंटी, प्रमुख सज्ज करी मेव्यां, माग्यां आप्यां. अंघोल, नाहणे, पग धोयण, खाले पाणी ढोव्यां. अथवा ऊीलणांऊीव्यां, जूवटुं रम्या, नाटिक पेखणां जोयां. पुरुष स्त्रीना रूप शृंगार वखाएया, राजकथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा पराइ तात कीधी. कर्कस वचन बोव्या, संक्लेशा लगाम्या. सरज्ञ, कुकमा प्रमुख जुऊतां जोया, कलह करतां जोया, लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्ति देश लेइ चिंतवी. लुण, पाणी, माटी, कण, कपासिया काजविण चांप्यां, ते उपर बेठा, आलि वनस्पति चुंटी अंगीठा काए वणिज्ज कीधा. गास, पाणी, घी, तेल, गोल, आम्ल, वेतल, वेरंजा तणां भाजन उघामां मेव्यां, ते मांहि कीमी, मंकोमी, कंसुआ, उदेही, धीमेल, गिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, सुना,

सालही कीका हेतु पांजरे घाल्या, अनेराइ जीवने राग द्वेष लगे, एकनी ऋद्धि परिवार वंछी, एकनी मृत्यु हानी वंछी. आठमे अनर्थदंडव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १२ ॥

नवमे सामायकव्रत पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे॥सामायक मांहि मन आहट दोहट चिंतव्युं. वचन सावद्य बोल्युं, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं छती शक्ति सामायक लीधुं नहीं. उघाडे मुखे बोल्या, सामायिक मांहि उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी, विकथा कीधी, कण कपासीया, माटी, पाणी तणा संघट हुआ, मुहपत्ति संघटी, सामायक अणपूगे पार्युं, पारवुं विसार्युं. नवमे सामायकव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १३ ॥

दशमे दिशावगाशिक व्रत पांच अतिचार॥ आणवणे पेसवणे ॥ आणवणपयोगे, पेसवणपयोगे, सद्दाणुंवए, रुवाणुंवए, बीयापुग्गलखेवे, नीमी भूमिका मांहिथी बाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेथी वाहिर मोकल्युं, शब्द संभलावी, रूप देखाडी, कांकरुं नांख्युं, आपणपणुं छतुं जणाव्युं, पुद्गल तणो संक्षेप की

थो. दशमे देशावगासिकव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १४ ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रत पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विहि ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि, बाहिरलां थंडिलां संदिसे भूमां सोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं, थंडिल वावरतां, मात्रू परठवतां चिंतवणी न कीधी, अणुजाणह जस्सगो न कह्यो. परठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहि पेसतां नीसरतां निसिही आवस्सही कहेवी विसारी, पुढवी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव कीधा. संथारा पोरिसी तणो विधि भणवो विसार्यो, अविधि संथार्या, पारणादिक तणी चिंता नीपजावी, काल वेलाये देव न वांद्या, पोसह असुरो लीधो, सवारो पार्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो नही. इग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथि संविभागव्रत पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठां उपर छतां अ

सुकृतु दान दीधुं, वहोरवा वेला टली रह्या, मत्सर लगे दान दीधां, देवा तणी बुद्धिं पराइ वस्तु धणीने अण कहे दीधी अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवा तणी बुद्धि सुकृतुं फेरी असुकृतुं कीधुं. गुणवंत आवे भक्ति न साचवी. अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदातां छती शक्तिये उद्धर्यां नहीं, दीन खीन प्रत्ये अनुकंपादान दीधुं नहीं, देतां वार्युं, बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार॥ इहलोए परलोए ॥ इहलोकासंसप्पओगे परलोकासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पयोगे, मरणासंसप्पओगे ॥ इहलोके धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि भोग वांछ्या, परलोके देवदेवेंद्र चक्रवर्तीतणी पदवी वंछी, सुख आवे जीववातणो वांछा कीधी, दुःख आवे मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी वांछा कीधी, संलेखणाव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १७ ॥

तपाचार बार भेद ॥ छ बाह्य भेद, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमुणोअरिया ॥ अणासण भणी उपवा

सादिक पर्व तिथि तप न कीधो. ऊणोदरी ते बे चार कवल ऊणा न ऊठ्या, द्रव्य भणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो. रसत्याग न कीधो. कायक्लेश लो चादिक कष्ट सहन कर्यां नहीं. संलीणता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं, पच्चख्काण भांग्यां, पाटलो रुग तो फेर्यो नहीं, गंठसही पच्चख्काण भांग्युं, उपवास, आंबिल, नीवी कीधे मुखे सचित पाणी घाल्युं, वॉ मन हुउं, बाह्य तपव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष० ॥ १८ ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणउ ॥ शुद्ध प्राय श्चित्त पडिवज्युं नहीं, आलोयण तणी शुद्धि कीधी नहीं, शुद्धो तप पसाड्यो नहीं. सात भेद विनय न कीधो. दस भेदे वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्झा य न कीधो, कषाय वोलराव्यो नहीं, उपसर्ग कर्म क्षय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान धर्म ध्यान ध्याया नहीं, आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां. अभ्यंतर तपव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥१९॥

वीर्याचार तणा अतिचार ॥ अणिगुहिय बलवी

रियो ॥ मनवीर्य धर्मध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो, पमिक्कमणे, देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप, ज्ञावना, ठती शक्ति गोपवी. आलसे उद्यम न कीधो. बेठां पमिक्कमणुं कीधुं. रूमां खमासमण न दीधां. वीर्याचार व्रत विषइज्ज अनेरो जे कोइ अतिचार पक्कुण।२०।

पमिसिद्धाणं करणेण ॥ प्रतिषेध, अन्नक्क अनंत काय, महापरिग्रह जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोन्न, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक मांहि कीधां कराव्यां अनुमोद्यां होय ते सविहुं मन वचन कायाये करी मिच्छामि ड्डक्कमं ॥

एवंकारे श्रावक तणे धर्मे सम्यक्त्वमूल वार व्रत एकसो चोवीस अतिचार पक्क दिवस मांहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुन्न होय ते सविहुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि ड्डक्कमं ॥ इति समाप्तम् ॥

विधिः—पठी सव्वस्सवि, पमिक्कम, ड्डच्चिंतिञ्च, ड्डप्रासिञ्च, ड्डच्चिठिञ्च, इच्छाकारेण संदिसह ज्ञगवन्, त

स्स मिछामि डुक्कडं. इछकारि जगवन् पसाउ करी प
क्खि तप प्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीते
कहीए. चउछेणं एक उपवास, बे आयंबिल, त्रण नि
वि, चार एकासणां, आठ बियासणां, बे हजार सज्झा
य, यथाशक्ति तप करी प्रवेश कर्यो होय तो पइठीउ
कहीए, अने करवो होय तो तहत्ति कहीए. तथा न
करवो होय तो अणबोल्या रहीए. पठी वांदणां बे
दीजे. पठी इछा० पत्तेय खामणेणं अब्भुठिओहं अभिंतर
पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं. पन्नरस दिवसा
णं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं० कही वांद
णां बे दीजे, पठी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इछा
कारेण संदिसह जगवन्, पक्खिअं पडिक्कमुं. सम्मं पडि
क्कमामि इछं; एम कही करेमिभंते सामाइयं कही, इ
छामि पडिक्कमिउं जोमे पक्खिउ कह्या पठी खमासम
ण देइ इछाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं एम कही त्रण
नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे. अने सा
धु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावकवंदित्तुं कहे,
पठी प्रथम सुअ देवयानी थोय कहेवी, पठी हेठा बे
सी जमणो ढींचण उन्नो राखी एक नवकार गणी

करेमिभंते इच्छामि पडिक्कमिउं कही, वंदित्तु कहेवुं प
छी करेमिभंते, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जोमे पक्खि
उ, तस्स उत्तरी, अन्नच्छ० कहीने बार लोगस्सनो अ
थवा अडतालीस नवकारनो काउस्सग्ग करवो ते लो
गस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा. ते पारीने प्रगट
लोगस्स कहेवो. पछी मुहपत्ति पडिलेहीने, वांदणां बे
दीजे. पछी इच्छा० समाप्त खामणेणं अब्भुठिओहं अभिं
तर पक्खिअं खामेउ इच्छं खामेमि पक्खिअं एक पक्खा
णं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्ति
अं० कही पछी खमासमण देइने इच्छा० कही, पक्खि
खामणां खामुं. एम कहीने चार खामणां खामवां प
छी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कह्या पछी वांदणां बे
देइने त्यांथी सामायक पारीए त्यांसुधी देवसिनी पेठे
जाणवुं. पण सुअ देवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादि
कनी थोयो कहेवी, स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं, स
ज्झायने ठेकाणे उवस्सग्गहरं तथा संसारदावानो चा
र थोयो कहेवी, अने लघु शांतिने ठेकाणे मोटी शां
ति कहेवी ॥ इति ॥

अजितशांति स्तवनना छुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ५ सुधीना.

अजिअं–अजितनाथ
जिअ–जीत्या छे
भयं–भयने
पसंत–उपशांत थया छे
गय–रोग
करे–करनारने
पणिवयामि–नमस्कार करुंछुं
गाहा–गाथा छंद
ववगय–गयो छे
संगुल–माठो
ते–ते बे तीर्थंकरोने
(अ)हं–हुं
विउल–विशाल
तव–तप

निम्मल–निर्मल
सहावे–स्वभाव
निरुवम–निरुपम
प्पभावे–प्रभाव
थोसामि–स्तुति करीश
सु–रूडे प्रकारे
दिट्ठ–दीठा छे
सप्भावे–छता भावो
प्पसंतीणं–प्रशांति थइ छे
अजिअ–नथी जीताएल, अजितनाथ
संतिणं–शांतिवाला, शांतिनाथ
प्पवत्तणं–प्रवर्त्तन करनारुं

कित्तणं–कीर्त्तन
मइ–मति
मागहिआ–मागधिका छंद
किरिआ–क्रिया
किलेस–कषाय
विमुक्खयरं–विशेषपणे मुकावनारा
निचिअं–व्यापेला
गयं–गया, पाम्या
मुणिणं–मुनिओने
निव्वुइ–निवृत्ति
नमंसणयं–नमस्कार
आलिंगणयं–आलिंगनक छंद

॥ अथ श्री अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअ सव्व भयं, संति
च पसंत सव्व गय पावं॥ जय गुरु
संतिगुण करे,दोवि जिणवरे पणिव

खामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल
ज्ञावे, तेहं विउल तव निम्मल स
हावे॥ निरुवम महप्पज्ञावे, थोसा
मि सुदिठ्ठ सप्पावे ॥ २ ॥ गाहा ॥
सब्व डुक्क प्पसंतीणं, सब्व पावप्प
संतिणं ॥ सया अजिय संतीणं,
नमो अजिय संतिणं ॥३॥ सिलो
गो॥ अजिय जिण सुह प्पवत्तणं,
तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणं॥ तह
य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव य जि
णुत्तम संति कित्तणं ॥४॥ मागहि
या ॥ किरिआ विहि संचिअ क
म्म किलेस विमुक्कयरं, अजिअं
निचिअं च गुणेहिं महामुणि सि
द्धि गयं ॥ अजिअस्सय संति म
हामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं

मम निव्वुइ कारणायं च नमंसण

यं ॥ ५ ॥ आलिंगणायं ॥

अर्थः—अजिअं जिअ के० सर्व जयने जीतनारा एवा बीजा तीर्थंकर अजितनाथ, वली अपुनर्भावे करीने सर्व रोग अने पाप निवृत्त थयां छे जेमनां एवा सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, ते बे पण जिनवर ने नमस्कार करुंछुं. ते बे जिनवर केवा छे ? तो के जयगुरु के० जगतना गुरु छे. अथवा जयगुरुशांति गुण करे के० जगतनी मोटी शांतिना तथा ज्ञानादि गुणने करनारा छे. ॥ १ ॥ आ गाथा छंद छे ॥

ववगय मंगुल भावे के० गयो छे माठो भाव जेमनो एवा, वली विस्तीर्ण एवा बार प्रकारना तपवडे करीने निर्मल थयो छे स्वभाव जेमनो एवा, निरुपम, अने मोहोटो छे प्रभाव एटले शक्ति जेमनी एवा, वली केवलज्ञान अने केवलदर्शने करी रुडे प्रकारे दीठा छे जीवाऽजीवादिक छता भावो ते जेमणे एवा ते बे तीर्थंकर श्री अजितनाथ अने श्री शांतिनाथ भगवान प्रत्यें हुं नंदिषेणनामासूरि स्तुति करीश ॥ २ ॥ आ गाथा छंद छे ॥

सव्व दुक्खप्पसंतिणं के० जन्म, जरा, अने मरण विगेरेथी थतां सर्व दुखनी अतिशये करी शांति थइ छे जेमने एवा, तथा सर्व योग्य जीवोना दुखनी अतिशये करी शांति करी छे जेमणे एवा, तथा सर्व पापोनी अतिशये करी शांति थइ छे जेमने एवा, तथा नहीं जीताय एवो उपशम छे जेमनो एवा श्री अजितनाथजी तथा श्री शांतिनाथजीने सदा नमस्कार थाओ ॥ ३ ॥ ए श्लोक छंद छे ॥

अजिअ जिण के० हे अजित जिन! तथा हे पुरुषोत्तम! तमारा नामनुं जे कीर्त्तन, ते मोक्ष सुखनुं प्रवर्त्तन करनारुं वर्त्ते छे, तथा वली चित्तनी समाधि, बुद्धि तेनुं अतिशये करी वर्त्तन करनारुं छे. तथा सामान्य केवलीने विषे श्रेष्ठ एवा हे श्री शांतिनाथ! वली तमारा नामनुं जे कीर्त्तन छे ते पूर्वोक्त गुणयुक्त छे॥४॥ आ मागधिका छंद छे ॥

किरिआविहि के० पचीश क्रियाना भेदे करी एकठां करेलां एवां जे ज्ञानावरणादि आठ कर्म, तथा कषायथी विशेषपणे मूकावनारा छे, तथा अजित छे; तथा चारित्रादिक गुणे करीने प्राप्त एवा छे, तथा मो

होटा मुनिओनी आठ अणिमादिक सिद्धिओने प्राप्त थया एवा छे, एवा अजितनाथने अने शांतिनाथ जे महामुनिओने शांतिना करनार तेमने, जे विशिष्ट प्रणमन करवुं ते मुजने निरंतर शांति करवानुं अने वली मोक्ष सुखनुं कारण हो॥५॥आ आलिंगनकनामा छंद छे॥

गाथा ६ थी १० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

पुरिसा–मनुष्यो
वारणं–वारवुं
विमग्गह–शोधोछो
अभय–निर्भय
करे–करनारा
पवज्जहा–प्राप्त थाओ
अरइ–अरति, दुःख
रइ–रति, समाधि
विरहिअं–विरहित
उवरय–नाश पामे छे
जर–घडपण
अरणं–युद्ध रहित
गरुल–१ सुवर्णकुमार २ ज्योतिषिदेव
भुयग–१ नागकुमार व्यंतरदेव

वइ–पति, स्वामी
पयय–रूडे प्रकारे, शुद्धताए
पणिवइअं–नमस्कार
अविय–वळी पण
सु–सुंदर नैगमादिक नय
नय–निश्चय
निउण–निपुण, डाह्या
उवसारिअ–पामीने
भुवि–पृथ्वी उपर
दिवि–देवलोकमां
ज–उत्पन्न थएला
उवणमे–समीपे नमस्कार करुंछुं

संगययं–संगतक छंद
नित्तम–अज्ञानरहित, अंधकाररहित, इच्छा रहित.
सत्त–सत्र, यज्ञ
धरं–धारण करनारा
अज्जव–आर्जव
मद्दव–मार्दव
खंति–क्षमा
विमुत्ति–निर्लोभता
निहिं–निधि, भंडार
दम–दमन
दिसउ–आपो
सोवाणयं–सोपानक नाम छंद.

सावत्थि–श्रावस्ति
पुव्व–पहेलां
पत्थिवं–राजा
हत्थि–हाथी
मथ्थय–मस्तक
विच्छिन्न–विस्तीर्ण
संथिअं–संस्थान
थिर–स्थिर
सरिच्छ–सरखुं
वच्छं–हृदय, छाती
मयगल–मदोन्मत
लीलायमाण–लीला करतो
पथ्थाण–प्रस्थान
पत्थियअं–नीकलवुं

संथवारिहं–वर्णन करवा योग्य
बाहु–हाथ, बाहु
भंत–धमेलुं
कणग–सोनुं
रुअग–वासण, घरेणुं
निरुवहय–निष्कलंक
पिंजर–पीलुं
पवर–श्रेष्ट
लख्खण–लक्षण
उवचिय–सहित
सोम–सौम्य
चारु–मनोहर
सुइ–कान
परम–अत्यंत

रमणिज्ज–रमणिक
दुंदुहि–दुंदुभि
निनाय–शब्द
महुर–मधुर
यर–वधारे
गिरं–वाणी
वेढ्ढओ–वेष्टक छंद
जिअ–जिस्या छे
अरि–शत्रु
भवोह–भवना समुह
रिउ–रिपु, वेरी
पयओ–प्रयत्नथी
पसमेउ–अतिशय शमावो
भयवं–भगवंत

पुरिसा जइ दुख्खवारणं, जइ अ वि मग्गह सुख्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥
अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवर

यजरमरणं, सुरअसुर गरुल भुय
गवइ पयय पणिवइअं॥अजिअ
महमविअ सुनयनय निउण म
भयकरं, सरण मुवसरिअ भुवि
दिविज महिअं सययमुवणमे॥७॥
संगययं॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति
विमुत्ति समाहि निहिं॥ संतिकरं
पणमामि दमुत्तम तिठ्ठयरं, संति
मुणी मम संति समाहि वरं दिस
उ॥ ८॥ सोवाणयं॥ सावठ्ठि
पुव्व पठ्ठिवं च वर हठ्ठि मठ्ठय प
सठ्ठ विठ्ठिन्न संठियं, थिर सरिठ्ठ
वठ्ठं मयगल लीलायमाण वर गं
धहठ्ठि पठ्ठाण पठ्ठियं संथवारिहं॥
हठ्ठिहठ्ठ बाहु धंत कणग रुअग

निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो व
चिय सोमचारुरूवं, सुइ सुहमणा
भिराम परमरमणिक्ष वरदेव दुंदु
हि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९॥
वेढ्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं,
जिअ सव्वजयं जवोहरिउं ॥ पण
मामिअहं पयउ, पावं पसमेउ मे
जयवं ॥ १०॥रासालुध्धउ॥युग्मम् ॥

अर्थः—पुरिसा जइ डुरकवारणं के० हे मनुष्यो ! जो तमे डुःखनुं निवारण करवानुं अने जो सुखनुं कारणं ए वे शोधो ठो तो अजितनाथनुं तथा शांतिनाथनुं जे शरण तेने जावथी करीने सेलवो. ए वेहु तीर्थंकर निर्ज्नय करे एवा ठे. ॥ ६ ॥ आ मागधिका ठंद ॥

अरइरइतिमिर के० अरति, रति, तथा अज्ञाने करी विरहित एवा, तथा जेनां जरा अने मरण नाश पाम्यां ठे एवा, वली वैमानिक देवो, जवनपति, सुवकुमार, नागकुमार, तथा वीजा पण देवोना इंड्रोए

रूपे प्रकारे जेम थाय तेम नमस्कार कर्यो छे जेमने एवा, अथवा बीजी रीते वैमानिक, भवनपति, ज्योतिषि तथा व्यंतर तेमना स्वामी एटले इंद्रोए शुद्धताए करीने नमस्कार कर्यो छे जेमने एवा छे. वली केवा छे ? तो के सर्व समीचीन एवां अन्य विशेषणोये युक्त एवा, तथा सुंदर एवा अनेकांत रूप नैगमादिक जे नय तेमनी प्रतीतिने विषे माह्या छे तथा निर्भयपणाना करनार अथवा भयरहित सुखना आपनारा, तथा मनुष्योए अने देवोए पूजित एवा श्री अजितनाथ भगवाननुं शरण पामीने निरंतर हुं समीपे रहीने नमस्कार करुंछुं ॥ ७ ॥ आ संगतक छंद छे ॥

तंच जिणुत्तम मुत्तम के० ते श्री शांतिनामे जे मुनि तेने श्रद्धापूर्वक प्रणाम करुंछुं, ते शांतिमुनि केवा छे ? तो के सामान्य केवलीने विषे श्रेष्ठ छे, अने प्रधान, अने अज्ञानरहित एवा भाव यज्ञने धारण करनार छे, वली आर्जव, (सरलपणुं) मार्द्दव (अहंकाररहितपणुं) क्षमा, निर्लोभता, तथा समाधि तेना भंडार छे. तथा शांतिना करनार छे. वली जे इंद्रिने दमन करवामां प्रधान छे, एवा ते तीर्थंकर मुजने शां

ति अने प्रधान समाधि तेने आपो ॥ ८ ॥ आ सो पानक छंद छे ॥

सावत्थिपुव्व के० श्रावस्ति एटले अयोध्या नगरीने विषे दिक्षा लीधा पेहेलां राजा हता तथा श्रेष्ट वन हस्तीना मस्तक सरखुं प्रशंसा करवा योग्य अने विस्तीर्ण एवुं छे शरीरनुं शुभ्र संस्थान जेमनुं, तथा कठिन अने सरखुं छे हृदय जेमनुं, अथवा निश्चल श्रीवत्सनामा लक्षण वक्षस्थलने विषे छे जेमने एवा, तथा मदोन्मत्त अने लीला करता एवा प्रधान गंध हस्तीना गमननी पेरे गति छे जेमनी एवा, तथा स्तुति करवाने योग्य तथा हाथीनी सुंढ जेवा सरल तथा लांबा छे हाथ जेमना एवा, तथा धमेला सोनाना रुचक के० भ्राजन अथवा आभ्नरण विशेष तेना जेवो निष्कलंक पीलो छे वर्ण जेमनो एवा, तथा श्रेष्ठ एवा (शंख, चक्र, अकुंशादिक) लक्षणोए करीने सहित एवा, तथा सौम्याकार एवुं, देखनाराने मनोहर सुखदायक छे रूप जेमनुं एवा, तथा कानने सुखनी दायक, तथा मनने मनोहर, अत्यंत रमणिक अथवा पर के० उत्कृष्ट छे के० लक्ष्मी जेने एवा राजा अने पर के० डुर छे

मा के० लक्ष्मी जेने एवा रंक जनो, ते बेहुने संतोष पमाडनार तथा श्रेष्ठ एवी देवडुंडुन्नि तेना शब्दसरखी घणी मधुर अने कल्याणकारी ठे वाणी जेमनी एवा ठे ॥ ए ॥ आ वेष्टकनामा ठंद ठे ॥

अजिअं जिआरिगणं के० अष्ट कर्मरूप शत्रुना समूह जेणे जीत्या ठे, तथा जिअ सव्वजयं के० सर्व जय जेणे जीत्या ठे एवा अथवा बीजी रीते पंचेंड्रि जीवने सांजळवा योग्य ठे ज्ञाग्य जेमनुं एवा, तथा संसार समूहना शत्रु एवा श्री अजितनाथ प्रत्ये मन, वचन कायाए करी उपयुक्त एवो ठतो हुं प्रणाम करुं हुं, अने ते जगवान् मारा पापने प्रकर्षे करी शमावो ॥ १० ॥ आ रासालुब्धक ठंद ठे ॥

गाथा ११ थी १६ सुधीना जुदा शब्दना अर्थ.

कुरु—नाम छे	महप्पभावो—महिमा, मोटो प्रभाव	रायवर—श्रेष्ठराजा
जणवय—देश		अणुयाय—अनुसराए लो
हत्थिणाउर—हस्तनापुर	बावत्तरि—बोतेर	
	पुरवर—नगर	मग्गो—मार्ग
नरिसरो—मोटो राजा	नगर—नगर	चउदस—चउद
भोए—राज्यने विषे	बत्तीसा—बत्रीस	रयण—रत्न

चउसठ्ठि—चोसठ
जुवईण—स्त्रीओना
सुंदरवइ—सरस पति
चुलसी—चोरासी
हय—घोडा
गय—हाथी
रह—रथ
छण्णवइ—छन्नु
गाम—गाम
आसिज्जो—होताहवा
भारहम्मि-भरतक्षेत्रमां
थुणामि—स्तुति करुंछुं
वेहेउ—करवाने अर्थे
इक्खाग—इक्ष्वाकु
विदेह—देशनुं नाम छे
वसहा—वृषभ (श्रेष्ठ)
नव—नवो
सारय—शरदऋतुनो
ससि—चंद्रमा
सकल—शोभावंत, कलाओए सहित
आणण—मुख
वे छे

तमा—अंधारु, अज्ञान
तेअ—तेज
अमिअ—अमित, नहीं मापी शकाय एवुं.
बला—बलवाला
विउल—विपुल
कुला—कुल
मूरण—भागनार
मम—मारुं
अमम—ममत्वरहित
चित्तलेहा—चित्रलेखा
दाणविंद—दानवोना इंद्रो
वंद—वांदवालायक
हठ्ठ—आरोग्यवंत, हरखीत
तुठ्ठ-प्रमोदवंत,तुष्टमान
जिठ्ठ—सौथी वधारे, प्रशंसवा योग्य
परम—अत्यंत
लठ्ठ—कांतिवालुं
पट्ट—पाटो
सेय—धन

निद्ध—स्निग्ध
धवल—उज्ज्वल
दंत—दांत
पंति—पंक्ति
सत्ति—शक्ति
मुत्ति—मुक्ति
जुत्ति—युक्ति
दित्त—दिप्त
वंद—वांदवायोग्य
धेय-ध्यानकरवायोग्य
भाविय—भावित
णेअ—जाणवायोग्य
पइस—आपो
कला—कला
अइरेअ—अधिक
सूरकर—सूर्यनां किरण
तिअस—देवता
धरणिधर—पर्वतो
सारं—धैर्य
कुसुमलया—कुसमलता छंद

कुरु जणवय हत्थिणाउर, नरी
सरो पढमं तउ महा चक्कवट्टि जो
ए महप्पनावो, जो बावत्तरि पुर
वर सहस्स वर नगर निगम जण
वयवई, बत्तीसा राय वर सहस्सा
णुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स
पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी,
उन्नवइ गाम कोमि सामी आसि
जो नारहम्मि नयवं ॥ ११ ॥ वे
ढउ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्व
नया, संतिं थुणामि जिणं, संतिं
विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥
युग्मम् ॥ इस्काग विदेह नरीसर
नर वसहा मुणि वसहा ॥ नव सा

रय ससि सकलाणण विगय त
मा विहुअरया ॥ अजि उत्तम ते
अ गुणेहिं, महामुणि अमिअ
बला विउल कुला ॥ पणमामि
ते भवभय मूरण, जगसरणा मम
सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव
दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जि
ठ परम ॥ लठरूव धंत रूप्प पट्ट
सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंत पंति
संत्ति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गु
त्ति पवर ॥ दित्त तेअ वंद धेअ
सव्व लोअ भाविअ प्पभावणे
अ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ ना
रायऊ॥ विमल ससि कलाइरेअ
सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअ
तेअं ॥ तिअस वइ गणाइरेअ

रूवं, धरणिधर प्पवराइरेत्र्प्र सारं
॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

अर्थः—कुरु जणवय हत्थिणा नर केण कुरु नामे देशने विषे हस्तिनापुर नगर तेना प्रथम ते राजा थया, त्यारपछी मोटा चक्रवर्त्तीना राज्यने विषे जेमनो म्होटो महिमा छे एवा चक्रवर्त्ती थया. वली केवा छे? तो के जे बहोतेर हजार एवां पुरवर (घरोए करीने श्रेष्ठ शेहेर) अने जेमां कर नहीं एवां श्रेष्ठ गजपुरादि नगर, अने ज्यां मोहोटा ऋद्धिवंत वेपारीओनी उकानो होय तेवां शेहेरो, तथा देशविदेशना स्वामी एवा, अने बत्रीस हजार मुकुटबद्ध राजा जेनी पछवाडे चालनारा छे एवा, तथा वली जेने चौद श्रेष्ठ रत्न छे एवा, तथा जेने नव मोटा निधि एटले नंडार अखुट छे एवा, तथा चोसठ हजार श्रेष्ठ एवी स्त्रीओना जे सुंदर नरथार छे, वली चोरासी लाख घोडा तथा चोरासी लाख हाथी तथा चोरासी लाख रथ तेना स्वामी तथा वली छन्नुक्रोड गामना स्वामी एवा नगवान् नरतक्षेत्रने विषे होता हवा ॥११॥ आवेष्टक छंद छे.

तं संतिं संतिकरं के० ते पूर्वोक्त मूर्त्तिमान उप शमरूप एवा तथा पोताना समीप मोक्ष लक्षण तेने आपनार एवा, अने रूडे प्रकारे जे थकी सर्व मृत्यु जा य तरे छे एवा श्री शांतिनाथ तीर्थंकर तेमने हुं स्तु ति करूंछुं. शा माटे ? तो के मारा उपसर्गनी शांति करवाने अर्थे करूंछुं ॥ १२ ॥ आ रासानंदित छंद छे ॥

इरकाग विदेह के० हे इक्ष्वाकु कुल वासी ! त था हे विदेह देशना नरेश्वर, तथा हे (मनुष्योमां श्रेष्ठ माटे हे) नरवृषभ, तथा (मुनिधर्ममां धोरी माटे हे) हे मुनिवृषभ ! तथा नवा शरद ऋतुना चंद्रमानी पेरे सकल कलाए संपूर्ण एवा मुखवाला, वली जेना थी अज्ञानरूप अंधकार गयुं छे. माटे हे विगततमः ! तथा जेणे कर्मरूप रजने काढी नांखी छे माटे विधुत रज ! तथा रागादिके न जीताय माटे हे अजित ! तथा गुणोए करी श्रेष्ठ छे तेज जेमनुं माटे हे उत्तम तेज ! तथा जे मोटा मुनिज छे तेउथी पण प्रमाण न थइ शके एवुं जेनुं अपरिमित बल छे माटे हे महा मुन्यमितबल, तथा विस्तीर्ण छे वंश जेमनो माटे हे

विपुलकुल! तथा संसारना नय नागनार माटे हे न
वनयभूरण! तथा जगत्ना रक्षण करनार माटे हे ज
गच्छरण! तमे मारा पण रक्षण करनार गे अथवा मम
त्वरहित गे माटे हे अमम ॥ १३ ॥ आ चित्रलेखा
गंद गे ॥

देव दाणविंद चंद के० सुर असुरना इंद्र तथा चं
द्रमा अने सूर्य तेमने वंदन करवा योग्य, तथा आरोग्य
वंत, प्रमोदवंत, तथा सौथी वधारे प्रशंसवा योग्य अने
अत्यंत कांतिवालुं गे रूप जेमनुं तथा धमेला रुपाना
पाटानी पेरे घन, निर्मल, स्निग्ध अने उज्ज्वल गे दां
तनी पंक्ति जेमनी, तथा शक्ति, कीर्त्ति, मुक्ति (निर्लो
नता), युक्ति (न्यायवालुं वचन) अने गुप्ति तेणे करी
श्रेष्ठ गे, तथा दीप्त गे तेजलुं वृंद जेमनुं, अथवा सुरेंद्रा
दिके वांदवा योग्य गे. तथा प्रकारांतरे वांदवा योग्य
जे महा मुनिन तेमने ध्यान करवा योग्य गे एवा,
तथा सर्व लोके जाणेलो गे प्रनाव जेमनो तेणे करी
जाणवा योग्य एवा हे श्री शांतिनाथ! तमे मने स
माधि देखाम्हो एटले आपो ॥१४॥ आ नाराचक गंदगे॥

विमल ससि कलाइरेअ सोमं के० निर्मल एवी

चंद्रमानी कलाथी अधिक छे सौम्यता जेनी, तथा वादलना अंधकारथी रहित एवां सूर्यनां किरणोथी पण अधिक छे तेज जेनुं एवा छे. तथा देवताना पति इंद्रोना समूहथी पण अधिक छे रूप जेनुं (एटले सर्व देवतानुं रूप भगवाननी टचली आंगलीना रूप पासे मुके तो पण सोना अने त्रांबा जेटलो फेर देखाय) एवा छे, तथा पर्वतो मांहे श्रेष्ठ जे मेरुपर्वत तेथी पण अधिक छे सार केण धैर्य जेमनुं एवा छे ॥ १५ ॥ आ कुसुमलता नामे छंद जाणवो ॥ आ गाथानो संबंध आगली गाथा जोडे छे.

गाथा १६ थी २० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

सत्ते अ-सत्त्वमां वली	रहिअं-रहित	करण-करण
सारीरे-शरीरसंबंधी	धीर-डाह्या	भमणमे जाउंछुं
एस-आ	थुअ-स्तुतिकर्या	ललिअयं-ललितक
पावइ-पामे	अच्चिअं-पूज्या	विणओ-विनयेकरी
सरय-शरद ऋतुनो	चुअ-छांडयुं	णय-नम्या
रवी-सूर्य	कलि-वेर	सिरि-मस्तकमां
तिअस-देवता	कलुसं-पाप	रइ-रची, जोडी
तित्थवर-उत्तम तीर्थ	संति-मोक्ष	रिसि-ऋषिओ
प -प्रवर्त्तक	ति-त्रण	संथुअं-स्तवाएला

थिमिअं-निश्चल	सप्पभं-पोतानी कांति	परिवंदिअं-समस्त प्र
विबुह-देवता	तवसा-तपे करीने	कारे वंदाएला
अहिव-अधिप (इंद्रो)	गयणंगण-आकाश	उरग-व्यंतर देव
थुअ-स्तव्या	वियरण-चालवुं	पणंसिअं-नमस्कार
अइर-थोडा वखतमां	समुइअ-एकठा थएला	कराएला
उग्गय-ऊगेलो	चारण-चारणमुनि	समणसंघ-साधुओनो
दिवायर-सूर्य	किसलयमाला-किस	संघ, चतुर्विध संघ,
समहिय-अधिक	लयमाला छंद	सुमुहं-सुमुख छंद

सत्तेअ सया अजिअं, सारिरे अ
बले अजिअं, तव संजमे अ अ
जिअं, एस थुणामि जिणं अजि
अं ॥ १६ ॥ भुअग परिरंगिअं॥
सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव स
रय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ
न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणे
हिं पावइ न तं, तिअस गण व
इ ॥ सार गुणेहिं पावइ न तं ॥
धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं॥

तित्थवर पवत्तयं तमरय रहिअं, धीरजण थुअ च्चिअं चुअ कलि कलुसं ॥ संति सुह प्पवत्तयं ति गरण पयउ, संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअ यं ॥ विणउणय सिरि रइ अंज लि रिसिगण संथुअं थिमिअं॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गय सरय दिवायर समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समु इअ चारण वंदिअं सिरसा॥१९॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किंनरोरगणमंसिअं॥ देवकोडिसय संथुअं, समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥

अ सया अजिअं के० तथा सत्वने
।जित छे, तथा वली शरीरना बलने विषे
। छे, तथा बार प्रकारना तप अने सत्तर
संयमने विषे पण बीजा पुरुषोथी जीताय
श्री अजितनाथ जिनवरनी आ हुं वंदिषे
ार स्तुति करुंछुं ॥ १६ ॥ आ जुजंगपरिरंगित
।मा छंद छे ॥

सोम गुणेहिं पावइ न तं के० सौम्य एटले शां
।ते गुणे करीने नवो शरद रुतुनो चंद्रमा पण श्री अ
जितनाथनी सौम्यता प्रत्ये पामी न शके, तथा तेज
(कांति)ना गुणे करीने नवो शरद ऋतुनो सूर्य पण
श्री अजितनाथना तेज गुणने पामी न शके, तथा
रूप गुणे करीने देवताना जे समूह तेना पति इंद्र पण
अजितनाथना रूप गुणनी तुलना प्रत्ये पामी न शके,
तथा स्थिरता गुणोए करीने पर्वतनो पति जे मेरु प
र्वत ते पण जगवंतना स्थिरता गुण प्रत्ये पामी न शके
॥ १७ ॥ आ खिज्जितक छंद छे ॥

तिछवर पवत्तयं के० श्रेष्ट तीर्थ जे चतुर्विध संघ

अथवा प्रथम गणधर तेना प्रवर्त्तक अथवा तीर्थमां श्रेष्ठ एवो जे धर्म तेने तिछवर कहीए ते धर्मरूप तीर्थना प्रवर्त्तक एवा, तथा अज्ञान, रज एटले बंधातां कर्म तेथी रहित एवा, तथा मोह्या पुरुषोए वाणीए करी स्तव्या अने फुले करी पूज्या एवा, तथा जेणे वैर अथवा कजीआनुं पाप ढांक्युं छे एवा, तथा मोक्ष सुखने अर्थे प्रवर्त्तता एवा जे साधुउ तेने पालन करनार अथवा मोक्ष सुखना करनार एवा, मोटा मुनि जे शांतिनाथजी ते प्रत्ये त्रण करण के० मन वचन अने कायाए करी पवित्र एवो छतो हुं शरण प्रत्ये जाउंछु ॥ १८ ॥ आ ललितक नामा छंद छे ॥

विणउ णय सिरिरइ के० विनये करी नम्या एवा मस्तकने विषे रची छे करनी अंजली जेमणे एवा, ऋषिउना समूह तेमणे रूडे प्रकारे स्तुति करी छे जेमनी एवा, तथा (कर्मकृत उंचनीचपणाना अभाव थी तरंग रहित समुद्रनी पेठे) निश्चल एवा, तथा देवताना अधिप जे इंद्रो अने धनपति (धनद, कुबेर, लोकपालजे) तेमणे तथा राजाउ अने चक्रवर्त्तीए घ

घीवार स्तव्या, पूज्या, अर्च्या एवा, तथा तपे करीने तरतना उगेला शरद ऋतुना सूर्यथी पण अधिक छे पोतानी कांति जेमनी एवा तथा आकाशने विषे विच रवे करीने एकठा थएला एवा जंघाचारणादिक मुनि उए मस्तके करीने वंदन कर्युं छे जेमने एवा छो ॥१७॥ आ किसलयमाला छंद छे ॥

असुर गरुल परिवंदिअं के० वली केवा छे ? तो के असुरकुमार, सुवर्ण कुमार तथा बीजा पण सर्व दे वोए समस्त प्रकारे वंदन कर्या एवा, तथा किन्नर अ ने व्यंतर विशेष एमणे नमस्कार कर्यो छे जेमने ए वा, तथा वैमानिक देवोना सेंकडा गमे कोटिउए स्तु ति करी छे जेमनी एवा, तथा चतुर्विध संघे चोतरफ जावे करीने वंदन कर्युं छे जेमने एवा छे ॥ १० ॥ आ सुमुख नामा छंद जाणवो ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

अणहं–पापरहित	पणमे–प्रणाम करुंछुं	विमाण–विमान
अरयं–मैथुन रहित	विज्जुविलसिअं–वि	दिव्व–मनोहर
अरुयं–रोगरहित	द्युद्विलसित छंद	तुरय–घोडा
पयओ–आदर सहित	आगया–आव्या	पहकर–समूह

सएहिं-सेंकडोएकरीने
हुलिअं-उतावले
ससंभम-सत्वर
उअरण-उतरवुं
खुभिअ-क्षुभित
लुलिअ-अरहांपरहां
चल-चपल [हालतां
कुंडल-काननांकुंडल
अंगय-बाजुबंध
तिरीड-मुकुट
सोहंत-शोभती
मउलीमाला-मस्तक
नी माला
संघा-समूहो
स-साथे
असुर-भुवनपति वगे
रे देवो
वेर-वेर
विउत्ता-रहित
भत्ति-भक्ति
सुजुत्ता-सहित

आयर-आदर
भूसिय-शोभित
संभम-उतावले
पिंडिअ-एकठामलेला
सुट्ठु-सारी रीते
सुविम्हिअ-सुविस्मित
बलोघा-लश्करनो स
मूह
परूविअ-घणारूप
वाला
भासूर-जलहलता
भुसण-आभरण
भासूरिय-देदीप्यमान
अंगा-अंग
गाय-गात्र,शरीर
समोणय-सम्यक् प्र
कारे नमेला
वस-वशे
आगय-आवेला
पेसिय-करेलो
पणामा-नमस्कार

रयणमाला-रत्नमाला
वंदिउण-वांदीने
थोऊण-स्तुति करीने
तिगुणं-त्रणवार
एव--जे
पुणो--फरीने
पयाहिणं--प्रदक्षिणा
पणामिउण--प्रणाम
करीने
पमुइआ--हरखीत
थएला
सभवणाइं-पोताना
स्थानक प्रत्ये
तो-त्यांथी
गया-गया
मोह-अज्ञान
वज्जिअं-वर्जित
खित्तयं--क्षिप्तक छंद

अजयं अणहं, अरयं अरुयं ॥
अजियं अजिअं, पयन पणमे
॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग
या वर विमाण दिव्व कणग रह
तुरय पहकर सएहिं हुलिअं॥ स
संभमो अरण, खुभिअ लुलि
अ चल कुंडलं गय तिरीड सोहं
त मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढओ॥
जं सुरसंघा सासुरसंघा वेर विउ
त्ता भत्ति सुजुत्ता ॥ आयर भूसि
अ संभम पिंडिअ, सुट्ठु सुविम्हि
अ सव्व बलोघा ॥ उत्तम कंचण
रयण परूविअ, भासुर भूसण
भासुरिअंगा ॥ गाय समोणाय भ
त्ति वसागय, पंजलि पेसिअ सी
स पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुण
मेव य पुणो पयाहिणं ॥ पणमि
ऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ
सभवणाइं तो गया ॥ १४ ॥ खि
त्तयं ॥ तं महामुणि महंपि पंज
ली, राग दोस भय मोह वज्जि
अं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं,
संति मुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥
खित्तयं ॥

अर्थः—वली केवा छे ? तो के अन्नयं अराहं के० सात प्रकारना भये करी रहित एवा, तथा पापरहित एवा, तथा विषय (मैथुन) रहित एवा, तथा रोगरहित एवा, तथा कोइथी नहीं जीताएला एवा, श्री अजितनाथ तेमने सादरपणे हुं नमस्कार करुंछुं ॥२१॥ आ विद्युद्विलसित छंद छे ॥

आगया वर विमाण के० आव्या छे देवताना स मुदाय श्री शांतिनाथनी समीपे ते केवी रीते ? तो के

श्रेष्ठ विमान, मनोहर सोनामय रथ तथा घोमाना स मूहना सेंकमोए करीने उतावला वेगे, तथा सत्वर आ काशथी उतरवुं तेणे करीने खलजलवाथी अरहां परहां हालतां चंचल एवां कानना कुंमल तथा बाजुबंध तथा मुकुटे करी शोजायमान थइ एवी ने मस्तकनी माला जेमनी एवा देवो ने ॥२१॥ आ वेष्टकनामा वंद ने.

जं सुरसंघा सासुरसंघा के० जे जगवंतने समी पे वैमानिक देवसमूह आव्या ने ते केवा ने ? तो के जवनपति आदिक देवना समूहे करी सहित एवा ने, तथा वेररहित ने, तथा सद्भक्तिये करीने सहित अ ने आदरे करी शोजित तथा उतावले करी एकठा म ळ्या एवा रूमी रीते अतिशये करी सुविस्मितज जेम होय तेम सर्व हाथी घोमा वगेरे लश्करना समूहवा ळा, तथा श्रेष्ठ एवा सोने तथा रत्ने करीने प्रकृष्ट रूप युक्त कर्यां एवां जलहलतां आजरणे करी देदीप्यमान ने अंगो जेमनां एवा, तथा शरीरे करीने सम्यक् प्र कारे नमेला तथा जक्तिने वशे आवेला एवा, तथा बे हाथ जोमी कपाले लगामीने कर्यो ने मस्तके करीने

प्रणाम जेमणे एवा छे ॥ २३ ॥ आ रत्नमाला छंद छे.

वंदिऊण थोऊणतो जिणं के० एवी रीते वंदन करीने तेवार पछी वली त्रणवारज प्रदक्षिणा करी छे जेने, अर्थात् त्रण प्रदक्षिणा करीने उपासित एवा देवो ते श्री शांति जिन ते प्रत्ये वली स्तुति करीने फरी ने पोताने स्थानके जवाना अवसरे श्री शांतिजिन प्र त्ये प्रणाम करीने सुर असुर जे देवो छे ते हर्षित थ या थका पोताना जवन प्रत्ये ते स्थानकथी जाता हु वा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामा छंद छे.

तं महामुणिमहंपि पंजली के० ते शांति जिनने हुं पण जोड्या छे हाथ जेणे एवो छतो नमस्कार क रुंछुं. ते शांतिजिन केवा छे? तो के मोटा मुनिओ छे शि ष्य जेमना एवा छे, तथा राग के० माया अने लोजरूप राग तथा दोस के० क्रोध अने मानरूप द्वेष, जय, अने मोह के० अज्ञाने करी वर्जित छे, अथवा देवदानव अने नरेंद्रोवडे वंदित छे अथवा देवदानव अने नरेंड तथा तेना आश्रित लोकोने वंदि के० वंदिखानारूप संसार तेने अं के० दं एटले खंमन करे एवा छे, तथा प्र

ધાન એવું મોહોટું છે તપ જેમનું એવા છે ॥ ૨૫ ॥ આક્ષિપ્તક નામા છંદ છે ॥

ગાથા ૨૬ થી ૩૦ સુધીના છુટા શબ્દના અર્થ.

અંબર-આકાશ
અંતર-અંદર, વચમાં
વિઆરણિઆહિં-વિચરવાવાલાવડે
લલિય-રમણિક
હંસવહુ-હંસી
ગામિણિઆહિં-જનારી વડે
પીણ-પુષ્ટ
સોણિ-કેહેડનો ભાગ
થણ-સ્તન
સાલિણિઆહિં-શોભતી
લોઅણિઆહિં-આંખોવાલી
દીવયં-દીપક છંદ
ભર-ભાર
વિણમિઅ-વધારે નમેલા
ગાયલઆહિં-શરીરવાલી
પસિઢિલ-ઘણી ઢીલી
મેહલ-મેખલા
સોહિઅ-શોભિત
તડાહિં-ભાગવડી
ખિંખિણિ-કિંકિણી
નેઉર-નેપુર
સ-રૂડું
તિલય-તિલક
વલય-કંકણ
ભૂસણિઆહિં-શોભાવાલી
રઇકર-પ્રીતિકરનાર
ચઉર-ચતુર
મણોહર-મન હરનારી
દંસણિઆહિં-દર્શનવાલી
ચિત્તક્ખરા-ચિત્રાક્ષર
પાય-કિરણ, પગ
વંદિઆહિં-સમૂહવાલા, નમેલા
જસ્સ-જેના
તે-તે બે
સુવિક્કમા-અતિશે પરાક્રમવાલા, રૂડી ગતિ વાલા
અપ્પણો-પોતાનાં
નિડાલએહિં-લલાટ વડે
મંડણ-આભૂષણ
ઉડ્ડણ-રચના
પગારએહિં-પ્રકારો વડે
કેહિં કેહિં વિ-કેવા કેવા

अवंग–अपांग(बे आंखोना अंतरमां अथवा वच्चेना भागमां
पत्तलेह–पत्र लेख (कस्तुरीनां टपकां वगेरे)
नामएहिं–नामवाला
चिल्लएहिं–देदीप्यमान शणगारनी रचनाए
संगय–सहित
अंगआहिं–अंगवाली
सन्निविट्ठ–व्याप्त

आगयाहिं–आवेलीओ
पुणोपुणो–वारंवार
नारायओ–नाराचक
धुअ–खंखेरी काढी नांखेलो
किलेसं–क्लेश
वंदिअस्सा–वंदन करेला एवा
जस्स–जेथी
देववहुहिं–देवांगनाओ
पणमिअस्सा–प्रणाम करेला एवा

सासणयस्सा–शासनवाला
पिंडिआहिं–एकठी थएली
देववर–नर्तक वादक देवो
च्छरसा–अप्सराओ
बहुयाहिं–घणीओए
पंडियाहिं–डाहीओवडे
भासुरयं–भासुरक

अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंसवहु गामिणिआहिं ॥ पीण सोणि थण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभर विणमिअ गायलआहिं ॥ मणि कंचण पसिढिल मेह

ल सोहिअ सोणितम्माहिं ॥ वर खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणिआहिं ॥ रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणिआहिं॥१७॥ चित्तक्खरा ॥ देव सुदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते सु विक्कमा कमा अप्पणो निडालए हिं मंडणोड्डण पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंग तिलय पत्तलेह ना मएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं भ त्ति संनिविठ्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ १८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं, अ जिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव्व किलेसं, पयउ पणमामि ॥१९॥

नंदिअयं ॥ थुअ वंदिअस्सा रिसी गण देवगणेहिं, तो देववहूहिं पय उ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण यस्सा, भत्ति वसागय पिंमिअयाहिं ॥ देव वर छरसा ब हुयाहिं, सुरवररइगुण पंमियआ हिं ॥ ३८ ॥ भासुरयं ॥

अर्थः—अंबरंतर विआरणिआहिं केण्आ आगलनी गाथामां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाउए जेमना चरणकमलमां वंदन कर्युं छे, तेम छतां पण जेमनुं मन किंचित् पण विकारने पाम्युं नहीं, एवा श्री अ जितनाथ भगवानने हुं नमस्कार करुं छुं. ते देवांगना उ केवी छे ? तो के आकाश मार्गने विषे विचरवानुं छे शील जेमनुं एवी, तथा रमणिय एवी हंसीउनी पेरे गमन करवानुं छे शील जेमनुं एवी, तथा पुष्ट ए वा केडरूना भाग अने स्तने करी शोभती एवी त था संपूर्ण कमलनां पत्र समान छे लोचन जेमनां ए

वी छे ॥ २६ ॥ आ दीपक छंद छे.

पीण निरंतर थणभर केण वली ते देवांगनाउ केवी छे ? तो के मोहोटा अने कामी पुरुषना हृदयने आल्हादकारी एवा अने निबिड गाढ एवा स्तनोना भारे करीने विशेषे करी नमेलां छे गात्रो जेमनां एवी, तथा मणि अने सुवर्णनी करेली एवी अने प्रकर्षे करी शिथिल एवी मेखलाए करी सुशोभित छे केडनो प्रदेश जेमनो एवी, तथा श्रेष्ठ एवी किंकिणी अने नेपुर वली मनोहर तिलक तथा कंकण एवां आभूषणे करीने वधारे सुशोभित एवी, तथा प्रीति करनार एवुं अने चतुर पुरुषना मनने हरण करनारुं एवुं सुंदर छे दर्शन जेमनुं एवी, ते देवीउ छे ॥ २७ ॥ आ चित्राक्षरा छंद छे ॥

देव सुंदरीहिं पायवंदिआहिं केण पोताना शरीरने विषे पहेरेलां भूषणोना अथवा शरीरना किरणोनो समूह छे जेमने एवी देवांगनाउ छे तेमणे वंदन कर्यां, ते शुं वंदन कर्यां ? तो के जे भगवंतनां ते प्रसिद्ध अथवा रूडी छे गति जेमनी एवां, अने रूडुं छे पराक्र

म जेमनुं एवां चरणारविंद तेने वंदन कर्यां; ते शेणे करी वंदन कर्यां ? तो के पोताना ललाटोए करी. ते देवीओ केवी छे ? तो के जेमना शरीरने विषे आभुषणनी रचनाना प्रकारो, ते केवा केवा अपूर्व प्रकारो ? ते कहे छे. अपांग जे नेत्रना प्रांतने विषे जे अंजननी रचना तथा टीलां तथा शरीरने विषे कस्तुरी वगेरेए करेलां टबकां इत्यादिक नाम छे जेनां एवा, देदीप्यमान संरूननी रचनाये करी सहित छे शरीरनां अवयव जेमनां एवी देवांगनाओ ते भक्तिये करी व्याप्त थकी वंदनने माटे आवेली एवी छे, ते देवांगनाओ ते पूर्वोक्त तमारां चरणारविंदने अतिशय श्रद्धाए करी वारंवार वंदन करे छे ॥ २८ ॥ आ नाराचक छंद छे ॥

तमहं जिणचंदं के० ए पूर्वोक्त सामान्य केवलीने विषे चंद्रमा समान एवा, तथा जीत्यो छे मोह एटले अज्ञान जेमणे एवा, तथा टाळ्या छे शारीरिक अने मानसिक सर्व क्लेश जेमणे एवा श्री अजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर तेमने प्रयत्ने (मन, वचन, अने कायाना उद्यमे) करी युक्त थको एवो हुं नम

स्कार करुंछुं ॥ २ए ॥ आ नंदितक नामा छंद छे ॥

थुअ वंदिअस्सा के० ऋषिउना समूह तथा देवताउना समूह तेणे स्तुति करेला अने वंदन करेला एवा, अने ते पछी देव वधुए प्रणाम करेला एवा, तथा जे थकी जगत् मुक्ति पामवाने शक्तिमान थाय छे माटे उत्तम छे शासन जेमनुं एवा श्री शांतिनाथ जे तेमनां चरणाविंदने देव नर्त्तकिउ जे छे तेणे नाच करी वंदन कर्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुंछुं. हवे ते देव नर्त्तकिउ केवी छे ? तो के ज्ञक्ति वशे करी देवलोकथी आवीने एकठी मलेली एवी, अने नर्त्तकबादक देवो अने नाचमां कुशल एवी अप्सराउ तेमना घणाउए मलेली एवी, अने देवताउने जे थकी प्रीति थाय एवा गुणोने विषे स्राही एवीउ छे ॥ ३० ॥ आ ज्ञासुरक छंद छे ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

वंस–वांस	मोलिए–मलेछते	मिसए–मिश्रित
तंति–वीणा	तिउस्खर–त्रिपुष्कर वाजित्र	समाणणे–समान करवामां
ताल–चपटी, पडह		

सज्ज–षड्ज, अधिक गुणवालुं
गीय–गीत
जाल–जाल
घंटिआहिं–घुघरीओ
कलाव–अलंकार
देवनट्टिआहिं–देवनटिओ वडे
हाव–बहु कामविकार
भाव–अल्पविकार
विब्भम–विलास
नच्चिऊण–नाचीने
हारएहिं–विक्षेपकरीने
तयं–ते
तिलोय–त्रिभुवन
कारयं–करनार
पसंत–प्रशांत थया छे
एस हं–आ हुं
छत्त–छत्र
चामर–चामर
पडाग–पताका(धजा)

जूव–यूप(यज्ञनो स्थंभ)
जव–जव
मंडिया–सुशोभित
झयवर–श्रेष्ठ ध्वज
मगर–मगरमच्छ
सिरिवच्छ–श्रीवत्स
सुलंछणा–सारालंछनवाला
मंदर–मेरुपर्वत
दिसागय–दिग्गज
सत्थिअ–साथीआ
चक्क–चक्र
अंकिया–आंकेला
लट्ठा–शोभायमान
सम–सरखी रीते
प्पइट्ठा–रहेला
असम–निरुपम
प्पइट्ठा–प्रतिष्ठा
दुट्ठ–दुष्ट
जिट्ठा–मोटा
पसाय–प्रसाद

सिट्ठा–श्रेष्ठ
तवेण–तपेकरी
पुट्ठा–पुष्ट
सिरीहिं–लक्ष्मी वडे
इट्ठा–इष्ट
रिसीहिं–ऋषिओए
जुट्ठा–सेवाएला
वाणवासिआ–वनवासिका छंद
पावया–पाप, प्रमाद नारा
सं–सुखने माटे, सम्यक् प्रकारे
थुया–स्तवाएला
हुंतु–थाओ
सुहाण–सुखना
दायया–देनारा
अपरांतिका–अपरांतिका छंद
जुअलं–जुगल, जोडकुं
गई–गति
सासयं–शाश्वती

वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउ

रकरा भिराम सह मिसए कए
अ सुइ समाणणो अ सुद्द सज्ज
गीअ पायजाल घंटिआहिं ॥ व
लय मेहला कलाव नेउरा भिराम
सह मिसए कए अ देव नट्टिआ
हिं हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं ॥
नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआ
य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं
तिलोय सव्व सत्त संति कारयं ॥
पसंत सव्व पाव दोसमेसहं नमामि
संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारा
यत्र ॥ छत्त चामर पडाग जूव ज
व मंडिआ, झयवर मगर तुरय
सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समु
द्द मंदर दिसागय सोहिआ, सत्थि
अ वसह सीह रहचक्क वरंकिया

॥ पाठांतर सिरिवच्छ सुलंछणा ॥३१॥ ललिअयं॥ सब्भाव लठ्ठा समप्पइठ्ठा, अदोस दुठ्ठा गुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसाय सिठ्ठा तवेण पुठ्ठा, सिरीहिं इठ्ठा रिसीहिं जुठ्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअ सव्व पावया, सव्व लोअ हिअ मूल पावया संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण जुअलं ॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥गाहा॥

अर्थः—वंस सद्द तंति के० हवे ते देव नर्त्तकिउए केवा प्रकारना गीत नृत्यथी प्रभुना चरणनुं वंदन क

थुं ? ते कहे छे. वांसनो शब्द, वीणा, चपटी अथवा पम्हादिक मले छते एटले एकाकार थये छते, वली त्रिपुष्करनामा वाजित्र विशेष तेना मनोहर शब्दे करीने मिश्रित करे छते, वली ते सांजलवाने कान समान करे थके शुद्ध षम्ज ते मोर केका वगेरेना शब्दे करीने, अथवा सज्ज एटले अधिक गुणवाला एवा गीते करी सहित एवी जे पगने विषे जालना आकारवाली घुघरीउए करी उपलक्षित छते, तथा सोनानुं कंकण, केम्ना कंदोरा, कलाव अलंकार विशेष, ऊांऊरना मनोहर शब्दे करी मिश्रित करे छते, वली हाव, जाव, विभ्रम एटले विलास, तेमना प्रकारो छे जेने विषे एवा जला अंगना विक्षेपे करीने देवनर्त्तकिउ जे देवांगना तेमणे पूर्वोक्त प्रकारे नाच करीने, उत्तम पराक्रमवाला शांतिनाथजीना ते पराक्रमे करी सहित एवा चरणोने वंदन कर्यां छे एवा, ते त्रिजुवनना सर्व प्राणीउने शांतिना करनार एवा, अने प्रशांत (घणा शांत) थया छे सर्व पाप तथा रागादिक दोष जेथी, एवा उत्तम शांतिजिन प्रत्ये आ प्रत्यक्ष हुं नमस्कार करुं छुं ॥ ३१ ॥ आ नाराचक छंद जाणवो ॥

छत्तचामर पडाग के० छत्र, चामर, पताका, (धजा) थूप, जव एवां लक्षणोए करीने मंमित (सुशो भित) एवा, तथा सिंहादि रूपना लक्षणवाला ध्वजवर, मगरमच्छ, घोडा, श्रीवत्स, ते उत्तम पुरूषोना वक्षस्थल मां होय छे अने पगमां पण थवानो संभव छे. ते सर्व शोभायमान छे लांछन जेमने एवा, तथा द्वीप समुद्र मेरू पर्वत,प्रधान हस्ती एवा लक्षणे करी शोभित एवा छे. तथा श्रेष्ठ एवा साथिआ, वृषभ, सिंह, रथ अने चक्र तेणे करी अंकित एवा, पाठांतरे लक्ष्मी, वृक्ष (कल्पवृक्षा दिक) तेनां भलां लांछनो छे जे श्री शांतिनाथना हाथ पगादि अंगोने विषे एवा छे॥३१॥आ ललितक छंद छे॥

सहाव लठा सम प्पइठा के० वली केवा छे? तो के स्वभावे करीने शोभायमान छे तथा निरूपम छे प्रतिष्ठा जेमनी एवा, अथवा सरखी भूमिने विषे रहे ला एवा छे, तथा रागादि दोषे करी अदुष्ट एटले वि कारे रहित छे, तथा गुणे करीने मोहोटा छे, तथा प्र सादे (रागादिकना क्षयथी निर्मलपणे)करी श्रेष्ठ छे,

तथा तपे करीने पुष्ट छे तथा लक्ष्मीए करीने इष्ट छे, अथवा लक्ष्मी देवीए जेने पूज्या एवा छे, तथा मुनिउए जेमने निरंतर सेव्या एवा छे ॥३३॥ आ वनवासिका छंद छे ॥

ते तवेस धुय सव्व के० ते पूर्वे कह्या एवा, तथा तपे करीने टाळ्युं छे कर्मरूप सर्व पाप जेमणे एवा, वली केवा छे ? तो के सर्व लोकने हितकारक जे मोक्ष तेनुं मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने पमाडनारा छे, तथा सुखने अर्थे स्तवन कर्युं छे जेमनुं एवा, जे श्री अजित शांति पूज्यपाद, ते मने शीव सुखना देनारा थाउ.॥३४॥ आ अपरांतिका छंद छे ॥

एवं तव बल विउलं के० ए प्रकारे तपोबले करीने विशाल एवुं, अने गयुं छे कर्मरूप रज अने मल जेमने एवुं, तथा शाश्वती एवी अने विस्तीर्ण सुख छे जेने विषे एवी जे गति, तेने प्राप्त थयुं एवुं अजित शांति जिन युगल एटले बीजा अने सोलमा तीर्थंकरनुं युगल तेने में स्तुति कर्युं छे ॥३५॥ आ गाथानात्मक छंद छे ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

मुख्ख–मोक्ष	चाउम्मासे–चोमासी	हु–निश्चे
सुहेण–सुखवडे	पडिक्कमणामां	पुव्व–पूर्वना
परमेण–उत्कृष्ट [हित	संवच्छरिए–संवच्छरि	उप्पन्ना–उत्पन्नथएला
अविसायं–विषाद र	पडिक्कमणामां	विनासंति–नाश पा
नासेउ–नाश करो	अवस्स–निश्चे	मे छे
कुणउ–करो	भणिअव्वो–भणवो	इच्छह इच्छोछो
परिसा–सभा	सोअव्वो–सांभलवो	परमपयं–मोक्षपद
वि–पण	सव्वेहिं–सर्व संघे	अहवा–अथवा
पसायं–प्रसाद	निवारणो–निवारण	कीर्त्ति–कीर्त्ति
मोएउ–हरख आपो	करनार	सुविथ्थइं–अतिविस्ता
नंदि–समाधि		र पामेली
पावेउ–प्राप्त करो	पढइ–भणे	भुवणे–जगतमां
नंदिसेण–नंदिषेणकवि	निसुणइ–निरंतर सां	उद्धरणे–उद्धार कर
अभिनंदि–सर्व प्रका	भले	नार
रना आणंदने	उभओ–बे	वयणे–वचने
सुहनंदि–सुख वृद्धि	काले–वखत	आयरं–आदर
परिख्खअ–पाखीपडि	थअं–स्तवनने	कुणह–करो
क्कमणामां	न–नथी	

तं बहु गुणप्पसायं, मुख्ख सुहेण

परमेण अविसायं॥ नासेउ मे वि

सायं कुणंत अ परिसा वि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं परिसा वि अ सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए, अवस्स भणिअव्वो ॥ सो अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा॥जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ गाहा॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कीत्तिं सुविछडं भुवणे ॥ ता तेलुक्कुध्धरणे, जिण वयणे आयरं कुण

ह ॥ ४० ॥ गाहा ॥

अर्थः—तं बहु गुणप्पसायं के० वली ते पूर्वोक्त जिनयुगल केवुं छे? तोके अनेक गुणोना प्रसाद छे जे मने एवुं, तथा परम उत्कृष्ट एवा मोक्ष सुख जे तेणे करी नथी विषाद जेमने एवुं जिनयुगल ते मारा विषादने नाश करो. वली आ प्रस्तुत स्तव सांभलनारी जे विद्वानोनी सभा ते पण म्हारी उपर प्रसाद करो ॥ ३६ ॥ आ गाथाछंद जाणवो ॥

तं मोएउ अ नंदिं के० ते अजितशांतियुगल मने हर्ष आपो अने सर्व लोकोने समाधिने प्राप्त करो. वली आ स्तवन करनार नंदिषेण कवि तेने सर्व प्रकारे सानंद समृद्धिने पमाडो, तथा आ स्तवन सांभलनार जे श्रोताजननी पर्षदा तेने पण सुख वृद्धि आपो. वली मने सत्तर प्रकारनो जे संयम तेने विषे आनंदने आपो ॥ ३७ ॥ आ गाथा छंद छे ॥

पक्खिअ चाउम्मासे के० पाखी पडिक्कमणाने विषे तथा चोमासी पडिक्कमणाने विषे तथा सांवत्सरी पडिक्कमणानी रात्रीने विषे निश्चे जाणवो ते एक जणे कहेलो एवो जे आ स्तव तेने सर्व संघे सांभलवो

कारणके ए स्तव जे छे ते विघ्न निवारण करनार छे ॥ ३८ ॥ गाथा ॥

जो पढइ के० जे कोइ पुरुष अजितशांतिना स्तवनने बे कालने विषे भणे छे, तथा जे वली निरंतर सांभले छे, तो ते भणनार अने सांभलनार पुरुषने रोग निश्चे होता नथी अने पूर्वे उत्पन्न थएला रोग पण विशेषेकरीने नाश पामे छे ॥३९॥ आ गाथा छंद ॥

जइ इच्छह परमपयं के० जो मोक्षनी इच्छा करो छो. अथवा त्रण भुवनने विषे विस्तार पामेली एवी कीर्त्तिनी इच्छा करो छो तो त्रण लोकना उद्धार करनारां एवां जिन वचनोने विषे आदरसत्कार करो ॥ ४० ॥ गाथा छंद ॥

॥ अथ श्री बृहच्छांति स्तवना छुटा शब्दना अर्थ ॥

भो भो–हे, अरे	सर्व–सघलुं	गुरोः–गुरु (नी)
शृणुत–सांभलो	एतद्–आ	आर्हतां–वितराग
वचनं–वचनने	ये–जे	भाजः–भजनारा
प्रस्तुतं–अवसर योग्य	यात्रायां–जात्रामां	तेषां–तेमनी

भवतां–आप (नी)
अर्हद्–अरिहंत
प्रभावात्–प्रभावथी
आरोग्य–रोगरहित पणुं
करी–करनारी
विध्वंस–नाश
हि–जे माटे
संभवानां–उत्पन्न थएला (नी)
तीर्थकृतां–तीर्थंकरना
जन्मनि–जन्म वखते
प्रकंप–कांपवुं
अनंतरं–पछी
अवधिना–अवधिज्ञाने
विज्ञाय–जाणीने
सौधर्म–पेहेला देवलोक (नो)
अधिपतिः–इंद्र
सुघोषा–सुघोषा
घंटा–घंट
चालन–वगाड्या
सह–साथे

समागत्य–आवीने
भट्टारकं–भट्टारक(ने)
कनकाद्रि–मेरु पर्वत (ना)
शृंगे–शिखर उपर
विहित–करेल
उद्घोषयति–उद्घोषणा करे छे, जाहेर, पोकारे छे
यथा–जेम
ततः–तेम
कृत–करेली
अनुकार–नकल
महाजनः–देवसमूह
गतः–प्रवर्त्यो, गयो
सः–ते
पंथाः–मार्ग
समेत्य–आवीने
स्नात्र–न्हवण,न्हवाडवुं
पीठे–आसनपर
उद्घोषयामि–जाहेर करुं छुं

तत्–ते, तेथी
महोत्सव–मोटो ओच्छव
इति–एम
कृत्वा–करीने
करणं–कान
दत्वा–देइने
निशम्यतां–सांभलो
पुण्याहं–पवित्र दिवस
प्रीयंतां–खुशी थाओ
भगवंतः–भगवंत
अर्हन्तः–अरिहंतो
सर्वज्ञ–सर्व जाणनार
दर्शिनः–देखनार
त्रि–त्रण
लोक–जगत्
नाथा–स्वामीओ
महिता–पूजाएला
लोकेश्वरा–जगतना इश्वर
उद्योतकराः–उद्योतना करनारा

॥ अथ बृहच्छांति ॥

भो भो भव्याः शृणुत वचनं, प्रस्तुतं सर्वमेतत्; ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा; दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत विदेह संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहित जन्माभिषेकः शांति

मुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानु
कारमिति कृत्वा महाजनो येन
गतः स पंथाः इति भव्य जनैः
सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं वि
धाय शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजा
यात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति
कृत्वा कर्णंदत्वा निशम्यतां निश
म्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं, पु
ण्याहं, प्रीयंतां, प्रीयंतां, भगवंतो
र्हंतः, सर्वज्ञाः, सर्व दर्शिनस्त्रिलो
कनाथास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोक
पूज्यास्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्यो
तकराः ॥

अर्थः--भोभो भव्या के० हे भव्य प्राणीउ ? तमे अवसरने योग्य एवुं अने सार्थंत एवुं तथा आ समीपतरवर्त्ति एवुं वचन जे छे तेने सांभलो ! ते समीपतर

वर्त्ते एवुं कयुं वचन ? तोके वीतराग ते छे देव जेम ने एवा प्रसिद्ध तमे, ते तमारी शांति हो. ते शांति शेणे करीने थाय तो के अर्हत्, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, साधु, तेमना प्रन्नाव थकी, वली ते केवा न्नव्यप्राणीउ ? तोके त्रण न्नुवनना गुरु जे न्नगवान तेमनी यात्राने विषे न्नक्तिना न्नजनारा छे. ते न्नव्यप्राणीउने शांति थाय. ते केवी शांति ? तो के आरोग्य लक्ष्मी, धीरज अने बुद्धि ए चार वानांने करनारी तथा क्लेशना नाशनी कारण न्नूत एवी छे ॥ १ ॥

न्नो न्नो न्नव्यलोकाः के० हे न्नव्यलोको जे कारण माटे आ न्नरत, ऐरावत अने महाविदेहने विषे उत्पन्न थया एवा सघला तीर्थंकरोना जन्मने वखते सौधर्माधिपतिनुं आसन कंपायमान थयुं ते पछी ते सौधर्मेंद्र अवधिज्ञाने करीने जिन जन्मने जाणीने सुघोषा घंटाना वगाड्या पछी सर्व देवता तथा पातालवासी देवोना इंद्रोनी साथे त्यां आवीने स्तुतिये करीने अर्हत् रूप न्नट्टारक तेने ग्रहण करीने मेरुपर्वतना शिखर उपर जइने निर्माण कर्यो छे स्नात्र महोत्सव जेणे एवो छतो ते स्नात्रनी समाप्ति थये छते मोटा शब्दे

शांतिने पठन करे छे. ते माटे हुं पण तेवीज नकल जेम थाय ए प्रकारे करीने तथा इंद्रादिक देव समूह जे मार्गे प्रवर्त्यो, तेज मार्गने आपणे पण अनुसरवुं एम विचारीने भव्य प्राणीउ जिनालयने विषे रूमी रीते एकठा मलीने स्नात्र पीठने विषे श्रीजिनने स्नात्र करावीने शांतिना पाठने हुं जे मोटा शब्दे भणुंठुं (उद्घोषणा करुंछुं). ते तेमनी पूजा यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवानंतर ए प्रकारे करीने ते उद्घोषणा कान देइ (सावधान थइ) सांभलो सांभलो. स्वाहा ए मंत्राक्षर छे ॐकार पंच परमेष्ठि वाचक छे. तेने उच्चार करीने कहे छे, के हे भव्य प्राणीउ! आज पुण्यनो दिवस छे, पुण्यनो दिवस छे, (तथा) भगवंत तीर्थंकरो ते अति संतुष्ट थाउ, अति संतुष्ट थाउ, ते अर्हंत भगवान् केहेवा छे ? तो के सर्वज्ञ छे. केवलदर्शने करीने सर्वने जुए छे तथा त्रणलोकना नाथ एवा तथा त्रणलोके पुष्पादिके करी अर्चित एवा, अने वली त्रण लोकने पूजन करवा योग्य एवा, तथा त्रण लोकोना स्वामी एवा, तथा त्रणलोकना प्रकाशकारक छे ॥

छुटा शब्दना अर्थ

अंताः—अंतमां जेमने एवा
जिनाः—तीर्थंकरो
शांताः—शांत थएला
शांतिकराः—शांतिना करनारा
मुनयः—साधुओ
प्रवरा—श्रेष्ठ
दुर्भिक्ष—दुकाल
दुर्ग—विकट
मार्गेषु—मार्गमां
रक्षंतु—रक्षणकरो
कांतारेषु—वनोमां

ॐ ऋषभ अजित संभव अभि
नंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्र
प्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वा
सुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति
कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि ने
मि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाःशांताः
शांतिकरा भवंतु स्वाहा ॐ मुन
यो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्ष
कांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नि
त्यं स्वाहा ॥

अर्थः—ॐ ऋषभ अजित के० वली ते केवा छे ?

तो के शांतिने पामेला तथा श्री ऋषभदेवजी जेमां आदि छे अने श्री वीरस्वामी अंतमां छे, एवा चोवीश तीर्थंकरो शांतिना करनारा हो. ॐ कार मंगलार्थ भण वो. तथा मुनियोने विषे श्रेष्ठ साधुउ जेने शत्रुनो करेलो पराभव तथा दुष्काल तथा चोर कांटादिके नगरा मार्गने विषे, तथा अरण्य मार्गने विषे तमोने निरंतर रक्षण करो ॥

छुटा शब्दना अर्थ

मेधा–धारण करवानी बुद्धि	निवेशनेषु–मुकाम (करवा)मां	ग्रहित–लीधेलुं
प्रवेशन–गृह प्रवेश	सु–रुडुं	नामानः–नामवाला

ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति मति कीर्त्ति कांति बुध्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाधन प्रवेशन निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥

अर्थः—ॐ ह्रीँ श्रीँ के० ॐ कार परमात्मा वाचक प्रणवबीज छे ह्रीँ कार मायाबीज ते वश करनार छे. श्रीँ कार लक्ष्मीबीज ते द्रव्यागमन कारण छे. धैर्य,

मति, यश, शोभा, बुद्धि, संपत्ति, धारण करवानी बुद्धि, चौद विद्यानुं साधन, तथा गृह प्रवेश तथा सुकासने विषे रूडुं ग्रहवा योग्य नाम छे जेमनुं एवा ते पूर्वोक्त तीर्थंकरो ते सदैव जयवंता वर्त्तो ॥

छुटा शब्दना अर्थ

रोहिणी१-देवीनुं नाम छे	चातुर्वर्ण्यस्य-चार प्रकारना
षोडस-शोल	श्रमण-साधु
प्रभृति-विगेरे	

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला व
ज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता का
ली महाकाली गौरी गांधारी स
र्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या
अछुप्ता मानसी महामानसी षो
डशा विद्या देव्यो रक्षंतु वो नित्यं
स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृ

१ रोहणीथी महामानसी सुधी सोल देवीयोनां नाम छे.

ति चातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमण संघ
स्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु॥

અર્થઃ--ૐ રોહિણી કે૦ વળી રોહિણીથી આરંભી ને મૂળમાં લખેલી એવી મહામાનસી દેવીપર્યંત શોળ વિદ્યાધિષ્ઠાત્રી દેવીયો તમોને નિરંતર રક્ષણ કરો. એ ઠેકાણે સ્વાહા ભણવું. કોઇ ઠેકાણે ૐ સ્વાહા એવો પણ પાઠ છે. અહીંઆં ૐ કાર તે મંગલાર્થ જાણવો. વળી આચાર્યને ઉપાધ્યાય પ્રમુખ ચાર પ્રકારવાળા સુશોભિત એવા શ્રમણ (જે શ્રી વીર ભગવાન્ તેમનો આચાર્ય ઉપાધ્યાય, સાધુ અને સાધ્વી એ રૂપ) સંઘને શાંતિ હો, તુષ્ટિ થાઓ ધર્મની પુષ્ટિ થાઓ ॥

છૂટા શબ્દના અર્થ

ग्रहाः-नवग्रहो	केतु-केतु	वासव-इंद्र
अंगारक-मंगल	सहिताः-परस्परमळ्या	आदित्य-सूर्य
बुध-बुध	लोकपाला-लोकपाल साथे	स्कंद-स्कंद देव
बृहस्पति-गुरु	सोम,	विनायक-गणेश
शुक्र-शुक्र	यम	उपेताः-सहीत
शनैश्वर-शनि	वरुण	अन्येऽपि-बीजा पण
राहु-राहु	कुबेर	ग्राम-गाम

देवतादय–देवता विगेरे	अक्षीण–अखुट कोश–भंडार	कोष्ठागारा–कोठार नरपतयः–राजाओ

ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कंद विनायकोपेताः ये चान्येऽपिग्राम नगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां अक्षीण कोश कोष्ठागारा नरपतयश्च जवंतु स्वाहा ॥

अर्थः--ॐ ग्रहाश्चंद्र के० हवे पूर्वोक्त संघने चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु अने केतु ए नवग्रहो, परस्पर मळ्या तथा, सोम, यम, वरुण, अने कुबेर ए चार लोकपाले सहित तथा इंद्र बार प्रकारना सूर्य, स्कंद अने गणेश तेणे करी मळ्या एवा सर्व देवताउ.वली बीजा पण गाम,नगर, तथा क्षेत्रना देवतादिक जे ठे. ते सर्वे प्रसन्न थाउ प्रसन्न थाउ; तथा राजाउ न

श्री क्षय पाम्या नमस्कार जेमना तथा धान्यनां घर जे मनां एवा थाओ ! स्वाहानो अर्थ पूर्वनी पेरे जाणवो ॥

छुटा शब्दना अर्थ

भ्रातृ–भाइ	भूमंडल–पृथ्वीमंडल	थया
कलत्र–स्त्री	आयतन–ठेकाणुं	पापानि–पापो
सुहृद्–गोठीआ	निवासि–वसनारा	शाम्यंतु--शांतिने
संबंधि–सासरीआं	दुर्भिक्ष–दुकाल	दुरितानि--अशुभ
बंधुवर्ग–गोत्रीया	दौर्मनस्य–दुर्मनपणुं	शत्रवः--वेरीओ
आमोद–हर्ष	उपशमनाय–उपशमने माटे	पराङ्--अवला
प्रमोद–चित्तप्रसन्नता	प्रादुर्भूतानि–उत्पन्न	मुखाः--मुखवाला
अस्मिन्–आ (मां)		

ॐ पुत्रमित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन संबंधि बंधु वर्गसहिता नित्यं चामोद प्रमोदकारिणः अस्मिँश्च भूमंडलायतन निवासिसाधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधि दुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि

पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवाः, सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यं तु, दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥

अर्थः--ॐ पुत्र मित्र के० पुत्र, मित्र, भाइ, स्त्री, सरखी उमर वाला, ज्ञाति वाला, सासरीयां कुटुंबी ए वाते सर्व निरंतर वली हर्ष अने चित्त प्रसन्नता तेने करनारा हो, तथा आ मृत्यु लोकने विषे पृथिवीमां पोताना स्थानकोने विषे निवास करनारा एवा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका तेमना रोग, उपसर्ग, व्याधि, दुःख, दुर्भिक्ष अने दुर्मनपणुं तेमना उपशम ने अर्थे शांति जे छे ते हो. ॥

ॐ तुष्टि पुष्टि के० ॐकार मंगलार्थ छे. संतोष, पुष्टि, संपत्ति परिवारनो विस्तार, कल्याण अने महोत्सव ते सर्व थाउ तथा निरंतर उत्पन्न थयां एवा जे पापो दुरितो ते शांतिने पामो अने तमारा वेरीउ जे छे ते सर्व अवलुं छे मुख जेमनुं एवा थाउ, स्वाहा शुभ सूचक छे. ॥

छुटा शब्दना अर्थ

विधायिने-करनारने	निमित्त-कारण
अमराधीश-इंद्रो	संपादित-संपादन करी छे
अभ्यर्चित-पूजित	हितसंपत-हितनीसंपत्ति
दुःस्वप्न-खोटुं स्वप्न	

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति
विधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधी
श, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शां
तिः शांतिकरःश्रीमान, शांतिं दि
शतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा ते
षां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥
उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदु
र्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप,
न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥
श्री संघजगज्जनपद, राजाधिपरा
जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुर

मुख्यानां,व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम्॥

अर्थः--श्रीमते शांतिनाथाय के० शांतिनाथ
नमस्कार थाउ ते शांतिनाथ केवा छे? तो के सम
सरणादि ऋद्धि वाला छे तथा शांतिने करनारा एव
छे ते शांति कोने करनारा? तो के त्रण लोकने. तथ
वली केवा छे? तो के चोसठ इंद्रोना मुकुट तेमणे
जित छे चरण जेमना एवा छे. ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः के० शांतिना करनार एव
शांतिनाथ मने शांतिने आपो. कारण के जेमना घ
ने विषे यथार्थ उपदेशना करनार सुशोभित एवा श्री
शांतिनाथनामा जिननुं पूजन थाय छे तेमना घरने वि
षे निरंतर शांतिज थाय छे. ॥ २ ॥

उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट के० श्री शांतिनाथनुं नाम ग्रह
ण पण उत्कृष्ट वर्त्ते छे ते नाम ग्रहण केवुं छे? तो के
उपद्रव तथा दुष्ट ग्रहनी गतिने दूर करनारुं छे तथ
खोटां स्वप्न जे दुःखोनां कारण छे तेने दूर करनारुं छे,
तथा हितनी संपत्ति संपादन करनारुं छे ॥ ३ ॥

श्री संघजगज्जनपदके० श्रीसंघजगज्जनपद के०

जगतना देश, राजाधिपराज्य सन्निवेशानां के० राजाउ तथा अधिपतिउ, राज्यना मुकामो ए सर्वना नाम ग्रहणे करीने, तथा नगरना मुख्य पुरुषना पण नाम ग्रहणे करीने (ए सौनां नाम लेइने) शांतिने उंचे स्वरे करीने उद्घोषणा करे ॥ ४ ॥

छुटा शब्दना अर्थ.

पौर–शेहेरी	ब्रह्मलोकस्य–ब्रह्मलोकनी	वपुः–शरीर
जनपदा–देश	ॐ स्वाहा–मंगलवाच्य वचन	पुष्प–फूल
अधिपानां-अधिपतिनां	अवसानेषु–अंतने विषे	चंदन–केसर
सन्निवेश–मुकाम	चतुष्किकायां–मंडपमां, चोकीमां	आभरण–शणगारथी
गोष्टिकानां–कंपनीओनां	समेत–सहित	अलंकृतः–शोभतो
मुख्याणां–मुख्य पुरुषोनां	शुचि–पवित्र	पानीयं–पाणीने
		दातव्यं–आपवुं, देवुं, मुकवुं

श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्री पौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्री जनपदानां शांतिर्भवतु, श्री राजाधि

पानां शांतिर्भवतु, श्री राजसन्निवे
शानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्टिकानां
शांतिर्भवतु, श्रीपुर मुख्याणां शां
तिर्भवतु, श्री ब्रह्मलोकस्य शांति
र्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री
पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शां
तिप्रतिष्टा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु
शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदन
कर्पूरागरु धूपवासकुसुमांजलि स
मेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्री संघ
समेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र चं
दनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे
कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपा
नीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

अर्थः--श्री श्रमणसंघस्य के० सुशोभित एवा श्रमण संघनी शांति थाउ, तथा पुरमां वसनारा लो

कनी शांति थाउ. तथा देशनी शांति थाउ तथा रा जा अने अधिपति तेमनी शांति थाउ. तथा राजाना मुकामनां स्थानक जे सन्निवेश, तेनी शांति थाउ, तथा धर्मसन्नास्थ जनो एटले न्याय सन्ना तेमनी शांति थाउ तथा पुरना मुख्य माणसोनी शांति थाउ, तथा ब्रह्मलोकनी शांति थाउ. पहेली वखतनुं ॐ स्वाहा पद मंगलार्थ छे, तथा बीजीवारनुं ॐ स्वाहा ए पद ते रूपे प्रकारे देवोने कहे छे. तथा धूप दीपादिक पूजानां उप करण श्री पार्श्वनाथने संतोषने माटे थाउ ॥

एवा शांतिप्रतिष्टा केण आ शांतिपाठ ते प्रति ष्टाना तथा यात्राना तथा स्नात्रना अंतने विषे जणवो तथा पाक्षिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो, तथा बीजां पण धर्म कार्यो नी समाप्तिमां पण अवश्य उद्घोषण करवा योग्य छे. हवे ते केवी रीते उद्घोषण करवुं ? ते कहे छे. कोइपण विशिष्ट गुणवान् श्रावक उन्नो थइने शांति ने माटे शांति कलशने डाबा हाथे पकडीने, तेना उ पर जमणो हाथ स्थापन करीने, कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु, धूप, वास, कुसुमांजली, तेणे सहित स्नात्र

मंरूपमां चतुर्विध संघयुक्त बतो मेल रहित पवित्र बे शरीर जेनुं एवो पुष्प, वस्त्र, चंदन तथा आन्नरणे सुशोन्नित बतो पुष्पनी जे माला तेने पोताना कंठने विषे धारण करीने, मोटा शब्दे शांतिनो नद्घोष करीने पबी ते महान् पुरुष तथा बीजाज्ये शांति कलशना जलने मस्तकने विषे क्षेपन करवुं. इति के॰ एसमाप्तिना अर्थमां बे

बुटा शब्दना अर्थ.

नृत्यंति–नाचे छे	हि–निश्चे	सर्वत्र–सर्व ठेकाणे
मणि–रत्न	परहित–पारकुं भलुं करवामां	तित्थयर–तीर्थंकर
वर्ष–वरसाद, वृष्टि		माया–माता
सृजंति–करे छे	निरता–प्रीतिवाला, सावधान	सिवादेवी–नेमिनाथ नी माता
गायंति–गाय छे		
मंगलानि-मंगलगीतोने	भूतगणाः–प्राणीओना समूह	नयर–नगर
स्तोत्राणि–स्तोत्रने		आसिव–उपद्रव, अकल्याण
गोत्राणि–वंशोने	दोषाः–दोषो	
पठंति–भणे छे	प्रयांतु–पामो	उवसमं–उपशम
मंत्रान्–मंत्रोने	नाशं–नाशप्रते	

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजं

ति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्रा
णि गोत्राणि पठंतिमंत्रान्, कल्या
णभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिर
ता भवंतु भूतगणाः॥ दोषाः प्रयां
तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लो
काः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया,
सिवा देवी तुम्ह नयर निवासि
नी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, अ
सिवोवसमं सिवं भवंतु ॥ स्वाहा
॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयंयांति, छिद्यं
ते विघ्न वल्लयः ॥ मनः प्रसन्नता
मेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ स
र्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
कारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जै
नं जयति शासनं ॥ ५ ॥

अर्थः--नृत्यंति नित्यं के० जिनना अभिषेकने विषे जे भव्यजनो निरंतर नाचे छे, रत्न, मोती अने पांच वर्णनां फूलोनी वृष्टि करे छे, वली मंगल एवां गीत अने धवल तेने गान करे छे, तथा स्तोत्रने तथा तेमना वंशने पठन करे छे, वली मंत्र गर्भित एवा पाठो ने भणे छे, अने उपलक्षणथी बीजा जनोये पठन करेला मंत्रोने सांभले छे. ते भव्य जीवो निश्चे कल्याण ने भजनारा एवा थाय छे.

शिवमस्तु सर्व जगतः के० सर्व जगतनुं कल्याण थाउ. तथा प्राणी समूह पारकुं हित करवामां साव धान थाउ, तथा दोष जे ते नाशने पामो तथा सर्व स्थानकने विषे सर्व लोक सुखी थाउ ॥२॥

अहं तिच्छयर माया के० हुं, तीर्थंकर श्री नेमि नाथनी माता जे शिवादेवी छुं ते केवी छुं ! तो के त मारा नगरने विषे निवास करनारी छुं एटले सानिध्य कारी छुं. ए कारण माटे अमारुं कल्याण हो अने ना मोच्चार मात्रे करी तमारुं कल्याण हो. अशिवनो उ पशम छे जेमां एवुं कल्याण हो. स्वाहा ए पदनो अ

र्थ पूर्वनी पेरे जाणवो ॥ ३ ॥

उपसर्गाः क्षयंयांति के० जिनेश्वर ते पूज्ये छते वि घ्न वल्लियो जे छे ते छेदाय छे अने मन प्रसन्नताने पामे छे अने उपसर्गो क्षयने पामे छे ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं के० सर्व मंगलने विषे मं गल करनारुं तथा संपूर्ण आरोग्यतानुं कारण सर्व ध र्मोने विषे श्रेष्ठ एवुं जिन संबंधि शासन ते सर्वोत्कृष्ट वर्त्ते छे ॥ ॥ इति बृहच्छांति स्तव ॥

संतिकर स्तोत्रना गाथा १ थी ७ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

दायारं–दातारने	स–सहित	मंतेण–मंत्रेकरी
समरामि–समरुंछुं	वि–विष्टा	असिव–उपद्रव
भत्त–भक्त	प्प–लघुनीति	हरणाणं–हरण करनाराने
पालग–पालनार	ओसहि–औषधि	
निव्वाणी–निर्वाणी देवी	पत्ताणं–प्राप्त थया	
गरुड–यक्षनुं नाम छे	संतिसामि–शांतिस्वामी	खेल–श्लेष्म
कय–करेली छे	पायाणं–पादने [ज छे	लद्धि–लब्धि
सेवं–सेवा (जेनी)	झाँस्वाहा–ए मंत्रवी	सौँ ह्रीँ–मंत्रवीज
		देइ–आपो

वाणी-वागदेवता	पन्नती-प्रज्ञप्ति(नामछे)	महामाणसिआ-महा मानसिका
सामिणि-स्वामिनी	वज्जसिंखला-वज्रशृंखला	गोमुह-गोमुख
जख्ख-जक्ष	वज्जंकुसि-वज्रंकुशी	महजख्ख-महायक्ष
राय-राजा	चक्केसरि-चक्केश्वरी	तिमुह-त्रिमुख
गणिपिडगा-गणिपीटक यक्ष	नरदत्ता-नरदत्ता	तुंबरू-तुंबरू
गह-ग्रह	गोरी-गौरी	कुसुमो-कुसुम
दिसिपाल-दिक्पाल	गंधारी-गांधारी	मायंगो-मातंग
इंदा-इंद्र	महजाला-महाज्वाला	विजय-विजय
रख्खंतु-रक्षण करो	माणवी-मानवी	अजिय-अजित
भत्ते-भक्तोंने	वइरुट्टा-वैरुट्या	बंभो-ब्रह्म
रोहिणी-नाम छे	माणसिआ-मानसिका	मणुओ-मनुज
		सुरकुमारो-सुरकुमार

॥ अथ संतिकरस्तोत्र ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं ज
यसिरिइ दायारं ॥ समरामि भत्त
पालग, निव्वाणी गरुडकयसेवं॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं सं
तिसामि पायाणं ॥ झौँ स्वाहा मं
तेणं, सव्वासिव दुरिअ हरणाणं

॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो, खेलो सहिमाइ लद्धिपत्ताणं ॥ सौ ह्रीँ नमो सव्वो, सहि पत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणि, सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा ॥ गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥ वज्जंकुसि च क्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥ अछुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महज, रक तिमुह जक्खेस

तुंबरु कुसुमो ॥ मायंगो विजया
जिय, बंभो मणुञ सुरकुमारो॥७॥

अर्थः—संतिकरं संतिजिणं के० हुं शांतिनाथने मनमां समरुंछुं, ते केवा छे ? तो के शांतिना करना रा छे, तथा जगतना लोकने शरण भय निवारण क रनार छे, वली जय अने लक्ष्मीना दातार छे, वली भक्तोने पालन करनारा छे, वली निर्वाणी नामे देवी तथा गरुड नामे यक्ष ए बेहुए जेमनी सेवा करेली छे एवा छे ॥ १ ॥

ॐ सनमो विप्पोसहि के० श्री शांति स्वामीना पादने ॐकारे सहित नमस्कार थाउ ते शांतिस्वामी पाद केवा छे ? तो के जेनां विष्टा अने लघुनीति ते औषधिरूप छे, वली केवा छे ? तो के ॐ स्वाहा ए मंत्र बीजे करी युक्त छे. वली ॐस नमो विप्पोसहिप त्ताणं ॐ स्वाहा एवा मंत्रपदे करीने सकल जगत्ना मरकी आदि उपद्रवो तथा पापने हरण करनार छे॥२॥

ॐ संति नमुक्कारो के० ॐ एटले शोभायमान एवा, शांतिस्वामी पादने नमस्कार थाउ. ते शांतिस्वा

मीपाद केवा छे ? तो के सलेखम कफ ते आदि पर म औषधिपणाये करीने प्राप्त थयां छे जेमने एवा छे वली तेने सौं ह्रीँ सहित नमस्कार हो. वली केवा छे ? तो के जेमना दांत केश वगेरे सर्वे अंग औषधि पणाने पाम्यां छे जेमने एवा छे, अने तेउने करेलो जे नमस्कार छे ते न्नव्योने लक्ष्मी आपो आंहिं "उँ ह्रीँ नमो खेलोसहि लद्धिपत्ताणं तथा उँ ह्रीँ नमो सव्वोस हि पत्ताणं" ए बे मंत्रो सर्व उपद्रव नाशकारक छे॥३॥

वाणी तिहुअणसामिणि के० वाणी जे श्रुत अधि ष्टायिका देवी छे ते त्रण न्नुवननी स्वामिनी, अने पद्मद्र ह निवासिनी व्यंतर जातिवाली लक्ष्मीनामा देवी, अ ने यक्षराज, अने गणिपीटक नामे द्वादशांगीनो अधि ष्टायक तथा सूर्यादि नव ग्रह तथा दश दिक्पाल तथा देवताना चोसठ इंद्रो ते सर्वे निरंतर श्री तीर्थंकरोना न्नक्तजनोनुं रक्षण करो ॥ ४ ॥

रक्खंतु मम रोहिणी के० मने तथा बीजा जी वोने पण सर्वोपद्रवथी निरंतर रक्षण करो. हवे ते को ण रक्षण करो ? ते कहे छे. एक पुण्यरूप बीजने उ त्पन्न करनारी रोहिणीनामा देवी, बीजी वली अति

ज्ञानवंत प्रज्ञप्ति, त्रीजी वज्र जेवी शांकल धारण करनारी वज्रशृंखला, चोथी वज्र तथा अंकुश धारण करनारी वज्रांकुशी, पांचमी चक्र धारण करनारी चक्रेसरि, छठी मनुष्यने वरदान आपनारी नरदत्ता, सातमी श्यामवर्णवाली काली, आठमी विशेष श्याम वर्णवाली महाकाली ॥ ५ ॥

गोरी तहगंधारी के० नवमी गौरवर्णवाली गोरी, दशमी गायना वाहनवाली गांधारी, अगीआरमी मोटी ज्वालावाली महाजाला, बारमी माणसनी माता तुल्य मानवी, तेरमी वेर शमावनारी वैरुटचा, चौदमी पापनो जेने स्पर्श नथी ते अछुत्ता, पंदरमी मनने सानिध्यकारी मानसिका, तथा तेवीज सोलमी पण मानसिका ए शोल देवीउ जे छे ते रक्षण करो, विद्या प्रधानपणाने लीधे ए शोले विद्या देवीउ कहेवाय छे॥६॥

हवे चोवीस तीर्थंकरोना यक्षोनां नाम अनुक्रमे कहे छे. जक्खा गोमुह के० प्रथम गोमुखनामा यक्ष, बीजो महायक्ष, त्रीजो त्रिमुख, चोथो इश्वर, पांचमो तुमरु, छठो कुसुम, सातमो मातंग, आठमो विजय,

नवमो अजित, दशमो ब्रह्म, अगीआरमो मनुज, बार मो सुरकुमार नामे यक्ष छे ॥ ७ ॥

गाथा ८ थी १४ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

छम्मुह–षण्मुख	सिरिवच्छा–श्रीवत्सा	रक्खं–रक्षा
पयाल–पाताल	चंडा–चंडा	सुदिट्ठि–सम्यक्दृष्टि
किन्नर–किन्नर	विजया–विजया	सहिओ–सहित
गरुडो–गरुड	अंकुसि–अंकुशी	मज्जवि–मनेपण
गंधव्व–गंधर्व	पन्नइति–पन्नगा	मुणिसुंदर–नाम छे
जक्खिंदो–यक्षेंद्र	निव्वाणि–निर्वाणी	महिमा–माहात्म्य
कूबर–कूबर	अच्चुआ–अच्युत्ता	सरइ–स्मरण करे छे
वरुणो–वरुण	धरणी–धारिणी	उवद्दव–उपद्रव
भिउडी–भृकुटी	वइरुट्ट–वैरोट्या	रहिओ–रहित
गोमेहो–गोमेध	अछुत्त–अछुप्ता	स–ते
पास–पार्श्व	अंब–अंबा	लहइ–पामे छे
अजिआ–अजिता	सिद्धा–सिद्धादेवी	संपयं–संपत
दुरिआरि–दुरितारि	तित्थ–तीर्थ	तवगच्छ–तपोगच्छ
अच्चुअ–अच्युत	रक्खण–रक्षण	गयण–गगन
संता–शांता	रया–तत्पर	दिणयर–दिनकर
जाला–ज्वाला	अन्ने–अन्य (बीजा)	जुगवर–युगप्रधान
सुतारया–सुतारा	जोइणि–योगिनी	सिरि–श्री
असोय–अशोका	कुणंतु–करो	सोमसुंदर–नाम छे

गुरुणं-गुरुना	गणहर-गणधर	भणइ-भणे छे
लद्ध-प्राप्त थइ	विज्जा-विद्या	सीसो-शिष्य

बम्भुह पयाल किन्नर, गरुमो गंध
व तहय जखिंदो ॥ कूबर वरुणो
भिउडी, गोमेहो पासमायंगो॥८॥
देवीउ चक्केसरि, अजिआ दुरि
आरि काली महाकाली ॥ अ
चुअ संता जाला, सुतारयासोय
सिरिवछा ॥ ए ॥ चंमा विजयं
कुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ
धरणी ॥ वइरुट्ट गुत्तगंधा, रि अं
ब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ
तित्थ रक्कण रया, अन्नेवि सुरासु
रि चउहावि ॥ वंतर जोइणि पमु
हा, कुणंतु रकं सया अम्हं॥११॥
एवं सुदिठि सुरगण, सहिउ संघ

स्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि क
रेज रक्खं, मुणिसुंदरसुरिथुअम
हिमा ॥ १२ ॥ इअ संति नाह
सम्म, दिठि रक्खं सरइ तिकालं
जो ॥ सव्वोवद्दवरहिअ, स लहइ
सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगछ
गयण दिणयर, जुगवर सिरि सो
मसुंदरगुरूणं ॥ सुपसाय लद्धगण
हर, विज्जासिद्धिं जणइ सीसो
॥ ४ ॥ इति ॥

छम्मुह पयाल के० तेरमो षण्मुख नामा यक्ष, चौदमो पाताल, पन्नरमो किन्नर, सोलमो गरुड, सत्तरमो गंधर्व, तथा वली अढारमो यक्षेंद्र, उगणीसमो कूबरनामा यक्ष, वीशमो वरुण, एकवीसमो भृकुटी, बावीसमो गोमेध, त्रेवीसमो पार्श्व अने चोवीसमो मातंगनामा यक्ष छे. ए प्रमाणे प्रत्येक तीर्थंकरनो प्रत्येक

यक्ष अनुक्रमे जाणवो तेमनां वाहन अने सविस्तर व र्णन प्रवचन सारोद्धारथी जाणवुं ॥ ८ ॥

देवीउ चक्केसरि के० हवे चोवीस तीर्थंकरनी चोवीस देवीउनां नाम कहे छे प्रथम चक्रेश्वरी नामादेवी, बीजी अजिता नामादेवी, त्रीजी डुरितारि, चोथी काली, पांचमी महाकाली, छठी अच्युत नामा देवी, सातमी शांता, आठमी ज्वाला, नवमी सुतारा, दशमी अशोका, अगीआरमी श्रीवत्सा ए श्री तीर्थंकरनी देवीउ छे ॥ ए ॥

चंडा विजयंकुसि के० बारमी चंडा नामा देवी, तेरमी विजया, चौदमी अंकुशा, पन्नरमी पन्नगा, सोलमी निर्वाणी सत्तरमी अच्युता, अढारमी धारिणी, उगणीसमी वैरोट्या नामादेवी, वीशमी अछुप्ता नामा देवी, एकवीसमी गांधारि नामादेवी, बावीसमी अंबा नामा देवी, त्रेवीसमी पद्मावती नामा देवी, चोवीसमी सिद्धा नामादेवी ए प्रकारे चोवीस देवीउ अनुक्रमे चोवीस तीर्थंकरोनी जाणवी, तेमनां वर्ण, वाहन, आयुधादि प्रवचन सारोद्धारथी जाणवां ॥ १० ॥

इअ तिछ रस्कण रया के० ए प्रकारे यक्ष, य

क्षिणी तमे सकल संघरूप तीर्थनुं पालण करवाने त त्पर थाउ, तथा बीजा पण चार निकायना जवनप त्यादिक देवता, देवीउ, व्यंतर, तथा जइकाली प्रमुख चोसठ योगिनी ते अमोने निरंतर रक्षा प्रत्ये करो ॥११॥

एवं सुदिठि सुरगण के० एम पूर्वोक्त सम्यक्दृष्टि देवताना समूह सहित एवा संघने सामान्य केवलीने विषे आल्हादकारी माटे जिनचंड कहीए एवा श्री शांतिजिनचंड, तमे मने पण रक्षा प्रत्ये करो, ए शांतिजिनचंड केवा ठे? तो के मुनिने विषे प्रधान ए वा जे श्रुतकेवली, मनः पर्यवज्ञानीउ तेमणे तथा पंमितोए स्तुति कर्युं ठे माहात्म्य जेमनुं एवा ठे. अ थवा श्रीमुणिसुंदरसूरि जे आ स्तोत्रना कर्त्ता ठे ते मणे स्तव्यो ठे महिमा जेमनो एवा ठे ॥ १२ ॥

इअ संति नाह सम्म, के० ए प्रकारे रूमी दृष्टि वालो जे कोइ मनुष्य श्री शांतिनाथ तेमनी रक्षा जे ठे ते सवारबपोर अने सांजे ए त्रणेकाले स्मरण करे ठे, ते मनुष्य सर्वोपड्वरहित थाय ठे अने ते मनुष्य स र्वोत्कृष्ट एवी सुखसंपदाने पामे ठे. ॥ १३ ॥

तवगच्छ गयण के० श्रीतपोगच्छ रूप गगनने विषे सूर्यसमान युगप्रधान श्री सोमसुंदर नामना गुरु, तेमना सुप्रसादे करीने प्राप्त थइ एवी गणधर विद्या सिद्धिने शिष्य जे मुनिसुंदरसूरि ते जणे छे॥१४॥इति॥

तिजय पहुत्तना छुटा शब्दना अर्थ

गाथा १ थी ७ सुधीना.

जय–जगत्	भविआणं–भविक जीवोना	पणतीसा–पांत्रीस
पहुत्त–प्रभुपणुं		सठ्ठी–साठ
पाडिहेर–प्रातिहार्य	वीसा–वीस	वाहि–व्याधि
समय–काल	पणयाला–पीस्तालीस	जलण–अग्नि
खित्त–क्षेत्र	तीसा–त्रीस	हरि–वाघ, सिंह
ठिआणं–वर्त्तता(ना)	पन्नत्तरी–पंचोतेर	करि–हाथी
सरेमि–ध्यान करुंछुं	जिणवरिंदा–जिनवरेंद्रे	पणपन्ना–पंचावन
चक्कं–चक्र(ने)	भूअ–व्यंतर, भूत	दसेव–दश
जिणंदाणं–जिनेंद्रोना	रक्ख–राक्षस	पन्नठ्ठी–पांसठ
पणवीसा–पचीस	साइणि–शाकिनी	चालीसा–चालीस
असिआ–एंशी	घोर–मोटा	पणमिआ–प्रणामकर्या
पन्नास–पचास	पणासंतु–नाश करो	हरहुंहः–वीजअक्षर छे
नासेउ–नाश करो	सित्तरि–सित्तेर	सरसुंसः–वीजअक्षर

आलिहिय-समस्त प्रकारे लख्युं गब्भं-मध्य भागमां	किर-निश्चे सव्वओभद्दं-सर्वतो भद्र	सव्वओ-सर्व प्रकारे भद्दं-कल्याण

॥ अथ तिजयपहुत्त नामा चोथुं स्मरण ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अठ्ठ महा पाडिहेरजुत्ताणं ॥ समयख्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥ नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गह भूअ रख्ख साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तरि पणतीसाविय, सठ्ठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहिजल जलण

हरि, करि चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नट्ठि तहय चेव चालीसा ॥ रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गप्भं, चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिया ॥ चक्केसरी नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरि ॥ ७ ॥ गंधारि महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ, विज्जा देविउ रक्खंतु ॥ ८ ॥

अर्थः--तिजयपहुत्त के० त्रण जगतना प्रभुत्वना प्रकाशना करनार, आठ महा प्रातिहार्ये करी युक्त अ

ने समय के० रात दिवस रूप काल छे प्रधान जेमां ए वा अढी द्वीप प्रमाण क्षेत्रमां रहेला एवा जिनेंद्रोनो चक्र के० चक्र एटले समूह अथवा चक्रं एटले यंत्रने हुं समरुं छुं, ध्यान करुं छुं ॥ १ ॥

उत्कृष्ट कालमां ज्यारे पंदर कर्मभूमि क्षेत्रमां कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह नथी होतो त्यारे समकाले एकसो सीत्तेर तीर्थंकर उत्कृष्टा वर्त्ते छे. ते तीर्थंकरोनुं एकसो सीत्तेरना आंकवालुं अने म्होटुं छे महात्म्य जेनुं एवुं महा यंत्र छे. ते यंत्ररचना सात गाथाए करी देखाडे छे.

ए यंत्रमां पांच कोठा आडा अने पांच कोठा उन्भा काढवा त्यारे ते पचीस थाय तेमां वचला पांच आडा कोठामां " क्षिपॐ स्वाहा " ए पांच अक्षरमांनो एकेक अक्षर एकेक खानामां लखवो तेमज उन्भां वचलां पांच खानांमां पण लखवा. तेमां क्षि ए पृथ्वी बीज छे. प ए अप् बीज छे ॐ ए तेजो बीज छे. स्वा ए वायु बीज छे. हा ए आकाश बीज छे. हवे ते यंत्रनी शरुआतमां जे आडी पंक्तिनां पांच खानां छे ते मां

हे लखवा योग्य अंको नीचली गाथाए बतावे छे.

पणवीसाय असिआ के० ते यंत्रनी आमी उल नां जे पांच खानां छे तेना प्रथम खानामां पच्चीश नो आंक लखवो तथा बीजा खानामां एंशीनो अंक लखवो तथा त्रीजा खानामां तो क्षि अक्षर लखेलोज छे, तथा चोथा खानामां पंदर अने पांचमामां पच्चा सनो अंक लखवो, ए प्रमाणे सामान्य केवलीमां श्रेष्ठ एवा तीर्थंकरोना समुदायनो यंत्र ते नक्तिये करी युक्त एवा नव्य जीवोनां सघलां पाप कर्मने नाश करो।श।

वीसा पणयालाविअ के० हवे ए यंत्रनी बीजी आमी उलना पेहेला खानामां वीसनो अंक लखवो तथा बीजा खानामां पीस्तालीसनो अंक लखवो अने त्रीजा खानामां तो प लखेलोज छे तथा चोथा खाना मां तीसनो अने पांचमामां पंचोतेरनो अंक लखवो. ए प्रमाणे सरवे मली एकसो सित्तेर तीर्थंकरो थया, ते ग्रह, व्यंतर, राक्षस, शाकिनी ए सर्वथी थता घोर उपसर्गोने नाश पमामो ॥ ३ ॥

सित्तरि पणतीसावित्र के० हवे ए यंत्रना त्रीजी

आमी उलना पांचे खानामां क्षिपॐस्वाहा ए पांच अक्षरो लखेला छे. तेथी चोथी आमी उलना पेहेला खानामां सित्तेरनो अने बीजामां पांत्रीसनो अंक लखवो त्रीजामां स्वा लखेलो छे. चोथामां साठ, अने पांचमामां पांचनो आंक लखवो, ए प्रमाणे ए तीर्थंकरनो समूह ते व्याधि जल के० पाणीना अथवा जर के० ताव सन्निपातादिक, जलण के० अग्नि वगेरेना, वाघना, दुष्ट हाथीना, चोरना, अने शत्रुना जे मोहोटा नय तेने हरण करो. ॥ ४ ॥

पणपन्ना य दसेव य के० ए यंत्रनी पांचमी आमी उलना पेहेला खानामां पंचावन्न अने बीजामां दसनो आंक लखवो वली त्रीजामां हा अक्षर लखेलोज छे चोथामां पांसठ अने पांचमामां निश्चे चालीसनो अंक लखवो. सर्वे अंकोना मली सरवाले एकसोसित्तेर जिनो ते म्हारा शरीरने रक्षा करो. ते जिनो केवा छे? तो के देवता अने असुरे प्रणाम कर्यो छे जेमने एवा छे तथा जे सिद्ध थया एवा छे. ॥ ५ ॥

ॐ हरहुंहः सरसुंसः के० हरहुंहः ए चार बीजाक्षरो जे छे तेणे करी पद्मा, जया, विजया अने अपरा

जिता ए चार देवीउनां नाम अनुक्रमे प्रत्येक बीजे जाणवां, तथा सरसुंसः ए चार बीजाक्षरो जे छे ते मोहोटा प्रन्नाववाला तथा व्यंतरादिक दुष्ट देवोए करेला उपसर्गोना निवारण अर्थे छे. तथा वली प्रथम लखेला हरहुंहः ए चार बीजाक्षरोने विषे ह अक्षर सूर्य बीज छे ते दुरितनो नाश करनार छे, तथा र अक्षर अग्निबीज छे ते पापने बालनार छे, तथा हुं अक्षर जे छे ते क्रोधबीज छे, तथा कवच (बखतर) पण छे ते नूतादि त्रासक छे अने कवच (बखतर)पणाथी आत्मरक्षक पण छे, तथा ह अक्षर संपुटित छे. पछी सरसुंसः ए चार बीजाक्षरो जे छे तेमां स अक्षर चंद्रबीज छे, तथा र अक्षर अग्निबीज छे, सुं अक्षर शामक बीज एटले सर्व दुरितने शांत करनारुं छे, वली सः अक्षर संपुटित छे. तथा आरंन्नमां ॐ शब्द छे ते पंच परमेष्टि वाचक छे. हवे ए आठ बीजाक्षरो खानामां कये कये ठकाणे लखवा ते कहे छे.

ॐ शब्दनो उच्चार करीने यंत्रनी आगली पंक्तिमां ज्यां ३५–७०–१५–५० अंको नरेला छे ते खानामां ते

अंको नीचे अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो ल खवां, तथा बीजी पंक्तिमां २०--४५--३०--७५ ए अंको नीचे अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां, त्रीजी पंक्तिमां क्षिपॐ स्वाहा लखेलुंज छे, चोथी पं क्तिमां ७०--३५--६०--५ ए अंको नीचे वली बीजी वार अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो लखवां, त था पांचमी पंक्तिमां ५५--१०--६५--४० ए अंको नीचे अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां, अने व ली समस्त प्रकारे करीने लख्युं छे साधन करनार पु रुषनुं नाम ॐकार सहित, जे यंत्रना मध्यन्नागना म ध्य खानाने विषे एवो निश्चे सर्वतोन्नद्र एटले नत्री लीटीनी गणनाए, तथा आमी लीटीनी गणनाए, तथा तीर्छि पंक्तिनी गणनाए, तथा खुणानी पंक्तिनी गण नाए ए पंक्तिना सर्व प्रकारे अंको गणतां १७० थाय छे ते माटे सर्वतोन्नद्र एवुं नाम छे जेनुं एवो ते यंत्र जा णवो, तथा वली सर्व प्रकारे कल्याण थाय छे माटे सर्वतोन्नद्रनाम जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे ते यंत्रना चारे तरफना पार्श्व प्रदेशोने वि

षे रह्यां एवां जे शोल खानां तेने विषे सोल विद्यादेवी उनां नाम लखवां ते कहे छे.

ॐ रोहिणि पन्नत्ति के० अहीं सोल विद्या देवीउनां नाम ते ॐ (प्रणवबीज) ह्रीं (मायाबीज) श्रीं (लक्ष्मीबीज) एवां त्रण बीज सहित लखवां. तथा अंतमां नमः पद पण लखवुं; जेमके प्रथम ॐ ह्रीं श्रीं रोहिण्यै नमः, तेमज बीजो प्रज्ञप्त्यै नमः, त्रीजी वज्रशृंखलायै नमः, तथा वलीचोथी वज्रांकुश्यै नमः पांचमी चक्रेश्वर्यै नमः, छठी नरदत्तायै नमः, सातमी काल्यै नमः, आठमी महाकाल्यै नमः, नवमी गौर्यै नमः, दशमी गांधार्यै नमः, अगिआरमी महाज्वालायै नमः, बारमी मानव्यै नमः, तेरमी वैरुट्यायै नमः, चौदमी अछुप्तायै नमः, पंदरमी मानस्यै नमः, सोलमी महामहामानस्यै नमः, एवी हे विद्यादेवीउ तमे रक्षण करो ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ सर्वतोभद्रयंत्र ॥

२५ ह ॐह्रींश्रींरो हिण्यैनमः	८० र ॐह्रींश्रींप्र ज्ञप्त्यैनमः	क्षि	१५ हुं ॐह्रींश्रींवज्र शृंखलायैनमः	५० हः ॐह्रींश्रींव ज्रांकुश्यैनमः
२० स ॐह्रींश्रींच क्रेश्वर्यैनमः	४५ र ॐह्रींश्रींनर दत्तायैनमः	प	३० सुं ॐह्रींश्रींका ल्यैनमः	७५ सः ॐह्रींश्रींमहा काल्यै नमः
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह ॐह्रींश्रींगौ र्यैनमः	३५ र ॐह्रींश्रींगां धार्यैनमः	स्वा	६० हुं ॐह्रींश्रींमहा ज्वालायैनमः	५ हः ॐह्रींश्रींमान व्यै नमः
५५ स ॐह्रींश्रींवैरु ट्यायैनमः	१० र ॐह्रींश्रींअ च्छुप्तायैनमः	हा	६५ सुं ॐह्रींश्रींमान स्यैनमः	४० सः ॐह्रींश्रींमहा मानस्यैनमः

भूमिसु–भूमिमां	कणय–सोनुं	लिहिऊण–लखीने
उप्पन्न–उत्पन्न थयुं	विद्दुम–परवालां	खालिअं–धोइने
विविह–विविध	मरगय–मरकतमणि	पीयं–पीधो होय
रयणाइ–रत्नादि	घण–मेघ	एगंतर–एकांतरीओ
वन्न–वर्ण	सन्निहं–सरखो	मुग्गं–मोगक (रोग)
उव–अति	पूइअं–पूजित	पणासेइ–नाश करे छे
सोहिअं–शोभितुं	वाणवंतर–वाणव्यंतर	जंतं–यंत्र
चउतीस–चोत्रीस	जोइस–ज्योतिषि	दुवारि–द्वारमां
अइसय–अतिशय	वासी–वसनारा	पडिलिहियं–प्रतिलेख न करेलो
जुआ–युक्त	विमाण–विमान	विजयवंत–विजय करतो
कय–करी	उवसमंतु–उपशांत थाओ	निब्भंतं–निःसंदेह
सोहा–शोभा	चंदण–चंदन	अच्चेह–अर्चन करो
झाएअव्वा–ध्यान धरवा योग्य	कप्पूरेणं–कपूरे करी	
पयत्तेणं–प्रयत्ने करीने	फलए–पाटीआमां	

पंचदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नं स
त्तरिं जिणाण सयं ॥ विविह रय
णाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरि
आइं ॥ ए ॥ चउतीसअइसयजु
आ, अठमहापाडिहेरकयसोहा ॥

तिह्वयरा गयमोहा, झाएअव्वा प
यत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणय सं
खविहुम, मरगयघण सन्निहं विग
यमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, स
व्वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ नवणवइ वाणवंतर, जोइसवा
सी विमाणवासी अ ॥ जे केवि
डुठ देवा, ते सव्वे नवसमंतु मम॥
स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं,
फलए लिहिऊण खालिअं पी
अं ॥ एगंतराइ गह नू, अ सा
इणि मुग्गं पणासेइ ॥१३॥ इअ
सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डुवारि
पडिलिहिअं ॥ डुरिआरि विज
यवंतं, निप्नंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

पंचदस कम्मभूमिसु के० अढीद्वीपमां पंदर कर्मभूमि (पांचभरत, पांचऐरवत, अने पांच महाविदेह)ने विषे उत्पन्न थएला एवा एकसो सीत्तेर तीर्थंकर, विविध रत्नादिकना वर्णथी उपशोभित, ते अमारा दुरितोनो नाश करो. ए रीते उत्कृष्टकालने विषे पांचभरतने विषे पांच तीर्थंकर, पांच ऐरवतने विषे पांच तीर्थंकर, तथा एक महाविदेहने विषे बत्रीस विजयो एवां पांच महाविदेहनां एकसोसाठ विजय, ते दरेक विजये एकेक तीर्थंकर थाय छे. एटले सर्व मली एकसो सीत्तेर तीर्थंकर थाय. एम जेवारे कोइपण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह न थाय तेवारे उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर तीर्थंकर थाय छे, ते काल श्री अजितनाथ तीर्थंकरना समयने विषे थयो ॥ ए ॥

चउतीस अइसयजुआ के० चोत्रीस अतिशयोये करी युक्त, तथा वली केवा छे? तो के आठ महाप्रातिहार्योये करी छे शोभा जेमनी एवा, वली केवा छे? तो के गयो छे मोह जेमनो एवा तीर्थंकरो प्रयत्ने करीने ध्यान करवा योग्य छे ॥ १० ॥

ॐ वरकणयसंख विद्दुम के० केटलाक तीर्थंकरो

नो श्रेष्ट सोना जेवो पीलो, केटलाकनो शंख जेवो धोलो, केटलाकनो प्रवालां जेवो रातो, केटलाकनो म रकत मणीना जेवो लीलो, तथा केटलाक तीर्थंकरो नो मेघना जेवो श्याम वर्ण छे तथा गयो छे मोह जे थकी तेने विगत मोह कहीए; अर्थात् आ गाथामां क हेला विविध वर्णवाला जिनोनुं सप्तत्यधिकशत ते के वुं छे? तो के सर्व देवताउए पूजेलुं छे तेने हुं पण वंद न करुंछुं अने स्वाहा के० सु एटले रूडुं अने आह ना म कहे छे तेने स्वाहा कहीए. अर्थात् ए जिनेश्वरोने नमस्कार करवाथी शोभन सुखादिक थाय छे. अथवा बीजो अर्थ एम केः--"स्वाहा देवहविर्दाने" एम कहे लुं छे ए शब्द देवोने होम आपवाना दानने विषे प्रव र्ते छे. ते आपवा वरू करीने देवो संतुष्ट थाय छे॥११॥

ॐ नवणवइ वाणवंतर के० ॐ ते पंच परमेष्टि वाचक पद जाणवुं जे कोइ पण मिथ्यादृष्टि दुष्ट देवो छे, ते सर्वे आ स्तवनना प्रभावथी उपशांत हो. ते क या दुष्ट देवो? तो के भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क वासी, तथा विमानवासी देवो छे ते स्वाहाना अर्थ पृ

र्वे प्रमाणे जाणवो ॥ १२ ॥

चंदनकप्पूरेणं के० चंदन, अगरु, कुंकुम तथा कर्पूरादिके करी लाकमाना पाटीआने विषे लखीने, तथा कोइक पुरुषो कहे छे के पवित्र कांसाना थालादिने विषे कर्पूर, गोरोचन, चंदन, अगरु, कस्तूरी वगेरेनो कर्दम करीने, तेनावमे सात वखत लेपन करीने छायामां सूकवीने तेनी उपर ए यंत्रने लखी, पुष्प धूपादिके पूजन करीने प्रातःकालमां धोइने पीधो होय, तेमना एकांतरीआदि ताव तथा अशुन्न ग्रह तथा न्नूत, व्यंतर, शाकिनी, मोगक वगेरे रोग, न्नूत प्रेतादि आवेश तथा कामण आदिने नाश करे छे ॥ १३ ॥

इअसत्तरिसयं के० आ एकसो सित्तेरिया यंत्रने रूमे प्रकारे निःसंदेह करीने हे न्नव्य जीवो! निरंतर अर्चन करो. ते यंत्र केवो छे ? तो के बारणाने विषे वा शुद्ध स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीते प्रतिलेखन करेलो छे, वली कष्टो अने शत्रुउने जीतनारो छे. केटलाक एम कहे छे के ए यंत्रने रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने घरने विषे पूजन करवुं, अने काम पमे त्यारे

शुद्ध जलथी तेने धोइने ते धोवण पी जवुं ॥ १४ ॥

अथ श्री नमिऊणना छुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ८ सुधीना.

नमिऊण–नमीने	अनल–देवता [णखा	भीसण–भयंकर
पणय–प्रणमेला	फुलिंग–अंगाराना त	संभंत–संभ्रांत
चूडा–मुकुट	निद्दड्ढ–बाल्यां	विसंठुल–विव्हल
मणि–मणिओ	सव्वंगा–सर्व अंग	निज्जामय–खलासीओ
रंजिअं–रंजित	आराहण–आराधन	मुक्क–मूक्यो
चलण–चरण	वुड्ढिय–वृद्धि पामेला	वावारे–व्यापार जेमां
जुअलं–युगल, जोडुं.	च्छाया–शोभा	अ–नहीं
संथवं–संस्तव	उच्छाहा–उत्साह	विदालिय–भाग्युं
वुच्छं–कहीश [हेलां	दड्ढा–दाझेला	जाणवत्ता–वहाण
सडिय–सडेलां, को-	पायव– झाड	खणेण–क्षणमां
नह–नख	पत्ता–पाम्या	इच्छिअं–इच्छित
निव्वुड्ड–बेठेली	लच्छिं–लक्ष्मीने	कूलं–कांठो
नासा–नाशिका	दुव्वाय–दुष्ट पवन	नमंति–नमेछे
विवन्न–विनष्ट	[मणा	नरा–पुरुषो
लायन्ना–लावण्य	उप्भड–उदार–बीहा	
कुट्ठ–कोढ रोग	कल्लोल–लेहेरो	

॥ अथ नमिऊण स्तोत्र ॥

नमिऊण पणयसुरगण, चूडामणि

किरणं जिअं मुणिणो ॥ चलण
जुअलं महाजय, पणासणं संथ
वं वुछं ॥ १ ॥ सडियकरचरण न
ह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लाय
न्ना ॥ कुठमहारोगानल, फुलिंग
निदछसवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चल
णाराहणा, सलिलंजलि सेय वु
ढियछाया ॥ (उछाहा) ॥ वण दव
दछा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो ल
छिं ॥ ३ ॥ डुवायखुभिअजलनि
हि, उप्भड कल्लोलनीसणारावे ॥
संन्नंतन्नयविसंठुल, निद्यामय मु
क्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जा
णवत्ता, खणेण पावंति इछिअं
कूलं ॥ पासजिणचलण जुअलं,
निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥

अर्थः--नमिऊणपणयसुरगण के० नमस्कार करनारा देवताउना समूह, तेना मस्तकने विषे रहेला जे मुगट, तेने विषे रहेली जे मणिउ तेना किरणोए करीने रंजित एवुं, तथा रोग, जल, वगेरेना मोटा ज्ञयने प्रकर्षे करीने नाश करनारुं एवुं, जे पार्श्वनाथ मुनिनुं चरण युगल, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारना संस्तवने कहीश ॥ १ ॥

सडियकरचरणनहमुह के० सडी गयां ठे हाथ, पग, नख, अने मुख जेमनां एवा, तथा बेशी गएली ठे नाशिका जेमनी एवा, तथा विनष्ट थयुं ठे लावण्य जेमनुं एवा, कोढरूप महान् रोगना अंगाराना अग्नि समान तणखाए करी बाळ्यां ठे सर्व अंग जेमनां एवा॥२॥

ते तुह चलणा राहण के० तेवा प्राणीउ पण हे पार्श्वनाथ ! तमारा चरणोनुं सेवन ते रूप पाणीनी अंजलिना सेचने करी वधी ठे शोज्ञा जेमनी एवा ठता, फरीने लक्ष्मीने प्राप्त थाय ठे. जेम वनना अग्निए करी बलेलां पर्वतनां वृक्षो ठे, ते जेम वृद्धि पामी ठे शो

न्ना जेमनी, एवां थाय छे; वली वुढि ञ्डाहा एवो पण पाठ छे तेनो अर्थ एम जाणवो जे, दवथी दाझेलां वृक्षो वरसादना जले करी नवपल्लव थाय छे; तेम कुष्टादि महारोगी तमारा चरणाराधान रूप अमृते सीं चाएला छता पाछा कामदेवना जेवा रूपने पामे छे॥३॥

छुव्वाय खुभिय के० छुष्ट पदने क्षोभित करेला समुद्रना छदार एवा कल्लोलना न्नयंकर छे शब्दो जेने विषे एवा, तथा हवे शुं करवुं जोइए? एवा विचार क रवाने विषे मूढ थएला, तथा न्नयथी विव्हल थया ए वा खलासीछ, तेणे मूक्या छे व्यापार जेने विषे ॥४॥

अविदलिअ जाणवत्ता के० छपर कह्या तेवा स मुद्रमां नथी न्नाग्युं वहाण जेमनुं एवा छता क्षणे क रीने इच्छित एवा कांठाने पामे छे ते कया जनो? तो के पार्श्वजिनना चरण कमलने निरंतर नमन करे छे, अथवा पूजे छे, अने नमस्कार करे छे ते जनो समुद्र ना पारने पामे छे ॥ ५ ॥

गाथा ६ थी ११ सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

खर–आकरो
पवण–पवन
उद्धुअ–सलगावेलो
मिलिय–मलेली
दुम–झाड
गहणे–गहन जेने वि पे
डज्झंत–दाजती
मुद्ध–मुग्ध
मयवहु–मृगवधु (हरणी)
रव–आक्रंद
वणे–वनमां
निव्वाविअ–होलव्यो
आभोअं–आभोग (पिंड)
संभरंति–स्मरणकरेछे
मणुआ–मनुष्यो
जलणो–दावाग्नि
विलसंत–सुशोभित
भोग–फणा, देह

फुरिअ--चपल
अरुण–आरक्त
तरल–चंचल
जीहालं–जीभ
उग्ग–उग्र
भुअंगं–भयंकर सर्प
सथ्थहं–सरखो
आयारं–आकार, चाल
मन्नंति–माने छे
कीड–कीडो
सरिसं–सरखो
परिच्छूढ–समस्तप्रकारे टाल्यो छे
विसम–आकरो
वेगा–वेग
नामख्खर–नामाक्षर
फुड–प्रगट
गुरुआ–मोटा
अडवीसु–अटवीओमां
भिल्ल–भिल्ल
तक्कर–चोर

पुलिंद–वनचर
सद्दुल–सिंह शार्दूल
भीमासु–भयंकर
विहुर–विव्हल
वुन्न–दुःखित
अकायर–भील
उल्लूरिअ–लूंटया
पहिअ–पंथीओना
सथ्थासु–साथो(जेमां)
विलुत्त–चोरलुं
विहव–विभव, धन
सार–उत्तम
मत्त–मात्र
ववगय–गया
विग्धा–विघ्न
सिग्घं–शिघ्र (उवलो)
हिअ–हृदयमां
इच्छिअं–इच्छित
ठाणं–स्थानकने

खरपवणुद्धुअवणदव, जालावलि मिलिय सयलडुमगहणे ॥ डझंत मुद्ध मय वहु, नीसणरव नीसणं मि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कम जुअलं, निव्वाविअ सयल तिहु अणाजोअं ॥ जे संजरंति मणु आ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहा लं ॥ उग्गजुअंगं नवजल, य स हं जीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नं ति कीड सरिसं, दूर परिछूढ वि सम विसवेगा ॥ तुह नामरकर फु ड सि, द्धमंत्त गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥ अमवीसु जिल्लतक्कर, पुलिंदसद्दुलसद्द जीमासु ॥ जय

विहुरवुन्नकायर, ज्ज्लूरिअ प
हिअसन्नासु ॥ १० ॥ अविलुत्त
विहव सारा, तुह नाह पणाम
मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं,
पत्ता हिय इछियं गाणं ॥ ११ ॥

अर्थः--खरपवणुद्धुअ के० प्रचंम एवा वायुए करी उद्धत एवो जे वननो अग्नि तेनी ज्वालानी श्रेणीए करीने परस्पर एकाकारे थया छे समग्र वृक्षोना गहन जेने विषे तथा दाऊती एवी जे मुग्धहरणीउ तेना ज्ञयंकर आक्रंद शब्दे करीने ज्ञयंकर थएला वनने विषे अग्नि ज्ञय करतो नथी ॥ ६ ॥

जग गुरुणो के० जगत्गुरु पार्श्वनाथ स्वामीनुं चरण युगल ते चरण युगल केवुं छे ? तोके सुखीउ कर्यो छे त्रण ज्ञुवनना विस्तारने जेणे एवुं छे. एवा चरण कमलने जे मनुष्यो स्मरण करेछे, ते जनोने प्रथम कहेलो दावाग्नि ज्ञय नथी करतो ॥ ७ ॥

वली वीजो अर्थ एवो छे के दहन अथवा पाप

एवुं जे वन, तेनो अंत छे जेमां एवा दावानलनी सर
ल ज्वालाना आकुलितपणाए करीने मुढ एवा वन
ना पशुउना घणा नयंकर आक्रंदे करीने नयन्नित थ
एला एवा वनमां ॥ ६ ॥ जगगुरुणो के० पोतानासा
मर्थ्यथी थएला जगतना गुरु जे पार्श्वनाथ स्वामीनुं
चरणयुगल के जेणे आपत्तिना तापने समावीने सु
खी कर्युं छे परिपूर्ण त्रण नुवन एवुं जे छे, ते एवा
चरणयुगलने जे मनुष्यो संन्नारे छे, तेमने पूर्वोक्त दा
वाग्नि नय करतो नथी ॥ ७ ॥

विलसंत नोग निसण के० सुशोन्नित फणा छे
जेनी एवो, तथा नयंकर चपल अने रातां छे नेत्र जे
नां एवो, तथा चंचल छे जीव्हा जेनी एवो नयंकर
सर्प, वली ते सर्प केवो छे ? तोके नवीन मेघना जे
वो श्याम वर्ण छे ॥ ८ ॥

मन्नंति कीम सरिसं के० एवा सर्पने कीमा सह
श माने छे. कोण माने छे? तोके दूर कर्यो छे चारे त
रफ टाल्यो छे, आकरो एवो विषनो वेग जेणए, ते को
णे टाल्यो छे ? तो के हे श्री पार्श्वनाथ ! तमारुं ना
माक्षर तेज स्फुट छे प्रन्नाव जेनो, तेणे करीने सिद्ध

थयेलो एवो एटले पार्श्व ए वे अक्षरोए करीने सिद्ध थ एला एवा गारुमादिक मंत्रे करीने मोटा एवा मनुष्यो, जे लोकने विषे छे, तेज पूर्वोक्त सर्पने कीमा समान माने छे. ॥ ए ॥

अमवीसु जिल्लतक्कर के० जे अटवीउमां जील तथा चोर लोक, वनचर जीवो अने सिंहोना मारो, हणो इत्यादि शब्दोथी बीहामणी तथा जये करीने विव्हल तथा डुःखित एवा पुरुषोने जिल्ल लोकोयें लूंट्या छे वटेमार्गुना साथो जेने विषे एवी अटवीउ छे ॥१०॥

अविलुत्तविहवसारा के० एवी सर्व अटवीउमां पण हे श्री पार्श्वनाथ! नथी चोर्युं उत्कृष्ट धन जेनुं ते कया पुरुषनुं धन नथी चोर्युं ? तोके हे नाथ! तमोने प्रणाम मात्र करवानो व्यापार छे जेमने, तेमना उतावला विघ्न समूह विशेषे करीने गया छे जे थकी एवा पुरुष, पोताना हृदयने विषे इछित एवां पोतानां नगरादिक अथवा गाम वगेरे स्थानकने पामे छे ॥ ११ ॥

गाथा १२ थी १५ सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

पज्जलिअ–प्रज्वालेत	कुलिस–वज्र	गइंद–हाथी
वियारिय–फाडयुंछे	घाय–घात [देलुं	कुंभत्थल–कुंभस्थल
ं–मुख	विअलिय–विशेषे भे	आभोअं–विस्तार

पणय—नमता	गणंति—गणे छे	महु—मध
ससंभम—एकाएक	धवल—धोलुं	पिंग—पीला [क
पथ्थिव—राजा	दंत—दांत	अच्चासंनं-अति नजी
पडिय—पडयुंछे	मुसल—सांबेलुं	तुंग—उंचुं
पडिमस्स-प्रतिबिंबजेमे	दीह—दीर्घ	समल्लीणा—सम्यक् री
पहरण—शस्त्र	कर—सुंढ	ते आश्रय करेलो
सीहं—सींहने	उल्लाल—उछालवुं	छे जेमणे एवा
कुद्धं—क्रोधायमान	वाड्ढि—वृद्धि	

पज्जलिआनलनयणं, दुरवियारि यमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघा यविअलिअ, गइंदकुंभत्थला भोअं ॥ १२ ॥ पणयससंभम प त्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ प डिमस्स॥तुह वयणपहरणधरा, सी हं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ स सिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंगनयणजुअ लं,ससलिलनवजलहराराबं॥१४॥

त्नीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते
न विगणंति ॥ जे तुम्ह चलण
जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा
॥ १७ ॥

पज्जलिआनलनयणं के० प्रज्वलित एवा अग्निना जेवां नेत्रवालो, तथा खावाने माटे दूरथी जेणे मुख फाड्युं छे एवो तथा मोटा देहवालो, तथा नखरूप वज्रना प्रहारे करी विशेषे भिन्न कर्या छे हाथीनां कुंभस्थलना विस्तार जेणे एवो ॥ १२ ॥

पणयससंभमपत्थिव के० पूर्वे कह्यो ए प्रकारनो क्रोधायमान थयो एवो पण सिंह जे छे, तेने नथी गणता. कोण नथी गणता ? तो के आदर सहित नमेला एवा जे राजाउ तेनुं प्रभुना नखरूप मणिमाणिक्यने विषे पड्युं छे प्रतिबिंब जेमने एवा तमे छो, ते तमारा वचने करी जे नाम ग्रहण करवुं, ते रूप शस्त्रोने धारण करनार एवा जनो पूर्वोक्त सिंहने गणता नथी अर्थात् तेनाथी डरता नथी ॥ १३ ॥

ससि धवलदंतमुसलं के० हे मुनिपते ! ते नरो अतिशये करीने ढूकडा एवा पण मोटा हाथीने नथी गणाता. ते गजेंद्र केवो छे ? तो के बीहामणो तथा चंद्रमा सरखा धोला छे दांत रूप मुशल जेने एवो, अने लांबा शुंढादंडना उंचा उछालवे करी वध्यो छे उत्साह जेनो एवो, तथा मधु एटले मधना जेवां रातां ने पीलां छे नेत्र जेनां एवो तथा जले करी पूर्ण एवा नवीन मेघनी गर्जना जेवो छे शब्द जेनो एवो छे. वली ते नरो केवा छे ! तो के तमारा चरणयुगल प्रत्ये आश्रय करीने रह्या एवा छे. ते तमारुं चरणयुगल सर्वथी गुणोए करी उन्नत एवुं छे. सर्वनो भावार्थ ए के तमारा चरणाश्रितनरोने उपर कहेलुं हाथीनुं भय होतुं नथी ॥ १४--१५ ॥

॥ गाथा १६ थी २१ सुधी छुटा शब्दना अर्थ॥

समरम्मि–संग्राममां	उद्धुय–नाचतां [धड	सिक्कार–सीत्कार
तिक्ख–तिक्षण	कवंधे–मस्तकविनानां	पउरम्मि–अतिशय
खग्गा–खड्ग	कुंत–भाला [देलां	निज्जिय–जीत्याछे
अभिग्धाय–प्रहारे	विणिभिन्न–विशेषभे	दप्प–दर्प (अहंकार)
पविद्ध–विंधावाथी	कलह–जुवान हाथी	उद्धर–धरनारा

रिउ-शत्रु	उआरं-उदार	पंथे-मार्गमां
निवहा-समूह	भविय-भव्य	उवसग्गे-उपसर्गमां
भडा-सुभटो	जण-जन [रनारु	रयणीसु-रातने विषे
जसं-जश	आणंदयरं-आनंदक	ताणं-ते बेनुं
पसामिण-समावनार	निहाणं-निदान	कइणो-कर्त्तानुं
प्पभावेण-प्रभावे	कुसुमिण-कुस्वप्न	माणतुंगस्स-मानतुंग आचार्यनुं
मइंद-सिंह	दुस्सउण-खोटाशुकन	अच्चिअ-अर्चित, पूजित
रण-संग्राम	रिख्ख-अशुभ ग्रह	
भयाइं-भयो	पीडासु-पीडामां	
संकित्तणेण-कीर्त्तनवडे	संझासु-संध्यामां	
पसमंति-शांतिपामेछे	दोसु-बे (मां)	

समरम्मि तिख्कखग्गा, भिग्घाय
पविद्धउद्धुयकबंधे ॥ कुंत विणि
भिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार
पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धर
रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं ध
वलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पा
स जिण तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥

रोग जल जलण विसहर, चोरा
रि मइंद गय रण जयाइं ॥ पास
जिण नाम संकि, त्तणेण पसमं
ति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महान
यहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआ
रं ॥ नविय जणाणंदयरं, कह्णा
ण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय
नय जक्ख रक्खस, कुसुमिण उ
स्सउण रिक्ख पीमासु संझासु दो
सु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु
॥ २० ॥ जो पढइ जो अ नि सु
णइ, ताणं कइणो य माणतुंग
स्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयल
भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

अर्थः--समरम्मि तिक्खखग्गा केण तीक्ष्ण खड्
ना प्रहारे करी कपाएलां आम तेम नाचवा लाग्यां

छे मस्तक विनानां धड जेने विषे एवा, तथा ज्वालाथी विशेषे करीने जेनां अंग भेदाएलां छे एवा जुवान हाथीना मुकेला अतिशय सीत्कारे करी प्रचुर एवा संग्रामने विषे ॥ १६ ॥

निज्जिअ दप्पुद्धर के० जीत्या छे अहंकारमां मदोन्मत्त थएला शत्रु राजाउंना समूह जेमणे एवा सुभटो जे ते, पापना प्रकर्षे करी शमावनार हे पार्श्वजिन! तमारा प्रभावथी उज्ज्वल एवा जशने पामे छे ॥१७॥

रोग जल जलण विसहर के० रोग, पाणी, अग्नि, चोर, सर्प, शत्रु, सिंह, हस्ती, संग्राम तेना सर्व भय ते पार्श्वजिनना श्रद्धा पूर्वक नामनुं कीर्त्तन करवाथी प्रकर्षे करी शांतिने पामे छे, ते एवी रीते के फरी उत्पन्न थाय नहीं. आ ठेकाणे मंत्र कहे छे ते जेमकेः- " ॐ नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रीँ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण भयाइं ॥ पासजिण नाम संकित्तणेण. पसमंति ममस्वाहा" आ महामंत्र छे ते आ स्तोत्रना वेराएला अक्षरोए करी उत्पन्न करेलो छे ॥ १८ ॥

एवं महाभय हरं के० ए पूर्वोक्त कह्युं एवुं पार्श्व जिनेंद्रनुं स्तवन केवुं छे ? तोके मोहोटुं एवुं जे भय तेने हरनारुं छे. आ पदे करी आ स्तोत्रनुं नाम भयहर जाणवुं. वली केवुं छे ? तोके अर्थ अने शब्दथी उदार छे, वली भव्य जनने आनंद करनारुं छे, तथा कल्याणनी संततिनुं कारण रूप छे. तथा बीजी रीते एवो अर्थ थाय छे के भविक जनोने कल्याणनुं एक स्थान एवुं छे; वली शत्रुउना कपट तथा उच्चाटनादिने बांधनारुं छे अर्थात् प्रकारांतरे करी एम जाणवुं जे क्षुद्र कर्मोने बंधन करनारुं छे. ॥ १९ ॥

रायभयजरक रस्कस के० राजभय, यक्षभय, राक्षस भय, कुस्वप्न भय, तथा दुःशुकन भय, तथा अशुभ ग्रह ते सर्वनी पीमाउने विषे, तथा बे संध्याने विषे, तथा मार्गने विषे, तथा उपसर्गोने विषे, तथा रात्रिउने विषे ॥ २० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ के० जे कोइ जन आ पार्श्वनाथनुं स्तवन भणे छे, तथा जे उपयोग पूर्वक सांभले छे, ते बेहु जननुं तथा आ प्रस्तुत स्तोत्रना

कर्त्ता एवा मानतुंगसूरिनुं, प्रभु जे पार्श्वजिन ते, पाप विनाश करो. ते पार्श्वजिन केवा छे ? तोके सर्व जगतुना जनोए पूजेलां छे चरण जेमनां एवा छे ॥२१॥

गाथा २२ थी २४ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

उवसग्गंते–उपसर्ग कारक	मज्झयारे–मध्यमां	समरण–स्मरण
कमठासुरम्मि–कमठासुर छते	अख्खरेहिं–अक्षरोथे	संतुठ–संतुष्ट [आठ
झाणाओ–ध्यानथी	जाणइ–जाणे छे	अठुत्तरसय–एकसो
संचलिओ–चलावाया	सो–ते	वाहि–व्याधि
जुवईहिं–युवतिओए	झायइ–ध्यान करे छे	नासइ–नासे छे
एअस्स–एना(आना)	पयथ्थं–पदस्थ	दूरेण–दूरे
	फुडं–स्वरूपे	
	पासह–पार्श्वनाथनुं	

उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि झाणा
उ जो न संचलिउ ॥ सुर नर कि
न्नर जुवइहिं, संथुउ जयउ पास
जिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मझयारे,
अठारस अख्करेहिं जो मंतो॥ जो
जाणइ सो झायइ, परम पयथ्थं

फुरुं पासं ॥ १३ ॥ पासह समर
ण जो कुणइ, संतुठे हिययेण ॥
अठुत्तर सय वाहि जय, नासइ
तस्स दूरेण ॥ १४ ॥

उवसग्गंते कमठा केण उपसर्ग करनार एवा कमठासुर छते पण जे भगवान ध्यानथी चलायमान थया नहीं; वली केवा छे ? तोके देव, मनुष्य, किन्नर, अने ते सर्वनी स्त्रीउए रूरू प्रकारे स्तुति करेला एवा श्री पार्श्वजिन, ते जय वृद्धिने पामो ॥ १२ ॥

एअस्समझयारे के० आ स्तोत्रना मध्यने विषे वेरेला अक्षरोए करी "नमिऊणपासविसहरवसहजिणफुलिंगं" ए अढार अक्षरोये करीने जे चिंतामणि नामा गुप्त मंत्र छे, तेने जे गुरु उपदेशथी जाणे छे, ते था तेवा मंत्रे करी पार्श्वनाथने ध्यान करे छेः ते पार्श्वनाथ केवा छे ? तोके स्वरूप उत्तम एवा स्थानकने विषे रहेनारा छे ॥ १३ ॥

पासह समरण जो कुणइ केण जे जीव संतुष्ट हृदये करीने, पार्श्वनाथने स्मरण करे छे ते जीवोना

एकसोने आठ एवा व्याधि संबंधि जे भय ते दूर नासे छे ॥ ४४ ॥ इति ॥

भक्तामरना छुटा शब्दना अर्थ. गाथा १ थी ५ सुधीना.

भक्त–भक्तिमंत
प्रणत–नमेलो
मौलि–मुकुट
प्रभाणां–कांतिओने
उद्योतकं–प्रकाश करनारुं
दलित–दल्युं छे
तमो–अंधारानो, अज्ञाननो
वितानं–समूह
युगादौ–युगनी आदिमां
आलंबनं–आधार
पततां–पडेलाने
वाङ्मय–शास्त्रनुं–रहस्य

बोधात्–जाणवाथी
उद्भूत–उत्पन्न थइ
पटुभिः–कुशल वडे
हरैः–हरण करनारां
उदारै–उदार
स्तोष्ये–स्तवीश
किल–निश्चे
बुद्धया–बुद्धिए
विना–रहित
विबुध–देव
पीठ–आसन
स्तोतुं–स्तुति करवाने माटे
समुद्यत–उद्यमवाली
वि–विशेषे
गत–गइ छे

त्रपो–लाजवालो
बालं–बालक
विहाय–विना
स्थितं–रहेलुं
इंदु–चंद्रमा
अन्य–बीजो
इच्छति–इच्छा करेछे
सहसा–ततकाल
ग्रहीतुं–पकडवाने
वक्तुं–कहेवाने
गुणान्–गुणोने
शशांक–चंद्रमा
कांतान्–मनोहर
कः–कयो
ते–तमारां
क्षमः–समर्थ

सुरगुरु–बृहस्पति
प्रतिम–जेवा
कल्पांत–प्रलयकाल
उद्धत–उछलता
नक्रचक्रं–मगरमच्छ
तरिंतुं–तरवाने
अंबुनिधि–समुद्र

भुजाभ्यां–बे हाथे
वशात्–वशथी
कर्तुं–करवाने
प्रीत्या–प्रीतिए करीने
आत्म–आत्मा
अविचार्य–अणावि
चारीने

मृगेंद्रं–सिंहने
अभ्येति–सामो थाय
किं–शुं
शिशोः–बालकना
परिपालन–रक्षण
अर्थं–अर्थे

अथ भक्तामर स्तोत्र.

भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभा
णा, मुद्योतकं दलितपापतमोवि
तानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले
पततां जनानाम् ॥ १ यः संस्तुतः
सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूत
बुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः॥ स्तो
त्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरै रुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्र

म् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनापि विबु
धार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम
तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय
जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इ
च्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥ व
क्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांकका
न्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽ
पि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनो
द्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबु
निधिं भुजाभ्यां॥४॥ सोऽहं तथा
पि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं
स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः॥ प्री
त्यात्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगें
द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः प
रिपालनार्थं ॥ ५ ॥

अर्थः—भक्तामरप्रणतमौलि के० भक्तिमंत एवा देवताना नमेला जे मुगट तेने विषे रहेला जे मणिउ तेनी कांतिउने प्रकाश करनारुं एवुं, तथा दळ्यो छे पापरूप अंधकारनो समूह जेणे एवुं, तथा संसाररूपी समुद्रमां पमेला भव्यजनोने युगनी आदिमां एटले त्रीजा आराना अंतमां आधारभूत एवुं श्री तीर्थंकरनुं पाद युगल तेने रुमे प्रकारे नमस्कार करीने ॥ १ ॥

यःसंस्तुतः सकलवाङ्मय के० जे भगवान, सर्व शास्त्रना रहस्यने जाणवा थकी उत्पन्न थएली निपुण बुद्धिए करी कुशल एवा, देवलोकना नाथ जे इंद्रो, तेणे त्रण जगतनां प्राणीनां चित्तने हरण करनारां तथा अर्थथी उदार एवां स्तोत्रोए करीने स्तुति करायेला छे, तेवा चोवीश जिननी अपेक्षाए सर्व जिनोमां पेहेला जिनेंद्र श्री ऋषभस्वामीने हुं पण निश्चे करी स्तवीश ॥ २ ॥

बुद्ध्याविनापि के० देवताउ अथवा पंमितोए पूजन करेलुं एवुं छे पग राखवानुं आसन जेमनुं, तेना संबोधनने विषे हे विबुधार्चित पादपीठ ! बुद्धि विना

पण विशेषे करीने गइ छे लज्जा जेनी एवो छतो स्तु ति करवानी रूपे प्रकारे प्रयत्नवती करेली छे बुद्धि जेनी एवो हुं छुं. जेमके पाणीने विषे पमेलुं चंद्रमानुं प्रतिबिंब तेने तरत पकमवाने बालक विना बीजो क यो मनुष्य इच्छा करे छे? अर्थात् कोइ नहीं. तेम हुं पण तमारुं स्तोत्र करवाने अशक्य छतो पण स्तुति करवाने अभिलाष करुं छुं. माटे मने गतलज्ज बाल कज जाणवो ॥ ३ ॥

वक्तुंगुणान् के० हे गुणसमुद्र ! तमारा चंद्रमा ना जेवा उज्वल जे गुणो छे तेने कहेवाने बुद्धिये क रीने बृहस्पति समान एवो पण कयो पुरुष समर्थ था य छे ? अर्थात् कोइ नहीं. जेम प्रलयकालना पवने क रीने जेने विषे मगरमछना समूह उछली रह्या छे, ए वा समुद्रने बे हाथे करीने परिपूर्ण तरवाने कोण सम र्थ थाय? अर्थात् कोइ न थाय. तेम तमारी स्तुति क रवाने बृहस्पति समान पुरुष पण समर्थ थाय नहीं ॥४॥

सोऽहं तथापि के० हे मुनीश ! हुं तमारुं स्तो त्र करवाने असमर्थ छुं, तो पण भक्तिना वश थकी,

शक्ति रहित एवो पण हुं मानतुंग नामा आचार्य तमारी स्तुति करवाने प्रवृत्त थयोछुं; जेम हरण स्नेह्हे करीने पोताना बलने अणविचारीने पोताना बालकनुं रक्षण करवाने अर्थे सिंह प्रत्ये शुं युद्ध माटे न जाय?॥५॥

गाथा ६ थी १० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

परिहास-हांसी मश्करी
धाम-ठेकाणुं
त्वत्-तमारी
मुखरी कुरुते-वाचाल करे छे
बलात्-बलात्कारथी, जोरथी
कोकिल-कोयल
किल-सत्य
मधौ-चैत्र मासमां
विरौति-बोले छे
चारु-मनोहर
चूत-आंबो
कलिका-मोहर,कली
निकर-समूह
संतति-परंपरा
सन्निबद्धं-बंधायेलुं
क्षणात्-घडीना छठ्ठा भागमां, क्षणमां.
क्षयं-क्षयने
उपैति-पामे छे
भाजां-भजनाराना
आक्रांत-व्यापेलो
अशेषं-सघलुं
आशु-उतावळे
सूर्य-सूरज
अंशु-किरण
शार्वर-रातनुं
मत्वा-मानीने
मया-में
इदं-आ
आरभ्यते-आरंभ कराय छे
तनुधिया-मंदबुद्धि वालाए
प्रभावात्-प्रभावथी
हरिष्यति-हरशे
सतां-संतपुरुषोनां
नलिनी-कमल
दलेषु-पत्रमां
ननु-निश्चे
उद-पाणी (नुं)
बिंदु-टपकुं
आस्तां-दूर रहो
अस्त-नाश पाम्याछे
दुरितानि-पाप (ने)
हंति-हणे छे
प्रभा-कांति
आकरेषु-समूहमां
पद्माकरेषु-सरोवरोमां
जलजानि-कमलोने

विकाश-विकस्वरपणुं	भवंतं-तमोने	आत्म-पोतानी
भांजि-भजनारा	अभिष्टुवंत-स्तुति क रनारा	सम-बराबर
भूतैः-साचा		
भुवि-जगतमां	भूत्या-संपत्तिये	

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु चूत कलिकानिकरै कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव संततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ॥ आक्रांत लोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलि

नीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननू
दबिंडुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तव
नमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां डुरितानि हंति ॥ दूरे सह
स्त्रकिरणः कुरुते प्रत्नैव, पद्माकरे
षु जलजानि विकाशजांजि॥ए॥
नात्यद्भुतं जुवनजूषणजूतनाथ, जू
तैर्गुणैर्जुवि जवंतमजिष्टुवंतः ॥
तुल्या जवंति जवतो ननु ते न
किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्म
समं करोति ॥ १० ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां के० श्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषोने हा स्य करवाना स्थानक रूप एवा थोमा ज्ञानवाला मने, तमारी जक्ति बलात्कारथी स्तोत्र करवाने वाचाल करे ने. त्यां दृष्टांत कहे ने; जे माटे चैत्र मासमां कोयल मधुर स्वर बोले ने ते बोलवाने खरेखर

ना मोरनो समूह तेज एक कारण छे; तेम मने बोला ववाने तमारी भक्तिज एक कारण छे ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन के० हे जिन ! देहधारी जीवोनुं भवरूप संसारनी परंपराए करी बंधाएलुं पाप ते, तमारा रूडा संस्तवने करी घडीना छठाभागे क्षयने पामे छे. कोनी पेठे ? तोके लोकमां व्यापी रहेलो एवो अने भमराना जेवो कालो तथा अंधारी रातथी उत्पन्न थयो एवो अंधकार, ते सूर्यना किरणना प्रकाशथी तरत नाश पामे छे तेनी पेठे जाणी लेवुं ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव के० हे नाथ एम मानीने मंद बुद्धिवालो एवो पण हुं जे छुं, तेणे तमारुं आ स्तवन जे छे, ते करवाने आरंभ कराय छे; ते, तमारा प्रभाव थकी, संत पुरुषोनां चित्तने हरण करशे, परंतु खल पुरुषोनां चित्तने हरण नहीं करे; एवी सूचना करवाने अर्थे " सतां " ए पदग्रहण कर्युं छे. तीहां उपमान कहे छे केः—कमल पत्रने विषे पडेलो एवो जे पाणीनो बिंदु ते कमलना प्रभावे करी मोतीनी कांतिना जेवी शोभाने निश्चे पामे छे ॥८॥

आस्तां तव स्तवनं के० हे देव ! नाश पाम्या छे समग्र दोष जे थकी एवुं तमारुं स्तवन जे छे ते दूर रहो ! परंतु तमारी कथा मात्र करवी, ते पण जगत्वासी लोकोनां पापने हणे छे; तीहां उपमा कहे छे; सूर्य जे छे ते तो दूर रहो ! परंतु तेनी प्रज्ञा जे छे, तेज कमलना समूहवालां सरोवरने विषे रहेलां कमलोने विकस्वर करे छे ॥ ए ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ के० हे जगतने विषे भूषणरूप ! सत्य एवा तमारा गुणोए करीने जगतने विषे तमोने स्तुति करनारा जनो, रूपे तथा गुणे करीने तमारी बरोबर थाय छे, तेमां अति आश्चर्य नथी, प्रभमां हे नाथ ! जे कोइ धनवान स्वामी आ लोकने विषे पोतानो आश्रय करीने रह्यो एवो जे सेवक तेने महत्त्वे करीने पोतानी बराबर नहीं करे, तो ते स्वामीए करीने शुं ? ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

दृष्ट्वा–जोइने
अनिमेष–एकी नजरे
विलोकनीयं–जोवा योग्य
तोषं–संतोषने
पीत्वा–पीने
पयःपाणी
कर–किरणो
दुग्धसिंधोः–क्षीरसमुद्रना
क्षारं–खारु
अशितुं–पीवाने
इच्छेत्–इच्छा करे
रुचिभिः–छायावाला
परमाणुभिः–परमाणुए
निर्मापितः–निर्माण करेला

ललामभूत–तिलकसमान
तावंत–तेटला
खलु–निश्चय
अणवः–परमाणुओ
पृथिव्यां–पृथ्वीमां
अपरं–बीजुं कोइ
अस्ति–छे
क्व–क्यां
हारि–हरण करनार
निःशेष–समस्त
निशाकरस्य–चंद्रमानुं
वासरे–दीवसमां
पांडु–पीलुं
पलाश–खाखरानुंझाड
कलाप–समूह
शुभ्रा–उजला

लंघयंति–उल्लंघन करेछे
तान्–तेमने
निवारयति–निवारण करे छे
संचरतः–विचरता
यथेष्टं–पोतानी इच्छाये
चित्रं–आश्चर्य
अत्र–ए ठेकाणे
यदि–जो
त्रिदश–देवताओ(नी)
अंगनाभिः–स्त्रीओए
नीतं–पमाड्युं
मनाग्–किंचित्, लगार
मरुता–वायरावडे
चलित–चलाव्या
अचलेन–पर्वत जेणे
कदाचित्–क्यारे पण

दृष्ट्वा भवंतमनिमेष विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य च

हुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति
दुग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधे
रशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शां
तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, नि
र्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति
॥१२ ॥ वक्त्रं क ते सुरनरोरगने
त्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयो
पमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व
निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडु
पलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमं
डलशशांककलाकलाप, शुभ्रा
गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये
संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, क

स्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्
॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रि
दशांगनाभि, र्नीतं मनागपिमनो
न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतका
लमरुता चलिताचलेन, किं मंदरा
द्रिशिखरं चलितं कदाचित्॥१५॥

अर्थः—दृष्ट्वा भवंतमनिमेष के० मिषोन्मिष रहितपणे करीने जोवा लायक एवा तमोने जोइने ते जोनारा लोकोनी आंखो बीजा देवोने विषे संतोष न पामे; जेम चंद्रमाना किरणनी कांति जेवी उज्ज्वल कांतिवाला क्षीर समुद्रनुं पाणी पीने कयो पुरुष लवण समुद्रनुं खारुं पाणी पीवानी इच्छा करे ? ॥ ११ ॥

यैः शांतरागरुचिभिः के० त्रण भुवनने विषे एकज तीलक समान माटे हे त्रिभुवनैकललाम भूत ! जे शांत रसना भावनी छाया छे जेमने विषे, एवा परमाणुए करीने निर्माण करेला शरीरवाला तमे छो, अने ते परमाणुओ जगतमां तेटलाज छे; कारण के पृ

ष्वीने विषे तमारा सरखुं बीजुं कोइ रूप नथी ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते के० हे नाथ ! देवताउ, मनुष्यो तथा नागकुमार प्रमुख देवताउना चक्षुने हरण करवानुं छे शील जेनुं एवुं, वली समस्त त्रण नुवनने विषे जेनी उपमा देवाय (एवां कमल, चंड, दर्पण) एवा पदार्थना सौंदर्यने जीत्युं छे जेणे एवुं तमारुं मुख ते क्यां ? अने कलंके करी मेलुं, अने दिवसे खाखराना जाम्नना पांदमा जेवुं पीलुं थइ जाय एवुं चंडमानुं बिंब क्यां ? अर्थात् तमारा मुखने चंडमानुं उपमान घटतुं नथी.॥१३॥

संपूर्ण मंम्नल के० हे त्रण जगतना ईश्वर ! संपूर्ण मंम्नलवाला (पूनमना) चंडमानी कलानो समूह तेना सरखा उज्ज्वल एवा तमारा गुणो ते त्रण नुवनने उल्लंघन करे छे, एटले तमारा ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि गुणो छे ते त्रण नुवनथी उपरांत छे. वली जे गुणो, एक एवा अने त्रण नुवनना स्वामी एवा, नगवंतने आश्रय करी रहेला छे, ते पोतानी इच्छाए विचरता एवा गुणोने कोण निवारण करी शके ? ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि के० हे प्रन्नो ! छद्मस्थ अ

वस्थाए विचरता एवा तमे, तेमनुं मन जो देवताउनी स्त्रीउए किंचित् मात्र पण विकारना स्थानकने न प माड्युं, एटले तमारा मनने लगार मात्र क्षोभ न प माड्यो; तो ए ठेकाणे आश्चर्य शुं ? अर्थात् कांइ नहीं. केमके मोटा पर्वतोने चलायमान कर्या छे जेणे एवा प्रलय कालना वायुए करीने क्यारे पण मेरुपर्वतनुं शिखर चलायमान थाय ? अर्थात् ते वायुए बीजा पर्वतोने चलायमान कर्या परंतु मेरुपर्वतने न कर्यो तेम ते देवतानी स्त्रीउ तमोने चलायमान करी शके नहीं. ।१५।

गाथा १६ थी २० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

निर्–गयेलो, रहित.	गम्यः–जवा योग्य	उदर–मध्यभाग
धूम–धूमाडो	जातु–क्यारे पण	निरुद्ध–रोकायो
वर्त्ति–दीवट	दीपः–दीवो	वदनस्य–मुखने
अपवर्जित–वर्जित थ एलुं, रहित.	अपर–बीजो	वारिदानां–मेघोना
तैल–तेल	असि–छो	विभ्राजते–शोभे छे
पुरः–पूरवुं	स्पष्टिकरोषि–स्पष्ट क रोछो	अब्जं–कमल
कृत्स्नं–समग्र	सहसा–एक दम	विद्योतयत्–प्रकाश करतुं
प्रकटी–प्रगट	युगपत्–समकाले	अपूर्व–अपूर्व
करोषि–करो छो	अंभोधर–मेघ	शर्वरीषु–रात्रिओमां

अह्नि-दिवसे	न (मां)	हरि-कृष्ण
विवस्वता-सूर्य वडे	कार्यं-प्रयोजन	हरादिषु-शिववगेरेमां
युष्मत्-तमारा	कियत्-शुं, केटलुं	स्फुरन्-देदीप्यमान
इंदु-चंद्रमा	जलधरै-मेघवडे	याति-पामे छे
दलितेषु-दले छते	नम्रैः-नमेला	महत्त्वं-मोटाइ
तमस्सु-अंधकारो(ने)	त्वयि-तमारामां	शकले-ककडामां
निष्पन्न-पाकेला	यथा-जेवी रीते	किरणाकुलेपि-किरणो
शालि-डांगेर	विभाति-शोभे छे	ए सहितने विषे पण,
शालिनि-शोभायमा	अवकाशं-अवकाश	कांतिवाळामां पण.

निर्धुमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृ
त्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्यो न जातु मरुता चलताचला
नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जग
त्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचि
दुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरो
षि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभो
धरोदर निरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यांति
शायिमहिमासि मुनींद्र लोके

॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहम
हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न
वारिदानां ॥ विभ्राजते तव मुखा
ब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्व
शशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्व
रीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, यु
ष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ॥
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीव
लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभा
रनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा
हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फु
रन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं
तु काचशकले किरणाकुलेपि॥२०॥

अर्थः—निर्धुमवर्त्तिरपवर्जित केण हे नाथ ! तमे
जगत्प्रकाशक रूप बीजा दीवा छो. ते केवी रीते

त्यां कहे छे. के गयो छे द्वेषरूप धुमाडो अने कामवश
तारूप दीवट जे थकी एवा अपूर्व दीपक तमे छो. व
ली केवा छो ? तो के गयुं छे स्नेह प्रकाशरूप तेलनुं पूर
णुं जे थकी, एटले बीजा दीवाउमां तो तेल पूरवुं प
डे छे, पण तमे ते रहित छो. वली केवा दीपक छो ?
तो के आ समग्र त्रण जगतने प्रगट करो छो एटले के
वल ज्ञानरूप उद्योते करीने प्रकाश करो छो. वली के
वाछो ? तो के पर्वतोने चलायमान करनार वायराए क
रीने क्यारे पण जावा योग्य नथी अर्थात् उलवाता नथी;
अने लौकिकदीपकतो पवनथी उलवाइ जाय छे.॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि के० हे मुनींद्र! तमे ज
गतने विषे सूर्यथकी घणा महिमावाला छो, केमके सू
र्य तो अस्त पामे छे अने तमे कदापि पण अस्त पा
मता नथी; वली सूर्य राहुग्रस्त थाय छे एटले तेनुं ग्र
हण थाय छे पण तमे राहुग्रस्त थता नथी; वली सू
र्य तो एक जंबुद्वीपने प्रकाश करे छे, अने तमे तो
त्रण जगतने साथेज प्रकाश करो छो; वली सूर्य तो वा
दलथी ढंकाएलो छे अने तमे तो ज्ञानावरणादिक पां
च आवरणरूप मेघ तेना मध्य भागथी रोकायो नथी

मोटो महिमा जेनो एवा छो. ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलित मोह के० हे नाथ ! तमारुं मुखरूप कमल अपूर्व चंद्रमाना बिंब जेवुं शोभे छे ते केवी रीते ? तो के तमारुं मुखरूप कमल तो निरंतर उदय पामेलुं छे अने चंद्र बिंब तो निरंतर उदय थवा वालुं नथी. वली तमारुं मुख अज्ञानरूप मोटा अंध कारने दली नांख्यो छे जेणे एवुं छे अने चंद्रबिंब ते वा गुणवालुं नथी. तथा वली चंद्रमा तो राहुना मुखने ग्रसवा योग्य छे अने तमारुं मुख तेवुं नथी. तथा वली चंद्रबिंब तो क्यारेक पण अल्प कांति वालुं थाय छे, अने तमारुं मुख तेम थतुं न थी. तथा वली मेघ चंद्रबिंबने आच्छादन करवाने श क्तिमान् छे, अने तमारा मुखने आच्छादन करवाने अ शक्य छे. वली चंद्रबिंब तो एक जंबुद्वीपनेज प्रकाश करे छे अने तमारुं मुख तो त्रण जगत्ने प्रकाशित करे छे माटे हे प्रभु ! अपूर्व शशांकबिंबपणुं ते तमारा मुखकमलने योग्यज छे. ॥१८॥

किं शर्वरिषु शशिनाह्नि के० हे नाथ ! तमारा मुख रूप चंद्रमाए अज्ञानरूप अंधकारोने दलन करे

छते पछी रात्रिउने विषे (उगनारा) चंद्रमाए करीने अथवा दिवसे (उगनारा) सूर्य वडे शु कार्य थवानुं छे? कांइ नहीं. त्यां दृष्टांत कहे छे के जेम पाकेला शालिना वने करी शोभायमान थएला एवा मृत्यु लोकने विषे जलना भारे करी नमेला एवा मेघो तेमणे करी शुं प्रयोजन ? अर्थात् कांइ नही. ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति के० हे नाथ ! अनंत पर्यायात्मक जे पदार्थो तेने विषे कर्यो छे अवकाश एटले प्रकाश जेणे एवुं केवलज्ञान ते जेवी रीते तमारे विषे शोभे छे, तेवी रीते पोतपोताना शासनना स्वामी एवा हरिहरादिक जे देवो छे तेने विषे ए प्रकारनुं नथी शोभतुं. त्यां दृष्टांत कहे छे के, जेवी रीते प्रकाश देदीप्यमान मणिउने विषे गौरवताने पामे छे, ते वी रीते ते चलकता एवा पण काचना कटकाने विषे गौरवताने नथी पामतो. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान छे तेवुं अन्य देवोमां नथी. ॥ २० ॥

गाथा २१ थी २५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

मन्ये–हुं मानुंछुं	दृष्टेषु–दीठे छते	एति–पामे छे
दृष्टा–दीठा	तोषं–संतोषने	वीक्षितेन–देखेला

भुवि-पृथ्वीमां
येन-जे कारणे
भवता-तमोए
कश्चित्-कोइ
भवांतरेऽपि-बीजा भवमां पण
शतानि-सेंकडो
शतशः-सेंकडो गमे
जनयंति-जन्म आपेछे
त्वदुपमं-तमाराजेवा
प्रसूता-जन्म आप्यो
दधाति-धारण करेछे
भानि-नक्षत्रो
रश्मि-किरण
प्राची-पूर्व
जनयाति-उत्पन्न करेछे

स्फुरत्-प्रकाशमान
अंशु-किरण
जालं-समुह
त्वां-तमोने
आमनंति-कहेछे
परमं-मोटा
पुमांसं-पुरुष
परस्तात्-आगल
उपलभ्य-मेलवीने
पंथाः-मार्ग
अव्ययं-क्षय रहित, फेरफार नहीं थइ शके तेवुं.
असंख्यं-संख्यारहित
ब्रह्माणं-ब्रह्माने

ईश्वरं-ईश्वरने
अनंतं-अंतरहित
अनंग-कामदेव
केतुम्-पूंछडीओतारो
विदित-जाण्यो
प्रवदंति-कहेछे
बुद्धः-बुद्धदेव.
बोधात्-बोधथी.
शंकरोसि-तुं शंकरछुं
धाता-विधाता
विधेः-विधिना
विधानात्-करवाथी
व्यक्तं-प्रगटपणे
पुरुषोत्तम-नारायण उत्तम पुरुष.

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु
येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं
वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरे
पि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शत

शो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दि
शो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्रा
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजाल
म् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः
परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं
तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगु
पलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शि
वः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः॥२३॥
त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमा
द्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम्
॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः
॥ २४ ॥ बुधस्त्वमेव विबुधार्चित
बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवन

त्र्यंबकशंकरत्वात् ॥ धातासि धी
र शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं
त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥२५॥

अर्थः—मन्ये वरं हरिहरादय के० हुं विचार करुं छुं के हरिहरादिक देवो दीठा तेज सारुं थयुं. केमके ते मने दीठे छते मारुं चित्त ते तमारे विषे संतोषने पामे छे; अने देखेला एवा तमोये करीने शुं? तो के हे नाथ ! जे तमारा दर्शने करीने पृथ्वीने विषे कोइ बीजो देव भवांतरने विषे पण मारुं मन हरण करतो नथी अर्थात् मने गमतो नथी ॥ २१ ॥

स्त्रीणां शतानि के० हे नाथ ! लोकने विषे सेंकडो स्त्रीयो सेंकडो गमे पुत्रोने जन्म आपे छे खरी, परंतु ते बीजी माता तमारी उपमा देवाय एवा पुत्रने जन्म आपती न हती. त्यां दृष्टांत कहेछे के, सर्व दिशाउ नक्षत्रोने धारण करेछे, परंतु एक पूर्व दिशाज देदीप्यमान किरणना समूहवाळा अने हजार छे किरण जेनां एवा सूर्यने उत्पन्न करेछे. अर्थात् जेम एक पूर्व दिशा सूर्यनी जननी छे तेम एक तमारी माताज त

मारा सरखा सुपुत्रनी जननी छे. ॥ २२ ॥

त्वामामनंति मुनयः के० हे मुनींद्र! जे साधु जनो छे ते तमने अंधकाररूप दुरितनी आगल सूर्यना सरखा कांतिवाला एवा अने रागद्वेष रहित थवाथी निर्मल अने उत्तम पुरुष एटले निःकर्मा सिद्ध एवा कहे छे; तथा तमोनेज रूडे प्रकारे पामीने ते मुनिओ मृत्युने जीते छे, माटे बीजो कोइ निरूपद्रव एवो मोक्षनो मार्ग नथी. ॥ २३ ॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्य के० हे प्रभु ! तमोने संत पुरुषो कहे छे जे तमे क्षय रहित छो, वली परमेश्वर छो, वली चिंतवन नहीं थइ शके एवा महिमावंत छो, वली गुणोनी संख्या रहित छो, वली पेहेला तीर्थंकर छो, अथवा लोक सृष्टीना हेतुपणाथी सर्वनी आदिमां छो, अथवा पंच परमेष्ठीमां पेहेला छो, वली ब्रह्म (निवृत्तिरूप) छो, वली सर्व देवना ईश्वर छो, वली अंत रहित छो, वली कामदेवने नाश करवाने माटे केतु समान छो, वली योगी (सामान्य केवली) तेमना ईश्वर छो, वली ज्ञानीपुरुषोए अष्टविध योग तमाराथी जाण्यो छे ए

था छो, तथा ज्ञाने करी अनेक छो, सर्व जाणकार हो वाथी सर्व व्यापक छो माटे पर्यायथी अनेक छो, वली तमाराथी बीजुं कोइ उत्तम नथी माटे एक छो अथवा जीवद्रव्यनी अपेक्षाये द्रव्यथी एक छो, क्षायिक स्वरूपी छो, अढार दोषरूप पापमल रहित माटे निर्मल छो.॥२४॥

बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चित के० हे नाथ! देवताउए पूजित कर्यो छे केवलज्ञाननो बोध जेमनो एवा माटे तमेज बुद्ध देव छो, तथा त्रण त्नुवनने सुखना करनार होवाथी तमेज शंकर देव छो, तथा हे धीर! तमेज मोक्ष मार्ग तेनो विधि जे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप रत्नत्रय तेना निष्पादन करवाथी विधाता (ब्रह्मा) छो, वली हे त्नगवंत! तमेज प्रगटपणे पुरुषोत्तम ते नारायण देव छो. ॥ २५ ॥

गाथा २६ थी ३० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

आर्त्ति-पीडा	भूषणाय-अलंकारने	को-शो, शुं
हराय-हरनारने	उदधि-महासागर	विस्मय-आश्चर्य
क्षितितल-पृथ्वीनी सपाटी	शोषणाय-शोषण करनार (ने)	अत्र-अहीं, एमां
		निरवकाशतया-निरं

तरपणे
उपात्त–ग्रहण करेलुं
विविध–जूदा जूदा प्रकारना
जात–उत्पन्न थया
गर्वैः–गर्ववडे
स्वप्नांतरे–स्वप्नमां
ईक्षितो–जोयेलो
उच्चैः–उंचा
अशोकतरु–अशोकवृक्ष
उन्नू–उंचा
मयूख–किरणो
आभाति–शोभेछे

नितांतं–अत्यंत.
वितानं–समूह
रवेः–सूर्य(नुं)
पयोधर–मेघ [थकुं
पार्श्ववर्त्ति–पासे रहुं
शिखा–पंक्तिओ
वपुः–शरीर
अवदातं–मनोज्ञ
वियत्–आकाश.
विलसत्–प्रकाशता
लता–शाखाओ
तुंग–उंचो
शिरसि–माथाउपर

सहस्ररश्मेः–सूर्यना
कुंद–मोगरानां फुल
अवदात–उज्ज्वल
चामर–चामर
कलधौत–सुवर्ण
शुचि–निर्मल
निर्झर–झरण
वारि–पाणी.
धारं–धारा.
तट–शिखर
शातकौंभ–सोनुं

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतःपरमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय॥२६॥ कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निर

वकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त विविधाश्रयजात गर्वैः, स्वप्नांतरे पि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, मा नातिरूपममलं जवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो वितानं, बिंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥२८॥सिंहासने मणिमयूख शिखा विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कन कावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदं शुलता वितानं, तुंगोदयाद्रि शिर सीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदा वदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राज ते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उच्च च्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चै

स्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥२०॥

अर्थ—तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ केo हे नाथ ! त्रण भुवननी पीडा हरनार एवा तमोने नमस्कार हो, तथा पृथ्वीतलने विषे निर्मल अलंकार रूप एवा तमोने नमस्कार हो, अथवा पृथ्वीतल एटले पाताल अने अमल केo स्वर्ग तेना भूषण रूप एवा तमोने नमस्कार थाओ, तथा त्रण जगतना प्रभु एवा तमोने नमस्कार हो, तथा हे श्री वीतराग, संसार रूप समुद्रने शोषण करनारा एवा तमोने नमस्कार हो ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि केo हे मुनिजनना ईश्वर ! जो तमे समग्र गुणोए निरंतरपणे रूडा प्रकारे आश्रय कराएला छो तो एने विषे शुं आश्चर्य ? कांइ नहीं. अने ग्रहण करेला एवा जे विविध आश्रयो तेणे करीने उत्पन्न थया एवा गर्वरूप जे अवगुण तेना दोषे करीने सहित एवा जनोये तमो स्वप्नांतरने विषे पण क्यारे पण जोवाएला नथी ॥२७॥

उच्चैरशोकतरु केo हे जिन ! अशोकवृक्ष नीचे बेठेला छो ते समये उचां छे किरणो जेना एवुं तमारुं

शरीर ते अत्यंत निर्मल शोभे छे. जेम के प्रगट ऊंचां गएलां छे किरणो जेनां एवुं सूर्यबिंब जे छे ते मेघना पासे रह्युं थकुं जेम होय नहीं? एटले सूर्य पोतानां किरणो वडे करीने अंधकारना समूहने अस्त करी नांखीने एटले नाश करीने शोभाने पामे छे, तेम तमे अशोकवृक्ष नीचे बेठा थका शोभाने पामोछो. ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूख के० हे देव! मणिउना किरणोनी पंक्तिउए करीने चित्र विचित्र एवा सिंहासनने विषे सुवर्णना सरखुं मनोज्ञ एवुं तमारुं विचित्र शरीर ते विशेषे करीने शोभे छे. त्यां दृष्टांत कहेछेः- ऊंचा एवा उदयाचल पर्वतना शिखर उपर जे आकाश तेने विषे उद्योतमान किरणोनी शाखाउना समूह छे जेने एवा सूर्यनुं बिंब ते जेम शोभाने पामे छे. तेम प्रभुनुं शरीर सिंहासन उपर शोभा पामेछे ॥२९॥

कुंदावदातचलचामर के० हे नाथ! मोगराना फुल जेवा उज्ज्वल अने चंचल एटले इंद्रादिके वींजेला एवा जे चामरोए करीने मनोहर शोभावालुं अने सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं तमारुं शरीर ते विशेषे

करीने शोभे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे के उदय पामेल चंद्रमा सरखुं निर्मल, अने निर्झरणाना पाणीनी जलधारा जेने विषे वही रही छे एवुं सुवर्णमय, जे मेरुपर्वतनुं उंचुं शिखर जेम शोभे छे, तेम तमारुं शरीरपण शोभे छे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

विभाति-विशेषेशोभेछे
स्थितं-रहेलुं
स्थगित-ढांक्यो छे
मुक्ताफल-मोती
प्रकर-समूह
जाल-रचना
वृद्ध-वृद्धिपामेली छे
शोभं-शोभा जेनी
प्रख्यापयत्-प्रख्यात करतुं
उन्निद्र-विकासित
हैम-सोनुं
पुंज-ढगलो
पर्युल्लसत्-चारे तरफ उछलतुं
पदानि-पगलां
धत्तः-मूके छे
पद्मानि-कमलोने
परिकल्पयंति-रचना करे छे
इत्थं-एवी रीते
विभूतिः-अतिशयनी संपदा
अभूत्-थइ
परस्य-बीजानी
यादृक्-जेवी
दिनकृतः-सूर्यनी
हत-हण्यो
तादृक्-तेवी
कुतः-क्यांथी
श्च्योतत्-झरतो
आविल-कलुष थएलुं एवुं
कपोलमूल-गंडस्थल
भ्रमर-भमराना
नाद-शब्द
कोपं-कोप
ऐरावत-हाथी
आभं-कांति
इभं-हाथी
आपतंतं-सामो आवतो

गलव-नीचे पडया	बद्ध-बांधेली छे	हरिण-हरण
शोणिताक्त-लोही थी खरडाएला	क्रम-फाल	अधिप-राजा
	क्रम-पग	नाक्रामति-दबावतो नथी
भूषित-शोभाव्यो	गतं-गएलु	

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्ध
शोभं, प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्व
रत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंक
जपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयुखशि
खाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव
यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र वि
बुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इ
त्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, ध
र्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
याहक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधका

रा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशि नोपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल विलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३४॥ भिन्नेभकुंभगलउज्ज्वलशोणिता क्त, मुक्ताफलप्रकर भूषितभूमिभा गः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं श्रितं ते ॥ ३५ ॥

अर्थः—छत्रत्रयं तव विभाति केº हे प्रभो ! चंद्रमाना सरखुं मनोहर एवुं तमारा उपर रह्युं अने ढांकी दीधो छे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणे एवुं, तथा मोतीना समूहनी रचनाए करीने विशेषे करी वृद्धि पामी छे शोभा जेनी एवुं, त्रण जगतनुं परमेश्वरपणुं

तेने प्रकर्षे करीने जणावनारुं एवुं, तमारुं छत्रत्रय जे छे ते शोभे छे; एटले तमोने एक उपर एक एम त्रण छत्र धराय छे, ते त्रण जगत्नुं स्वामिपणुं जाहेर करे छे. तेमां एक छत्रे पाताल लोकनुं स्वामीपणुं, बीजा छत्रे मृत्युलोकनुं स्वामीपणुं अने त्रीजा छत्रे करी देवलोकनुं स्वामीपणुं सूचवाय छे ॥ ३१ ॥

उन्निद्रहेमनवपंकज के० हे जिनेंद्र ! प्रफुल्लित सोनानां नव के० नव संख्या छे जेनी अथवा नव के० नवीन एवां कमलना समूहनी कांतिए करीने चारे तरफ उछलतां एवां परमेश्वरना पगना नखनां किरणोनी प्रकाशपंक्ति जेनी चारे तरफना जागमां फेली रही छे, तेणे करीने मनोहर एवां तमारां चरणो ते जे जूमिने विषे पगलां मूके छे त्यां देवताउ कमलोनी रचना करे छे; एटले बे कमल पगलांनी नीचे अने सात कमल मार्गमां रचे छे. अहींआं चरणकमलना नखनी कांति दर्पण जेवी छे अने देवताउए रचेलां सोनानां कमलनी कांति पीली छे, ते बेना मलवाथी चरणोनो विचित्र वर्ण थयो ॥ ३२ ॥

इछं यथा तव के० हे जिनेंद्र! दुर्गतिए पमता प्राणीने धारी राखे एवो जे श्रुत चारित्र लक्षण धर्म, तेना उपदेश विधिने विषे, ए पूर्वे कही एवी तमारी अतिशयनी संपदा ते जे प्रकारे थती हवी, तेवी बीजा जे हरिहरादिक देवो छे, तेनी न थइ. त्यां दृष्टांत कहे छे के जेम प्रकर्षे करी हणयो छे अंधकार जेणे एवी सूर्यनी जेवी कांति छे तेवी कांति प्रकाशित थयेला एवा ग्रहोना समूहनी क्यांथी होय? एटले सर्व था प्रकारे नज होय. एटले आठ महा प्रातिहार्य त था चोत्रीस अतिशयवाली तमारी समृद्धि जेवी हरि हरादिक देवोनी समृद्धि क्यांथी होय? कारणके ते स रागी छे अने तेमनां कर्म क्षय थयां नथी अने तमारां घातीआं कर्मक्षय गयां छे तेथी उत्तमोत्तमताना प्रभा वथी प्रातिहार्यादिक समृद्धि प्राप्त थइ छे ॥ ३३ ॥

श्च्योतन्मदाविलविलोल के० हे नाथ! झरता मदे करी कलुष थएला अने चंचल एवा गंडस्थलना प्रदेशे करी मदोन्मत्त थएलो एवो अने अहीं तहीं भ्रम ण करनारा एवा भ्रमराउना झंकार शब्दे करीने वृद्धि

पाम्यो ठे क्रोध जेनो एवो, अने ऐरावण हाथीना सर खी कांति ठे जेनी एवो, अने अंकुशादिक शस्त्रोने नहीं गणतो एवो जे हाथी तेने सन्मुख आवता एवा ने जोइने तमारा आश्रय करीने रहेला एवा (नक्त) जनोने नय नथी थतुं ॥ ३४ ॥

निन्नेनकुंन्न के० नेदन करेला एवा हाथीना कुं नस्थल थकी नीचे पड्या एवा उज्ज्वल वर्णयुक्त एवा लोहीथी खरडाएला मोतीना समूहे करी शोना व्यो ठे पृथ्वीनो नाग जेणे तथा कीलित ठे पग जेना एवो हरिणोनो अधिप जे सिंह ते पण तमारा चरण युगरूप पर्वत तेने आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष जो ते सिंहनी फाल तेने विषे प्राप्त थएलो होय, तोपण तेने ते सिंह प्रहार करवाने शकतो नथी; एटले हे प्रनु! तमारा आश्रित जनोने पूर्वे कहेलो एवो सिंह पण प राजव करतो नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ

वन्हि—अग्नि	उत्फुलिंगं—उंचा ग	नी इच्छावाल
कल्पं—सरखो	या छे तणखा जेना	संमुखं—सन्मुख
ज्वलित—सलगेलुं	जिघत्सु—खाइ जवा	आपतंतं—अ ५

शमयाति-शान्त करेछे
रक्तेक्षणं-राती आं खवालुं
समद-मदोन्मत्त
नीलं-कालुं, श्याम.
फणिनं-सर्प
उत्फणं-उंची फणा वालो
आक्रामति-उल्लंघन करेछे
निरस्तशंक-शंका रहित
नागदमनी-औषधीछे
हृदि-हृदयमां
पुंसः-पुरुषना
वल्गत्-युद्ध करता

तुरंग-घोडा
गर्जित-गर्जनाए
आजौ-संग्राममां
बलं-सैन्य
बलवतां-बलवान्
भूपतीनां-राजानां
दीवाकर-सूर्य
अपविद्धं-भेदाएलुं
कीर्त्तनात्-कीर्त्तनथी
आशु-उतावले
भिदां-भेदनने
वाह-प्रवाह
वेगावतार-उतावले
तरण-तरवाने
योध-सुभट
युद्धे-संग्राममां

विजित-जीत्या
जेयपक्षा-शत्रुना वर्ग
लभंते-प्रामे छे
अंभोनिधौ-समुद्रमां
पाठीनपीठ-मच्छविशेष
भयद-भय करनारो
उल्वण-मोटो, भारे
वाडवाग्नौ-वडवानल
रंगत्-उछलता [जेमनां
यानपात्राः-वहाण छे
त्रासं-भयने
विहाय-त्याग करीने
व्रजंति-पामे छे

कल्पांतकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिं
गम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुख
मापतंतं, त्वन्नामकीर्तन जलं शम

यत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं सम
दकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं
फणिनमुत्फणमापतंतं ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नाम
नागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥३७॥
वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, मा
जौ बलं बलवतामपि भूपतीनां॥
उद्यद्दिवाकर मयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु भिदामुपैति
॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित
वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोध
भीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजे
यपक्षा,स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षु
भितभीषण नक्रचक्र, पाठीनपीठ

जयदोल्बणांबाम्बाम्भौ ॥ रंगत्तरंग
शिखर स्थितयानपात्रा, स्त्रासं वि
हाय जवत: स्मरणाद्व्रजंति॥४०॥

अर्थः—कल्पांतकाल पवनोद्धत केº प्रलयकालनो जे वायरो तेनी सहायताथी जोरमां आवी गएलो एवो जे अग्नि तेना जेवो, अने जाज्वल्यमान थएलो, उज लो, अने उंचा गया छे तणखा जेना एवो, तथा सघला जगत्‌ने गली जवानी जाणे इछा करतो होय नहीं एवो, जे वनमां लागेलो अग्नि ते अचानक सामो आवी प्राप्त थयो तेने, तमारा नामनुं किर्त्तनरूप पाणी ते निरवशेष एवा अग्निने शांत करी मूके छे ॥ ३६ ॥

रक्तेक्षणं समद केº रातां छे नेत्र जेनां एवो अने मदोन्मत्त एवो तथा कोयलना कंठ जेवो काला रंगवालो अने क्रोधे करीने उद्धत थएलो तथा उंची करी छे फण जेणे एवो जे सर्प ते उतावलो सामो आवतो होय तेने पण शंकारहित थयो थको पोताना चरण युगले करीने उल्लंघन करे छे ते कयो पुरुष उल्लंघन करे छे ? तो के जे पुरुषना हृदयने विषे तमारा ना

मरूप जे नागदमनी नामे औषधी छे, ते औषधीए करीने उग्र सर्पना भयथी पण निःशंक थायछे॥३७॥

वल्गत्तुरंग गजगर्जित केण संग्रामने विषे युद्धकरता एवा घोडा जेने विषे दोडी रह्या छे, अने हाथीनी गर्जनाए करी भयंकर शब्दो छे जेने विषे एवुं, अतिशय बलवान राजाउ तेनुं पण सैन्य ते, तमारा कीर्त्तनथी शीघ्र (उतावले) भेदनने पामे छे एटले तरत नाशी जाय छे. ते कोनी पेठे ? तो के उगता सूर्यनां किरणोनी शिखाए करीने भेदन पामेलो एवो अंधकारज जेम होय नहीं अर्थात् जेम सूर्यना किरणोथी अंधकार नाश पामे छे तेम तमारा नामना प्रभावथी संग्राममां शत्रुनुं सैन्य नाशी जाय छे ॥ ३८ ॥

कुंताग्रभिन्न केण वरछीनी अणीथी भेदेला एवा हाथीना लोहीरूप जलना प्रवाहने विषे उतावलुं प्रवेश थवुं एटले ते रुधिररूप पाणीमां तणाइ जवाने तैयार थएला तेमांथी फरी पाछा तरी नीकलवाने आतुर थएला एवा जे सुभटो तेणे करीने भयंकर देखाएवुं युद्ध तेने विषे पण तमारां चरणारविंद ते रूप

जे कमलवन तेने आश्रय करीने रहेला पुरुषो, ते न हीं जीताय एवा जे शत्रुना वर्गो ते जेमणे जीत्या छे एवा छतां जयने पामे छे ॥ ३९ ॥

अंभोनिधौ क्षुभित के० क्षोभ पमाड्या छे महा भयंकर एवा नक्रचक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य विशेष जीव जेने विषे एवा तथा भय उत्पन्न करना रो एवो भयंकर छे वडवानल अग्नि जेने विषे एवा स मुद्रने विषे उछलता एवा तरंगो तेना शृंगोनी उपर रह्युं छे वहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे छे ते तमारा स्म रणथी त्रासने त्याग करीने समुद्रपारने पामे छे एटले इच्छेला द्वीपने विषे पहोंचे छे ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४४ सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

भुग्नाः–वांका	मर्त्या–माणसो	निगड–बेडी
शोच्यां–शोचनीय	मकरध्वज–कामदेव	कोटि–झीणी अणी
दशां–दशाने	आपाद कंठं–पगथी गला सुधी	निघृष्ट–घसाएली
उपगताः–प्राप्त थया		जंघा–जंघाओ
च्युत–छोडी छे	वेष्टित–वींटाएलुं	अनिशं–निरंतर
जीवित–जीववानी	गाढं–अत्यंत	द्विपेंद्र–मोहोटो हाथी
दिग्ध–लेपाएलुं	बृहन्–मोटी	मृगराज–सिंह

अहि–सर्प	मतिमान्–बुद्धिमान	कंठगतां–कंठमां र हेली
महोदर–जलोदर	अधीते–भणे छे	अजस्त्रं–निरंतर
उथ्थं–उपन्युं	स्रजं–माला	मानतुंगम्–मानतुंगने, उंचा मानने
भिया–बीके करीने	मया–हुं जे तेणे	अवशा–स्वतंत्र
तावकं–तमारुं	रुचिर–मनोहर	
इमं–आ	वर्ण–अक्षर, रंग	

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविता शाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्ध देहा, मर्त्या भवंति मकरध्वज तु ल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमु रुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग ड कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्र मनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्व यं विगतबंधभया भवंति॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, सं ग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थं ॥ त

स्याशु नाशमुपयाति नयं नियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, नक्त्यामयारुचिरवर्णा विचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं. तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति॥

अर्थः—नद्भूत नीषण जलोदर के० हे जगन्नाथ! नत्प न्न थया एवा, नयंकर जलोदर रोगना नारे करीने वां का थया एवा अने जीववानी आशा जेमणे गेमी छे एवा, अने शोक करवा योग्य एवी दशाने प्राप्त थया एवा,मनुष्यो तमारां चरणकमलनुं जे रज ते रूप अमृ ते करी खरमाएलां छे अंग जेमनां एवा छता कामदेव समान छे रूप जेमनुं एवा थाय छे ॥ ४१ ॥

आपादकंठमुरुशृंखल के० हे कर्मबंधनरहित ! जेना पगथी मांमी गला सुधी मोटी शृंखलाउए (सां कलोए) करी निबद्ध (वींटाएलां) छे सर्व अंगो जेमनां

एवा अने अत्यंत मोटी बेमीयो तेनी कोटियो जे जी
र्णी अणीयो तेणे करीने निःशेषपणाए घसाती छे जं
घाओ जेमनी एवा दुःखित थयेला पुरुषो छतां, तमारा
नामरूप मंत्रने रात्र दिवस स्मरण करता एवा मनुष्यो
ते तरत पोतानी मेले विशेषे करीने गयुं छे बंधन भ
य जेमनुं एवा थाय छे ॥ ४२ ॥

मत्तद्विपेंद्रमृगराज के० हे प्रभो ! जे बुद्धिमान
पुरुष तमारा आ स्तवनने भणे छे ते पुरुषने मदोन्म
त्त एवा महान हस्ती अने सिंह, तथा वनाग्नि, तथा
सर्प, अने संग्राम, तथा समुद्र, तथा जलोदरादि रोग,
अने बंधीखानुं ए आठवानां थकी उत्पन्न थएलुं एवुं
जे भय ते बीके करीनेज जेम होय नहीं ? तेम उ
तावलुं नाशने पामे छे. अर्थात् आ तमारा स्तोत्रना
पाठ करनारने पूर्वोक्त आठ प्रकारना भयनो नाश
थाय छे ॥ ४३ ॥

स्तोत्रस्रजं तव के० हे जिनेंद्र ! तमारी आ लो
कने विषे जे पुरुष, स्तोत्ररूप फुलनी मालाने पोता
ना कंठने विषे निरंतर धारण करे छे ते चित्तनी उन्न

तिए करीने अत्यंत उन्नत थएलो एवो पुरुष अथवा स्तोत्रना कर्त्ताश्री मानतुंगाचार्य छे ते अस्वतंत्र एवी जे स्वर्गापवर्ग अने सत्काव्यरूप (मोक्ष) लक्ष्मीने पामे छे. हवे ते स्तोत्ररूप माळा केवी छे? तोके मान तुंगाचार्य नामक एवो हुं जे तेणे भक्ति जे श्रद्धा, अथवा पुष्पमाला पक्षे भक्ति जे विचित्र रचना तेणे करीने अने प्रभुना गुणे करीने अथवा पुष्पमाला पक्षे गुण जे सूत्र तेणे करीने बांधेली छे, गुंथेली छे. वळी केवी छे? तोके मनोहर एवा बावन अक्षर तेज छे चित्र विचत्र पुष्पो जेने विषे, अने पुष्पमाला पक्षमां मनोहर छे वर्ण जेनां एवां विचित्र पुष्पो छे जेमां एवी छे ॥ इति भक्तामर स्तोत्र ॥

॥ अथ श्री कल्याण मंदिर ॥

॥ गाथा १ थी ५ सुधीना छुटाशब्दना अर्थ ॥

मंदिरं-घर	भीत-भय पामेला	निमज्जत्-बूडता
उदार-मोटुं, उदार	मदं-आपनारुं	अशेष-समस्त
अवद्य-पाप	अनिंदितं-नहींनिंदा एलुं	पोतायमान-वहाण जेवुं
भेदि-भेदनारुं		

अभिनम्य-नमस्कार करीने
जिनेश्वरस्य-जिनेश्वरना
गरिमा-महिमा
अंबुराशेः-समुद्रनुं
सु-अतिशय
विस्तृत-विस्तार पामेली
विभुः-समर्थ शक्तिवान
विधातुं-करवाने
तीर्थेश्वरस्य-तीर्थंकरनुं
स्मय-अहंकार
धूमकेतोः-पूछडीआ तारानुं
किल-निश्चे
करिष्ये-करीश
वर्णयितुं-वर्णन करवाने

अस्मादृशा-अमारा जेवा
कथं-केम
अधीश-हे स्वामी !
अधीशाः-समर्थ
धृष्ट-धीठो
कौशिक-घूड
शिशुः-बालक
यदिवा-जो पण
दिवांधो-दिवसे आंधलो
प्ररूपयति-कहे
घर्मरश्मेः-सूर्यना
क्षयात्-क्षयथी
अनुभवं-अनुभववालो
मर्त्यः-मनुष्य
नूनं-निश्चे
गणयितुं-गणवाने
क्षमेत-समर्थ थाय
वांत-वमेलुं

पयस-जल
प्रकटो-प्रगट
यस्मात्-जे माटे
मीयेत-मापी शकाय
केन-कोना वडे
जलधेः-समुद्रनु
ननु-आशंकाने विषे
राशिः-ढगलो
अभ्युद्यतः-उद्यमवालो, सावधान
अस्मि-हुंछुं
जड-मूरख
आशय-अभिप्राय
लसत्-देदीप्यमान
आकरस्य-खाणनुं
वितत्य-विस्तारीने
स्वधिया-पोतानी बुद्धिये

॥ अथश्री कल्याणमंदिर ॥

॥ वसंत तिलकावृतम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भी
ताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मं ॥ सं
सारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोता
यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा
तुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूम
केतो, स्तस्याहमेष किल संस्तव
नं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सा
मान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरू
प, मस्मादृशाः कथमधीश भवं
त्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपय

ति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥
मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमे
त ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽ
पि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्न
नु रत्नराशिः॥४॥ अभ्युद्यतोऽस्मि
तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं
लसदसंख्यगुणाकरस्य॥ बालोऽपि
किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्ती
र्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः॥५॥

अर्थः—कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि केण आ प्रत्यक्ष मूर्ख एवो हुं सिद्धसेन दिवाकर नामा आचार्य ते श्री पार्श्वनाथ एवा, तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वरनुं निश्चे स्तवन करीश. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर केवा छे? तो के कमठनामा दैत्यना अहंकारनो नाश करवाने विषे धूमकेतुआ तारा सरखा छे, वली केवा छे?

तो के विस्तार पामी छे बुद्धि जेनी एवो बृहस्पति पोते पण जे श्रीपार्श्वनाथना महिमाना समुद्रनुं जे स्तवन तेने करवाने समर्थ थतो नथी. तो हुं क्यांथी थाउं ! त थापि स्तवना करुंछुं; ते शुं करीने स्तवना करुंछुं ? तो के ते श्री जिनेश्वरना चरणकमलने नमस्कार करीने स्तवना करुंछुं. हवे ते चरणकमल केवुं छे ? तो के मां गलिकनुं घर छे, तथा उदार के० मोटुं छे अथवा उदा र के० जव्य जीवोना मनोवांछित अर्थ देवाने उदार छे, तथा असत्य जे पाप तेने जेदनारुं छे. वली संसार जये त्रास पामता जीवोने प्रकर्षे करी मोक्षने देनारुं छे, तथा निंदारहित छे, तथा संसाररूप समुद्रने विषे बूडता सघला प्राणीउने वाहाण सरखुं एवुं श्रीजिने श्वरनुं चरणकमल छे. आ बे श्लोकनो अर्थ एकठो छे।१।२।

सामान्यतोऽपि के० हे स्वामिन् ! अमारा सरखा मंद बुद्धिवाला पुरुषो जे छे ते सामान्यपणे प ण तमारा स्वरूपने वर्णन करवाने केम समर्थ थाय ? अर्थात् थता नथी. त्यां दृष्टांत कहे छे. जेम केः-जो पण घूअनो बालक सूर्यना स्वरूपने खरेखर शुं कही शके? अर्थात् नथी कही शकतो. हवे ते घूअनो बाल

क केवो ढे, तोके दृढ हृदय पणाये करीने प्रगल्भ ढे तो पण दिवसने विषे अंध ढे ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि के० हे नाथ ! मोहनीयादिक कर्मना क्षय थकी तमारा गुणोने अनुभव करतो एटले जाणतो ढतोपण मनुष्य अर्थात् केवली जे ढे ते निश्चे तमारा गुणोने गणवाने समर्थ न थाय, त्यां दृष्टांत कहे ढे, जे माटे प्रलय कालने विषे विक्षिप्त थयुं ढे जल जेने विषे एवो समुद्र जे ढे तेनो प्रत्यक्ष एवो पण रत्ननो समूह ते, ननु ए आशंकाने विषे, कोण पुरुषे मापी शकाय ? अर्थात् कोइथी पण प्रमाण करी शकाय नही ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ के० हे नाथ ! हुं जड अंतःकरणवालो ढुं, तो पण तमारुं स्तवन जे ढे तेने करवाने उद्यमवंत थयो ढुं, एटले सावधान थयो ढुं ते तमे केवा ढो ? तो के देदीप्यमान एवा अनंत गुणोना निधान रूप ढो. तेज अर्थ दृष्टांते करी दृढ करे ढे; जेमके बालक पण पोताना बे हाथने विस्तारीने पोतानी बुद्धिये करीने समुद्रनी विस्तारता जे ढे तेने शुं नथी कहेतो ? अर्थात् कहेढेज. ॥ ५ ॥

गाथा ६ थी १० सुधी छुटा शब्दना अर्थ.

योगिनां–योगीओने
यांति–जाय छे
अवकाशः–बोलवानी शक्ति
जाता–थइ
असमीक्षित–अविचारी
कारिता–काम
जल्पंति–बोले छे
पक्षिणो–पक्षियो
पाति–रक्षण करे छे
भवतः–तमारु
भवतः–संसारथी
जगंति–त्रण जगतने
तीव्र–आकरो
आतप–तडको
उपहत–हणाणा
पांथ–पंथी
निदाघे–ग्रीष्मकालमां
प्रीणाति–खुशी करेछे
पद्म–पद्म
सरसः–सरोवरनो
सरसः–ठंडा पाणीना कणीआवालो
अनिलो–वायरो
हृद्वर्त्तिनि–हृदयमां व र्तत्ते छते
त्वयि–तमे
शिथिली–शिथिल
जंतोः–प्राणीना
क्षणेन–क्षणमात्रे
निविडा–दृढ
वंधाः–वंध
भुजंगममया–साप म य एवा
अभ्यागते–आवे छते
शिखंडिनि–मयूर
चंदनस्य–चंदनना
मुच्यंत–मुकाइ जाय
रौद्रैः–भयानक वडे
शतैः–सेंकडो वडे
वीक्षिते–जोये छते
गो–किरणो, पृथ्वी
स्फुरित–देदिप्यमान
तेजसि–तेज वालो
दृष्टमात्रे–जोवाये
चौरैः–चोरोथी
पशवः–पशुओ
पलायमानैः–नासता
तारकः–तारक
भविनां–भवीओनां
त एव–तेओज
त्वां–तमोने
उद्वहंति–वहन करेछे
उत्तरंतः–उतरता.
यद्वा–युक्त छे
दृतिः–मसक
तरति–तरे छे
अंतर्गतस्य–अंदर रहेला
मरुतः–पवननो
अनुभावः–प्रभाव

ये योगिनामपि न यांति गुणास्त
वेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममाव
काशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षित
कारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा
ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्ता
मचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, ना
मापि पाति भवतो भवतो जगंति
॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसो निलोऽ
पि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो
शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेन नि
बिडा अपि कर्मबंधाः॥ सद्यो भु
जंगममया इव मध्यभाग, मभ्या
गते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥८॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र,

रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेपि॥
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्ट
मात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलाय
मानैः॥ ए॥ त्वं तारको जिन क
थं नविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ
दयेन यडुत्तरंतः॥यद्वा दृतिस्तरति
यज्जलमेष नूनं, मंतर्गतस्य मरुतः
स किलानुनावः ॥ १० ॥

ये योगिनामपि के० हे स्वामिन् ! जे तमारा गु
णो ढे ते योगीडने पण कहेवामां आवी शकता नथी तो
ते गुणोने विषे म्हारी बोलवानी शक्ति केम होय ?
ते कारण माटे ए प्रकारे आ अविचार्युं काम थयुं
केमके अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते
अविचार्युं काम कहेवाय. अहीं दृष्टांत कहे ढे, अथ
वा निश्चे पक्षियो पण यद्यपि मनुष्य वाणीए करी
बोलवाने असमर्थ ढे, तो पण पोतानी वाणीयें करीने
नथी बोलता शुं ? अर्थात् बोलेज ढे, तेम हुं पण स्तु

ति करवाने प्रवर्त्त्यों छुं ॥ ६ ॥

आस्तामचिंत्यमहिमा के० हे जिनेश्वर ! नथी चिंतन करवा योग्य महिमा जेनो एवो तमारो स्तव जे छे ते तो दूर रहो ! परंतु तमारुं नाम पण संसार थकी त्रण जगतने रक्षण करेछे. त्यां दृष्टांत कहे छे के पद्म सरोवरनुं जे पाणी ते तो दूर रहो, परंतु तेनो सुंदर छंटा पाणीना कणीआवालो एवो वायरो पण उनालाने विषे आकरा एवा तरूकाए करीने हणाणा एवा पंथी जनोने संतोषित करे छे. ॥ ७ ॥

हृद्वर्त्तिनि त्वयि के० हे स्वामिन् ! तमो हृदयने विषे वर्त्तते छते प्राणीना दृढ एवा कर्मना बंध पण क्षणमात्रे करीने शिथिल थइ जाय छे. अहीं दृष्टांत कहे छेः—जेमके वननो मोर ते वनना मध्यभाग प्रत्ये आवे छते चंदनना झाडना जे सर्पमय बंधन जे छे ते ज जेम तत्काल शिथिल थइ जाय छे तेनी परे तमे पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे छते तेनां दृढ कर्मबंध पण शिथिल थइ जाय छे ॥ ८ ॥

मुच्यंत एव मनुजाः के० हे जिनेंद्र ! तमने जो

ये बते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावळे) बीहामणा एवा उपद्रवना संकटथी मुकाइ जाय बेज. अहीं दृष्टांत कहे बेः—जेमके देदीप्यमान तेज बे जेनुं एवो गो के० किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो के० पृथ्वी तेनो स्वामी जे राजा अथवा गो के० पशुउ तेनो स्वामी जे गोवालीउ ते पण स्फुरित बे तेज जेनुं एवो बे, एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता एवा चोरोथी जेम पशुउ उतावळथी मूकाय बे तेम जीवो पण तमो जोवाये थके संकटो उपद्रवोथी मूकाय बे ॥ ए ॥

त्वं तारकोजिन कथं के० हे जिनेश्वर ! तमे संसारी जीवोना केम तारक बो ? जे कारण माटे उलटा ते संसारी जीवोज संसार समुद्रने उतरता बता हृदये करीने तमोने वहन करे बे. कारण के वाह्य वाहकमां वाह्यने तारकपणानो असंभव बे; जेम वहाण बे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे बे परंतु पुरुषो वहाणने तारता नथी तेम अन्य जीवो पण तमने पोताना हृदयमां राखीने तारे बे, परंतु तमे ते अ

ति करवाने प्रवर्त्त्यो छुं ॥ ६ ॥

आस्तामचिंत्यमहिमा के० हे जिनेश्वर ! नथी चिंतन करवा योग्य महिमा जेनो एवो तमारो स्तव जे छे ते तो दूर रहो ! परंतु तमारुं नाम पण संसार थकी त्रण जगतने रक्षण करेछे. त्यां दृष्टांत कहे छे के पद्म सरोवरनुं जे पाणी ते तो दूर रहो, परंतु तेनो सुंदर ठंडा पाणीना कणीआवालो एवो वायरो पण उनालाने विषे आकरा एवा तडकाए करीने हणाणा एवा पंथी जनोने संतोषित करे छे. ॥ ७ ॥

हृद्वर्त्तिनि त्वयि के० हे स्वामिन् ! तमो हृदयने विषे वर्त्तते छते प्राणीना दृढ एवा कर्मना बंध पण क्षणमात्रे करीने शिथिल थइ जाय छे. अहीं दृष्टांत कहे छेः—जेमके वननो मोर ते वनना मध्यभाग प्रत्ये आवे छते चंदनना झाडनां जे सर्पमय बंधन जे छे ते ज जेम तत्काल शिथिल थइ जाय छे तेनी पेरे तमे पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे छते तेनां दृढ कर्मबंध पण शिथिल थइ जाय छे ॥ ८ ॥

मुच्यंत एव मनुजाः के० हे जिनेंद्र ! तमने जो

ये छते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावळे) वीहामणा एवा उपद्रवना संकटथी मुकाइ जाय छेज. अहीं दृष्टांत कहे छेः—जेमके देदीप्यमान तेज छे जेनुं एवो गो के० किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो के० पृथ्वी तेनो स्वामी जे राजा अथवा गो के० पशुउ तेनो स्वामी जे गोवालीउ ते पण स्फुरित छे तेज जेनुं एवो छे, एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता एवा चोराथी जेम पशुउ उतावळथी मूकाय छे तेम जीवो पण तमो जोवाये थके संकटो उपद्रवोथी मूकाय छे ॥ ९ ॥

त्वं तारकोजिन कथं के० हे जिनेश्वर ! तमे संसारी जीवोना केम तारक छो ? जे कारण माटे उलटा ते संसारी जीवोज संसार समुद्रने उतरता छता हृदये करीने तमोने वहन करे छे. कारण के वाह्य वाहकमां वाह्यने तारकपणानो असंभव छे; जेम वहाण छे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे छे परंतु पुरुषो वाहाणने तारता नथी तेम भव्य जीवो पण तमने पोताना हृदयमां राखीने तारे छे, परंतु तमे तेभ

ध्य जीवोने तारो ए तो मोटुं आश्चर्य छे! हवे आ तर्कनुं समाधान करे छे. हे प्रभु! तमेज भव्यजीवोने तारो छो ते युक्तज छे. अहीं दृष्टांत कहे छे; जे कारण माटे जेम चामडानी मशक ते निश्चय नदी वगेरेना पाणीमां तरे छे ते आ अंदर रहेला पवननोज खरेखर प्रभाव जाणवो, तेम भव्यजीवोना हृदयमां तमे छो, माटे तमेज भव्यजनोना तारक छो एमां कांइ आश्चर्य नथी.१०

गाथा ११ थी १५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

यस्मिन्–जेमां	अनल्प–घणुं	हंत–निश्चे
हर–शिव	गरिमाणं–मोहोटाइने	महतां–मोटानो
प्रभृतयः–वगेरे	प्रपन्नाः–पाम्या	यदिवा–अथवा तो
रतिपतिः–कामदेव	जंतवः–प्राणीओ	निरस्तः–दूर कर्यो
क्षपितः–क्षय पमाड्यो	अहो–अरे	ध्वस्ताः–हण्या
विध्यापिता–बुझाव्या	दधाना–धारण करता	बत–आश्चर्य
हुतभुजः–अग्निओ	जन्मोदधि–भवसमुद्र	चौराः–चोर
पयसा–पाणीवडे	लघु–शीघ्रपणे	प्लोषति–बालेछे
पीतं–पीधुं	तरंति–तरे छे	अमुत्र–आ लोकमां
दुर्द्धर–दुस्सह	लाघवेन–हलकापणा वडे	शिशिरा–शीतल
वाडवेन–वडवानले		नील–काला

द्रुमाणि–वृक्षवालां	रुचेः–कांतिवालानी	अनलात्–अग्निथकी
विपिनानि–वनो	अक्षस्य–कमलबीजनी	उपलभावं–पथ्थरप
हिमानी-बरफनो जथो	संभवि-संभवे	णाने
परमात्मरूप–सिद्धस्व	कर्णिकायाः–कर्णिका	अपास्य–त्यागकरीने
रूप	थी	चामीकरत्वं–सोनाप
अन्वेषयंति–खोळे छे	ध्यानात्–ध्यानथी	णाने
अंबुज–कमल	भविनः–भव्यप्राणीओ	अचिरात्–थोडा व-
कोश–डोडो, कली	देहं–शरीरने	खतमां
देशे–मध्यभागमां	दशां–अवस्थाने	धातुभेदाः–भेगवाली
पूतस्य–पवित्र	व्रजंति–पामे छे	धातु

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभा
वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपि
तः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभु
जःपयसाथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्नन
ल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जं
तवः कथमहो हृदये दधानाः॥ ज
न्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन,
चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्र

ज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि
विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा
बत कथं किल कर्मचौराः॥प्लोष
त्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं
हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो
जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयं
ति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य
निर्मलरूचेर्यदि वा किमन्य, दक्ष
स्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः
॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ज्ञवतो ज्ञ
विनः क्षणेन, देहं विहाय परमा
त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाउपल
ज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्वम
चिरादिव धातुज्ञेदाः ॥ १५ ॥
यस्मिन् हरप्रज्ञृतयोऽपि केण जे कामदेवने विषे

हरहरि प्रमुख पण, हणाणो छे प्रन्नाव जेमनो एवा थया छे, ते कामदेव पण तमोये क्षणमात्रे करीने क्षय पमाड्यो छे, त्यां दृष्टांत कहे छे जेमके:--जे पाणीए अग्निउ बुजावी दीधा, ते पाणी पण डुस्सह वम्वानले शुं न पीधुं? अर्थात् पीधुंज. एटले अग्निउ बुजावनारुं जल वडवानले पीधुं तेमज जे हरिहरादिकने जीतनार कामदेव तेने तमोए जीत्यो छे. आ श्लोक करवेथी पार्श्वनाथनी मूर्त्ति प्रगट थइ ते सर्वत्र प्रसिद्ध छे.११

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि के० हे स्वामिन् तमोने हृदयने विषे धारण करता थका अहो इति आश्चर्ये! थोमा पण न्नारना अन्नावे करीने न्नव समुडने उतावले जेम होय तेम प्राणीउ केम तरे छे? एटले घणा न्नारे युक्त एवा तमोने हृदयमां धारण करीने थोमा न्नारनी पेठे संसार समुड केम तरे छे ? तोके उत्तम पुरुषोनो ए महिमाज छे. माटे तेमां विचारवा योग्य कांइ पण नथी ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि के० हे स्वामिन् तमोये ज्यारे क्रोध प्रथमज दूर कीधो त्यारे पछी आश्चर्य छे के किल के० नि

ख्य कर्मरूप चोरो केवी रीते हएया? तो तेना समाधानमां आ लोकमां शीतल एवा बरफनो समूह नीलां झाम वाला वनने शुं नथी बालतो? अर्थात् बाले छे. तेम क्रोध रहित एवा तमे पण कर्म चोरोने हणोछो ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन सदा के० हे जिन! मोटा रु षिउ जे छे ते हृदयरूप जे कमल तेनी कलीना मध्य भागमां सिद्ध स्वरूप एवा तमोने निरंतर ज्ञान चक्षु ए करीने जोवे छे, अथवा जेम निश्चे निर्मल छे कांति जेनी एवुं अने पवित्र एवुं कमलनुं बीज जे छे, तेनुं कर्णिकाथकी बीजुं एटले कमल मध्य प्रदेश टालीने बीजुं स्थानक शुं संभवे छे? ना नथी संभवतु, त्यारे शुं संभवे छे? तोके कमलनी कर्णिकाज संभवे छे, तेम तमे पण निर्मल रुचियुक्त तथा सकल कर्ममलना जवाथी पवित्र थएला एवा छो, तथी योगिंद्रना हृदय कमलनी कर्णिकाना विषेज तमारुं रहेवुं थाय छे ते योग्यज छे. ॥ १४ ॥

ध्यानाज्जिनेश के० हे जिनेश! भव्यप्राणीउ त मारा ध्यानथी एक क्षणमात्रे करीने शरीरने त्याग

करीने सिद्धावस्थाने पामे छे. ते जेमके लोकने विषे जेगवालुं सोनुं जे छे ते प्रबल अग्निथी पाषाण जाव जे छे तेने टालीने थोडा समयमां सुवर्णपणानेज जेम पामे छे, तेम प्राणीयो जे छे ते तमारा ध्यानथी देहने त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे छे, एटले वीतरागनुं ध्यान करतो छतो जीव वीतराग रूप थाय छे. जेम जमरीथी बीक पामती इयल ते तेना ध्यानथी जमरी थाय छे. ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी ३० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

अंतः–हृदयमां	अयं–आ	परवादिनो–पर तीर्थिओ
विभाव्यसे–विचाराओछो	ध्यातः–ध्यानकरायो	प्रपन्नाः–आश्रय करी रहेला, पाम्या.
नाशयसे–नाशकरोछो	पानीयम्–पाणी	काच कामलिभिः–कमलानारोगीओए
मध्यविवर्त्तिनः–मध्यस्थ पुरुषनुं	अनुचिंत्यमानं–चिंतन कराएलुं	सितः–धोलो
प्रशमयंति–उपशमावे छे	नो–नहीं	गृह्यते–ग्रहणकरायछे
हि–निश्चे	विकारं–विकारने	विपर्ययेण–विपर्यास वडे, परावर्त्त करीने
अनुभावाः–प्रभाव	अपाकरोति–दूर करेछे	सन्निध–समीपना
मनीषिभिः–पंडितोए	वीत–रहित	
	तमसं–अज्ञान	

अशोक-शोक रहित, आसोपालव	विबोधं-विकाश पणाने	त्वद्गोचरे-तमारी समक्ष
अभ्युद्गते-उदयपामे छते	अवाङ्-नीचुं	सुमनसां-फुलोनां, भविजीवोनां
दिनपतौ-सूर्य	वृंतं-बींटु	गच्छंति-जाय छे
स-सहित	विष्वक्-चारे तरफ	अध एव-नीचेज
समहीरुहो-वृक्षोए सहित	अविरला-निरंतर	बंधनानि-बंधन
	सुरपुष्पवृष्टिः-देवना फुलनी वृष्टि	

अंतःसदैव जिन यस्य विभाव्य से त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविका

रमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वी
ततमसं परवादिनोपि, नूनं विन्नो !
हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥ किं
काचकामलिन्निरीश ! सितोपिशं
खो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्य
येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये स
विधानुन्नावा, दास्तां जनो न्नवति
ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते
दिनपतौ समहीरुहोपि, किंवा वि
बोधमुपयाति न जीवलोकः॥१ए॥
चित्रं विन्नो ! कथमवाङ्मुखवृंतमे
व, विष्वक् पतत्यविरला सुरपु
ष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां य
दि वा मुनीश, गच्छंति नूनमध एव
हि बंधनानि ॥ २० ॥

अर्थः—अंतःसदैवजिन के० हे जिन ! ज्नव्य प्राणीन्रे जे ठे तेमणे देह तेना मध्य ज्नाग एटले हृदयने विषे निरंतर तमो विशेषे करी चिंतवन कराउ ठो ते पण ते ज्नव्यना शरीरने तमे केम नाश करो ठो ? अर्थात् ते ज्नव्यजीवोने मुक्ति पमाडीने शरीर रहित करोठो माटे जे स्थानमां ज्नव्य जीव तमने चिंतवन करे ठे, ते स्थान तमारे नाश करवुं घटे नहीं. ते निराकरणने अर्थे अहीं दृष्टांत कहे ठेः—हवे आ मोटा प्रज्नाववाला मध्यस्थ पुरुषोनुं एवुं स्वरूप एटले स्वज्नाव ठे के, मांहो मांहे थता क्लेशने उपशमावे ठे; तेम तमे पण शरीर अने जीवनो परस्पर विग्रह टालवाने शरीरनो नाश करो ठो, ते निश्चे युक्तजठे॥१६॥

आत्मा मनीषिज्निरयं के० हे जिनेंद्र! पंमितो जे ठे तेमणे आ जीव ते तमारी साथे अज्नेद बुद्धिये करीने ध्यान कस्यो ठतो तमारा सरखा महिमावालो आ संसारने विषे थाय ठे. अहीं दृष्टांत कहे ठे जेम केः-(नाम शब्द कोमल आमंत्रणमां ठे अथवा प्रसिद्ध अर्थमां ठे.) पाणी जे ठे ते पण अमृत ठे ए

प्रकारे चिंतन कर्युं छतुं अथवा मणिमंत्रादिके सं
स्कारित कर्युं छतुं विषना विकारने शुं नथी दूर कर
तुं ? अर्थात् एवुं जल पण अमृत तुल्य थइने विष
विकारने टालेज छे ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं के० हे स्वामिन् ! निश्चे अ
न्यदर्शनी (शैव, सांख्य, नैयायिकादिको) पण ब्र
ह्मा, विष्णु, महेश्वरादिकनी बुद्धिए करी तमोनेज
आश्रय करी रहेला छे, अर्थात् तेनु नामांतर परावर्त्ते
करीने तमारुंज आराधन करे छे. ते तमो केवा छो ?
तो के अज्ञान रहित छो. अहीं दृष्टांत कहे छे, जेम
के:-हे ईश ! कमलाना रोगवाला पुरुषोए धोलो एवो
शंख पण, लीला पीलादि विविध प्रकारना रंग परा
वर्त्ते करीने शुं नथी ग्रहण करातो? अर्थात् कराय छे,
तेम अन्य दर्शनीउए पण तमे हरिहरादि एवी बुद्धिए
करी आराधन कराउ छो ॥ १७ ॥

धर्मोपदेशसमये के० हे स्वामिन् ! धर्म दे-
शनाना वखते तमारा समीपना प्रभावथी लोक जेछे
ते तो दूर रहो! परंतु झाडू पण शोक रहित थाय छे; अ

थवा जेम सूर्य ञगवाथी ऊाम्हे करी सहित एवो प
ण जीवलोक (समस्त जगत्) विकाशपणाने शुं न
पामे ? अर्थात् पामे ने; एटले सूर्योदयथी एकलो लो
कज निज्ञानो त्याग करीने विबोध पामे ने एटलुंज
नहीं, पण वनस्पति पण निज्ञानो त्याग करी जागृत
पणाने पामे ने, तेम तमारा समीपथी ऊारू पण अ
शोक थाय ने. ए रीते प्रथम अशोकवृक्नामा प्राति
हार्य वर्णव्यो ॥ १ए ॥

चित्रं विज्ञो कथमवाङ् के० हे स्वामिन् ! निरं
तर देवताउए करेली जे पुष्पवृष्टि ते चारे तरफ नीचुं
ने मुख जेनुं एवुं जे बींट (बंधन) ते जेम होय ते
मज केम आकाश थकी ञूमिने विषे परू ने ? ए आ
श्चर्य ने; हवे एनुं दृष्टांते करी समाधान करे ने. अथवा
हे मुनीश ! तमो प्रत्यक् नतां तमारा समीपने विषे
शोञायमान ने मन जेमनां एवा ञव्यजनो तथा दे
वताउनां बंधन ते नीश्चे जे कारण माटे नीचेज जाय
ने, अर्थात् तमारा समीपे सुमनस् जे फुल तेनां बींट
जे बंधन ते अधोमुख थाय ने अने सुमनस जे ञव्य

जीव तेनां बाह्य अने अभ्यंतर बंधन ते नीचां जाय छे एटले पाप नाश थाय छे. (आ सुरपुष्पवृष्टि नामा बीजो प्रातिहार्य वर्णव्यो) ॥ २० ॥

गाथा. २१ थी २७ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

स्थाने–युक्त, ठेकाणे
गभीर–गंभीर
संभवायाः–उपनेली (नी)
पियूषतां–अमृतपणुं
गिरः–वाणीओ
समुदीरयंति–कहेछे
संमद–हर्ष
संग–संयोग
तरसा–उतावले
सुदूरं–अत्यंतपणे
अवनम्य–नीचानमीने
समुत्पतंतः–उंचा उछलता
शुचयः–पवित्र
नतिं–नमस्कारने
विदधते–करेछे

पुंगवाय–प्रधानने, श्रेष्टने
उर्द्धगतयः–उंचीगतिवाला
श्यामं–श्याम
स्थं–रहेलाने
आलोकयंति–जोवेछे
रभसेन–उत्सुकपणाये
नदंतं–गर्ज्जना करतो
चामीकराद्रि–मेरुपर्वत
शिरसि–शिखरमां
नव–नवा
अंबुवाहम्–मेघने
उद्गच्छता–उंचा जता
शिति–श्याम
मंडलेन–मंडलवडे

लुप्त–लोपाणी छे
च्छद–पांदडा
च्छविः–छबी, कांति
बभूव–थयो
सान्निध्यतः–सान्निध्यथी
नीरागतां–वैराग्यता
अवधूय–त्याग करीने
भजध्वं–भजो
निर्वृतिपुरिं–मोक्षपुरि
सार्थवाहम्–सार्थवाहने
निवेदयाति–निवेदन करेछे
नदन्–नाद करतुं
अभिनभः–आकाशने व्यापीने

स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति॥
पीत्वा यतः परम संमद संगभाजो,
भव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वं
॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य
समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सु
रचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विद
धते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्द्धगतयः
खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं
गभीरगिरमुज्वल हेम रत्न, सिं
हासनस्थमिह भव्यशिखंडिन
स्त्वां ॥ आलोकयंति रभसेन न
दंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता त
व शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छ

विरशोकतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतो ऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरा गतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ जोजोः प्रमादमवधूय ज्ज जध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नजिनन्नः सु रडुंडजिस्ते ॥ २५ ॥

अर्थः--स्थाने गज्ञीरहृदयो क० हे स्वामिन् ! गंज्ञीर एवा हृदयरूप समुद्रथी जपनी एवी जे तमारी वाणी तेना अमृतपणाने श्रोताउ कहे छे ते युक्तजछे कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्र थकीज छे अने आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो तमारा हृदयरूप समुद्र थकी थाय छे. हवे ए वाणीमां अमृतपणुं केम घटे ? ते कहे छे, के जे कारण माटे हर्षना संयोगना ज्जजनार एवा ज्जव्य प्राणीउ जे छे ते तमारी वाणीने पीने

एटले आदरसहित सांज्ञलीने ज्ञतावले पण अजराम रपणाने पामे वे. अर्थात् जेम अमृत पीनार अजराम थाय वे, तेम तमारी वाणी सांज्ञलवाथी पण अज रामरपणुं थाय वे, माटे तमारी वाणीने अमृतपणुं कह्युं ते युक्तज वे. आ दिव्यधनि नामा त्रीजो प्राति हार्य वर्णव्यो ! ॥ २० ॥

स्वामिन् सुदूरमवनम्य के० हे स्वामिन्! हुं एम मा नुंवुं जे पवित्र एवा, देवताउए वींजेला चामरोना समूह ते अत्यंतपणे नीचा नमीने फरी उंचा उगलता वतां आ प्र कारे कहे वे, के जे मनुष्यो आ प्रत्यक्ष मुनिउने विषे प्रधान जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेमने नमस्कारने करे वे ते मनुष्यो निश्चे उंची गति वाला थाय वे तथा शुद्ध ज्ञाववाला थाय वे. अर्थात् चामरो जाणे एम कहे ता होय नहीं के अमे ज्ञगवानननी आगल नीचा न मीने उंचा जइए वीए तेम तमे पण ज्ञगवानने नम स्कार करवाथी उंची गतिने पामशो. आ चामरनामा चोथो प्रातिहार्य वर्णव्यो ॥ २१ ॥

श्यामंगम्नीर के० हे स्वामिन् ! आ संसार क्षेत्रने विषे नव्यरूप मोर ठे ते आ समवसरणने विषे तमोने निर्मल देदीप्यमान सुवर्ण तथा रत्ने मिश्रित एवा सिंहासनने विषे बेठा थका अने श्यामवर्णवाला अने गंम्नीरवाणीवाला तमोने उत्सुकपणाये करीने जोवे ठे, ते केवी रीते जोवे ठे ? तो के मेरु पर्वतना शिखरने विषे उंचे स्वरे करी शब्द करता एवा नवीन मेघनेज जेम जोता होयनी. एटले मेरुपर्वतने ठेकाणे सिंहासन जाणवुं अने मेघने स्थानके प्रभुनुं श्याम शरीर जाणवुं तथा गर्जनाने ठेकाणे प्रभुनी वाणी जाणवी आ सिंहासन नामा पांचमो प्रातिहार्य वर्णव्यो॥२३॥

उद्गच्छता तव के० हे स्वामिन् ! तमारु उंचुं जातुं एटले प्रसरतुं एवुं श्याम प्रभानुं जे मंफल अर्थात् भामंफले करी ढंकाणी ठे पानफानी छवी एटले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो अशोक वृक्ष ते होतो हवो. ते अर्थ युक्तज ठे केमके हे वीतराग ! तमारा सान्निध्यथी पण चेतना सहित जे होय ते पण

कोण वैराग्यने न पामे ? अर्थात् तमारा सान्निध्यथी जीव अवश्य नीरागी थायज. आ त्रामंडल नामा छ ह्रो प्रातिहार्य वर्णव्यो ॥ २४ ॥

भो भोः प्रमादमवधूय के० हे देव ! हुं एम मानुं छुं के तमारो देव दुंदुभि जे छे ते आकाशने व्यापी ने शब्द करतो थको त्रण जगतने आ प्रकारे निवेदन करे छेः-हे जगत्त्रयजनो ? तमे आलसने त्याग करी ने आवीने ए जे पार्श्व प्रभु तेने भजो. ते केवा पार्श्व प्रभु ? तो के मोक्ष पुरि प्रत्ये सार्थवाह समान छे. अ र्थात् ते देव दुंदुभि एम कहे छे के तमे प्रमाद मूकीने मोक्ष आपनार एवा श्री पार्श्व प्रभुने भजो. ॥२५॥

गाथा. २६ थी ३० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

उद्योतितेषु भुवनेषु--त्रण भुवन प्रकाशित करे छते	मुक्ता-मोती	अभ्युपेतः--नजीक आव्यो
ताराान्वितः-तारामंडल सहित	उच्छ्वसित-उल्लसित	स्वेन-पोतानां
विधुः-चंद्रमा	आतपत्र-छत्र	पिंडितेन-पिंडीभूत थइ रह्या
-आ	व्याजात्-मीशथी	यशसां-यशोना
	त्रिधा-त्रण प्रकारे	संचयेन-संचय वडे
	धृत-धारण कर्युं छे	
	ध्रुवं-निश्चे	

रजत-रुपुं
निर्मितेन-करेला
सालत्रयेण-त्रण गढ वडे
अभितः-चारेपासे
दिव्यस्रजः--मनोहर मालाओ
नमत्-नमता
त्रिदशाधिपानां-इंद्रना
उत्सृज्य-छोडीने
मौलिबंधान्-मुकुटो
परत्र-बीजे ठेकाणे
सुमनसः-पंडित, देवता.
रमंत-रमेछे.
तारयसि-तारोछो
असुमतः-प्राणीओने
लग्नान्-वलगेला
पार्थिव-माटीनुं, पृथ्वीनो
निपस्य-घडाने, राजाने
सतः-संत.
तवैव-तमारोज
विपाक-फल
शून्यः-रहित
दुर्गतः-दरिद्री, दुखे जाणवा योग्य
अक्षर-मोक्ष, अक्षर निश्चल
प्रकृति--स्वभाव
अलिपिः-लिपिरहित, कर्मलेप रहित
अज्ञानवति--अज्ञानवाला
अज्ञान्-अजाणोने
अवति--बोधकरे छते.
कथंचित्--केमज
स्फुरति--स्फुरेछे

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिका
रः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसि
तातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुव
मभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित

जगत्त्रयप्रतिमितेन, कांतिप्रतापयश
सामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम
रजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण न्न
गवन्नत्नितो विन्नासि ॥ २७ ॥ दि
व्यसृजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना,
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबं
धान् ॥ पादौ श्रयंति न्नवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमं
त एव ॥ २८॥ त्वं नाथ! जन्मज
लधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसु
मतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि
पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं वि
न्नो यदसि कर्मविपाकशून्यः
॥ २९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
डुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलि

पिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदै
व कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति
विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

अर्थ—ज्द्योतितेषु ज्ञवता के० हे स्वामिन् ! आ तमारा जुपर जे त्रण छत्र छे, ते त्रण छत्र नथी परंतु शुं छे ? तो के मोतीना समूह करी सहित अने उल्लसित एवां जे त्रण छत्र तेना मीशे करीने तारा मंम्ल सहित छतो, निश्चयथी त्रण प्रकारनुं धारण कर्युं छे शरीर जेणे एवो चंऽमा जे छे ते तमारी सेवा करवाने अर्थे जाणे तमारी पासे आव्यो होय नहीं ! ते चंऽमा केवो थको आव्यो छे, तो के विशेषे करी हणाणो छे जगतने विषे अजवालुं करवारूप व्यापार जेनो एवो छे; केमके तमोए त्रण ज्ञुवनने प्रकाशित कर्यां, तेथी चंऽमानो ते अधिकार मिथ्या थयो.॥२६॥

स्वेन प्रपूरित के० हे ज्ञगवन् ! तमे चारे पासे नील रत्न अने सुवर्ण तथा रूपा वमे प्रकर्षे करीने निर्मित करेला एवा त्रीगमा गढे करीने शोज्ञो छो.

एटले एक गढ रत्ननो, बीजो सोनानो, त्रीजो रूपा
ए रीते त्रण गढे करीने तमे शोन्नोगे. ते कोनी पे
शोन्नोगे ? तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे, के पो
एटले प्रन्नुए प्रकर्षे करी पूरयुं छे त्रण जगत ते
करी पिंमीन्नूत थइ रहेलां एवां, शरीरनो रंग प्रता
तथा यश, तेमना संचये करीनेज जाणे होय नहीं
अर्थात् कांति, प्रतापने यश तेना समूहज जाणे श
न्ने छे; केमके नीलरत्नना गढने प्रन्नुना श्याम वर्णने
सदृशता छे, तथा सोनाना गढने प्रन्नुना प्रतापनी स
दृशता छे, तथा रूपाना गढने न्नगवानना यशनी सद
शता छे. माटे ए उत्प्रेक्षा करी ते योग्यज छे ॥२७॥

दिव्यस्रृजो जिन के० हे जिन ! मनोहर फुलनी
मालाउ जे छे ते तमारा चरणने नमेला देवेंद्रना र
त्नोए रचेला एवा पण मुकुटोने त्याग करी तमारा
चरणारविंदने आश्रय करे छे. अहीं दृष्टांत कहे छे के, सु
मनस के० पंमित अथवा देवताउ जे छे ते तमारा सं
गम छते बीजे स्थानके नथीज रमता, कारण के ते आ

तमारा संग उतेज आनंद पामे छे, तेमनुं तथा फुलनुं नाम पण सुमनस छे. माटे फुलनी मालाउए जे तमा रा चरणारविंदनो आश्रय कर्यो ते युक्तज छे ॥ २८ ॥

त्वं नाथ जन्मजलधेः के० हे स्वामिन्! तमे ज व समुद्र थकी विशेषे करी पराङ्मुख (अवला मुख वाला) थया उता पण तमारी पोतानी वांसे वलगे ला एवा प्राणीउने जे कारण माटे तारो गो, ते विश्व ना स्वामी अने सुज्ञ एवा तमनेज निश्चे युक्त छे. अहीं दृष्टांत कहे छे, के पार्थिव के० पृथ्वीनी जे माटी ते नाथी उत्पन्न थएलो एवो निप के० घमो जे छे, ते पा णी उपर रह्यो उतो तेनी पीठे वलगेला जनोने तारे छे, तेम तमे पण पार्थिवनिप गे माटें तमारी पूठे वल गेला जनोने संसारसमुद्रथी तारो गो, ते युक्तज छे परं तु अहीं एक आश्चर्य छे, ते ए के जे कारण माटे हे स्वामिन् तमो ज्ञानावरणादि आठ कर्मना विपाकथी रहित गो, अने माटीनो घमो तो कुंनारादिके करेली पकाववादिकनी क्रियाए करी युक्त छे तेथी ते कर्म वि

पाक शून्य नथी अने तमे छो, ए आश्चर्य छे ॥ ३८ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक के० हे जनपालक ! तमे विश्वना ईश्वर छो तो पण दुर्गत के० दरिद्री छो ए विरोधनो परिहार करे छे के तमे विश्वेश्वर छो तो पण दुर्गत के० दुखे जाणवा योग्यछो अथवा " जनपालक दुर्गत " ए शब्दनो बीजो अर्थ एवो छे के जनप के० हे जनप ! तमे अलक के० केश तेणे करी दरिद्री छो एटले तमारे दिक्षा ग्रहण पछी केश वृद्धिनो अन्नाव छे अथवा पक्षांतर तमे हे स्वामिन् ! अक्षर एटले मोक्षस्वन्नावी छो, तो पण लिपिए करी रहित वर्त्तो छो, एटले जे अक्षर स्वन्नावी होय, ते तो लिपिरूप होय. ए पण विरोध छे तेनो परिहार करे छे के, स्थिर छे स्वन्नाव जेमनो ते अक्षरप्रकृति कहीए अर्थात् शाश्वतरूप छो, अथवा अक्षर जे मोक्ष तेज छे प्रकृति एटले स्वन्नाव जेनो एवा तथा नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमे छो; तथा अज्ञानवाला एवा पण तमारे विषे निश्चय थकी विश्वने प्रकाश करवानुं हेतुन्नूत एवुं जे ज्ञान ते निरंतर निश्चे स्फुरे छे ? एटले जे अज्ञानवान होय तेने

ज्ञान स्फुरे नहीं, ए विरोध छे. तेना परिहार अर्थे कहे
छे के, अज्ञान् अने अवति ए बे पद जूदां करीने अ
र्थ करवो त्यारे अज्ञान् के० ज्ञानरहित एवा मूर्खजन
तेने अवति के० सम्यक् बोध करता एवा त्वयि के० तमा
रे विषे ज्ञान स्फुरे छे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

प्राग्भार-अधिक भार वडे
संभृत-भरेलां
नभांसि-आकाश
रजांसि-रजो
रोषात्-कोपथी
उत्थापितानि-उडाडेला
शठेन-मूर्खे
यानि-जे
छाया-कांति
तैः-तेओ वडे
हताशः-निराश थएलो
ग्रस्तः-व्याप्त थयो

अमीभिः-आ वडे
दुरात्मा-दुष्ट आत्मावालो
ऊर्जित-घणो बलवंत
घनौघं-मेघना समूहवालुं
अदभ्र-घणुं
भ्रश्यत्-पडती
मांसल-पुष्ट
घोर-बीहामणी
धारं-धारावालुं
दुस्तर-असह्य, दुःखे तरवा योग्य
वारि-पाणी
दुस्तरवारि-भुंडी तरवारनुं

दध्रे-कीधुं
तेनैव-ते वडेज
कृत्यं-काम
विकृताकृति-विरूप आकृतिओ वाला.
मर्त्य-माणसना
मुंड-माथां
प्रालंब-झुलतुं झुमणुं
भृत्-धारण करेछे
द-देनारां
विनिर्यत्-निकलतो
प्रेत-दैत्य
व्रजः-समूह

आर्त्ति—मत्ये	विधुत—विशेषे टाल्या छे	मत्ये
ईरितः—प्रेर्यो		गतः—प्राप्त थएला
अभवत्—होतो हवो	पुलक—रोमांच	आकर्णिते-सांभलेछं
प्रतिभवं—भवोभवमां	पक्ष्मल—व्याप्त	विपत्—आपदा
धन्याः—धन्य	देशाः—भाग	विषधरी—सर्पिणी
त एव—तेओज	पादद्वयं—बे पग	सविधं—समीप
त्रिसंध्यं—त्रण काले	जन्मभाजः—भव्यजनो	समेति—आवे ?
आराधयंति-आराधेछे	श्रवण—कान	
विधिवत्—विधिपूर्वक	गोचरतां—गोचरपणा	

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृतिमर्त्यमुंड,
प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः
॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितो
यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भव
दुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त
एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, मारा
धयंति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः ॥
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभा
जः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववा
रिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रव
णगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णि
ते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा
विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

अर्थः—प्राग्भारसंभृतनभांसि के० हे नाथ ? क

मठासुरे कोपथी जे रजो तमारा उद्देशे करीने उमा
मी, ते रजोए करीने तमारी शरीरनी कांति पण न
हणाणी. ते रजो केवी छे? तो के अधिकपणाए करी
ने रुंध्यां छे आकाशो जेणे एवी छे. हवे ते कमठासुर
केवो छे ? तो के मूर्ख एवो छे, परंतु हणाणी छे आ
शा जेनी एवो, दुष्ट छे आत्मा जेनो एवो, एज कमठा
सुर ते पोतेज एज रजोये करीने व्याप्त थयो. अर्थात्
रज एटले पापरूप कर्मथी पोतेज व्याप्त थयो ॥३१॥

यद्गर्जदूर्जित के० हे जिन ! कमठासुरे दुःखे
तरवा योग्य एवुं पाणी ते जे कारणे उपसर्ग कर
वाने माटे तमारा उपर वरसाव्युं, एटलाथी पछी हवे
तेज पाणीए ते कमठासुरने उंमी तरवारनुं काम की
धुं; एटले माठी तरवारे करी जेम छेदन नेदन थाय,
तेम संसारने विषे छेदन नेदनादिक जे कार्य ते कर्युं;
अर्थात् तमारा उपर जल वरसाव्युं ते संसारीक दुःख
नुं हेतु छे माटे दुस्तर तरवारनी पेठे ते कमठासुरने
ज छेदन नेदन वधादिकनुं हेतु थयुं. हवे ते दुस्तर
पाणी वरसाव्युं ते केवुं छे ? तो के गर्जना करतो अने

प्रबल बलवंत एवो छे मेघनो समूह जेने विषे एवुं छे तथा वली केवुं छे ? तो के आकाश थकी पमती एवी वीजली छे जेने विषे एवुं छे, वली मुसलना स रखी पुष्ट अने बीहामणी जयंकर एवी छे धारा जेने विषे एवुं छे ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्व के० हे स्वामिन् ! कमठ जे दैत्यनो समूह तमारी प्रत्ये प्रेर्यो, ते दैत्य समूह पण ए कम ठासुरनेज जवजवने विषे संसारनां जे दुःख तेनुं का रण थतो हवो. ते दैत्य समूह केवो छे ? तो के नीचे प रूया एवा जे उपरना केश तेणे करीने विरूप थइ छे आकृति जेनी, एवां जे मनुष्यनां माथां तेनुं फुलतुं एटले हृदय पर्यंत लटकतुं एवुं जे फुमणुं तेने धारण करे छे एवो प्रेतव्रज छे, वली जय देनारां मुखथी नी कलेल छे अग्नि जेमने एवो प्रेतव्रज छे ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव के० हे त्रण जगत्ना अधिपति ! था हे स्वामिन् ! तेज जनो धन्य छे के जे जव्य जनो पृथ्वीने विषे विधि पूर्वक त्रण काले तमारा च

रणयुगलने आराधन करे छे. ते जन धन्य जाणवा. ते केवा जनो छे ? तो के विशेषे करी टाळ्यां छे बीजां कार्यो जेमणे एवा छे, वली केवा छे तो के भक्तिये करी उल्लास पामतो एवो जे रोमांच तेणे करी व्याप्त छे शरीरना भाग जेमना एवा छे ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारभव के० हे मुनीश ? हुं एम मानुं छुं के आ अपार एवो जे संसार समुद्र तेने विषे तमे मारा कानना विषय ते प्रत्ये न प्राप्त थएला एवा छो एटले में आ संसार समुद्रने विषे तमोने कोइ वारे सांभळ्या नथी. एज वात दृढ करे छे, ते जेमके:–तमारा नाम रूप जे पवित्र मंत्र ते सांभले छते पण आपदा रूप जे सर्पिणी छे ते शुं समीप आवे ? अर्थात् तमारुं नाम सांभळ्या पछी तो आपदा आवे नहीं अने मने तो आ संसाररूप आपत्ति आवेली छे, तेथी एम मानुंछुं के में पूर्व भवोने विषे क्यारे पण तमारुं नाम सांभळ्युं नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ

ईहित–वांछित	जन्मानि–जन्मने विषे	निकेतनं–घर
दक्षम्–चतुर	पराभवानां-पराभवोनुं	मथित–मथन करेलुं

आशयानां-अभिप्रायोनुं	एते-आ	विधाय-करीने
आवृत-ढंकाएलुं	चेतसि-चित्तने विषे	उद्दलन-खंडन
लोचनेन-आंखवडे	विधृतो-धारण करेलो	तत्परतां-तत्परपणुं
प्रविलोकित-जोयेला	प्रतिफलंति-विशेष रीते फले छे	विधेहि-करो
मर्मा-मर्म स्थानने	वत्सल-कृपावाला	आसाद्य-पामीने
विधः-भेदनारा	कारुण्य-दयापणुं	सादित-नाश करेला
विधुरयंति-पीडेछे	वसति-स्थानक	प्रथित-प्रसिद्ध
मां-मने	वशिनां-जितेंद्रियोना	प्रणिधान-ध्यान
अनर्थाः-अनर्थो	वरेण्य-श्रेष्ठ [जेणे एवा	वंध्यः-वांझिओ
प्रबंध-कर्म संतति	नते-नमस्कार कर्योछे	वध्यः-हणवायोग्य
गतयः-प्राप्ति	मयि-मारे विषे	चेत्-जो
अन्यथा-बीजी रीते	दयां-दया	पावन-पवित्र

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, म
न्ये मया महितमीहितदानदक्षम्॥
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयाना
म् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरा
वृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि

प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो वि
धुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंध
गतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आ
कार्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षि
तोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृ
तोऽसि ज्ञक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन
जनबांधव डुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः
प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः ॥३८॥
त्वं नाथ डुःखिजनवत्सल हे शरण्य,
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य॥
ज्ञक्त्या नते मयि महेश दयां वि
धाय, डुःखांकुरोद्दलन तत्परतां वि
धेहि ॥३९॥ निःसंख्यसार शरणं
शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि
पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पाद पंक

जमपि प्रणिधानवंध्यो, वंध्योऽस्मि
चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि! ॥ ४० ॥

अर्थः—जन्मांतरेपि तव के० हे देव हुं मानुं छुं के जन्मांतरने विषे पण तमारुं चरणयुगल जे छे तेने में नथी पूज्युं, ते चरणयुगल केवुं छे? तो के वांछित ते तुं जे देवुं तेने विषे चतुर एवुं छे, हवे तेज कहे छे. जे हे मुनीश! ते कारण माटे हुं आ जन्मने विषे म थन कर्यो छे चित्तनो आशय जेमणे एवा पराभवोनुं स्थानक थयो, अर्थात् तमारा चरणारविंदनो पूज नार तो पराभवनुं स्थानक होतो नथी, परंतु में पूर्व भवे तमारां चरणकमल क्यारे पूज्यां नथी एम भासे छे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन के० हे स्वामि न्! निश्चे में प्रथम एक वार पण तमो जोयेला नथी, ते हुं केवो छुं? तो के मोहरूप तिमिर जे अंधकार ते णे आवृत थयां छे नेत्र जेनां एवो छुं. शा माटे नथी जोया? तो के जे कारण माटे जो तमारुं दरशन कर्युं

होत तो अनर्थ रूप कष्टो मुजने केम पीडे ? अर्थात् पूर्वे जो तमारुं दरशन थयुं होत तो आ अनर्थो मुजने पीडत नहीं. ते अनर्थो केवा छे ? तो के मर्मस्थानने भेदनारा छे, वली प्रकर्षे करी प्राप्त थइ छे सविस्तर कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा छे ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि के० हे जन बांधव ! एटले हे लोकना हित कर्त्ता ! में पूर्वे तमने सांभल्या पण खरा, तथा पूज्या पण खरा, तथा दीठा पण खरा, परंतु निश्चे भक्तिये करीने चित्तने विषे धारण करेला नथी; ते कारण माटे हुं दुःखनुं पात्र थयो छुं. जे कारण माटे भावे करी रहित क्रियाओ विशिष्ट फल आपनारी थती नथी ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल के० हे नाथ ! दुःखी जनोपर दया लावनार ! वली हे शरण आवेला प्राणीने हित करनार ! तथा हे दयाना पवित्र स्थानक ! अथवा हे दया धर्मना घर ! तथा हे जितेंद्रिय पुरुषोमां श्रेष्ट ! तथा हे मोटा ईश्वर ! भक्तिये करीने नमस्कार कर्यो छे जेणे एवा मारे विषे कृपा करीने दुःखनो अं

कुर जे उत्पत्ति स्थानक तेना खंमनने विषे तत्पर पणुं कर ॥ ३ए ॥

निःसंख्यसारशरणं के० हे स्वामिन् ! तथा हे त्रण जगतने पवित्र करनार ! तमारा चरणारविंदना शरणने पामीने पण तमारुं ध्यान करवुं तेणे करीने वांझित थयो एटले शून्य थयो, एवो जो हुं छुं तो रागादिक शत्रुए करी हणवा योग्य छुं, ए कारण माटे हा इति खेदे, दुर्दैवे मारेलो छनं. हवे तमारुं चरणकमल केवुं ने ? तो के अनंत बलनुं घर एवुं ने तथा शरण करवा योग्य ने, वली क्षय पमाम्या ने रागादिक वैरी जेणे तेणे करीने प्रसिद्ध ने प्रन्नाव जेनो एवुं ने ॥४०॥

गाथा ४१ थी ४४ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

विदित–जाण्यो छे	अद्य–आज	ली, ध्यान युक्त
अखिल–समग्र	भक्तेः–भक्तिनुं	धियः–बुद्धियो
त्रायस्व–रक्षणकरो	संचितायाः–संचेली	सांद्र–आकरो
ह्रद–द्रह, सरोवर.	त्वदेक–तमारुं एक	उल्लसत्–उल्लास पा-
नीहि–पवित्र कर	भूयाः–थाओ	मतो
सीदंतं–सीदातो	समाहित–समाधिवा-	कंचुकित–कंचुके सहित

भागाः-भागो	शि कमलमां चंद्रस-मान	निचयाः-समूह
बद्धलक्षा-बांध्युंछे ध्यान जेमणे एवा	प्रभास्वराः-अत्यंत देदीप्यमान	अचिरात्-थोडा वखतमां
कुमुदचंद्र-सिद्धसेन दिवाकर	भुक्त्वा-भोगवीने	प्रपद्यंते-पामे छे
कुमुदचंद्र-चंद्रविका-	गलित-गलेलो	

देवेन्द्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥४२॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांग

भागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुज
बद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो
रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननय
नकुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंप
दो भुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनि
चया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥४४॥
युग्मम् ॥ इति श्रीकल्याणमंदिर
नामकं अष्टमस्मरणं समाप्तम् ॥

अर्थः--देवेंद्रवंद्य के० देवताना इंद्रोए वंदवा यो
ग्य माटे हे देवेंद्रवंद्य! वली जाण्युं ने सघली वस्तुनुं
रहस्य जेणे माटे हे विदिताखिलवस्तुसार ! तथा
हे संसार समुद्रथकी तारनार ! हे समर्थ ! तथा हे
त्रिभुवन नाथ ! तथा हे देव! तथा हे करुणाना द्रह !
आज सीदाता एवा मने भय देनारो एवो व्यसननो
जे समुद्र तेथी रक्षण करो अने (पापनो नाश करी)
पवित्र करो ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ के० हे नाथ ! जो तमारां चरण कमलनी भक्तिनुं कांइ पण फल छे तो हे शरणागत वत्सल ! जेने तमारुंज एक शरण छे एवा मने आ लोकने विषे, तथा भवांतरने विषे तमेज स्वामी थाउ. हवे पूर्वोक्त भक्ति केवी छे ? तो के निरंतर संताननी परंपराए संचेली एटले वृद्धिगत थइ एवी छे ॥ ४१॥

इत्थं समाहितधियो के० हे जिनेंद्र ! तथा हे स्वामिन् ! तथा मनुष्यना नेत्ररूप जे चंद्रविकाशि कमल, तेने विषे चंद्रमा समान माटे हे जननयनकुमुदचंद्र ! अहिं अभ्यंतरमां कविये, श्री सिद्धसेन दिवाकराचार्ये, दीक्षा समयमां गुरुए दीधेला कुमुदचंद्र एवा पोताना नामनुं पण सूचवन कर्युं छे. जे भव्यप्राणीउ आ रीते एटले पूर्वोक्त प्रकारे विधि पूर्वक तमारा स्तोत्रने रचे छे ते भव्य प्राणीउ थोमाएक कालमां मोक्षने पामे छे. शुं करीने पामे छे ? तो के देवलोकनी संपदाना सुखने भोगवीने ते केवी स्वर्ग संपदा? तो के अत्यंत देदीप्यमान एवी. तथा ते भव्यो केवा छे ? तो के समाधिवाली बुद्धि छे जेमनी एवा छे, वली

आकरो उल्लास पामतो एवो रोमांच तेणे कंचुके क री सहित छे शरीरनो देश जेमनो एवा, वली केवा छे ? तो के तमारा प्रतिबिंबनुं निर्मल एवुं जे मुख कमल तेने विषे बांध्युं छे ध्यान जेमणे एवा छे. तथा वली केवा छे? तो के विशेषे करीने गली गयो छे कर्म रजरूपी मलनो समूह जेमनो एवा छे. अर्थात् आ प्र कारना कहेला एवा जे जव्य प्राणीउ तमारुं स्तवन करे छे. ते स्वर्गनां सुख जोगवी मनुष्य जव पामीने थोमा कालमां मोक्ष जाय छे ॥ ४३—४४ ॥

इति श्री कल्याण मंदिर नामकं अष्टमं स्मरणं संपूर्णम् ॥

अथ संथारापोरिसीना छुटा शब्दना अर्थ
गाथा. १ थी ४ सुधीना

गोयमाईणं—गौतमादिकोने	मंडिअ—शोभित	वाहुवहाणेण—हाथना ओशीका वडे
आईण—आदिक	शरीरा—शरीरवाला	वाम—डावु
जिठ्ठिज्जा—वृद्धसाधुओ	वहुपडिपुन्ना—घणी परिपूर्ण	पासेण—पासाए
ठिज्जा—वेसो	संथारए—संथारामां	कुक्कुडि—कुकडी
रयणेहिं—रत्नोए करी.	संथारं—संथारा प्रत्ये	पसारण—पसारीने

अंतरंत-असमर्थपणा-थी न रहेवाय तो	पडीलेहा-पूजीने	इमस्स-आना
पमज्जए-पूजे	दव्वाइ-द्रव्यादिक	देहस्स-देहना
संकोइअ-संकोचे	उवओगं-उपयोग	इमाइ-आ
संडासा-साथल संधी	निरुंभण-रुधवुं, रोकवुं	रयणिए-रात्रीने विषे
उव्वट्टंत्ते-पासु फेरवे	आलोए-जुए	उवहि-उपधि
	पमाओ-प्रमाद	वोसिरिअं-वोसिरावुं

निसिही, निसिही, निसिही, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा नवकार तथा करेमिभंते सामाइयं ए सर्व पाठ त्रण वार कहीने पछी ॥ अणुजाणह जिठिजा, ठिजा ॥ अणुजाणह परम गुरु ॥ गुरु गुणरयणेहिं मंडिअसरीरा॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइअ संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं

॥ कुक्कुमिपाय पसारण, अंतरंत पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संमासा, जवट्टंते य काय पमिले हा ॥ दव्वाई जवजगं, ऊसास नि रुंनणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हु ज्ज पमाज, इमस्स देहस्सिमाइ र यणीए ॥ आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थः—अहीआं साधु तथा श्रावक पमिक्कमणुं करीने पठी सज्जाय करे, पठी पोरिसि थये ठते आ चार्य समीपे आवे. त्यां खमासमण देइने इच्छाकारेण संदिसह नगवन् " बहुपमिपुन्ना पोरिसि राइय सं थारए गमि " एनो अर्थ लखीए ठीए. हे नगवन्! तमे पोतानी इच्छाए करी मने आदेश आपो. घणी प्रतिपूर्ण एवी पोरिसि थइ, माटे रात्री संबंधि संथारा प्रत्ये हुं करुं? गुरु आदेश आपे पठी इरियावहि पूर्व क चैत्यवंदन करे. पठी शरीर चिंता लघुशंकादिक

कार्य सर्व करे, पछी यत्नाए करी संथारो करे, पछी डाबो पग संथारानी साथे राखीने मुहपत्ति पडिलेहे, पछी त्रणवार निसिही कहे. निसिही के० पाप व्यापारनो निषेध करीने मोहोटा मुनीश्वर एवा गौतमादिक क्षमाश्रमण जे छे ते प्रत्ये नमस्कार थाओ. पछी हे ज्येष्ठार्या ? (वृद्ध साधुओ) तमे मने आज्ञा आपो, ए प्रकारे कहेतो थको संथारानी उपर रह्यो थको नमस्कार पूर्वक सामायक पाठ त्रणवार नणे, पछी आवी रीते कहे, ते कहे छे. गुरुगुणरयणेहिं के० मोटा गुणरूप रत्नोये करी शोन्नित छे शरीर जेमनुं एवा हे परमगुरु? तमे मुजने आदेश आपो. घणी एवी पोरिसि थइ, माटे रात्री संथारकनी उपर विश्राम करुं॥१॥

अणुजाणह संथारं के० हे नगवन् तमे मने संथारानी आज्ञा आपो. पछी गुरु आज्ञा आपे ते वारे बाहु के० हाथनुं उशीकुं करी डाबे पासे सूवे, ते पण शी रीते सूवे ? तो के कुकडीनी पेठे आकाशने विषे पग पसारीने सूवे, जो ए रीते असमर्थ थकां नही रही शकाय तो शुं करे ? ते कहीए छीए. नूमि प्रत्ये

पूंजीने त्यां पग स्थापे ॥ २ ॥

संकोइअ संडासा के० ज्यारे पग संकोचवो होय त्यारे साथल पूंजीने संकोचे, अने ज्यारे पासुं फेरववुं होय त्यारे शरीर प्रत्ये पूंजीने पासुं फेरवे. हवे जागवानो प्रकार लखीए छीए. ज्यारे लघुशंकादिकने अर्थे उठे ते वारे द्रव्यादिकनो उपयोग करे एटले ते विचार करे जे द्रव्यथी हुं कोण छुं? अने खेत्र थकी एम विचारे के हुं उपर छुं के नीचे छुं, के कोइ बीजे ठेकाणे छुं; कालथी विचारे के हमणां रात्रि छे के दिवस छे. जो रात्रि छे तो केटली रात्री बाकी हशे? एम विचार करे ने उपयोग आपे, अने भावथी तो आम विचारे के मारे लघुशंकादिकनी बाधा छे? किंवा नथी? एवा चार प्रकारे उपयोग करतां जो निद्रा न जाय तो उच्छ्वास निःश्वास रुंधीने एटले नासिका दबावीने निद्रा दूर करे. निद्रा दूर थया पछी आलोक प्रत्ये जूए एटले बहार नीकलवानां बारणां प्रत्ये देखे, त्यां जइ लघुशंकादिक करीने पछी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते॥३॥

जइ मे हुज्ज पमाउ के० हवे सुइ रहेवाथी प्रथम शुं करवुं ? ते कहे छे एह रात्रिने विषे जो मारे आ देह संबंधि प्रमाद एटले मरवुं थाय तो अशनादिक चार प्रकारना आहार प्रत्ये, उपधि (वस्त्र, पात्रादिक) प्रत्ये, तथा शरीर प्रत्ये, अथवा उवहिदेहं के० शरीर संबंधि उपधि प्रत्ये, बीजा पण सर्व प्रत्ये त्रिविधे एटले मन वचन कायाए करी हुं वोसिरावुं छुं, त्याग करुं छुं ॥ ४ ॥

गाथा. ५ थी १० सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

पन्नतो–प्ररूपेलो
पवज्जामि–अंगीकार करुंछुं
चोरिक्कं–चोरि
मेहुणं–मैथुन
दविण–द्रव्यनुं
मुच्छं–मूर्च्छा
कोहं–क्रोध
माणं–मान
मायं–कपट
लोहं–लोभ

पिज्जं–प्रेम, रागने
दोसं–द्वेष
कलहं–क्लेश
अब्भक्खाणं–अभ्याख्यान
पेसुन्नं–चाडी
समाउत्तं–सहित
परपरिवायं–परपरिवाद
मायामोसं–माया मृषावाद

मिच्छत्तसल्लं–मिथ्यात्वशल्य
वोसिरिसु–त्यांग क॰
विग्घ भूआइं–विघ्नभूत
दुग्गइ–दुर्गति
निबंधणाइं–कारण
पावठाणाइं–पापस्थानक

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपन्नतो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ॥ कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥८॥ कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइ अरइ समा

उत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोस
मिच्छत्तसल्लं च ॥ ए ॥ वोसिरिसु
इमाइं मु, स्कमग्ग संसग्ग विग्घ
नूआइं॥ डुग्गइ निबंधणाइं, अ
ढारस पावठाणाइं॥ १० ॥

चत्तारि मंगलं के० चार मंगलिक छे. तेमां एक तो अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु, अने चोथो केवली नगवंते प्ररूप्यो एवो जे धर्म ते मंगलिक छे॥ए॥

चत्तारि लोगुत्तमा के० चार लोक मांहे उत्तम छे. एक अरिहंत, बीजा सिद्ध छे ते लोकमां उत्तम छे, त्रीजा साधु ते लोकमां उत्तम छे, वली चोथो केवलीए प्ररूप्यो जे धर्म ते लोकमां उत्तम छे ॥ ६ ॥

चत्तारि सरणं के० चार शरण प्रत्ये अंगिकार करुं छुं. एक तो श्री अरिहंत शरण प्रत्ये हुं अंगिकार करुं छुं. बीजुं सिद्ध शरण प्रत्ये हुं अंगिकार करुं छुं, त्रीजुं साधु शरण प्रत्ये हुं अंगिकार करुं छुं, चोथुं केवली प्ररूप्यो एवो जे धर्म तेना शरण प्रत्ये हुं अंगिकार

करुं हुं ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं के० पेहेलुं प्राणातिपात, बी जुं अलिक एटले मृषावाद, त्रीजुं चोरी, चोथुं मैथुन, पांचमुं द्रव्यने विषे मूर्छा एटले परिग्रह, छठो क्रोध, सातमुं मान, आठमी माया, नवमो लोभ, दशमो प्रेम (राग), तथा अगिआरमो द्वेष ॥ ८ ॥

कलहं अप्रक्खाणं के० बारमो क्लेश, तेरमो अ भ्याख्यान (आल देवुं,) चौदमुं पैशुन्य (चाडी करवी,) पंदरमे रतिअरति, सोलमो परपरिवाद, सत्तरमुं माया मृषा अढारमुं मिथ्यात्व शल्य ॥ ९ ॥

वोसिरिसु इमाइं के० ए प्रत्यक्ष अढार पापस्था नक जे छे, ते प्रत्ये रे जीव ! तुं त्याग कर. ते अढार पापस्थानक केवां छे ? तो के मोक्ष मार्गने विषे गमन करता जीवोने विघ्नभूत छे तथा दुर्गतिनां कारणछे।१०।

गाथा. ११ थी१७सुधीना छुटा शब्दना अर्थ.

एगो हं–हुं एकलो	कस्सइ–कोइनो	अप्पाणं–आत्माने
नथ्थि–नथी	अदीणमणसो–अदी न मन थको	अणुसासई–शीखाम ण आपे
अन्नस्स–बीजानो		

संजुओ-सहित	परंपरा-श्रेणी	गहिअं-ग्रहुं
सेसा-शेष	तम्हा-ते माटे	खमिअ-खामीने
बाहिरा-बाह्य	मह-मारा	खमाविअ-खमावीने
संजोग-संयोग	जावज्जिवं-ज्यां सु धी जीवुं त्यां सुधी	मुज्जह-मारे
मूला-मूल	तत्तं-तत्त्व	खमंत-खमे
जीवेण-जीवे		

एगो हं नत्थि मे कोई, नाहं मन्न स्स कस्स ई ॥ एवं अदीणमण सो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १२ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नतं तत्तं,

इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १४ ॥
खमिअ खमाविअ मइ खमिय,
सवह जीवनिकाय ॥ सिद्धह सा
ख आलोयणह, मुज्झह वइर न
जाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्म
वस, चउदह राज जमंत ॥ ते मे
सव खमाविआ, मुज्झवि तेह ख
मंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण बद्धं,
जं जं वाएण जासिअं पावं ॥ जं
जं काएण कयं, मिच्छामि डुक्कडं
तस्स ॥ १७ ॥

एगोहं नत्थि के० हुं एक हुं मारो कोइ नथी, अने अन्य कोइनो हुं नथी. एम अदीनमनथको आत्मा प्रत्ये शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासन के० ज्ञानदर्शने करी सहित एवो शाश्वतो सदा नित्य एवो रागादिक परजावथी रहित

एकज मारो आत्मा छे, शेष बाकी रह्या जे, द्रव्य थ की, तन धन कुटुंबादि संयोग मेलाप रूप, अने भाव थकी, विषयकषायादिरूप संयोग मेलाप, एवा भाव जे छे ते सर्व माहारा स्वरूप थकी बाह्य एटले जूदा छे।१२।

संजोगमूला जीवेण के० तन, धन कूटुंब ममत्वादि रूपनो संयोग एटले मेलाप तेहीज मूल कारण छे जेनुं एवी दुखनी श्रेणी ते जीवे पामी, ते कारण माटे पूर्वोक्त जे संयोग संबंध छे ते सर्व प्रत्ये त्रिविधे करी हुं वोसिरावुं छुं ॥ १३ ॥

अरिहंतो मह देवो के० अरिहंत अने सिद्ध भगवंत ते महारा देव छे. ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी सुसाधु मारा गुरु छे तथा ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी जिनेश्वर देवोये भाख्युं एवुं जे दयामूल तथा विनयमूल तत्त्व अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपरूप तत्त्व, ते मारो धर्म छे, जाव जीव सुधी ए प्रकारे सम्यक्त्व माहारे जीवे अंगिकार कीधुं. ॥ १४ ॥

खमिय खमाविय के० खम्या, खमाव्या, मारे विषे

जीवनिकाय खमजो, सिद्धनी साखे आलोयण करुं छुं, मारे कोइनी साथे वैरभाव नथी. ॥ १५ ॥

सव्वे जीवा के० सर्व जीवो कर्म वश थया थका चौद राजलोकमां भमे छे ते में सर्व खमाव्या अने तेउ मने खमजो. ॥ १६ ॥

जं जं मणेण के० जे जे (कर्म) मनवडे बांध्युं, जे जे वचनवडे पाप बोल्यो, जे जे कायावडे कर्युं, ते ते पापनुं मने मिछामि दुक्कडं हजो. ॥ १७ ॥

अथ पोसह पारवानी

गाथाना छुटा शब्दना अर्थ

सागरचंदो-सागरचंद शेठ	धन्नो-धन्य छे	वा लायक
कामो-कामदेव	पडिमा-अभिग्रह	आणंद-आणंद श्रावक
चंदवडिंसो-चंद्रावतंसराजा	अखंडिआ-अखंडित	कामदेवा-कामदेव
सुदंसणो-सुदर्शन	जीवीअंते वि-मरणांत सुधी	पसंसइ-प्रशंसा करेछे
	सलाहणिज्जा-वखाण	दढव्वय-दृढ व्रतवाला

सागरचंदो कामो ॥ चंदवडिंसो सु
दंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडि

मा ॥ अखंमिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा ॥ सुलसा आणंद कामदेवा य ॥ जेसिं पसंसइ नयवं ॥ दढव्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधें लीधो ॥ विधें पारिउ, विधि करतां ॥ जे कांइ अविधिहुउ होय ते सविहुं मन वचन कायाए करी ॥ मिच्छा मि डुक्कडं ॥

अर्थ–सागरचंदोकामो के० जीवितनो अंत थाते, आयुनो विनाश थाते, मरणांत उपसर्ग थाते थके पण जेनी पोषध प्रतिमा अखंमित रही, संपूर्ण रही, ते श्रावकने धन्य छे! ते केवा श्रावको ? सागरचंद अने कामदेव नामे श्रावक तथा चंडावतंस राजा, वली सुदर्शन शेठ.

धन्ना सलाहणिज्जा के० एक सुलसा श्राविका,

बीजा आणंद श्रावक, त्रीजा कामदेव श्रावक, ए त्रणे धन्य छे श्लाघनीय छे, एटले वखाण करवा योग्य छे. ते प्रत्यक्षपणे जेना दृढव्रत प्रत्ये जगवान् श्री महावीर स्वामी पोते श्रीमुखे प्रशंसे छे, वखाण करे छे, माटे ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ २ ॥

॥ पोसहना पच्चरकाणना छुटा शब्दना अर्थ ॥

पोसहं-पोषध	सव्वओ-सर्वथी	अहो-दिवस
देसओ देशथी	अव्वावार-अव्यापार	रत्तं-रात

करेमि जंते पोसहं, आहार पोसहं देसज, सव्वज, ॥ सरीर सक्कार पोसहं सव्वज ॥ बंजचेर पोसहं सव्वज ॥ अव्वावार पोसहं सव्वज ॥ चजविहे पोसहं ठामि ॥ जावदिवसं अहोरत्तं पज्जुवासामि डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स जं

ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति॥

अर्थः—करेमि भंते के० हे भगवन् ! अगिआर मा पोषधव्रतने अथवा जे धर्मनी पुष्टि करे तेने पोष ध कहीए, ते पोषध प्रत्ये हुं करुंछुं, ते चार प्रकारे छे, प्रथम अशनादिक आहार निषेध पोसह, ते वली बे प्रकारे छे, एक देश थकी निषेध ते त्रिविध आहार त्यागरूप तिविहार तथा विगय त्याग, आयंबिल, एकासण पच्चख्खाणथी करवो ते देशथकी आहार त्याग पोसह कहीए; अने बीजो सर्व थकी चारे आहारनो त्याग करवो ते सर्व थकी आहार त्याग पोसह कहीए. प्रथम आहार त्याग पोसहना बे भेद कह्या; हवे बीजो शरीर संबंधि नाहावुं, पीठी चोलवी, विलेपन, वस्त्राभरणादिक शोभानो नियम तथा नख, केश, रोमनुं समारवुं इत्यादि शरीरसत्कार निषेध नामे ए बीजो पोसह, ते सर्व थकी जाणवो. त्रीजो ब्रह्मचर्य पाले, सर्व प्रकारे स्त्री सेवन न करे, चोथो अ

व्यापारनी पुष्टिरूप ते सर्वथी जाणवो, एटले खेती, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन प्रमुखना जे वेपार तेनो सर्वथा निषेध करे, ए चार प्रकारना पोषधने विषे हुं रहुं, अंगिकार करुंछुं. ज्यां सुधी दिवस अने रात्रि मली आठ पहोर पोषध प्रत्ये, अथवा ज्यां सुधी दिवस प्रत्ये क्रमण छे त्यां सुधी चार पोहोर पोषध व्रत प्रत्ये, अथवा ज्यां सुधी रात्री प्रत्ये क्रमण छे त्यां सुधी चार पोहोर पोषधव्रत प्रत्ये, हुं पर्युपासु, सेवुं, त्यां सुधी. अने थोडोक दिवस होय ते वारे रात्रिपोसह जो लीये तो " जाव दिवसं रत्तं पज्जुवासामि " एवो पाठ कहे, ज्यां सुधी थोडो दिवस होय, त्यांथी लइने आखी रात्रि सुधि पोसह निरतिचार पालुं, दुविध, त्रिविधे करी इत्यादिनो अर्थ सुगम छे ॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पडिक्कमी स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं पछी तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो

काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही उन्ने पगे वेसी मुहपत्ती, कटासणुं, चरवलो, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो आदि पडिलेहवां, पछी काजो काढी जीव कलेवर सचित्त आदे जोवुं, पछी काजो कहाडनार थापनाजी सन्मुख उन्नो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या शोधी त्रण वार अणुजाणह जस्सगो कही काजो परठवे. पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण विधि.

॥ अथ देववांदवानो विधि ॥

प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांडीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण नांखीने चैत्यवंदन करी नमुत्थुणं कही. आभवमखंडा सुधी अर्ध जयवीअराय कहे वली बीजुं चैत्यवंदन करी नमुत्थुणं कही जावत् चार थोयो कहीये वली नमुत्थुणं कही जावत् वीजी चार थोयो कहीए त्यां सुधी वधुं कहेवुं. पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंति कही उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही अर्ध जयवीअराय आभवमखंडा सुधी क

ही पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जयवी
अराय कहेवा. प्रभाते देव वांदवा तेमां मन्ह जिणाणं
नी सज्झाय कहेवी अने मध्यान्हे तथा सांजे देव वां
दे तेमां सज्झाय न कहेवी ॥ इति.

॥ अथ मन्हजिणाणंना छुटा शब्दना अर्थ ॥

मन्ह–मानवी
आणं–आज्ञा
मिच्छं–मिथ्यात्वनो
परिहर–त्याग करो
सम्मत्तं–सम्यक्त्व
आवस्सयंमि–आवश्यकमां
उज्जुतो–उद्यमवंत
पइदिवसं–प्रतिदिवस
पव्वेसु–पर्वदिवसोमां
भावो–भावना
सज्झाय–भणवुं गणवुं
परोवयारो–परोपकार

जयणा–जतना
पूआ–पूजा
थुणिणं–स्तुति करवी
साहम्मिआण–साधर्मिओनुं
वत्सलं–वात्सल्य
ववहारस्स–व्यवहारनी
सुद्धि–शुद्धि
रहजुत्ता–रथयात्रा
तित्थजुत्ता–तीर्थ यात्रा
उवसम–क्षमा उपशम
संवर–आश्रवने रोकवुं
भासासमिइ–भाषासमिति

धम्मिअ–धार्मिक
संसग्गो–सोवत
करण–इंद्रिओ
दमो–दमन करवुं
चरिण–चारित्रना
परिणामो–परिणाम
संघोवरि–संघनी उपर
बहुमाणो–बहुमान
लिहणं–लखवुं लखावुं
सड्ढाण–श्रावकना
किच्च–कृत्य
वएसेणं–उपदेशथी

मन्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिह

रह धर सम्मत्तं ॥ छव्विह आव सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावोअ ॥ सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिण पूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छलं ॥ ववहारस्स य सुद्धि, रह जुत्ता तिच्छजुत्ता य ॥ ३ ॥ उवसम विवेकसंवर, भासा समिई छ जीवकरुणा य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो, पुच्छयलिहणं पभावणा तिच्छे ॥ सढ्ढाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरु वएसेणं ॥ ५ ॥ इति

अर्थः—मन्ह जिणाणं आणं के० श्री जिनेश्वर
नी आज्ञा मानवी तथा मिथ्यात्वनो त्याग करवो,
अने सम्यक्त्वने धारण करवुं, सामायिकादिक ७.प्र
कारना आवश्यकने विषे प्रतिदिवस उद्यमवंत होवुं १

पव्वेसु पोसहवयं के० आठम चौदश वीगेरे पर्वो
ना दिवसोमां पौषधव्रत करवुं अने सुपात्रने दान देवुं,
शील पालवुं, तप करवुं, वली भावनाउ भाववी, व
ली वांचना पृछनादि पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो,
नमस्कारनो पाठ करवो, परोपकार करवो, वली ज
यनाए प्रवर्त्तवुं ॥ २ ॥

जिणपूआ जिण थुणिणं के० श्री जिनेश्वरनी
पूजा भक्ति करवी, श्री जिनेश्वरनी स्तुति करवी, गु
रुनी स्तुति करवी अने साधर्मिजनी वत्सलता करवी,
अने व्यवहारनी शुद्धिने रथ यात्रा अने तीर्थ यात्रा सं
हित करवी ॥ ३ ॥

उवसम विवेक संवर के० क्षमा धारण करवी,
तथा विवेक अने संवर भाव राखवो, भाषा समिति

अने पृथिव्यादिक ठ प्रकारना जीव उपर दया राखवी, रक्षा करवी; तथा धार्मिक जनोनी साथे संसर्ग करवो, तथा पांच इंद्रिने दमन करवुं अने चारित्रना परिणाम राखवा ॥ ४ ॥

संघोवरि बहुमाणो के० श्री संघनी उपर बहुमान राखवुं, तथा पुस्तक लखवां लखाववां अने तीर्थमां प्रन्नावना करवी; श्रावकनां नित्य करवा योग्य कार्य ए बे, ते सुगुरुना उपदेशे करी जाणी लेवां ॥५॥ इति

पोसहमां चोवीस मांमलां करवां तेनां नाम.

॥ प्रथम संथारा पासेनी जग्याए ॥

१ आघाके[1] आसन्ने[2], उच्चारे[3] पासवणे[4], अणहियासे[5]; २ आघाके आसन्ने, पासवणे, अणहियासे; ३ आघाके मज्ञे[6], उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ४ आघाके मज्ञे, पासवणे, अणहियासे; ५ आघाके दूरे[7], उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ६ आघाके दूरे, पासवणे, अणहियासे.

---

१ रोगादिक घाड कारणे. २ संथारानी कल्पेली जमीन न जीक. ३ थंडिल, झाडो. ४ मात्रुं के पेसाब. ५ न सहन थइ शके तेवा कारणे. ६ संथारानी जमीनना मध्य भागमां. ७ संथारानी जमीनथी दूर.

हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफना.

१ आघाडे आसन्ने, उच्चारे पासवणे, अहियासे[१]; २ आघाडे आसन्ने, पासवणे, अहियासे; ३ आघाडे मज्झे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ४ आघाडे मज्झे, पासवणे, अहियासे; ५ आघाडे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ६ आघाडे दूरे, पासवणे, अहियासे.

हवे उपाश्रयनां बारणां बाहिर नजीक रहीने करे.

१ अणाघाडे आसन्ने, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; २ अणाघाडे आसन्ने, पासवणे, अणहियासे; ३ अणाघाडे मज्झे, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ४ अणाघाडे मज्झे, पासवणे, अणहियासे; ५ अणाघाडे दूरे, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ६ अणाघाडे दूरे, पासवणे, अणहियासे.

हवे उपाश्रयथी सो हाथ आशरे दूर रहेते करवां.

१ अणाघाडे आसन्ने, उच्चारे पासवणे, अहियासे;

---

१ सहन थइ शके तेवा कारणे.

२ अणाघाम्मे आसन्ने, पासवणे, अहियासे;३ अणाघाम्मे मज्झे, उच्चारे पासवणे, अहियासे;४ अणाघाम्मे मज्झे, पासवणे, अहियासे; ५ अणाघाम्मे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे;६ अणाघाम्मे दूरे, पावसणे, अहियासे.॥इति॥

पोषधविधि.

पोसह करवाने इछनारे प्रजातमां वेहला उठी ने राइपमिक्कमणुं जरुर करवुं जोइए. विधिना जाण श्रावको तो पमिलेहण अने देववंदन पण ते साथेज करे छे. त्यार पछी जिनमंदिरनी जोगवाइ होय तो जिनेश्वरनी पूजा करी पछी उपाश्रये आवी, गुरु समक्ष पोसह उच्चरवो.

प्रथम खमासमण देइ इरियावहि पमिक्कमी प्रगट लोगस्स केहवो, पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पोसह मुहपत्ति पमिलेहुं ? एम कही गुरु आदेश आपे एटले इछं कहीने मुहपत्ति पमिलेहवी. पछी खमा० इछा० पोसह संदिसाहु ? इछं कही खमा० इछा० पोसह ठाउं ? पछी इछं कही बे हाथ जोमी नवकार गणी इछकारी जगवन् पसाय क

री पोसह दंडक उचरावोजी; एम कही, करेमि भंते पोसहं० ए पाठ कहेवो. पछी खमा० देइ इछा० सामा यक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इछं. कही मुहपत्ति पडिलेहे पछी खमा० देइ इछा० सामायक संदिसाहु ? इछं क ही, पछी खमा० देइ इछा० सामायक ठाउं ? इछं कही बे हाथ जोडी नवकार गणी, इछकारी भगवन् पस य करी सामायक दंडक उचरावोजी; त्यां गुरु करेमि भंते समाइयंनो पाठ कहे. गुरु न होय तो वडिल कहे. तेमां जाव नियमंने ठेकाणे जाव पोसहं कहेवुं. पछी खमा० इछा० बेसणे संदिसाहुं ? इछं. खमा० इछा० बेसणे ठाउं ? इछं. पछी खमा० इछा० सज्झाय संदिसा हु ? इछं. खमा० इछा० सज्झाय करुं ? इछं, कही त्रण नवकार गणवा. पछी खमा० इछा० बहुवेल संदिसाहु? इछं. खमा० इछा० बहुवेल करशुं. इछं. खमा० इछा० पडिलेहण करुं ? इछं. कहीने मुहपत्ति वगेरे पांच वा नां पडिलेहवां (मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बो लथी, कटासणुं पचीस बोलथी, सुत्रनो कंदोरो १० बोलथी अने धोतीउं २५ बोलथी पडिलेहवुं. ते बोल मुहपत्तिना पचास बोल जे आगल लख्यां छे, ते ले

वा अने जे उंडा कहेवाना होय ते प्रथमथी ग्रहण करवा). पछी खमासमण दइ इच्छकारी भगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी एम कही आचार्यजी पडिलेहवा. आचार्यजी न होय तो वडिलनुं एक अण पडिलेह्युं वस्त्र (उत्तरासन) पडीलेहवुं. पछी खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं ? इच्छं कही, खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहुं ? इच्छं कही, बाकी रहेलां उत्तरासन, मात्रीयुं, कामली वगेरे पचीस बोलथी पडिलेहवां. पछी एक जणे डंडासण याची तेने पडिलेही इरियावहि पडिक्कमी काजो लेवो. काजो तपासीने स्थापनाचार्य सन्मुख उत्कृक बेसीने इरियावहि पडिक्कमवा पछी काजो यथा योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने परठववो. परठव्या पछी त्रण वार वोसिरे कहेवुं. कदापि कोइथी राइ पडिक्कमण न बन्युं होय तो देव वांद्या अगाउ प्रतिक्रमण करवुं. तेमां प्रथम इरियावहि पडिक्कमीने खमासमण दइ आदेश मागी कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग कर

वो, अने सात लाख अढार पाप स्थानकने बदले इच्छा० गमणागमणे आलोउं? इच्छं कही गमणागमणे कहेवा.

गमणा गमणे.

इर्यासमिति, ज्ञाषासमिति, एषणासमिति, आदान ज्ञंरुमत्त निखेवणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए पांच समिति त्रण गुप्ति, ए आठ प्रवचन माता श्रावकतणे धर्मे सामायक पोसह लीधे रुमीपेरे पाली नहीं खंरुन विराधना थइ होय, ते सविहुं मन वचन कायाए करी मिछामि ऊक्करुं.

पछी छेवटे ज्ञगवानादि वंदन कर्या अगाउ खमा० इच्छा० बहुवेल संदिसाहुं ? इच्छं. कही खमा० इच्छा० बहुवेल करशुं इच्छं. कही ज्ञगवानादि वांदीने अड्ढाइजेसु कहेवुं. ए रीते परुिक्कमण करवुं. पछी देववंदन करी सज्ञायनो आदेश मागी उज्ञरुक वेसी मन्हजिणाणंनी सज्ञाय कहेवी. सांजे तथा वपोरे न कहेवी.

पछी छ घमी दिवस चम्या पछी पोरसि
ववी तेनी विधि. प्रथम खमा० इछा० बहु प
पोरिसि ? कही खमा० देइ इरियावहि पमिक्कमवा
छी खमा० देइ इछा० पमिलेहण करुं ? इछं कही मु
हपत्ति पमिलेहवी. पछी जेणे गुरु समक्ष राइ पमिक्क
णा न कर्युं होय तेणे राइमुहपत्ति आ प्रमाणे पमिलेहवी.

खमा० देइ इरियावहि पमिक्कमी खमा० देइ इ
छा० राइमुहपत्ति पमिलेहुं ? इछं कही मुहपत्ति पमिले
हवी. पछी वांदणां बे देवां. पछी इछा० राइयं आलोउं?
इछं कही. तेनो पाठ कहेवा पछी सव्वस्सवि राइयं०
कही पंन्यास होयतो बे वांदणां देवां, पन्यास न होय
तो एक खमासमणुंज देवुं पछी इछकार सुह राइ०
कहीने अप्भुठ्ठिओहं खमाववुं. पछी बे वांदणां देवां. पछी
इछकारी जगवन् पसाय करी पच्चक्खाणनो आदेश
देजो जी. एम कहीने पच्चक्खाण लेवुं. पछी सर्व मुनि
ने बे खमासमण तथा अप्भुठ्ठिओहंना पाठ सहित वंदन
करवुं. पछी कुंमी पुंजणी तथा अचित्त जलनी याच
ना करवी. पछी जिनमंदिरे दरशन करवा यथाविधि

हाेय तो मध्याननां देव वांद्या अ काजो लेइ देव वांदवा, पछी चउवि होय तेणे नीचे प्रमाणे पच्चक्खा

खमा० दइ इरियावहि पडिक्कमी, जगचिंतामणी नुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी कहेवुं. स्तवन उवसग्ग हनुं कहेवुं. पछी खमा० देइ इच्छा० सज्झाय करुं कही क नवकार गणी मन्ह जिणाणंनी सज्झाय कहेवी. पछी क सामायिकनी मुहपत्ति पडिलेहुं कही मुहपत्ति पडिलेहवी. ३ ॥ कर० ॥ सा० पच्चक्खाण पारुं? यथाशक्ति, खमा०देइ ायवार जाव ार्युं तहत्ति कही जमणो हाथ नीचे वकर्म ली(पा.३१४मां लख्या प्रमाणे)पच्च ा छी नवकार गणवो पछी पाणी पीवुं ए. एकासणुं करनारे जतना पूर्वक घर गल कही पूंजी कटासणुं नांखी स्थापना रियावही पडिक्कमी खमा० देइ गमणागमणे ावबा. पछी काजो लेइ पाटलो, थाली वगेरे भा जन तथा मुख पुंजीने यथा संभवे अतिथि संविभा

ग फरसीने निश्चल आसने, मौनपणे आहार करवो. लीधेली वस्तुमांथी बीलकुल पाछुं मुकी शकाय नहीं.

जेने घेर जवुं न होय ते पोसहशालाए पूर्वप्रेरित पुत्रादिके आणेलो आहार करे. ते प्रथम जग्या प्रमार्जीने कटासणापर बेसी भाजन, मुख, वगेरे प्रमार्जी, स्थापना स्थापीने इरियावहि पडिक्कमे अने निश्चल आसने मौनपणे आहार करे. तथा प्रकारना कारण विना स्वादिष्ट मोदक अने लविंगादिक तांबुल ग्रहण न करे. पछी मुख शुद्ध करीने दिवसचरिम तिविहारनुं पच्चक्खाण[1] करे. त्यार पछी घेर जनार पोषधशालाए आवीने अने पोषधशाला वाला आहार कर्यानी जग्याए अथवा मूल स्थानके इरियावहि पडिक्कमीने जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय पर्यंत करे.

पोसहमां मध्याननां देव वांद्या अगाउ पच्चक्खाण पारी शकाय नहीं.

पछी बीजी वारनी पडिलेहण त्रीजा पहोर पछी मुनिराजे स्थापनाचार्यनी[2] पडिलेहणा करी होय

[1] पोसह विना एकासणुं वीगेरे करनारे पण ते करीने उठ्या पेहेलां दिवस चरिम तिविहारनुं पच्चक्खाण करवुं जोइए.

[2] स्थापनाचार्यनी पडिलेहणा कर्या अगाउ पडिलेहण न थाय.

तेनी समकृ करवी, तेनी विधि आ प्रमाणे.

प्रथम खमा० देइ इछा० बहु पमिपुन्ना पोरिसि कही खमा० इछा० इरियावहि पमिक्कमवा पछी खमा० इछा० गमणागमणे आलोउं? इच्छं कही गमणागमणे आलोववा पछी खमा० इछा० पमिलेहण करुं? इछं कही, खमा० इछा० पोषध शाला प्रमाजुं? कही इछं कही, उपवास वालाए मुहपत्ति, कटासणुं, ने चरवलो पमिलेहवां, अने जमनारे कंदोरो, धोतीउं सुधां पांच वानां पमिलेहवां पछी खमा० इछकारी नगवान पसाय करी पमिलेहणा पमिलेहावोजी. एम कहीने वमीलनुं एक वस्त्र पमीलेहवुं. पछी खमा० इछा० उपधिमुहपत्ति पमिलेहुं? इछं कही मुहपत्ति पमिलेहीने खमा० इछा० सज्झाय करुं? इछं कही नवकार गणीने मन्ह जिणाणंनी सज्झाय उत्कुक बेसीने कहेवी. पछी खाधुं होय ते वांदणां देइने पाणाहारनुं पच्चखाण करे अने तिविहार उपवास वाला खमासमण देइ इच्छकारी नगवन् पसाय करी पच्चख्काणनो आदेश देजो

जी कही पाणहारनुं पच्चक्खाण[1] करे (चउविहार उपवास वालाने पच्चक्खाण करवानुं नथी, पण प्रभाते तिविहार उपवासनुं पच्चक्खाण लीधुं होय ने पाणी न पीधुं होय तो आ वखते चउविहार उपवासनुं पच्चक्खाण करे). पछी खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहु? इच्छं, खमा० इच्छा०उपधि पडिलेहुं? इच्छं कही प्रथम पडिलेहतां बाकी रहेलां वस्त्रोनी पडिलेहणा करे तेमां रात्री पोसह करनार प्रथम कामली पडिलेहे. पडिलेहण थइ रहे एटले सर्व देव वांदे (विधि पूर्ववत्). पछी अवसरे देवसि अथवा पाक्षिकादि प्रतिक्रमण करे. तेमां प्रथम मात्र इरियावहि पडिक्कमी खमा० दइने चैत्यवंदन करे. सात लाख अढार पापस्थानकने बदले गमणा गमणे आलोवे. करेमिभंतेमां सघले ठेकाणे जाव नियमं ने ठेकाणे जाव पोसहं कहे. प्रतिक्रमण करी रह्या पछी दिवसना पोसहवाला नीचे प्रमाणे करे.

---

१ जो पाणी वापरवानी जरूर जेवुं होय तो मुट्ठि सहियंनुं पच्चख्खाण करे अने पडिलेहण कर्या पछी मुठी वाली त्रण नवकार गणी पाणी वापरे ते पाणहारनुं पच्चख्खाण पडिक्कमणा वखते करे; पण देव वांद्या पछी पाणी वापरी शकाय नहीं.

खमा० देइ इरियावही पडिक्कमी चउक्कसायथी जय वीयराय सुधी कहीने प्रथम याचेलां डंडासण कुंडी वगेरे गृहस्थने (आ तमने जडे छे एम) जणावी देवां. पछी खमा० इच्छा० पोसह पारुं, यथा शक्ति. खमा० इच्छा० पोसह पार्यो, तहत्ति. कही नवकार गणी चरवला पर जमणो हाथ आपी सागरचंदो कहे.

पछी खमा० इच्छा० मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेही सामायक पारवानी विधि प्रमाणे सामायक पारे.

हवे सवारे जेणे आठ पहोरनोज पोसह लीधो होय तेणे सांजना देव वांद्या पछी, कुंडल न लीधां होय तो लेइने डंडासण तथा चुनो नांखवुं अचित्त पाणी जाचीने पछी खमा० इरियावही पडिक्कमीने खमा० देइ इच्छा० स्थंडिल पडिलेहुं? इच्छं कही चोवीस मांडलां करे. पछी इरियावही पडिक्कमीने पडिक्कमण करे.

मात्र रात्रीना चार पहोरनोज पोसह करवो हो य तेणे पडिलेहण देववंदन वगेरे विधि दिवस छतां करवानी होवाथी वहेला आववुं जोइए, अने ते दिवसे उगामां उगो एकासणानो तप करेलो होवो जोइए तेणे करवानी विधि आ प्रमाणे.

प्रथम खमा० देइ इरियावहि पडिक्कमवाथी मांडीने यावत् बहुवेल करशुं पर्यंत सवारना पोसह लेवानी विधि प्रमाणे विधि करे अने त्यार पछी सांजनी पडिलेहणमां खमा० देइ पडिलेहण करुं ? आदेश मागवानो छे त्यांथी उपधि पडिलेहुं ? नो आदेश मागवा पर्यंत ते प्रमाणे विधि करे. ए प्रमाणे कर्या पछी देव वांदे, मांडलां करे, अने पडिक्कमण करे.

जेणे सवारे चार पहोरनो पोसह उचर्यो छे ते नोज विचार आठ पहोरनो पोसह लेवानो थाय तो तेणे सांजनी पडिलेहणा करती वखते इरियावही पडिक्कमी, खमासमण देइ गमणागमणे आलोवीने पछी इरियावही पडिक्कमवाथी मांडीने बहुवेल करशुं

ए आदेश पर्यंत सवारना पोसह लेवानी विधि प्रमा
णे सर्व विधि करवी तेमां " सज्झाय करुं " एने बदले
" सज्झायमां छुं " केहवुं अने त्रण नवकारने बदले एक
नवकार गणवो. त्यार पछी सांजनी पडिलेहणमां ख
मा० देश पडिलेहण करुं ? ए आदेश मागवानो छे त्यां
थी सघली विधि पूर्वक पडिलेहण करे, देव वांदे, मां
डलां करे, अने प्रतिक्रमण पूर्ववत् करे.

हवे रात्री पोसह वाला पहोर रात्री सुधी सज्झा
य ध्यान करे, पछी खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरि
सि ! कही खमा० इरियावहि पडिक्कमे, पछी खमा०
इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि राइय संथारए ठाउं ?
(ठाइशुं) एम कहीने चउक्कसायनुं चैत्यवंदन जय
वीयराय पर्यंत कहे; पछी खमा० इच्छा० संथारा विधि
भणवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडि
लेहीने संथारा पोरिसीनो पाठ कहे.

संथारा पोरिसि कह्या पछी सज्झाय ध्यान करे,
अने निंद्रापीडित थाय त्यारे मात्रु वगेरेनी बाधा टा
लीने दिवसे पडिलेहेली जग्याए संथारो करे. तेमां प्र

थम जमीन पडिलेहीने कामली पाथरे तेनी उपर कटासणुं पाथरीने एकवडो उगाड पाथरे, मुहपत्ति केडे भरावे, चरवलो पडखे मुके अने मातरीयुं पेहेरीने डाबे पडखे हाथनुं उसीकुं करीने सुए. रात्रीए चालवुं पडे तो दंडासण वडे पडिलेहतां चालवुं.

पाछली रात्रे जागीने नवकार संभारी भावना भावी मात्रानी बाधा टाली आवे, पछी इरियावही पडिक्कमी कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग करी राइ पडिक्कमणुं[1] करे; त्यार पछी स्थापनाचार्य पडिलेही पछी तेमनी सनमुख पडिलेहण करे ते आ प्रमाणेः—

इरियावही पडिक्कमी खमा० देइ इच्छा० पडिलेहण करुं? इच्छं कही पूर्वोक्त पांच वानां पडिलेहे, पछी खमा० देइ इच्छकारी० पडिलेहणा पडिलेहावोजी कही वडीलनुं एक वस्त्र पडिलेहे पछी खमा० देइ इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं, कही मुहपत्ति पडिलेही

---

१ प्रभातमां पोसह लीधा पछी राइ पडिक्कमणामां जे फेरफार करवानुं लखेलुं छे ते प्रमाणे करवुं.

खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहु ? इच्छं. कही खमा० इ
च्छा० उपधि पडिलेहु ? इच्छं, कही बाकीनां सर्व वस्त्र प
डिलेहवां. पछी इरियावही पडिक्कमी काजो ले (पूर्व प्र
माणे); पछी देव वांदी सज्झाय कही याचेली वस्तुओ
गृहस्थने भळावे. पछी इरिया वही पडिक्कमी पोसह
पारवानी विधि प्रमाणे पोसह[1] पारे.

स्थंडिल जवानी विधि.

पोसहमां कदी स्थंडिल जवुं पडे तो मातरियुं
पेहेरी कालनो वखत होय तो माथे कटासणुं नांखी
कामली ओढी मुहपत्ति कहेडे राखी चरवलो काखमां
राखी लोटादि नानुं पात्र लइने जाय, त्यां निर्जीव
जग्या जोइ बाधा टाले. उठती वखते त्रण वार वोसिरे
कहे. पछी पोषधशालाए हाथ पग धोइ वस्त्र बदली
स्थापनाजी पासे इरियावही पडिक्कमे, पछी खमा०
इच्छा० गमणागमणे आलोउं ? इच्छं कही गमणागमणे
आलोववा. जतां आवस्सही ने आवतां निस्सीहि केहवी.

---

१ प्रथम दिवसना चार पहोरनो पोसह पारवानी विधिमां च
उक्कसायनुं चैत्यवंदन जयवीयराय पर्यंत करवानुं लखेलुं छे ते
आठ पहोर वालाने करवानुं नथी.

मांथे कामली नांखवा संबंधी काल.

असाढ शुदी १५ थी, कारतक शुदी १४ सुधी सवारे ने सांजे छ छ घडी, कारतक शुदी १५ थी फागण शुदी १४ सुधी बंने टंक चार घडी. फागण शुदी १५ थी असाढ शुदी १४ सुधी बंने वखत बेबे घडी.

अचित्त पाणीनो काल.

असाढ शुदी १५ थी कारतक शुदी १४ सुधी चुलेथी उतर्या पछी त्रण पहोरनो, कारतक शुदी १५ थी फागण शुदी १४ सुधी चार पहोरनो, फागण शुदी १५ थी. असाढ शुदी १४ सुधी पांच पहोरनो.

आ प्रमाणे काल उपरांत रहेलुं पाणी पाछुं सचित्त थाय छे. पण पाछुं काल पुर्ण थया अगाउ तेमां कलीचुनो नांखवाथी २४ पहोर सुधी अचित्त रहे पण जो चुनो नांखवो भुली जाय तो उपवासनी आलोयण आवे.

परचुरण समजुती.

वखत मोडो थइ जवाना भयथी पोतानी मेळे एकला पोसह उचरी ले तो फरीने तेमणे गुरु समक्ष पोसह उचरवो. तेमां उपधी पडिलहुं ? पर्यंत बधा आदेश मागवा (आ विधि राइ मुहपत्ति पडिलेहण अनुसार करवी.).

पडिलेहण करनारे उत्कृक बेसी मौनपणे पडिलेहण करवी. जीव जंतु बराबर तपासवो अने उत्तरासण पेहेरवुं नहीं.

काजो लेनारने एक आंबिल तपनुं विशेष फळ मळे, माटे काजो उपयोग पूर्वक बराबर लेवो.

पोसहमां १८ दोष, पांच अतिचार तथा सामायकना बत्रीस दोष टाळवानो खप करवो.

पोसहना १८ दोष.

१ पोसहमां व्रती विनाना बीजा श्रावकनुं आणेलुं पाणी न पीवुं.

२ पोसह निमित्ते सरस आहार लेवो नहीं.

३ उत्तरवारणने दिवसे विविध प्रकारनी आहारनी सामग्री मेळववी नहीं.

४ पोसहमां अथवा पोसह निमित्ते विभुषा (शोभा) करवी नहीं.

५ पोसह निमित्ते वस्त्र धोवरावववां नहीं.

६ पोसह निमित्ते आभुषण घमावववां नहीं, अने पोसहमां आभूषणो पहेरवां नहीं.

७ पोसह निमित्ते वस्त्र रंगाववां नहीं.

८ पोसहमां शरीर उपरथी मेल उतारवो नहीं.

९ पोसहमां अकाळे शयन करवुं नहीं, उंघवुं नहीं, रात्रीने बीजे पहोरे संथारा पोरसी भणावीने निद्रा लेवी.

१० पोसहमां सारी के नठारी स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं.

११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.

१२ पोसहमां सारी या नठारी राज कथा के युद्ध कथा करवी नहीं.

१३ पोसहमां देश कथा करवी नहीं.

१४ पोसहमां पूंज्या पमिलेह्या विना लघुनिति व डीनिति परठववी नहीं.

१५ पोसहमां कोइनी निंदा करवी नहीं.

१६ पोसहमां (वगर पोसाती) माता, पिता, पुत्र, न्राइ, स्त्री वगेरे संबंधीज साथे वार्त्तालाप करवो नहीं.

१७ पोसहमां चोर संबंधी वार्त्ता करवी नहीं.

१८ पोसहमां स्त्रीनां अंगोपांग नीरखीने जोवां नहीं.

श्री ज्ञान पंचमी स्तुतिना छुटा शब्दना अर्थ.

प्राज्य–मोटो	प्रास्त–प्रकर्षे करी टालेला	सच्चकोरान्–उत्तम चकोरने
चंचत्–दीपतुं	प्रपंचः–विस्तार	तिलकसमः–तिलक समान
पंचाक्ष–पांच इंद्रियो	सत्तपसि–सारा तपमां	कौशिक–घूड
द्विरद–हस्ती, हाथी.	वितनुतां–विस्तारो	पुण्याब्धि–पुण्यनो समुद्र
मदाभिदा–मदभेदवे करी	पंचम ज्ञानवान्–केवल ज्ञान वालो	प्रीतिदायी–प्रीतिनो देनार
पंचवक्त्र–सिंह	संप्रीणन्–खुशी करतो	
पंच देहा–पांच शरीरवाला		

सितरुचिः–चंद्रमा
स्वीय–पोताना
गोभिः–किरण वडे
तमांसि–अंधकारोने
सांद्राणि–घाढ
ध्वंसमानः–नाश करतो
कुवलय–चंद्रविकाशी कमल, पृथ्वी वलय
उल्लास–विकसितपणाने, हर्षने
उच्चैः–अत्यंत
चकार–करतो हवो
पुष्यात्–पुष्टी करो
वासरस्य–दिवसना

अभिध–नाम
यास्यंति–पामशे
जग्मुः–पामता हवा
यस्मात्–जेथी
अमरतां–अजरामरपणाने
निर्व्वाणपुर्य्यां–मोक्ष नगरीमां
यात्वा–पामीने, जइने
दशम–दशमो
सुधाकुंडं–अमृतकुंड
पंचम्याः–पांचमना
तपसि–तपमां
विशदधियां–निर्मल बुद्धिवालाने

भाविनां–भव्य जीवोने
अस्तु–हो
हुंकार–हुंकारो
दूरिकृत–दूर करेला
सुकृत–सुकृत करनार
व्रात–समूह
प्रचाराः–विस्तार
भृंगी–भमरी
पंचम्यह्न–पंचमीना दिवसना
तपोर्थ–तपने अर्थे
वितरतु–विस्तारो
धीमतां–बुद्धिवालाना
सावधाना–सावधान

अथ ज्ञान पंचमी स्तुति प्रारंभ.

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृत प्राज्य जन्माभिषेक, श्चंचत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदभिदा पंचवक्त्रोप

पमानः ॥ निर्मुक्तः पंचदेह्याः परम
सुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः, कल्या
णं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचम
ज्ञानवान् वः ॥ १ ॥ संप्रीणन्
सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौ
शिकानंद मूर्त्तिः, पुण्याब्धिप्रीति
दायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोन्नि
स्तमांसि ॥ सांद्राणि ध्वंसमानः
सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार,
ज्ञानं पुष्याज्जिनौघः स तपसि ज्ञ
विनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥ पी
त्वा नानाज्ञिधार्थामृतरसमसमं यां
ति यास्यंति जग्मु, र्जीवा यस्माद
नेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाण
पुर्याम् ॥ यात्वा देवाधिदेवागम द

शमसुधाकुंभमानंद हेतु, स्तत्पंच
म्यास्तपस्युद्यतविशदधियां जावि
नामस्तु नित्यं ॥ ३ ॥ स्वर्णालंका
रवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनि
त्यांधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसु
कृतजनव्रातविघ्नप्रचारा॥ देवी श्री
अंबिकाख्या जिनवरचरणांनोज
नृंगीसमाना, पंचम्यह्नस्तपोर्थं वितर
तु कुशलं धीमतां सावधाना ॥४॥

अर्थः—श्रीनेमिः पंचरूप के० श्रीनेमिनाथ नग
वान् ते तमारा पंचमीना सारा तपने विषे निर्विघ्न
प्रत्ये विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ नगवान केवा ठे?
तो के पांच रूपे करीने देवतानो पति एवो जे इं
तेणे कर्यो ठे मोटो अने नत्तम जन्मानिषेक जेमनो
एवा, वली ते केवा ठे? तो के दीपता एवा पांच इं
योरूप हाथीना मद नेदवे करीने सिंहनुं नपमान ठे

जेमने एवा, वळी ते केवा छे ? तो के औदारिकादिक पांच शरीर तेथी मुकाणा एवा छे. वळी केवा छे? तो के उत्कृष्ट एवा सुखे करी सहित छे. वळी केवा छे? तो के प्रकर्षे करी टाळ्या छे कर्मना विस्तार जेमणे एवा छे. वळी केवा छे ? तो के पांचमुं ज्ञान जे केवलज्ञान तेणे करी युक्त छे ॥ १ ॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् के० हवे जिनसमुदायने चंद्रनी समानतारूपे स्तवे छे. चंद्रमा सदृश एवो तथा मोक्षने विषे तिलक समान एवो जे जिनसमुदाय छे, ते भव्य जनोना पंचमीना दिवसना रूडा तपने विषे ज्ञानने पुष्टि करो. हवे ते जिनसमुदायने चंद्र तुल्यता केवी रीते छे ? ते सर्व विशेषणोए करीने कहे छे. जेम चंद्र उत्तम चकोरने रूडे प्रकारे आनंद करे छे तेम ए श्री जिनसमुदाय पण सत्पुरुषरूप चकोरने सम्यक् प्रकारे हर्ष करे छे. वळी जेम चंद्र घूडने आनंददायक छे मूर्ति जेनी एवो छे, तेम ए जिनसमुदाय पण इंद्रने आनंदरूप छे मूर्ति जेनी एवो छे. तथा जेम चंद्र पुण्यकारक समुद्रने प्रीतिदायक छे, तेम जिनौ

घ पण पुण्यरूप जे समुद्र तेने प्रीतिनो देनारो छे. त
था जेम चंद्र पोतानां किरणोए करी गाढ अंधकारोने
नाश करनारो छे, तेम जिनौघ पण गाढ एवां जीवोनां
अज्ञानने नाश करनारो छे. तथा जेम चंद्र समग्र कु
वलय के० चंद्र विकाशी कमलोने विकसितपणाने प्र
त्यंत करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण कुवलय के० पृ
थ्वीवलयने हर्षने करतो हवो एवो छे, माटे तेने चंद्र
मानी उपमा योग्य छे ॥ ३ ॥

पीत्वा नानाभिधार्थी के० श्री वीतराग देवनो सि
द्धांतरूप दशमो एवो अमृतकुंम जे छे, ते ज्ञानपंचमी
ना तपने विषे उजमाल तथा निर्मल छे बुद्धि जेमनी
एवा भव्य जीवोने आनंदनो कारणभूत निरंतर थाउ.
हवे ते जिनागमरूप दशम सुधाकुंभ केवो छे ? तो के
नाना प्रकारनां छे नाम जेमनां एवा जे अर्थो, ते रूप
अमृतरस छे जेमां एवो छे, तेने विधि प्रमाणे पान क
रीने निरुपम एवा सुखने पामशे, पामे छे, अने पामता
हवा; जेनुं पान करवा थकी अनेक एवा जीवो जे छे,
ते मोटी एवी मोक्ष नगरीने विषे अजरामरपणाने पा

मीने स्वस्थ थाय छे ॥ ३ ॥

स्वर्णालंकार के० श्री अंबिका छे नाम जेनुं ए वी देवी, ते सावधान छती बुद्धिमान एवा भविक जीवना पंचमीना दिवसना तपने माटे कुशल जे छे तेने विस्तारो. ते देवी केवी छे ? तो के सोनाना अलंकारने विषे वलगेला मणिनां किरणोना समूहे करी टाळ्यो छे निरंतर अंधकार जेणे एवी छे; वली ते देवी केवी छे ? तो के हुंकारना शब्दे करी दूर कर्यां छे, सुकृतनो करनारो एवो जे जनसमूह, तेना विघ्न प्रचार जेणे एवी छे; वली ते देवी केवी छे ? तो के वीतरागनां चरणरूप कमलने विषे भमरी समान छे. ॥४॥

॥ अथ चैत्यवंदनो ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, भव दुःख निःकंदन ॥ १ ॥
दुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥
एम प्रकाश्युं सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥२॥

दोय बंधन राग द्वेष, तेहने नवि तजीए ॥ मुज पें शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव नजीए ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीजदिन वासुपूज्य परे; लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीये॥ अरजिन बीज दिन चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिन कल्याण ॥ बीजदिन केइ पामीया, प्रभू नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञान पांचमनुं चैत्यवंदन ॥

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भांखे भविजन आगे ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥ आराहो भलि भातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधवा कारणे; एहज तीथि निहाली ॥२॥ ज्ञानविना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान

रहित क्रीया कही, कास कुसुम उपमान; ॥ लोका लोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो छेह ॥ पुर्व कोमि वरसां लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक कहि क्रीया, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कष्टी; पंच वरस पंच मासनी, पंचमि करो शुन दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस केरो ॥ उजमणुं करो जावशुं, टाले जव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरे पंचमि आराहिए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंग विजय लहो सार ॥ ए ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ माहाशुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो ॥ तेम फागण शुदि आठमे, संजव चवी आयो ॥ १ ॥ चैत्रवदिनी आठमे, जनम्या ऋषन्न जिणंद ॥ दिक्षा पण ए दिन लहि, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर ॥ अ

त्रिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥ एहि
ज आठम उजलि, जनम्या सुमति जिणंद ॥ आठ
जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जनम्या
जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामि ॥ नेमि असाड
शुदि आठमे, अष्टमीगति पामि ॥ ५ ॥ श्रावणवदि
नी आठमे, नेमि जनम्या जगभाण ॥ तेम श्रावण
शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ भाद्रवा वदि
आठम दिने, चविया स्वामि सुपास ॥ जिन उत्तम
पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥
संघ चतुरविध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ मा
धव सीत एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्र भूति
आदे मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगु
णा, तेहनो परिवार ॥ वेद अरथ अवलो करे, मन अभि
मान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एका
दश गणधार; ॥ वीरे थाप्या वंदिए, जिन शासन जय

कार ॥ ३ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण वि लाशी; ॥ ऋषन्न अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्म प्रज्जु शिववास पास, न्नव न्नवना तोमि; ॥ एकादशी दिन आपणी, रिद्ध सघली जोमि ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण; ॥ व रस इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगि यार अंग लखावियें, एकादश पागं; ॥ पुंजणि ठवणि विंटणी; मसी कागल कागं ॥ ८॥ अगियार अव्रत गं मवा ए. वहो पमिमा अग्यार; ॥ खिमा विजयजिन शा सनें, कस्यो सफल अवतार ॥ ए ॥

॥ अथ ॥ रोहणी तपनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ रोहणी तप आराधिये, श्री श्री वासुपूज्य; ॥ दुःख दोहग दुरें टले, पूजक होए पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजें वास क्षेप, प्रह उगीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी धोतियां, मन वच काय खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीए, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ न्नावें न्नावना न्नावियें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं कालें लेइ धूप दीप,

भत्तु आगल कीजे; ॥ जिनवर केरी भक्तिसुं, अविच ल सुख लीजे ॥४॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो किजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जेम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोइ कोइ गुण फल दिये, उत्तरोत्तर भेद ॥ मान कहे ए विध करो, होय तो भवनो छेद ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानक तपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

चोवीश पन्नर पिस्तालीशनो, छत्रीसनो करिये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरिये ॥ १ ॥ पंच सडसठी दश वली, सित्तेर नव पणवीश ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणी श ॥२॥ वीश सत्तर एकावन्न, द्वादशने पंच ॥ एणि परे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउस्सग्ग मन धरो, गुणि लेजो वीश, वीश स्थानक एम जाणीए, संक्षेपथी लेश ॥४॥ भाव धरी मनमां घणो, जो एक पद आराधे ॥ जिन उत्तम

पद्मने, नमी निज कार्य साधे ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

सरवारथ सिद्धे थकी, चविया आदि जिनंद ॥ प्रथम राय विनता वसे, मानव गण सुखकंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौनातीतें केवली, वड हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तराषाढा जन्म छे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दशसहस परिवारशुं, वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति.

॥ अथ श्री चोवीश जिनना वर्णनुं चैत्यवंदन॥

पद्मप्रभने वासुपूज्य, दोय राता कहीए ॥ चंद्रप्रभने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीए ॥ १ ॥ मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या, मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरखा ॥ २ ॥ सोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीर विमल पंडित तणो, ज्ञानविमल कहे शीश ॥ ३ ॥

॥ अथ चोविश जिन लंछननुं चैत्यवंदन ॥

वृषभ लंछन ऋषभ देव, अजित लंछन हाथी ॥ संभव लंछन घोमलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदन लंछन कपि, क्रौंच लंछन सुमति ॥ पद्म लंछन पद्मप्रभु, विश्वदेव सुमति ॥ २ ॥ सुपास लंछन साथीउ, चंद्रप्रभ लंछन चंद ॥ मगर लंछन सुविधि प्रभु, श्रीवछ शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंछन खड्गी श्रेयांसनो, वासुपूज्यने महिष ॥ सूअर लंछन पाय विमलदेव, भवियां सेवो ईश ॥ ४ ॥ सींचाणो जिन अनंतने, वज्र लंछन श्री धर्म ॥ शांति लंछन मरघलो, राखे धरमनो मर्म ॥ ५ ॥ कुंथुं लंछन बोकमो, अरजिन नंदावर्त्त ॥ घट लंछन मल्लि प्रभु, काचबो मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलो कमल, पय पंकज नमीय ॥ शंख लंछन प्रभु नेमजी, दीसे उंच अंघ्रिय ॥ ७ ॥ पारसनाथजीने चरणे सर्प, नील वरण सोहात ॥ सिंह लंछन कंचन तनु, वर्धमान विख्यात ॥ ८ ॥ इणि पेरे लंछन चींतवी, उलखीए जिनराज

॥ श्री महिमा प्रभु सुरिनो, लक्ष्मी रतनसुरि राय
॥ ए ॥ इति चैत्यवंदन ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वा
मी॥अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥
प्रभु नामें आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए॥ प्रभुनामे
भव भय तणां, पातक सब दहीए ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ वर्ण
जोमी करीए, जपीए पारस नाम; विष अमृत थइ
परगमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥

श्री शांतिजिन चैत्यवंदन.

जय जय शांतिजिणंद देव, हथ्थिणाउर स्वा
मी; विश्वसेन कुल चंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥
अचिरा उरसर हंस जिम, जिनवर जयकारी; मारी
रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ सोलमा जि
नवर प्रणमीए ए, नित्य उठी नामी शीश ॥ सुरनर
रूप प्रसन्न मन, नमतां वाधे जगीश ॥ ३ ॥

श्री आदिजिन चैत्यवंदन.

अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेसर जिनरा
ज नमो; प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां
काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय,
अविनाशी अकलंक नमो; अजर अमर अद्भुत अति
शय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥
तिहुयण भवियण जन मण वंछिय, पूरण देव रसा
ल नमो; ललि ललि पाय नमुं हुं भावे, कर जोडीने
त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन स
ज्ञान, नयनानंदन देव नमो; सकल सुरासुर नरवर ना
यक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थं
कर सुखकर साहिब, तुं निःकारण बंधु नमो; शरणा
गत भविने हितवछल, तुंहि कृपारस सिंधु नमो ॥ अ०
॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव न
मो; नाशित सकल कलंक कलुष गण, दुरित उपद्र
व भाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु ज
गहित, कारक जगजन नाथ नमो; घोर अपार भवो
धि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥

अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो; बोधि दीन्ह अनूपम दानेशर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन वांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिन शासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहां घृत गोल, मन वंछित कापड तंबोल ॥ घरशु घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफ

ल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वाह पोहोंचे वंछित कोम ॥ महिअल माने मोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक ट ले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गोतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अव धारो सहु, गुरु गोतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोम, गौतम तुठे संपत्ति कोम ॥ ए॥ इति.

॥ अथश्री सोल सतीनो छंद ॥

आदिनाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजीयें ए ॥ प्रजातें उठी मंगलिक कामे, शोल सती नां नाम लीजीए ए ॥१॥ बाल कुमारी जग हितकारी ब्राह्मी जरतनी बेहेनमीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोल सति मांहे जे वमीए ॥२॥ बाहुबल जगि नी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुपज सुताए ॥ अंकस्वरूपी त्रिजुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी शीयलवंती शुद्ध श्रा वीका ए ॥ अमदना बाकुला वीर प्रति लाज्या, केव लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारि

नंदिनी, राजीमति नेमवल्लन्ना ए॥ जोवन वेशे काम ने जीत्यो, संजम लेइ देव डुल्लन्ना ए ॥ ५ ॥ पंच न्न रतारी पांम्डव नारी, डुपद तनया वखाणीए ए ॥ एक सो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा तस जाणीये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चंड्किा ए॥ शियल सलुणी राम जनेता, पुन्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७॥ कोशंबिक ठामे संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीन्ड ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुर न्नुवने जश गाजीन्ड ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयले न काची ॥ राची नाहिं विषयारसे ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शियलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी कुवाथकी जल काढीयुंए ॥ कलंक उतारी सतीय सुन्नड्रा, चंपा बार उघाड्रीयुंए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शियल अखंम्ति, शीवा शीवपद गामिनीए ॥ जेहने नामे निर्मल थइए, बलिहारी तस ना

सती ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडुरायनी कुंता नामे कामनी ए ॥ पांडव माता दसे दसारणी, बेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शियलवती नामे शीयलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदिए ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण दुरित निकंदीए ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अतीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रत्न भाखे मुदा ए, वाहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति.

॥ अथ श्री नवकारनो छंद ॥

(दोहा.)

वंछित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन सार; निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार. ॥१॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवे निधान; वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्ठी प्रधान. ॥२॥ एक ज

अक्षर एक चित्त, समस्थां संपति थाय, संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय. ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सद्गुरु भाषित सार; सो भवियां मन शुद्ध शु, नित्य जपिए नवकार. ॥ ४ ॥

(छंद हाटकी.)

नवकार थकी श्रीपाल नरेश्वर पाम्यो, राज्य प्रसिद्ध; समशान विषे शिव नाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध; नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे भवनो पार; सो भवियां भत्तें चोखे चित्ते, नित्य जपीए नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वडशाखा शिके बेसी, हेठल कुंड हुताश; तस्करने मंत्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश; विधिरीते जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार. ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरां कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध; जेणे नवकारे हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध; नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इशो छे अधिकार, सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासे, महा मंत्र मन शुद्ध; परभव ते राजसिंह पृथ्वीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध; ए मंत्र थकी अमरापुर पहोत्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥

सन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले; दीठो श्री पासकुमारे पन्नग, अध बलतो ते टाले; संभला व्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार. ॥सो० ॥ ए ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग; इण ध्याने कष्ट टल्युं उंबरनुं, रकत पित्तनो रोग; निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणो आधा र. ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांही कृष्ण भुजंगम घा ल्यो, घरणी करवा घात; परमेष्टि प्रभावे हार फुलनो, वसुधा मांहि विख्यात; कमलावतीये पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार. ॥ सो० ॥११॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीने, पाम्ी बाण प्रहार; पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार; ए मंत्र अमुलक म हिमा मंदिर, भवदुःख भंजण हार; ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंवल ने संवल कादव काढयां, शकट पांचशे मान; दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान; ए मंत्र थकी संपति वसुधा तले, विलसे जैन विहा र; ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत; नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, इम

न्नांखे अरिहंत; पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, सम स्यां संपति सार; ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर; पुंमरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर; सद्गुरुने सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार. ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो पर सिद्ध; तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध; शेठने घेर आवी विघ्न निवार्यां, सुरे करी मनो हार; ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र; पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच समिति समकित; पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार. ॥ सो० ॥ १७ ॥

कलश छप्पय.

नित्य जपीये नवकार, सारसंपत्ति सुखदायक; शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक, श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य न्नणीजे; श्री उवज्झाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजे; नवकार सार संसार

वे, कुशल लाज्ञ वाचक कहे एक चित्ते आराधतां, त्रि
विध ऋद्धि वंछित लहे ॥ १० ॥

॥ इति श्री नवकारनो छंद समाप्त ॥

अथ श्री महावीरस्वामीनो छंद.

श्री सिद्धारथ कुल शणगार, त्रिशलादे सुत ज
ग आधार; शोजे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री
वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे
मन वंछित कदा; तुम नामे लहिये सनमान, शरण०
॥ २ ॥ डुर्जन डुष्ट वैरि विकराल, तुम नामे नासे त
तकाल; तुम नामे दिन दिन कल्याण, शरण० ॥ ३ ॥
तुम नामे नावे आपदा, जूत प्रेत व्यंतर नहि कदा;
रोग शोग चिंता नवि जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादि
क पीमा नवि करे, नाम तमारुं जे अनुसरे; धर्मसिंह
मुनि ज्ञाव प्रधान, शरण० ॥ ५ ॥

॥ इति श्री महावीरस्वामीनो छंद समाप्त ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु छंद ॥

सुख कारण नवियण, समरो नित्य नवकार, जिन शासन आगम, चौद पूरवनो सार; ए मंत्रनो महिमा, कहेतां न लहुं पार; सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे कर जोम; नुवि मंगल विचरे, तारे नवियण कोम; सुर छंदें विलसे, अतिशय जास अनंत; पेहेले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे नेदें, सिद्ध थया नगवंत; पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत; कल अकल स्वरूपी पंचानंतक तेह; जिणवर पय प्रणमुं, बीजे पद वली एह ॥ ३ ॥ गछ नार धुरंधुर, सुंदर शशिहर सोम, करे सारण वारण, गुण छत्तीसें थोम; श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जेम गंनीर, त्रीजे पद नमीये, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र नणावे सार, तप विधि संयोगें, नांखे अर्थ विचार; मुनिवर गुण जुत्ता, कहियें ते उवझाय; चोथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले, पाले पंचाचार; तपसी गुण धारी, वा

रे विषय विकार; त्रस थावर पीहर, लोक मांहे जे सा
ध; त्रिविधे ते प्रणमुं, परमारथ जिणें लाध ॥ ६ ॥ अ
रि करि हरि सायणी, डायणि भूत वैताल, सवि पाप
पणासे, वाधे मंगल माल; एणें समरण संकट, दूर ट
ले ततकाल, इम जंपे जिनप्रभ, सूरि शिष्य रसाल॥७॥

॥ अथ बीज तिथी तपनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमल पाणीडांने जाय ॥ ए देशी. ॥

॥ प्रणमी सारद माय, शासन वीर सुहंकरुंजी
॥ बीज तिथी गुण गेह, आदरो भवियण सुंदरुंजी
॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सु
णोजी ॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदन
तणोजी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति च
व्या सुरलोकथी जी ॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद
सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभ ठा
ण, दशमा शीतल जिन गणुंजी ॥ चैत्र वदिनी हो
बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुंजी ॥ ४ ॥ फाल्गुन
मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ

तस चवन, कर्म क्षये तव पासनीजी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजे वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवल नाण, सरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणी रूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहांजी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित गेड प्रगट होवेजी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चखाण व्रत चोकि सोहेजी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्युं तिहांजी, मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहांजी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारि, पान करी सुख लिजीएं जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीस मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी; ॥ चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लिजीएं जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए किजीएं जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुभ चित्त, करी धरीये संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पिजीए श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥

एणि विध करिये हो वीज, रागने द्वेष डुरे करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति ज्ञलट धरी जी ॥१४॥ जिनपूजा गुरुन्नक्ति, विनय करी सेवो सदाजी ॥ पद्म विजयनो शिष्य, ज्ञक्ति पामे सुख संपदाजी॥१५॥इति.

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमी तप तमे करोरे प्राणी, जेम पामो नि र्मल ज्ञानरे ॥ पेहेलुं ज्ञानने पछि क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान समानरे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान व खाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकाररे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनपर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ म ति अठावीश श्रुत चउदहवीश, अवधि छे असंख्य प्रका ररे ॥ दोय ज्ञेदे मनपर्यव दाख्यो, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपाररे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालो क प्रकाशरे. ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद क रीने, म्हारी पूरो उमेदरे, ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो ज्ञेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

हां रे मारे गाम धरमना, साढा पचवीश देश जो ॥ दीपेरे त्यां देश मगध सहुमां शिरेरे लो. ॥ हां रे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो ॥ राजेरे त्यां श्रेणिक, गाजे गजपेरेरे लो० ॥ १ ॥ हां रे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथजो; विचरंता तिहां आवि वीर समोसर्यारे लो० ॥ हां० ॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथे साथजो; सुधारे तप संयम शियले अलंकर्यारे लो० ॥ २ ॥ हां० ॥ फुल्या रस भर झुल्या अंब कदंबजो; जाणुं रे गुणशिलवन हसि रोमंचीउरे लो०॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासेरे परिमल चिहुं पासे संचिउरे लो. ॥ ३ ॥ हां० ॥ देव चतुरविध आवे, कोडा कोड जो; त्रिगडुंरे मणि हेम रजतनुं ते रचेरे लो. ॥ हां० ॥ चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो ॥ आगेरे रस लागे इंद्राणि नचेरे लो ॥ ४ ॥ हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आपजो ॥ ढाळे रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यांरे लो ॥हां०॥ सुणतां दुंदुभि नाद टले सवि तापजो ॥ वरसेरे सुर फूल स

रस जानुं अमृचांरे लो. ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजे घन ज्यम लूंवजो, राजेरे जिनराज समाजे धर्मनेरे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जन मन लूंबजो॥ पोषेरे रस न पमे घोषे नर्मसमांरे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो; ॥ आव्योरे परिवरियो हय गय रथ पायगेरे लो. ॥ हां० ॥ देइ प्रदक्षिणा वंदि वेठो ठाय जो ॥ सुणवारे जिन वाणी मोटे भायगेरे लो. ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिभुवन नायक लायक तव भगवंत जो ॥ आणी रे जिन करूणा धर्म कथा कहेरे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणवा रे जिन वाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ वालिम वेहलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

वीर जिनवर एम उपदिशे, सांभलो चतुर सुजाणरे ॥ मोहनी निंदमां कां पमो, उलखो धर्मनां ठाम ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ परिहरो विषय कषायरे, वापमा पंच परमादथी; कां पमो कुगतिमां धायरे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेशरे ॥ सर्व काले करी नवि शको ॥ तो करो

पर्वे सु विशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व षटनां क ह्यां, फल घणां आगमे जोयरे ॥ वचन अनुसारें आ राधतां, सर्वथा सिद्धी फल होयरे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जी वने आयु परन्नव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्रायरे ॥ तेह नणि एह आराधतां, प्राणिजं सदगति जायरे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमि फल तिहां, पूछे गौतम स्वा मरे ॥ नविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रनु तामरे ॥ वि०॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सं पदा आठनी वृद्धिरे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७॥ लान्न होय आठ पडिहारनो, आठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अष्ट करमनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोयरे ॥ वि० ॥ ८॥ आदि जिन जन्म दिक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्या णरे ॥ चवन संन्नव तणो एह तिथे, अन्निनंदन निर्वा णरे ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सि द्धला, सातमा जिन चवन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ए ह तिथि साधतो राजिउ, दंम वीरज लह्यो मुक्तिरे

कर्म हणवा भणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालनां, जिन तणां केइ कल्याणरे ॥ एह तिथे वली घणां संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वासित पशू पंखिआ एह तिथे करे उपवासरे ॥ व्रतधारि जीव पोशो करे जेहने धर्म अभ्यासरे ॥ वि० ॥ १३ ॥ भाषियो वीरे आगम तणो, भविक हित एह अधिकाररे; ॥ जिन मुखे उच्चरी प्राणिया, पामशे भव तणो पाररे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोमरे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोमरे ॥ वि०॥१५॥ कलश ॥ एम त्रिजग भासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेम गुरु सु पसाय पामि संथूणयो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे भण्यो रंगे, स्तवन ए आगम तणो ॥ जे भविक भावे सुणे गावे, कान्ति सुख पावे घणो ॥ १६ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका

री समोसस्या; ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, यादव कोमशुं परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, ज्ञक्ति गुणे माला रचि; ॥ जगपति पूजी पूठे कृष्ण; ॥ क्षायिक समकित शिव रूची ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज्ञ परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार ॥ कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरीखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेम करे शिव वधु कंतलो ॥ ४ ॥ जगपति उजल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसोने पंचाश, कल्याणक तिथी उल्लशी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरि कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दिक्षा नमि नाण, मल्लि जन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्तमान चोवीशि, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकी खंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥

नरपति विजय पाटण अभिधान, साचो नृप प्रजापा लयी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावति तास, चंद्रमुखी गजगामिनी, नरपति श्रेष्ठि शुर विख्यात, शीयल स लिला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार भुषण चिवर धरी ॥ नरपति जाए नित्य जिन गेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध वरे ॥ नरपति देव वं दन आवश्यक, काल वेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुमन साधु तणारी ॥ विनये वीनवे शेठ, मुनिवर करी कृपारी ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन एक, थोडो पुन्य थोरी ॥ वाधे जिम वरू वीज, शुभ अनुवंधी थ री ॥ २ ॥ मुनि भापे श्राद्ध भाग्य, पावन पर्व पांरी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां मुण सु मना ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास अग्यार लगेरी अथवा वरस इग्यार, भजवो तप सु चंगेरी ॥ ४ ॥ भलि सदगुरु वेण, आनंद अति उलस्योरी, तप सें उजविय, आरण स्वर्ग वस्योरी. ॥ ५ ॥ एकसें

सागर आय, पाली पुन्य वसेरी ॥ सांभल केशवरा य, आगल जेह थसेरी ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां शेठ; स मृद्धदत्त वडोरी ॥ प्रीतिमती प्रीया तास, पुन्ये जोग जड्योरी ॥ ७ ॥ तस कुखे अवतार, सुचित शुभ स्वपनेरी ॥ जनम्या पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी ॥ ८ ॥ नालनिखेप निधान, भुमीथि प्रगट हवोरी, गर्भदोहद अनुभाव, सुव्रत नाम ठव्योरी ॥ ए ॥ बु द्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक भण्योरी. ॥ यौव न वय अगीआर, रूपवती परण्योरी ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चखाण धरेरी ॥ अगीआर कंचन कोड, नायक पुण्य भरेरी ॥ ११ ॥ धर्मघोष अ णगार, तिणी अधिकार कहेरी ॥ सांभलि सुव्रत शेठ, जातिस्मरण लहेरी ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि शा ख, भक्ते तप उच्चरेरी ॥ एकादशी दिन आठ, पोहो रो पोसो धरेरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुक्ते पोसह लीधो, सुव्रत शेठे अन्यदाजी ॥ अवसर जाणि तस्कर आ व्या, घरमां धन लूटे तदाजी. ॥ १ ॥ शासन भ

देवी शक्के, धन्नाणा ते वापमाजी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगल धर्या रांकमाजी ॥२॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणांजी ॥ रायने प्रणमि चोर मुकावी, शेठे कीधां पारणांजी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरोजी ॥ शेठजी पोसह समरस वेगा, लोक कहे हठ कां करोजी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, नगरी सौ प्रशंसा करेजी ॥ हरखे शेठजी तप गुण मणुं, प्रमदा साथे आदरेजी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो भार भलावी, संवेगी सिर सेहरोजी ॥ चन्नाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरेजी ॥ ६ ॥ एक खटमासी चार चोमासी, दोसय छठ सो अठम करेजी ॥ वीजा तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरेजी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टी, देखता सुव्रत साधुनेजी ॥ पुर्वोपार्जित कर्म उदेगी, अंग वधारे व्याधिनेजी. ॥ ८ ॥ कर्म नरीख पाप जनीक, सुर कहे जाउ नुपथ भणीजी ॥ साधु न जाए गौम नराये, पाटु प्रहारे हण्यो मुनिजी ॥ ९ ॥ मुनि मन

वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मनेजी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामनेजी.

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धनधन यादव वंश, जिहां प्रनु अवतस्या ए॥ मुज मन मान सहंस, जयो जिन नेमनेए ॥ १ ॥ धन शिवादेवी मावडीए, समुद्रविजय धन्य तात सुजात जगतगुरुए, रत्न त्रयी अवदात ॥ जयो० ॥२॥ चरण विराधी नृपन्योए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसेए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गढ्योए, जाणुं उपादेय हेय ॥ज०॥ तोपण हुं न करी शकुंए, दुष्ट कर्मनो जेय ॥जयो०॥४॥ पण सरणो बलियातणो ए, किजे सीजे काज,॥ज०॥ एहवां वचनने सांजलीए ॥ बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ज० ॥ ५॥ नेम कहे एकादशीए, समकित युत्त आराध ॥ज०॥अइश जिनवर वारमोए, जावि चोवीशि लाध ॥ जयो०॥६॥

॥ कलश. इय नेमि जिनवर नित्य पुरंदर, रैवताचल मंरूणो ॥ बाण नव मुनि चंद वरसे, राज नगरे संथुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि, सत्य

विजय गुरु अनुसरी ॥ कपूर विजय कवि क्षमाविज
यगणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ ॥ इतिश्री॥

॥ अथ उपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनुं स्तवन प्रारंभः ॥

ढाल पहेली.

॥ छठी भावना मन धरो ए देशी ॥

धुर प्रणमुं जिन महइसी ॥ समरुं सरसति उ
ल्लसी ॥ धसमसि ॥ मुजमति जिन गुण गायवा
॥ १ ॥ हरि पूछे जिन उपदिशि ॥ परव ते मौन ए
कादशी ॥ मनवसि ॥ अहनिसि ते भविलोकने
॥ २ ॥ तरीआने भवजल तरसि ॥ एह परव पावन
फरसि ॥ मनहरसि ॥ अवसरे जेह आराहसि ए ॥३॥
उजमणो ते वारसि ॥ वस्तु इग्यार इग्यारसि ॥ अन
सि ॥ ते दुरगतिनां वारणां ए ॥ ४ ॥ ए दिन अति

सुहामणो ॥ दोढसो कल्याणक तणो ॥ मन घणो ॥ गणणुं करतां सुख होये ए ॥ ५ ॥

ढाल बीजी.

पांचे पांचे त्रण्य चोवीसि ॥ द्वीप क्षेत्र जिन नामें ॥ पांचे पांचे पांच कल्याणक ॥ धारो शुभ परिणामे ॥ १ ॥ जिनवर ध्यायीयेंरे ॥ मोक्ष मारगना दाता ॥ ए आंकणी ॥ सर्वज्ञाय नमो इम पहेले ॥ नमो अरिहंत ए बीजे ॥ त्रीजे नमो नाथाय ते चोथे ॥ सरवज्ञाय कहीजे ॥ जिन० ॥ २ ॥ पांचमे नमो नाथाय कहीजे ॥ पांचे पांचे जाणो ॥ त्रण्य नाम तीरथंकर केरां ॥ गणणां पांच वखाणो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ त्रण्य चोवीसी एक एक ढाले ॥ त्रण्य नाम जिन कहिसुं ॥ कोइ तप करी जे फल लहियें ॥ ते जिन भक्ति लहिसुं ॥ जिन० ॥ ४ ॥ काम सवे सिजे जिन नामे ॥ सफल होय निज जिहा ॥ जे जिन्न जिन गुण समरंता ॥ सफल जनम ते दिहा ॥ जिन० ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी.

जंबुद्दीप भरत भलुं, अतित चोवीसि सार मेरे लाल ॥ चोथा महायश केवली, छठा सरवानुभूति उदार मेरे लाल ॥ १ ॥ जिनवर नामे जय हुए ॥ ए आंकणी ॥ श्री श्रीधर जिन सातमा, हवे चोवीसी वर्तमान मेरे लाल ॥ श्री नमिजिन एकवीसमा, उग णीसमा मल्लि प्रधान मेरे लाल ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री अरनाथ अढारमा ॥ हवे भावि चोवीसी भाव मेरे लाल ॥ श्री स्वयंप्रभ चोथा नमुं ॥ छठा देवसुत मन ध्याव मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ३ ॥ उदय नाथ जिन सातमा ॥ तेहने नामे मंगल माल मेरे लाल ॥ उछव रंग वधामणां ॥ वली लहीयें प्रेम रसाल मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ४ ॥ अलिअ विघन दुरें टले ॥ दूरिजन चिं त्युं नवी थाय मेरे लाल ॥ महीमा महोटाइ वधे, वली जगमां सुजस गवाय मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

पुरव भरतें ते धातकी खंडरे ॥ अतित चोवी सी गुण अखंडरे ॥ चोथा श्री अकलंक सोभागी रे

॥ छठा देव सुभंकर त्यागीरे ॥ १ ॥ सप्तनाथ सप्तम जिन रायारे ॥ सुरपति प्रणमे तेहना पायारे ॥ वर्त्त मान चोवीसी जाणोरे ॥ एकवीसमा ब्रह्मेन्द्र वखाणो रे ॥ २ ॥ उगणीसमा गुणनाथ समरीयें रे ॥ अढारमा गांगीक मन धरीयेंरे ॥ कहुं अनागत हवे चोवीसी रे ॥ धातकी खंड हैयडे हिंसीरे ॥ ३ ॥ श्री सांप्रत चोथा सुखदायीरे॥ छठा श्री मुनीनाथ अमायीरे॥ श्री विशिष्ट सप्तम सुखकारारे ॥ तेतो लागे मुज मन प्यारारे ॥ ४ ॥ श्री जिन समरण जेहवुं मीठुंरे ॥ एहवुं अमृत जगमां न दीठुंरे ॥ सुजस महोदय श्री जिन नामे रे ॥ विजय लहीजे गामो गामेरे ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

पुस्कर अर्घ्य पूरव हुआ ॥ जिन वंदीएरे ॥ भरत अतीत चोवीसी के ॥ पाप निकंदीएरे ॥ चोथा सुमृडु सुहंकरुं ॥ जिन० ॥ छठा व्यक्त जगदीस के ॥ पाप नि०. ॥ १ ॥ श्री कलाशत गुण भर्या ॥ जिन० ॥ हवे चोवीसी वर्त्तमान के ॥ पाप नि० ॥ कल्याणक ए दिन हुआं ॥ जिन० ॥ लीजीयें तेहनां अभिधान

के ॥ पाप नि० ॥ २ ॥ अरण्यवास एकवीसमा ॥ जिन० ॥ जुगणीसमा श्रीयोग के ॥ पाप नि० ॥ श्री अयोग ते अढारमा ॥ जिन० ॥ दिये शिवरमणी संयोग के ॥ पाप नि० ॥ ३ ॥ चोवीसी अनागत जलि ॥ जिन० ॥ तिहां चोथा परम जिनेस के ॥ पाप नि० ॥ सुधारति छठा नमुं ॥जिन०॥ सातमा श्री निःकेश के ॥ पाप. नि० ॥ ४ ॥ श्रीयमेलक परमेश्वरु ॥ जिन० ॥ एहनुं नाम ते परम निधान के ॥ पाप नि० ॥ महोटानो जे आशरो ॥ जिन० ॥ तेहथी लहीयें यश बहुमान के पाप नि० ॥ ५ ॥

ढाल छठी.

धातकी खंमरे पश्चिम जरतमां ॥ अतित चोवीसी संजार ॥ श्री सरवारथ चोथा जिनवरु ॥ छठा हरीजइ धार ॥ १ ॥ जिनवर नामेरे मुक आनंद घणो ॥ ए आंकणी॥ श्री मगधाधिप वंडु सातमा॥ हवे चोवीसी वर्त्तमान ॥ श्री प्रयच्छ प्रणमुं एकवीसमा ॥ जेहनुं जगमां नहीं जुपमान ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री

अक्षोज्न जिनवर ज्ञगणीसमा ॥ अढारमा मल्लसींहना थ ॥ हवे अनागत चोवीसी नमुं ॥ चोथा दिनरुक् शिव सात ॥ जिन० ॥ ३ ॥ ढा श्री जिन धनद संज्ञारीये, सातमा पोषव देव॥ हरखे तेहना चरण कमल तणी ॥ सुर नर सारे शेव ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ध्यावे म लवुं एहवा प्रज्नु तणो ॥ आलस मांहेरे गंग ॥ जनम सफल करी मानुं तेहथी ॥ सुजस विलास सुरंग ॥ जिन० ॥ ५ ॥

ढाल सातमी.

पुस्कर पछिम ज्नरतमां ॥ धारो अतित चोवीसीरे ॥ चोथा प्रलंब जिनेसरु ॥ प्रणमुं हियफले हिंसीरे ॥ १ ॥ एहवा साहिब नवी वीसरे ॥ क्षिण क्षिण समरीयें हेजेरे ॥ प्रज्नु गुण अनुज्नव योगथी ॥ शोज्नीयें आतम तेजेरे॥ एहवा साहिव नवी वीसरे ॥श॥ ए आंकणी ॥ ढा चारित्रनिधि सातमा ॥ प्रशमराजित गुण धामरे ॥ हवे वर्त्तमान चोवीसीयें ॥ समरीजें जिन नामरे ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ स्वामी सरवज्ञ जयं

करु ॥ एकवीसमा गुण गेहरे ॥ श्री विपरीत त्रेगणी समा ॥ अविहड धरम सनेहरे ॥ एहवा० ॥ ४ ॥ नाथ प्रसाद अढारमा ॥ हवे अनागत चोवीसीरे ॥ चोथा श्री अघटित जिन वंदीयें ॥ कर्मसंतति जिणे पीसीरे ॥ एहवा० ॥ ५ ॥ श्री भ्रमणेंद्र छठा नमुं ॥ रिषभचंद्राभिध वंदुरे ॥ सातमा जगजश जयकरु ॥ जिन गुण गातां आनंदुरे ॥ एहवा० ॥ ६ ॥

ढाल आठमी.

जंबुद्दीप ऐरावतेंजी ॥ अतित चोवीसी उदार ॥ श्री दयांत चोथा नमुंजी ॥ जग जनना आधार ॥ १ ॥ मनमोहन जिनजी ॥ मनथी नहीं मुज दूर ॥ ए आंकणी ॥ अभिनंदन छठा नमुंजी ॥ सातमा श्री रत्नेस ॥ वर्त्तमान चोवीसीयेंजी ॥ हवे जिन नाम गणेस ॥ मन० ॥ २ ॥ स्यामकोष्ट एकवीसमाजी ॥ त्रेगणीसमा मरुदेव ॥ श्री अतिपार्श्व अढारमाजी ॥ तमरुं चित्त नितमेव ॥ मन० ॥ ३ ॥ भावी चोवीसी वंदीयेंजी ॥ चोथा श्री नंदीखेण ॥ श्री व्रतधर छठा न

सुजी ॥ टाली करमनी रेण ॥ मन० ॥ ४ ॥ श्री निर वाण ते सातमाजी ॥ तेहसुं सुजस सनेह ॥ जिम चकोर चित्त चंदसुंजी ॥ तिम मोरा मन मेह॥मन०॥५॥

ढाल नवमी.

प्रथम गोवालीआ तणे ज्ञवेजीरे ॥ ए देशी ॥

पूरव अर्धे धातकीजीरे ॥ ऐरावर्ते जे अतीत ॥ चोवीसी तेहमां कहुंजीरे ॥ कल्याणक सुप्रतीत ॥ १ ॥ महोदय सुंदर जिनवर नाम ॥ ए आंकणी ॥ चोथा श्री सौंदर्यने जी ॥ वंदु वारोवार ॥ दश त्रिविक्रम समरीयेंजी ॥ सातमा नरसिंह सार ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ २ ॥ वर्त्तमान चोवीसीयेंजी ॥ एकवीसमा क्षेमंत ॥ संतोषित ज्ञगणीसमाजी ॥ अढारमा कामनाथ संत ॥ महोदय सुंदर जि० ॥३॥ ज्ञावि चोवीसी वंदीएजी ॥ चोथा श्री मुनिनाथ ॥ चंइदाह दश नमुंजी ॥ ज्ञव दव नीरद पाथ ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ ४ ॥ दिलादित्य जिन सातमाजी ॥ जन मन मोहन वेल ॥ ॥ सुख जश लीला पामीयेंजी ॥ जश नामे रंगरेल ॥

महोदय सुंदर जिण ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

भविका सिद्ध चक्र पद वंदो, ए देशी ॥ पुष्करअर्द्धे पूरव ऐरवतें ॥ अतीत चोवीसी संभारुं ॥ श्री अष्टाहीक चोथा वंदी ॥ भव वन भ्रमण निवारुंरे ॥ १ ॥ भविका ॥ एहवा जिनवर ध्यावो ॥ गुणवंतना गुण गावोरे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ए आंकणी ॥ वणिक नाम छठा जिन नमीयें ॥ शुद्ध धर्म व्यवहारिं ॥ उदयनाथ सातमा संभारो ॥ त्रण्य भुवन उपगारी रे ॥ भविका० ॥ एहवा० ॥ २ ॥ वर्त्तमान चोवीसी वंदु ॥ एकवीसमा तमोकंद ॥ सायकाक्ष उगणीसमा समरो ॥ जन मन नयणानंदरे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ श्रीक्षेमंत अढारमा वंदो ॥ भावी चोवीसी भावो ॥ श्री निरवाण चोथा जिनवर ॥ हृदयकमलमां लावोरे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ४ ॥ छठा रवीराज सातमा ॥ प्रथमनाथ प्रणमीजे ॥ चिदानंदघन सुजस महोदय ॥ लीला लच्छि लहीजे रे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ५ ॥

ढाल अगीआरमी.

करपट कुलीरे लुगणां ॥ ए देशी ॥ पश्चिम ऐरावतें भलो ॥ धातकी खंमे अतीत के ॥ चोवीसी रे पूरुरवा ॥ चोथा जिन सुप्रतीत के ॥ १ ॥ जिनवर नाम सोहामणुं ॥ घमीय न मेल्युं जाय के ॥ रात दि वस मुऊ सांभरे ॥ संभारे सुख थाय के ॥ जिन० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ श्री अवबोध उठा नमुं ॥ सातमा श्री विक्रमेंड के ॥ चोवीसी वर्त्तमानना ॥ हवे संभा रु जिनेंड के ॥ जिन० ॥ ३ ॥ एकवीसमा श्री सुशां तजी ॥ उगणीसमा हरनाम के ॥ श्री नंदीकेश अ ढारमा ॥ होजो तास प्रणाम के ॥ जिन० ॥ ४ ॥ भा वि चोवीसी संभारीये ॥ चोथा श्री महामृगेंड के ॥ उठा असोचित वंदीयें ॥ सातमा श्री धर्मेंड के ॥ जि न० ॥ ५ ॥ मन लागुं जस जेहसुं ॥ न सरे तेह विण तास के ॥ तिणे मुऊ मन जिन गुण स्तुणि ॥ पा मीसु जस विलास के ॥ जिन० ॥ ६ ॥

ढाल बारमी.

पुस्कर पश्चिम ऐरावते हवे, अतित चोवीसी व खाणुंजी ॥ अश्ववृंद चोथा जिन नमीयें ॥ छग कुटी लक जाणुंजी ॥ सातमा श्री वर्द्धमान जिनेश्वर ॥चो वीसी वर्त्तमानजी ॥ एकवीशमा श्री नंदीकेस जि न ॥ ते समरु शुभ ध्यानजी ॥ १ ॥ ओगणीसमा श्री धरमचंद जिन ॥ अढारमा श्री विवेकोजी ॥ हवे अनागत चोवीसीमां ॥ संभारु शुभ टेकोजी ॥ श्री कलापक चोथा जिन छग ॥ श्री विशोम प्रणमीजे जी॥ सातमा श्री आरण्य जिन ध्यातां॥ जन्मनो ला हो लीजे जी ॥२॥ श्री विजयप्रभ सुरीश्वर राजे॥ दिन दिन अधिक जगीसजी ॥ खंभ नयरमां रही चो मासो ॥ संवत सत्तर बत्रीसेंजी ॥ दोढसो कल्याण कनुं गुणणुं ॥ इम में पूरण कीधुजी ॥ दुःख चुरण दीवाली दीवसें ॥ मनवंछित फल लीधुजी ॥ ३ ॥ श्री कल्याणविजयवर वाचक ॥ वादी मतंगज सिंहो जी ॥ तास शिष्य श्री लाभविजय बुध ॥ पंण्डित

मांहि लिहोजी ॥ तास शिष्य श्री जितविजय बुध ॥ श्री नयविजय सौभागीजी ॥ वाचक जश विजयें तस शिष्यें ॥ गुणीआ जिन वडभागीजी ॥ ४ ॥ ए गणशो जे कंठे करशे ॥ ते शिवरमणी वरशेजी ॥ तरसे भव हरसे सवि पातिक ॥ निज आतम उधरसेजी ॥ बार ढाल जे नित समरसे ॥ उचित काज आचरसेजी ॥ सुकृत सहोदय सुजस महोदय ॥ ली ला ते आदरसेजी ॥ ५ ॥

कलस.

ए बार ढाल रसाल बारह, भावना तरु मंजरी ॥ वर बार अंग विवेक पल्लव, बार व्रत सोभा करी ॥ इम बार तप विध सार साधन ॥ ध्यान जिन गुण अनुसरी ॥ श्री नयविजय बुध चरण सेवक ॥ जसविजय जयश्री लही ॥ १ ॥

॥ इति श्री महोपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत मौन एकादशीना गणणानुं बार ढालनुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ मोटुं दीवाली स्तवन. ॥

ढाल १. राग रामगिरि.

श्री श्रमण संघ तिलकोपमं गौतमं, सुगति प्रणिपत्य पादारविंदं; इन्द्रनुति प्रन्नव मंहसो मोचकं, कृत कुशल कोटि कल्याण कंदं.॥१॥ मुनि मन रंजणो, सयल दुःख नंजणो, वीर वर्धमानो जीणंदो; सुगति गति जीम लही, तिम कहुं सुण सही, जीम होएं हर्ष हइडे आणंदो.॥सुण॥२॥करीय नदूघोषणा देश पुर पाटणे, मेघ जीम दान जल बहूल वरसी; घण कणग मोतिया झगमगे जोतिया, जीन देइ दान इम एक वरसी.॥सुण॥३॥ दोय विण तोय नपवास आदे करी, मागसिर कृष्ण दशमी दिहाम्हे; सिद्धि साम्हा थइ वीर दीक्षा लेइ, पाप संताप मल दूर काढे.॥सुण॥४॥बहूल बंन्नण घरे पारणुं सामिएं, पुण्य परमान्न मध्यान्ह किधुं; नुवन गुरु पारणा पुन्यथी बंन्नणे, आप अवतार फल सयल लिधुं.॥सुण॥५॥ कर्मचंमाल गोसाल संगम

सुरो, जीणे जिन उपरे घात मंम्यो; एवमो वयर तें पापिया सें कर्यो, कर्म कोमि तुंहिज सबल दंम्यो. ॥सु०॥६॥ सहज गुण रोषिउ नामे चंमकोषिउ,जिनपदे, स्वान जिम जेह विलगो; तेहने बुऊवि उध्यों जग पति, किधलो पापथी अतिहें अलगो. ॥सु०॥७॥ वेदया मा त्रियाम लगें खेदियो, न्नेदियो तुझ नवि ध्यान कुं न्नो; शूलपाणि अन्नाणि अहो बुऊव्यो, तुऊ कृपा पार पामे न संन्नो.॥सु०॥८॥संगमे पिमीउ प्रन्नु सजल लोय णें, चिंतवे बुटश्ये किम एहो; तास उपरें दया एव मि शी करी, सापराधे जने सबल नेहो.॥सु०॥ए॥इम उपसर्ग सहेतां तरणि मित वरस, सार्द्ध उपर अधिक पक्ष एके; वीर केवल लह्युं कर्म छुख सवि दह्युं, गहग ह्युं सुर निकर नर अनेके.॥सु०॥१०॥इंदन्नूति प्रमुख स हस चउदश मुनि, साहुणी सहस उत्रीस विहसी; लगणसठ सहस एक लाख श्रद्धालुआ, श्राविका त्रि लख अगार सहसी.॥सु०॥११॥ इंम अखिल साधु परी वारशुं परवस्यो, जलधि जंगम जीश्यो गुहिर गाजे;

विचरता देश परदेश निय देशना, उपदिशे सयल संदेह नांजे.॥मु०॥१२॥

॥ ढाल ५. विवाहलानी देशी ॥

हवे निय आय अंतीम समे, जाणिय श्री जिनरायरे; नयरी अपापाएं आवीया, राय समाजने गयरे; हस्तिपालगराये दीठला, आवियका अंगण वाररे; नयण कमल दोय विहसीआ, हरखीला हइका मझाररे. ॥१३॥ नले नले प्रनुजी पधारीया, पावस पावन किधां रे; जनम सफल आज अम तणो, अम्ह घे पाउलां दीधांरे; राणी राय जिन प्रणमीया, मोटे मतियके वधाविरे; जिन सनमुख कर जोमीय, वेगल आगले आविरे.॥१४॥धन अवतार अमारको, धन दिन आजुनो एहोरे; सुरतरु आंगणे मोरिऊ, मोतियके वूठलो मेहोरे, आ श्युं अमारके एवको, पूरव पून्यनो नेहोरे; हैकलो हेजे हरसिऊ, जो जिन मलिऊ संजोगोरे.॥१५॥अति आदर अवधारिए, चरम चोमासलु रहियारे; राय राणि सुरनर सवे, हियकला मांहे गहगहि

यारे; अमृतथी अति मीठमी, सांभली देशना जिननी
रे; पाप संताप परो थयो, शाता थइ तन मननीरे.
॥१६॥ इंद्र आवे आवे चंद्रमा, आवे नरनारीना वृंदरे;
त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, नाटिक नव नवे छंदोरे; जि
नमुख वयणनी गोठमी, तिहां होय अति घणी मीठी
रे; ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज नयणले दीठी रे.
॥१७॥ इंम आणंदे अतिक्रम्या, श्रावण भाद्रवो आसोरे;
कौतिक कोमिलो अनुक्रमे, आवियमो कार्तिक मासो
रे; पाखि पर्व पन्होतलुं, पोहतलुं पुन्य प्रवाहिरे; राय
अढार तिहां मिल्या, पोसह लेवा उगांहिरे.॥१८॥ त्रि
भुवन जन सवि तिहां मिल्या, श्री जिन वंदन का
जरे; सहेज संकिरण तिहां थयो, तिल पमवा नहि
गंमोरे; गोयम स्वामि समोवमी, स्वामि सुधर्मा तिहां
वडारे; धन धन ते जिणे आपणे, लोयणे जिनवर दि
ठारे.॥१ए॥पूरण पुन्यना उपघ, पोषध व्रत वेगे लिधां
रे; कार्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पचखाण कि
धांरे; राय अढार प्रमुख घणे, जिन पगे वांदणां दिधां

रे; जिन वचनामृत तिहां घणे, जविंयणे घट घट पीधां रे. ॥२०॥

॥ ढाल ३ ॥ राग मारु. ॥

श्री जगदीश दयालु डुख दूरे कररे, कृपा कोरि तुज जोमी; जगमां रे जगमां रे कहिएं केहने वीरजी रे.॥२१॥जग जनने कुण देशे एहवी देशनारे, जाणि निज निरवाण; नव रसरे नव रसरे सोल पहोर दिये देशनारे. ॥२२॥ प्रबल पुन्य फल संसुचक सोहामणारे, अऊयणां पणपन्न; कहियां रे कहियां रे महियां सुख सांजलि होएरे. ॥२३॥ प्रबल पाप फल अऊयणां तिम तेटलां रे, अण पुछ्यां छत्रीस; सुणतां रे सुणतां रे जणतां सविसुख संपजेरे.॥२४॥पुण्यपाल राजा तिहां धर्म कथांतररे, कहो प्रजु प्रत्यक्ष देव; सुजनेरे (२) सुपन अर्थ सवि साचलोरे.॥२५॥ गज[1] वानर[2] खीर[3]डुम[4] वायस[5] सिंह[6] घमोरे[7], कमलबीज[8] इम आठ; देखिरे (२) सुपन सन्नय मुज मन हुउ रे.॥२६॥ जखर विज कमल अस्थांनके सिंहनुंरे, जीव रहित शरीर; सोवनरे (२)

कुंभ मलिन ए शुं घटेरे.॥२७॥ वीर भणे भूपाल सुणो मन धीर करी रे, सुमिण अर्थ सुविचार; हैमे रे (२) धरज्यो धर्म धुरंधरुरे. ॥२८॥

॥ ढाल ४ ॥

श्रावक सिंधुर सारिखा, जिन मतना रागी, त्यागी सद्द गुरु देवधर्म, तत्वें मति जागि; विनय विवेक विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा, एहवा श्रावक होयसे, मतिमंत सनुरा.॥२९॥लालचे लागा थोकिलें, सुखें राचि रहिया, घरवासे आशा अमर, परमारथ दूहिया; व्रत वयराग थकि नहि, कोइ लेशे प्रायें, गज सुपने फल एह, नेह नवि मांहोमांहे.॥३०॥वानर चंचल चपल जाति, सरखा मुनि मोटा, आगल होस्ये लालचि, लोभी मन खोटा; आचारज ते आचारहिण, प्रायें परमादि, धर्म भेद करस्ये घणा, सहजे स्वारथ वादी. ॥३१॥को गुणवंत महंत संत, मोहन मुनि रूडा, मुख मीठा मायाविया, मनमां हे कुडा; करस्ये मांहोमांहे वाद, पर वादे नासे, बीजा सुपन तणो विचार, इम

वीर प्रकाशे.॥३१॥कल्पवृक्ष सरिखा होस्ये, दातार ज्ञ लेरा, देव धर्म गुरु वासना, वरि वारिना वेरा; सरल वृक्ष सविने दीए, मनमां गहगहता, दाता फुरलज्ञ वृक्ष राज, फल फुले ग्रहता.॥३३॥कपटी जिनमत लिंगिया, वली बबूल सरिखा, खीर वृक्ष आम्रा थया, जीम कंटक तिखा; दान देयंतां वारसी, अन्य पावन पात्री, त्रिजा सुपन विचार कह्यो, जिन धर्म विघात्री.॥३४॥ सिंह कलेवर सारिखो, जिन शासन सबलो, अति उदाँत अगाहनिय, जिनवायक जमलो; परशासन साव ज अज, ते देखी कंपे, चउथा सुपन विचार इंम, जिनमुखथी जंपे.॥३५॥गछ गंगाजल सारीखो, मूंकी मति हिसा, मुनि मन राचे छिल्लरे, जीम वायस दीणा; वंचक आचारज अनेक, तिणे भुलविया, ते धर्मांतर आदरे, जडमति बहु नवियां.॥३६॥पंचम सुपन विचार एह, सुणीने राजाने, छठे सोवन कुंभ दीठ, मइलो सुणि कान; को को मुनि दरसण चारित्र, ग्यान पूरण देहा, पाले पंचाचार चारु, छंडि निज गेहा.॥३७॥को कपटी चारित्र वेष, लेई विप्रतारे, मइलो सोवन कुंभ

जीम, पिंम पापे नारे; अठा सुपन विचार एह, सात मे इंदिवर, उकरमे उतपति थइ, ते शुं कहो जिणवर. ॥३७॥पुण्यवंत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति, दाता जोक्ता ऋद्धिवंत, निरमल अवदात;साधु असाधु जति वेद, तव सरीखा किजे, ते बहु नइक नवियणे, स्यो उलंजो दीजे.॥३९॥राजा मंत्रिपरे सु साधु,आपोपुं गोपी, चारित्र सुधु राखस्ये, सवि पाप विलोपी; सप्तम सुपन विचार वीर, जिनवर इंम कहियो, अठम सुपन तणो विचार,सुंणि मन गहगहिउ.॥४०॥न लहे जिनमत मात्र जेह, तेह पात्र न कहिएं, दिधानुं परनव पुण्य फल, कांइ न लहियें; पात्र अपात्र विचार नेद, नो ला नवि लहेस्ये, पुण्य अर्थे ते अर्थ, आथ कुपात्रे देह स्ये.॥४१॥ उखर नूंमि हष्ट बिज,तेहनो फल कहिएं, अष्टम सुपन विचार इंम, राजा मन ग्रहियें; एह अनागत सवि सरुप, जाणि तिणे काले, दीक्षा लीधी वीर पास, राजा पुन्य पाले. ४२

॥ ढाल ५ ॥ राग गोडि ॥

इंद्रभूति अवसर लहिरे, पुछे कहो जिनराय; स्युं आगल हवे होयस्येरे, तारण तरण जीहाजो रे. कहे जिन वीरजी. ॥४३॥ मुज निरवाण समय थकी रे, त्रिहू वरस नव मास; मांछेरो तिहां बेसस्येरे, पंचम काल निरासोरे. कहे० ॥४४॥ बारे वरस्ये मुज थकिरे, गौतम तुज निरवांण; सोहम वीशे पामशेरे, वरसे अखय सुख गंणोरे. कहे० ॥४५॥ चउसठ वरसे मुज थकिरे, जंबूने निरवाण; आथमसे आदित्य थकिरे, अधिकुं केवल नांणो रे. कहे० ॥४६॥ मन पज्जव परमावधिरे, क्षपकोपशम मन आंण; संयम त्रिण जिन कल्पनी रे, पुलाग हारग हांणरे. कहे० ॥४७॥ सिझंभव अगंणवेरे, करस्ये दस (वै) आलिय; चउ पूर्वि भद्रबाहूथी रे, थास्ये मूल विलीहरे. कहे० ॥४८॥ दोय शत पन्नरे मुज थकिरे, प्रथम संघयण संठाण; पूवणुंअगते नवि हूस्ये, महाप्राण नवि झांणोरे. कहे० ॥४९॥ चउत्रयपने मुज थकिरे

होस्ये कालिक सूर; करस्ये चउथी पजुसणोरे, वरगुण
रयणनो पूरोरे. कहे० ॥ ५० ॥ मुझथी पण चोराशि
येरे, होस्ये वयर कुमार; दस पूर्वि अधिकालिणरे, रह
स्ये तिहां निरधारोरे. कहे० ॥ ५१ ॥ मुझ निर्वाण थ
कि बसें रे, विस पछी वनवास; मुकी करसे नगरमां रे,
आर्य रक्षित मुनि वासोरे. कहे० ॥ ५२ ॥ सहसें व
रसें मुझ थकिरे, चउद पूरव विछेद; जोतिष अण सि
वतां हुसेरे, बहुल मतांतर भेदोरे. कहे० ॥ ५३ ॥ वि
क्रमथी पंच पंच्याशिएरे, होस्ये हरिभद्र सूरि; जिन
शासन अजुवालसेरे, जेहथी दुरियां सवि हूरोरे. कहे०
॥ ५४ ॥ द्वादश सत सत्तर समेरे, मुझथी मुनि सू
र हिर; बप्पभट्ट सूरि होयसेरे, ते जिन शासन वीरेर.
कहे० ॥ ५५ ॥ मुझ प्रतिबिंब भरावस्येरे, आमराय
भूपाल; सार्द्ध त्रिकोटी सोवन तणोरे, तास वयणथी
विशालोरे. कहे० ॥ ५६ ॥ षोडस शत उगणोतरेरे,
वरसे मुझथी मुणिंद; हेमसूरि गुरु होयस्ये रे, शासन
यण दिणंदोरे. कहे० ॥ ५७ ॥ हेमसूरि प्रतिबोहोसे
, कुमारपाल भूपाल; जिन मंडित करस्ये मही रे.

जिन शासन प्रतिपालो रे. कहे० ॥ ५८ ॥ गौतम न
ला समयथीरे, मुझ शासन मन मेल; मांहो मांहे न
वि होस्ये रे, मछ गलागल केलोरे. कहे० ॥ ५९ ॥ मु
नि मोटा मायावियारे, वेढीगारा विशेष; आप सवार
थ वसी थयारे, ए विटंबश्ये वेषोरे. कहे० ॥ ६० ॥ लो
भि लखपति होयस्येरे, जम सरिखा भूपाल; सजन
विरोधि जन हूसेरे, नवि लज्जालु दयालो रे. कहे०॥६१॥
निरलोभि निरमाइयारे, सुधा चारित्रवंत; थोमा मुनि
महियल हूसेरे, सुण गौतम गुणवंतरे. कहे०॥ ६२ ॥
गुरु भगति शिष्य थोमलारे, श्रावक भगति विहीण;
मात पिताना सुत नहीरे, ते महिलाना आधिनो
कहे० ॥ ६३ ॥ डुपसह सूरि फलगुसिरी रे, नायल
श्रावक जाण; सच्चसिरि तिम श्राविकारे, अंतिम सं
वखाणयो रे. कहे० ॥ ६४ ॥ वरस सहस एकवीसतें
जिन शासन विख्यात; अविचल धर्म चलावशेरे,
तम आगम वातोरे. कहे० ॥ ६५ ॥ दूषमे दूषमा
लनी रे, ते कहिये शी वात; कायर कंपे हैमलोरे,
सुणतां अवदातोरे. कहे० ॥ ६६ ॥

॥ ढाल ६ ॥ पिउडो घरे आवे, ए देशी. ॥

मुझसुं अविहड नेह बांध्यो, हेज हैमा रंगे; दृढ मोह बंधण सबल बांध्यो, वज्र जिम अड्नंग; अलगा थया मुज थकि एहने, उपजसे रे केवल निय अंगके; गौतमरे गुणवंता.॥६७॥ अवसर जांणि जिनवरे, पुछि या गोयम स्वांम, दोहग दुखिया जीवने, आविये आ पण काम; देवसर्मा बंभणो, जइ बुझवोरे नणे ढुंक डे गामके.॥गौ०॥६८॥सांभली वयण जिणंदनुं, आणंद अंग न माय; गौतम बे कर जोडि, मणाम्या वीर जि नना पाय; पांगस्या पूरव प्रीतणी, चडनांणिरे मनमां निरमायके.॥गौ०॥६९॥गौतम गुरु तिहां आविया, वंदा विउ ते विप्र; उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे क्षिप्र; धसमस करतां बंभणे, वारि वागीरे थइ वेदन विप्रके.॥गौ०॥७०॥गौतम गुरुनां वयणलां, नवि धर्यां तिणे काल; ते मरी तस शिर क्रमि थयो, कामनीने एक तांन; उठिया गोयम जांणिउ, तस चरीयोरे पोता ने ज्ञान के. ॥ गौ० ॥ ७१ ॥

॥ ढाल ७ ॥ राग रामगिरि ॥

चोसठ मणानां ते ज्योति झगमगेरे, गाजे गुहिर गंभिर सिरेरे; पुरां तेत्रीस सागर पूरवे रे, नादे लिण लवसत्तमिया सूर रे; वीरजी वखाणेरे जग जन मोहियोरे. ॥ ७२ ॥ अमृतथी अधिकि मीठी वांणीरे, सुणतां सुखमो जे मनमे संपजेरे; ते लहेस्ये पोहोचस्ये निर्वाणरे. वी० ॥ ७३ ॥ वांणि पमठंदे सुर परिवोहीयारे, सुणतां पामे सुख संपत्तिनी कोमरे; विजा अरु ल ललटथी घणारे, आवी बेग आगल बे कर जोमरे. वी० ॥ ७४ ॥ सोहम इंदो शासन मोहीयोरे, पूछे परमेसरने तुम आयरे; बे घमि वधारो स्वाति थकी पहुं रे, तो भस्मग्रह सघलो दूरे जायरे. वी० ॥ ७५ ॥ शासन शोभा अधिकि वाधइयेरे, सुखीआ होशे मुनिवरना बृंदरे; संघ सयलने सवि सुख संपदारे, होशे दिन दिनथी परमानंदरे. वी० ॥ ७६ ॥ इंदा न कदा कहिए केहनुरे, केणे सांध्युं नवि जाए आयरे; भावि पदारथ भावे निपजेरे, जे जिम सरज्यो ते तिम थाये रे. वी० ॥ ७७ ॥ सोल पहोरनी देता देशनारे, पर

नकनामा रूअमो अध्ययणरे; कहेतां काति वदि कहुं प रगम्रिरे, वीरजी पोहोता पंचमी गति रयणरे. वी० ॥ ८७ ॥ ज्ञान दीवोरे जब दूरे थयो रे, तब किधि देवे दीवानी श्रेणिरे; तिम्हरे चिहूं वरणे दीवा किधलारे, दिवाली कहिएं ठे कारण तेणरे. वी० ॥ ७ए ॥ आंसूं परिपूर ण नयण आखंरूलोरे, मूंकि चंदननी चेहमां अंगरे; दिधो देवे दहन संघले मिलिजीरे, हा धिग धिग, सं सार विरंगरे. वी० ॥ ८० ॥

॥ ढाल ८ ॥ राग वीराग ॥

वंदेसु वेगे जइ वीरो, इंम गौतम गहगदता, मा रगे आवतां सांजलिउं, वीर मुगति मांहे पोहतारे; जि नजी, तुं निसनेही मोटो, अविहम प्रेम हतो तुज उप रे, ते तें किधो खोटोरे जीनजी० ॥ ८१ ॥ हे हे वीर कर्यो अणघटतो, मुज मोकलिउ गांमे; अंतकाले वेगां तुज पासे, हूं स्ये नावत कामेरे. जी० ॥ ८२ ॥ चौद सहस मुज सरिखा ताहरे, तुज सरिखो मुज तुंहि; विशवासी वीरे ठेतरीउ, ते स्या अवगुण मुंहिरे. जी० ॥ ८३ ॥ को केहने ठेहमे नवि वलगे, जो मिलतो हो

ए सबलो; मिलतास्युं जेणे चित्त चोर्यों, ते तिणे कर्यो निबलोरे. जी० ॥ ८४ ॥ निठुर हैझा नेह न किजे, निसनेही नर निरखी; हैझां हेजे मिले जिहां हरखी, ते प्रीतलकि सरीखिरे. जी० ॥ ८५ ॥ तें मुझने मनझो नवि दीधो, मुज मनझो तें लीधो; आप सवारथ सघलो किधो, मुगति जइने सिद्धोरे. जी० ॥ ८६ ॥ आज लगे तुज मुजसु अंतर, सुपनंतर नवि हुंतो; हैझा हेजे हियालि ढंझी, मुजने मुक्यो रोवंतो रे. जी० ॥ ८७ ॥ को केहशुं बहू प्रेम म करझ्यो, प्रेम विटंबण विरुइ; प्रेमे परवश जे दूख पामे, ते कथा घणु गिरुइरे. जी० ॥ ८८ ॥ निसनेही सुखिया रहे सघले, सनेही दुख देखे; तल दुग्ध परे परनी पीझा, पामे नेह विशेषेरे. जी० ॥ ८९ ॥ समवसरण कहिएं हवे होसे, कहो कुण नयणें जोशे; दया धेनु पुरी कुण दोहस्ये, वृष दधि कुण विलोसेरे. जी० ॥ ९० ॥ इण मारग जे वाल्हा जावे, ते पाछा नवि आवे; मुज हैझे दुखझे न समाए, ते कहो कुण समावेरे. जी०॥९१॥ द्यो दरिसण वीरा वा'लाने, जे दरिसणना तरस्यारे.

जो सुहणे केवारे देखसुं, तो डुख दूरे करेशुं रे. जी० ॥ ए२ ॥ पुण्य कथा हवे कुंण केलवशे, कुंण वाल्हा मेलवशे; मुज मनफो हवे कुंण खेलवशे, कुमति जिम तिम लवलेरे. जी० ॥ ए३ ॥ कुंण पुछयानो उत्तर देशे, कुंण संदेह भांजशे; संघ कमल वन किम विकससे, हुं छदमस्था वेसेरे. जी० ॥ ए४ ॥ हुं पराधुरवसुं अजांण, में जिन वात न जांणि; मोह करे सवि जग अनाणी, एहवी जीनजीनी वांणीरे. जी० ॥ एए ॥ एहवे जिन वयणे मन वाप्यो, मोह सबल बल काप्यो; इंण भावे केवल सुख आप्यो, ईंडे जिनपद थाप्योरे. जी० ॥ ए६ ॥ ईंडे जुहास्या भट्टारक, जुहार भट्टारक तेणे; पर्व पन्होतुं जगमां वाप्युं, ते किजे सवि केणे रे. जी० ॥ ए७ ॥ राजा नंदिवर्द्धन नुतरीउ, भाइ वहिनर बीजे; ते भावक बीज हुइ जग सघले, वेहेन वहूपरे किजेरे. जी० ॥ एG ॥

॥ ढाल ए ॥ विवाहलानी ॥

पहिरीए नवरंग फालफीए, मांहि मृगमद केसर भालफीए; रुव रुवके श्रवणे भालफीए, करि कंठे

मुगताफल मालन्तीए. ॥ ९९ ॥ घर घर मंगल मालन्तीए, जपे गोयम गुण जपमालन्तीए; पहोतलो परव दीवालन्तीए, रमे रस ज्नर रामत बालन्तीए, ॥१००॥ शोक संताप सवि कापीजए, इंडे गोयम वीर पदे थापीजए; नारी कहे सांजल कंतन्ताए, जपो गोयम नाम एकंतन्ताए. ॥ १०१ ॥ छयो लख लाज्न लखेशरी ए, द्यो मंगल कोमी कोमेशरी ए; जाप जपो थइ सु तपेसरी ए, जीम पामीए ऋद्धि परमेसरीए. ॥ १०२ ॥ लहिएं दिवालमी दामलो ए, एतो पुएयनो टबको टालुजए; सुकृत सिरि दृढ करो पालमी ए, जिम घर होय नित्य दिवालन्तीए. ॥ १०३ ॥

॥ ढाल १० ॥

हवे मुनिसुव्रत सीसोरे, जेहनी सबल जगीसो; ते गुरु गजपुरे आव्यारे, वादी सवि हार मनाव्या. ॥ १ ॥ पावस चउमासुं रहियारे, ज्नवियण हरखे गहगहीआरे; नमुंचि चक्रवर्त्ति पद्मरे, जसु हियमे नवि छद्म ॥ २ ॥ नमुंचि तस नामे प्रधानरे, राजा दिये

बहु मान; तिणे तिहां रिझवी रायरे, मागि मोटो प
साय. ॥ ३ ॥ लिधो षट खंम राजरे, सात दिवस मां
रि आज; पूर्वे मुनिसुं विरोध्योरे, ते किणे नवि प्रति
बोध्यो.॥४॥ ते मुनि सुं कहे बंझोरे, मुझ धरति सवि
वंझो; विनविड मुनि मोटोरे, नवि माने कर्मि खोटो.
॥५॥ साठसयां वर्ष तप तपिडरे, जे जिन किरीयानो
खपीड; नामे विष्णु कुमाररे, सयल लवधिनो नंमार.
॥ ६ ॥ डठ कम्म नूमि लेवारे, जोवा नाइनी सेवा;
ल्यूं त्रिपदि नूमि दानरे, नले नले आव्या नगवान.
॥ ७ ॥ इणे वयणे धमहमीडरे, ते मुनि बहू कोपे
चढिड; किधो अदनूत रूपरे, जोयण लाख सरूप.।८।
प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, विजो पश्चिमे किधो; त्रिजो
तस पुंठे थाप्योरे, नमुचि पाताले चांप्यो. ॥ ए ॥ थर
हरीड त्रिनूवनरे, खलनलिड सवि जन; सलसलिड
सुर दिन्नरे, पमचो नवि सांनलिए कन्न. ॥ १० ॥ ए
डत्पात अत्यंतरे, दूरि करो नगवंत; है है स्यूं हवे था
शे रे, बोले बहू एक साले. ॥११॥ करणे किन्न
रे, करुआ क्रोध समेवा; मधुर मधुर गाए ग

कर जोडि विनीत. ॥ १२ ॥ विनय थकी वेगे वलिउ रे, ए जिन शासन बलिउ; दानव देवे खमाव्यो रे, नर नारीए वधाव्यो. ॥ १३ ॥ गावलडी जेम तडकी रे, जे देखी डुरे तडकी रे; ते जतने ग्रहि ठ रे, आ ति उतारी मेरइए रे. ॥ १४ ॥ नवले अवतारे आव्य रे, जीवित फल लहि फाव्या; शेव सुंहालि कंसार रे फल ढ्यूं नवे अवतार रे. ॥ १५ ॥ ठगण तणो घरवा र रे, नसुंचि लख्युं घर नारे; ते जीम जीम खेरु था य रे, तिम तिम डुःख दूरे जाय रे. ॥ १६ ॥ मंदिर मं डाण मांडया रे, दालिद्र डुख डुरे छांडया; काति वदि पडवे परवेरे, इंम ए आदरीजे सर्वे. ॥ १७ ॥ पुण्ये न रजव पांमि रे, धर्म पुन्य करो नरधांमी; पुन्ये ऋद्धि रसालि रे, नित नित पुन्ये दिवाली. ॥ १८ ॥

कलश.

जिन तुं निरंजण सजल रंजण, डुख भंजण दे वता; द्यो सुख सांमि मुगति गांमि, वीर तुज पाय सेवता. तप गछ गयण दिणंद दह दिसे, दीपतो जग

जांणिएं; श्री हीरविजय सुरिंद सहगुरु, तास पाट व खाणीये. ॥ १९ ॥ श्री विजयसेन सुरीस सह गुरु, विजयदेव सूरिसरु; जे जपे अहनिश नाम जेहनो, व र्द्धमान जिणेश्वरुः निर्वाण तवन महिमा भवन, वीर जिननो जे भणे; ते लहे लिलालब्धि लछी, श्री गुण हर्ष वधामणे. ॥ २० ॥ इतिश्री वीर निर्वाण महिमा दीपालिका संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री वीर स्तवन ॥

वीर हमणें आवे छे मारे मंदिरीए, मंदिरीएरे वीर मंदिरीए. वी०॥पाये पखीने में तो गोद बिछाऊ, नित नित वीनतडी करीए. वी० ॥ १ ॥ राजन कुटुंब पुत्रादीकने, हरखे इणि पेरे उच्चरिए. वी० ॥ २ ॥ जव प्रभु आंगणे वीर पधारे, तव वछ सनमुख डग भरीए. वी० ॥ ३ ॥ सयणा सुणाने भवियण, पडि लाभिजे तो भवसायर तरीए. ॥ वी० ॥ ४ ॥ अप्र तिबंध पणे महावीरजी, घर घर भीक्षाने फरीए. वी० ॥ ५ ॥ अभिनव शेठ तणे घर पारणुं, किधुं फ रतां गोचरीए. वी० ॥ ६ ॥ इम भावना करतां श्रव णे सुणी, देव दूदूंभीरे चित्त भरीए. वी० ॥७॥वारमा

कल्पे जिरण आयु बांध्युं, वीर जिनने उत्तम चित्त धरीए वी० ॥ ७ ॥ तस पद पद्मनी सेवा करतां, सेजे शिव सुंदरी वरीए रे. वी० ॥ ए ॥ इति वीर स्तवनम् ॥

॥ अथश्री वीरप्रजुनुं दीवाळीनुं स्तवन लिख्यते॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ जाव दया सागर प्रजु रे, परउपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण जरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणी सैण ज्युं रे, वीर विहुणा रे जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युं रे, अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संसय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम रहेवाय रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ निरजामिक जव समुद्रनो रे, जवअटवि सञवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उच्छाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां

श्रुत आधार छे रे ॥ अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो भवि जना रे, जिन पडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचार्य मुनि रे, सहूने ए णीपरे सिद्धि ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीध रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति दीवाली स्तवन ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय ॥ सहगुरु स्वामीनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पुछे गोतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति मारग आराधीये, कहो केणी परें अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचनरस, भांखे श्री भगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइए, व्रत धरिये गुरु शाख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसराविये, पापस्थान अढार ॥ चार शरण

नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आणी ॥ अणसण अवसर आदरी, नव पद जपो सुजाण॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो जिम पामो भव पार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पेहली ॥ ए छींडी किहां राखी ए देशी

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह भव परभवना, आलोइए अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुण खाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु उलविये नहीं गुरु विनये, काले धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सुधां, भणीये वही उपधान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना॥ ज्ञान भक्ति न संभाली रे॥प्रा०॥३॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ भव परभव वली रे भवोभव ॥ मिच्छा दुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी समकीत ल्यो शुद्ध जाणी ॥ वि

वचने शंका नवी कीजे, नवि परमत अभिलाष ॥ साधु तणी निंदा परिहरजो, फल संदेह म राख रे ॥ प्रा० ॥स०॥ ५ ॥ मुढपणुं छंमो परशंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ साहम्मिने धर्मे करी स्थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे ॥ प्रा०॥स० ॥ ६॥संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्ण वाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जे विणसामयो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा०॥स०॥७॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकीत खंम्युं जेह॥ आ नव परभव वली रे भवो भव, मिछा उक्कम तेहरे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधी, आठ प्रवचन माय ॥ साधु तणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ए ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक,पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचन माय न पाली रे ॥ प्रा०॥चा० ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र महोल्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥प्रा० ॥चा०॥ बारे भेदे तप नवी कीधो, छते योगे निज शक्ते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरवीयुं भक्ते रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १२ ॥ तप वीरज आचार ए

णी पेरे, विविध विराध्या जेह ॥ आ न० ॥मिछा० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ चा०॥वलीय विशेषे चारित्र केरा, अति चार आलोइये ॥ वीरजिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवी धोइए रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनस्पति ॥ ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करि कर्षण आरंभ, क्षेत्र जे खेड्यां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां भोंयरां ॥ मेडी माल चणावीया ए ॥ लिंपण धुंपण काज, एणीपरें परपरे ॥ पृथ्वीकाय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय ॥ छोती धोती करी दुहव्यां ए ॥ भाठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा ॥ भाडभुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परे केलवी॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फुल फल चुंटीयां ए ॥

पहोंक पापड़ी शाक, शेक्यां सुकव्यां ॥ छेद्यां छुद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड, घाणी घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुमांहि, पीली शेलडी ॥ कंदमूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम ए केइ जीव, हण्या हणावीया, ॥ हणतां जे अनुमोदि याए ॥ आ भव परभव जेह ॥ वली० ॥ ते मुज० ॥ ७॥ कमी सरमीया कीडा, गाडर गंडोला ॥ इयल पोरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित र सतणा ॥ वली अथाणा प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बे इंद्रिय जीव, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ उद्देही जू लीख, मांकण मंकोडा, चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहीयां धीमेल, कानखजुरडा ॥ गींगोडा धनेरीयां ए ॥ एम तेइंद्रिय जीव, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ माखी मच्छर डांस, मसा पतंगी यां ॥ कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकण विछु तीड, भमरा भमरीयो, कोतांवग खड माकडी ए ॥ ११॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ ज लमां नाखी जाल, जलचर दुहव्या ॥ वनमां मृग

संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीजर्या पंखी जीव, पामी पा
शमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जी
व, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकारी जी ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोन्न नय हास्यथीजी, बोल्यां वचन अ
सत्य ॥ कूड करी धन पारकांजी, लीधां जेह अदत्त
रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुक्कड आज ॥ तुम साखे
महाराजरे ॥ जिनजी० ॥ देइ सारुं काजरे ॥ जिन
जी० ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनां
जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपट पणेजी, घ
णुं विरंब्यो देह रे ॥ जिनजी० ॥ मि० ॥ २ ॥ परिग्र
हनी ममता करीजी, नवनव मेली आथ ॥ जे जी
हांनी ते तीहां रहीजी, कोइ न आवी साथरे ॥ जि
नजी० ॥ मि० ॥ ३ ॥ रयणी नोजन जे कर्यांजी
कीधां नक्ष्य अन्नक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचेजी, पा
प कर्यां प्रत्यक्षरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ

नारीयांजी, वली नाग्यां पच्चक्काण ॥ कपट हेतु किरिया करीजी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥५॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहेजी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधन तणोजी, ए पेहेलो अधिकार रे ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडीरे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ साहेल डीरे ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभा रीये ॥ सा० ॥ हियडे धरी विचार तो ॥ शिवगति आ राधन तणो ॥ सा० ॥ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जी व सवे खमावीए ॥ सा० ॥ योनी चोरासी लाखतो ॥ मन शुद्धे करी खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोश न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ रागद्वेश एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४॥ साहम्मि संघ खमाविये ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिन शासन रीति तो ॥ ५ ॥ ख

मीए अने खमावीए ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो॥ शीवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिका र तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मू र्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रे म द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीए ॥ सा० ॥ कूडां न दीजे आल तो ॥ रति अरति मि थ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसरावियें ॥ सा० ॥ पाप स्थान अ ढारतो ॥ शिव गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आ विया ए ॥ ए देशी ॥

जन्म जरा मरणे करीए, ए संसार असार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखण हार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध भगवंत तो ॥ शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु सरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरि ए, चार शरण चि

त्त धारतो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधि कारतो ॥ ३ ॥ आ नव परनव जे कर्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदीए ए, पमिक्कमिए गुरु शाख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावियां ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशे ए, वली उथाप्यां सूत्रतो ॥ ५ ॥ घम्यां घमाव्यां जे घणांए, घंटी हल हथिआर तो ॥ नवनव मेली मूकीयां ए, करतां जीव संहारतो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीयां ए, जन्म जन्म परिवार तो ॥ जन्मांतर पहोता पढी ए, कोइ न कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आनव परनव जे कर्यां ए, एम अधि करण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावियें ए, आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कर्यां परिहारतो ॥ शिवगति आराधन तणो ए ॥ ए बठो अधिकार तो ॥ ए ॥ इति.

॥ ढाल बठी ॥ आदि तुं जोयने आपणी ए देशी ॥

धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥

दान शीयल तप आदरी, टाळ्यां दुष्कर्म ॥ १ ॥ ध
न्य० ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ जुग
ते जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥२॥
पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिनहर जिन चैत्य ॥ संघ
चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ प
डिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उव
झायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्म कारज अ
नुमोदिये, इम वारंवार ॥ शिवगति आराधन तणो,
सातमो अधिकार ॥ धन० ॥ ५ ॥ भाव भलो मन
आणीये, चित्त आणी ठाम ॥ समता भावे भाविये,
ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जी
वने, कोइ अवर न होय, ॥ कर्म आप जे आचर्यां
भोगवीये सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समताविण जे अनु
सरे, प्राणी पुण्य काम ॥ छार उपर ते लींपणुं, झांख
र चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ भाव भलीपरे भाविये,
धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो
अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगीरी उपरे ए देशी ॥

हवे अवसर जाणी, करिये संलेषण सार ॥ अ
णसण आदरियें, पच्चक्खी चारे आहार ॥ ललुता सवि
मुकी, ढांकी ममता अंग ॥ ए आतम खेले समता
ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत
निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक
॥ दुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी
पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शा
लिजद्र, खंधो मेघ कुमार ॥ अणसण आराधी, पा
म्या जवनो पार ॥ शिव मंदिर जाशे, करी एक अव
तार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ द
शमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मू
को शिव सुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये, दुर्ग
ति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चौद पूरवनो सा
र ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो पामे नवकार ॥ तो
पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो,
मंत्र न कोइ सार ॥ इह जवने परजवे, सुख संपत्ति
दातार ॥ ५ ॥ जुओ जील जीलडी, राजा राणी थाय

॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महराय ॥ राणी र
नवती वेहु, पाम्यां ठे सुरभोग ॥ एक भवथी लेशे
सिद्धि वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वली, मं
फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फू
माल ॥ शीव कूमरे योगी, सोवन पुरिसो कीध ।
एम एणे मंत्रे, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए द
अधिकारे, वीर जिणेसर भाख्यो ॥ आराधन केरो
विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे पाप पखाली,
वभय दूरे नांख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अ
त रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ढाल आठमी ॥ नमो भवि भावशुं॥ए देशी

॥ सिद्धारथ राय कुल तिलोए, त्रिशला मात
ल्हार तो ॥ अवनितले तुमे अवतर्या ए, करवा
म उपगार ॥ १ ॥ जयोजिन विरजीए ॥ में अपरा
कर्या घणाए, केहेतां न लहुं पारतो ॥ तुम चरणे
व्या भणीए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥
श करीने आवियोए, तुम चरणे महाराज तो ॥

ध्याने नवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज०
कर्म अलूजण आकरांए, जन्म मरण जंजाल तो ॥
हुं छुं एहथी उन्नग्यो ए, छोमावो देव दयाल ॥ज०॥
॥ ४ ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दुःख
दंदोलतो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुन्यक
ल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नव नव विनय तुमारमाए,
नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीए ए,
बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुःख निवार
ण जगजयो ॥ श्री वीर जिनवर, चरण थुणतां, अधि
क मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव, सुरिंद
पटधर, तीर्थ जंगम, इण जगे ॥ तप गछपति श्री,
विजय प्रन्न सूरि, सूरि तेजे ऊगमगे ॥ २ ॥ श्री
हीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्ति विजय सुरगुरु
समो ॥ तस शिष्य वाचक विनय विजये, थुण्यो जि
ा, चोवीसमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत, उगणत्रीसे,
रही रांदेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कार

ण, कीयो गुण, अन्यास ए ॥ ४॥ नरन्नव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलासए ॥ निर्जरा हेत, स्तवन रच्चीयुं, नामे पुण्य प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्री वीर जिन आराधनारूप पुण्य प्रकाश स्तवन संपूर्णम्.

अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.

पुण्य प्रशंसीये. ए देशी.

सुत सिद्धारथ न्नुपनोरे, सिद्धारथ न्नगवान ॥ बा रह परखदा आगलेरे, न्नाखे श्री वर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ न्न वियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायोरे, ज्ञान न्नगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुं, जिणथी दंसण होयरे ॥ २ ॥ न्न० ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधेरे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिविरपणुं ल हेरे, आचारज उवज्झायरे ॥ ३ ॥ न्न० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जेम इंधण दहेरे, क्षणमां ज्योति प्रकाशोरे ॥ ४ ॥ न्न० ॥ प्रथम

ज्ञान पछे दयारे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणंग पगथालीयेरे, जेम चढे मोक्ष आवासोरे ॥ ५ ॥ ज्ञ०॥ मइ सुअ ओहि मणपज्जवारे, पंचम केवल ज्ञान॥ चउ मुगां श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदानरे ॥ ६ ॥ ॥ ज्ञ० ॥ तेहनां साधन जे कह्यांरे, पाटी पुस्तक आ दि ॥ लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादोरे ॥ ७ ॥ ज्ञ० ॥ त्रिविध आशातना जे करेरे, जणतां करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोबडारे, मुगा पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज्ञ० ॥ जणतां गणतां न आवडेरे, न मले वल्लज्ञ चीज ॥ गुण मंजरी वरदत्त परेरे, ज्ञा न विराधन बीजरे ॥ ए ॥ ज्ञ० ॥ प्रेमे पुछे परखदारे प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनोरे, करो अधिकार पसायोरे ॥ १० ॥ ज्ञ० ॥ इति

॥ ढाल बीजी ॥

कपूर होय अति उजलोरे--ए देशी.

जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥
अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तासरे ॥१॥

प्राणी, आराधो वरज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदानरे ॥प्रा
णी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनोरे, विनयादि
गुणवंत ॥ पितरे जणवा मूकीडरे, आठ वरस जब
हुंतरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंमित यत्न करे घणोरे, गत्र ज
णावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमेरे, ग्रंथ तणी शी
चेतरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढे व्यापी देहमीरे, राजा रा
णी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमांरे, सिंहदास धन
वंतरे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनीरे, शीले शो
जित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमीरे, मुंगी रोगे व्यं
गरे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ सोल वरसनी सा थइरे, पामी यौ
वन वेश ॥ डर्जग पण परणे नहींरे, मात पिता धरे
खेदरे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणे अवसरे उद्यानमांरे, विज
यसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरुरे, चरण क
ण व्रत धाररे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक जूपालनेरे,
दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजीरे, वंदन जावे
तामरे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजलेरे, पुरजन स
हित नरेश ॥ विकसित नयण वदन मुदारे, नहि प्र
माद प्रवेशरे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परजवेरे,

मूरख पर आधीन ॥ रोगे पीम्या टलवलेरे, दीसे दुःखीया दीनरे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमारे, न लहे तत्त्व संकेतरे ॥ ११ ॥ प्रा० श्रेष्ठी पुछे मुणिंद नेरे, ज्ञाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजारे, कवण कर्म विरतंतरे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति

॥ ढाल त्रीजी ॥

सूरती महिनानी.—देशीमां.

धातकीखंमना ज्ञरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे शीखवा, ताते मूक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वज्ञावे रामते, करतां दहामा जाय ॥ पंमित मारे त्यारे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी शंखिणी शीखवे, ज्ञणवानुं नहीं काम ॥ पंम्यो आवे तेमवा, तो तस हणज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमियो लेखण, बाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने द्राख

॥ ५ ॥ पापापरे मोहोटा थया, कन्या न दीए कोय॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी नाखे नामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सौ कोय ॥ ७ ॥ रेरे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठे मारी सुंदरी, काल करी तत खेव॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान विराव न हेव ॥ ए ॥ सूछांगत गुणमंजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, साथिउ मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तो विधि पारणे एह ॥ १४ ॥ अथवा सौभाग्य पंचमी, उज्ज्वल कार्त्ति मास ॥ जावज्जीव लगे सेवीये: उजमणा

विघि खास ॥ १५ ॥ इति.

॥ ढाल चोथी ॥

एकवीशानी देशीमां.

पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चाबखी दो रा रे, पाटी पाटला वरतणां ॥ मसी कागल रे, कांबी खम्भिआ लेखिणी ॥ कवली भावली रे, चंडुआ जरम र पुंजणी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नूखण, केसरचंदन भावली ॥ वासकूंपि वालाकूंचि, अंग लुहणां ठावली ॥ कलश थाली मंगल दीवो, आरति ने धूपणां ॥ चरला मुहपत्ती सामीवच्छल, नोकारवाली आपना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसणरे, चरणनां साधन जे कह्यां ॥ तप संयुतरे, गुणमंजरीए सद्दह्यां ॥ नृप पूछेरे, वरदत्त कुंअरने अंगरे ॥ रोग ऊपनोरे, कवण करमना ज्ंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ मुनिराज भाखे जंबुद्वीपे, भरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वनमां हे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगे गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पामी भोग वामी, धर्म धामि संचर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ ल

घु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे॥ पणसय मुनि ने रे, सारण वारण नितु दिए॥ कर्मयोगे रे, अशुभ उदय थयो अन्यदा॥ संथारो रे, पोरिसी भणी पोढया यदा॥ ५॥ त्रुटक॥ सर्व घाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणा॥ ग्रंथमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूम णा॥ ज्ञान उपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूत स्यो॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, भर्यो पाप तणो घ स्यो॥ ६॥ ढाल॥ मन चिंतवेरे, कां मुज लाग्युं पा प रे॥ श्रुत अभ्यास्यो रे, तो एवम्हो संताप रे॥ मुज बांधव रे, भोयण सयण सुखे करे॥ मूरखना रे, आ ठ गुण मुख उच्चरे॥ ७॥ त्रुटक॥ वार वासर को मुनिने, वायणा दीधी नहीं॥ अशुभ ध्याने आयु पू री, भूप तुज नंदन सही॥ ज्ञान विराधन मूढ जड पणुं, कोढनी वेदन लही॥ वृद्ध बांधव मान सरस, हंसगति पाम्यो सही॥ ८॥ ढाल॥ वरदत्तनेरे, जाति समरण उपन्युं॥ भव दीठोरे, गुरु प्रणामी कहे गुरु मनो॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवम्हो॥ गुण अवगुण रे, भासन जे जग परवम्हो॥ ए॥ त्रुटक॥

ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवर्फ ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावर्फ ॥ नूप पत्नणे पुत्रने मनु, तपनी शक्ति न एवर्फ ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो वेवर्फ ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

मेंदी रंग लाग्यो—ए देशी.

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, न्नेदी साते धात ॥ तपशुं रंग लाग्यो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, प्रसर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्या स हस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नूपे कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ न्नोम कांत गुणे करी रे, वरदत्त रवि शशि रुप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, न्नोगवे न्नोग अखं रू ॥ त० ॥ वरसे वरसे उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ न्नुक्त न्नोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खट

काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंडने रे, परणावे नि
ज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी
रे, वैजयंते दोय देव ॥ त०॥ वरदत्त पण उपनो रे, जि
हां सीमंधर देव ॥ त० ॥६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे,
गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे,
पुण्ये कीधो भेट ॥ त० ॥ ७ ॥ सूरसेन राजा थयो
रे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने
रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण
ते तप आदर्युं रे, लोक सहित भूपाल ॥ त० ॥ दश
हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ए॥
चार महाव्रत चोंपशुं रे, श्री जिनवरनी पास ॥ त०
॥ केवलधर मुक्ति गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त०
॥ १० ॥ रमणी विजय शुभापुरी रे, जंबु विदेह म
झार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती
घर नार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमंज
रीनो जीव ॥ त० ॥ मानस सर जेम हंसलो रे, ना
म धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसे राजवी रे,
सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरी

रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, भाखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेने तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ ढाल ७मी ॥

करकुंडुने करुं वंदणा–ए देशी.

चोवीस दंडक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणंत स्वर्गथी ॥हुं०॥ त्रिशला उर सुखकंद रे ॥हुंण॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ महानिशीथ सिद्धांतमां ॥हुं० ॥पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंड कोशिड साप रे ॥ हुं० ॥यज्ञ करता बांभणा ॥ हुं०॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखभदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० ॥ व्यासी दिवस संबंधथी ॥हुं०॥कामित पूर्यों क्षिप्र रे ॥ हुं०

॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित आण रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्री विजय सिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्ये ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥

कलस.

इय वीर लायक विश्वनायक, सिद्धि दायक मे स्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोडर, गुंथी जिन कंठे ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहे, सत्तर त्राणु संवत्स रे ॥ श्री पार्श्व जन्म कल्याण दिवसे, सकल भवि मंगल करे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ छ आवस्यकनुं स्तवन॥

दुहा.

चोविशे जिनवर नमुं, चतुर चेतना काज ॥ आवस्यक जिणे उपदिस्या, ते गुणस्युं जिनराज ॥१॥ आवस्यक आराधीए, दिवस प्रते दोयवार ॥ दुरित दोष दूरे टले, ए आतम उपकार ॥ २ ॥ सामायक चोवीसत्थो, वंदण पडिकमणेण ॥ काउसग्ग पच्चरकाण कर, आतम निर्मल एण ॥ ३ ॥ ऊर जाय जिम जांगुली, मंत्र तणे महिमाय ॥ तेम आवस्यक आदरे, पातक दूर पलाय ॥ ४ ॥ भार तजी जिम भार वही, हेले हलुउ थाय ॥ अतिचार आलोयतां, जन्म दोष तिम जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल १. कपूर होय अति उजलुं, ए देशी ॥

पहेलुं सामायक करो रे, आणी समता भाव ॥ राग रोष दूरे करो रे, आतम एह स्वभाव रे॥ प्राणी समता छे गुण गेह, एतो अभिनव अमृत मेह रे ॥ प्राणी समता छे गुण गेह, ए आंकणी ॥ १ ॥ आपे

आप विचारीए रे, रमिए आप स्वरुप ॥ ममता जे परज्ञावनी रे, विषमो ते विष कूप रे. प्राणी० ॥ २ ॥ ज्ञव ज्ञव मेली मुकीयां रे, धन कुटुंब संजोग ॥ वार अनंति अनुज्ञव्यां रे ॥ सवि संजोग विजोग रे. प्रा० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र जग को नहीं रे, सुख दुःख माया जाल ॥ जो जागे चित्त चेतना रे, तो सवि दुःख वि सराल रे. प्रा० ॥ ४ ॥ सावद्य जोग सवि परिहरो रे, ए सामायक रुप ॥ हूवा ए परिणामथी रे, सिद्ध अ नंत अरुप रे. प्रा० ॥ ५ ॥

॥ ढाल २. साहेलडीनी देशी ॥

आदीश्वर आराहीएं साहेलमी रे, अजित ज्ञजो ज्ञगवंत तो ॥ संज्ञवनाथ सोहामणा, सा० अज्ञिनंदन अरिहंत तो ॥ १ ॥ सुमति पद्मप्रज्ञ पूजीए, सा० समरु स्वामी सुपार्श्वे तो, चंद्रप्रज्ञ चित्त धारीए, सा० सुविधि सुविधि ऋद्धिवास तो ॥ २ ॥ शीतल ज्ञतन दिनमणि, सा० श्री पूरण श्रेयांस तो, वासुपूज्य सु पूजीआ, सा० विमल विमल जस हेत तो॥ ३ ॥ करुं अनं त उपासना, सा० धरम धरम धूर धारतो, शांति कुं

थु अर मल्लि नमुं, सा० मुनिसुव्रत वमवीर तो ॥४॥ चरण नमुं नमीनाथना, सा० नेमीश्वर करुं ध्यानतो, पार्श्वनाथ प्रभु पूजीए, सा० वंदु श्री वर्धमान तो ॥ ५ ॥ ए चोवीशे जीनवरा, सा० त्रिभुवन करण उद्योत तो, मुक्तिपंथ जेणे दाखव्यो, सा० निर्मल केवल ज्योततो ॥ ६॥ समकित शुद्ध एहथी होए, सा० लीजे नवनो पार तो, बीजुं आवश्यक इश्युं, सा० चोवीसत्थो सार तो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३. गिरिमां गोरो गीरुउ ए देशी ॥

वे कर जोमी (२) गुरुचरणे देउ वांदणां रे, आवश्यक पचवीश धारो रे ॥ धारो रे (२) दोष वत्रीश निवारीए रे ॥ १ ॥ चार वार गुरु चरणे मस्तक नामीए रे ॥ वार करी आवर्त खांमो रे, खांमो रे (२) वली तेत्रीश आशातना रे ॥ २ ॥ गीतारथ गुण गिरुआ गुरुने वंदतां रे, नीच गोत्र क्षय जाय ॥ आए रे (२) उंच गोत्रनी अरजना रे ॥ ३ ॥ आंण उलंगे कोइ न जगमां तेहनी रे, परभव लहे सौभाग्य ॥ भायग रे (२) दीपे जगमां तेहनुं रे ॥ ४ ॥

कृष्णराय मुनिवरने दीधां वांदणां रे ॥ क्षायक सम कित सार, पाम्या रे (२) तीर्थंकर पद पामशे रे॥५॥ शीतल आचारज जिम भाणेजने रे ॥ द्रव्य वांदणां दीध; भावे रे (२) देतां वली केवल लहुं रे ॥६॥ ए आवश्यक त्रीजुं एणी पेरें जाणज्यो रे ॥ गुरुवंदण अधिकार, करजो रे (२) विनयभक्ति गुणवंतनी रे ७

॥ ढाल ४ ॥

चेतन चेतो रे चेतना, ए देशी.

ज्ञानादिक जिनवर कह्या रे, जे पांचे आचार तो ॥ दोय वार ते दिन प्रते रे, पडिकमीए अतिचार, जयोजिन वीरजी रे ॥ १ ॥ आलोइने पडिकमी रे, मिछामि डुक्कड देय ॥ मन वच काया शुद्ध करी रे, चारित्र चोखु करेय. जयो० ॥ २ ॥ अतिचार शल्य गोपवे रे, न करे दोष प्रकाश ॥ माठी मल्ल तणी परे रे, ते पामे परिहास. जयो० ॥ ३ ॥ शल्य प्रकाश गुरु मुखे रे, होये तस भाव विशुद्ध ॥ ते हसी डोरे न हीं रे, करे कर्म शुं जुद्ध. जयो० ॥ ४ ॥ अतिचार इ म पडिकमी रे, धर्म करो निशल्ल ॥ जित पताका

तिम वरो रे. जिम जग फल्लही मल्ल. जयो० ॥५॥ वंदितु विधिशुं कह्यो रे, तिम पमिकमणा सूत्र॥ चोथुं आवश्यक इशुं रे, पमिकमणा सूत्र पवित्र.जयो०॥६॥

॥ ढाल ५ ॥

हवे निसुणो इहां आवीआ, ए देशी.

वैद विचक्षण जेम हरे ए, पहेलां साल विकार तो ॥ दोष शेष पछी रूझवा ए, करे उसरू उपचार तो ॥ १ ॥ अतिचार व्रण रूझवा ए, काउसग्ग तिम होय तो ॥ नव पल्लव संजम हुवे ए, दूषण नव रहे कोय तो ॥ २ ॥ कायानी थिरता करी ए, चपल चित्त करो ठाम तो ॥ वचन जोग सवि परिहरी ए, रमीए आतमरामतो ॥ ३ ॥ सास उसासादिक कह्या ए, जे सोले आगार तो ॥ तेह विना सवी परिहरो ए, देह तणा व्यापार तो॥४॥आवश्यक ए पांचमुं ए, पंचमी गति दातार तो ॥ मन शुद्धे आराधीएं ए,लहीएं भवनो पार तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ॥

व्हालम वेहेला रे आवजो, ए देशी.

सुगुण पच्चखाण आराधज्यो, एह छे सुगतिनुं हेत रे ॥ आहारनी लालच परिहरो, चतुर चित्त तुं चेत रे. सु० ॥ १ ॥ साल काढ्युं व्रण रुझव्युं, गइ वेदना दूर रे ॥ पछी भला पथ्य भोजन थकी, वधे देह जिम नूर रे. सु० ॥ २ ॥ तिम पडिक्कमण काउसग्गथी, गयो दोष सवि डुष्ट रे ॥ पछी पच्चखाण गुण धारणे, होये धर्म तनु पुष्ट रे. सु० ॥ ३ ॥ एहथी कर्म कादव टले, एह छे संवर रुप रे ॥ अविरति कुपथ्यी उधरे, तप अकलंक सरुप रे. सु० ॥ ४ ॥ पूरव जनम तप आचर्यो, विशल्या थइ नार रे ॥ जेहना नवणना नीरथी, शमे सकल विकार रे. सु० ॥ ५ ॥ रावणे शक्ति अमे हणयो, पड्यो लखमण सेज रे ॥ हाथ अडतां सचेतन थयो, विशल्या तप तेज रे. सु० ॥ ६ ॥ छठुं आवश्यक कह्युं, एहवुं ते पच्चखाण रे ॥ छ ए आवश्यक जे कह्यां, नमुं ते जग भाण रे. सु० ॥ ७ ॥

कलश.

तप गच्छ नायक मुगति दायक, श्री विजय देव सूरीश्वरो ॥ तस पद दीपक मोह जीपक, श्री विजय प्रज्ञ सूरी गणधरो ॥ १ ॥ श्री कीर्ति विजय उवझाय सेवक, विनय विजय वाचक कहे ॥ ब आवश्यक जे आराधे, तेह शिव संपद लहे० ॥ २ ॥ इति श्री षमाव स्यक स्तवन संपूर्ण.

॥ मुनिराज गुण स्तवन ॥

धन ते मुनिवरारे, जे चाले समन्नावे, ए देशी.

सम्यक् दृष्टीने संतोषी, पंच महाव्रत पाले ॥ निज स्वरुपथी तृप्ती शांति, अष्ट कर्मने टाले ॥ धन ते मुनिवरारे, प्रज्ञु ज्ञान गुण नंमार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ पुन्य पापनी वृत्ति मुकी, सुरति सिद्धज सुखमां ॥ सात प्रकृति क्षय उपसम करी, अरति नहीं कोइ दुःखमां ॥ धन्य० ॥ २ ॥ प्रेमे आनंद निजगुण माने, परिसह सहनमें सुरा ॥ जिन आणानी युक्ति जाणे, ध

र्म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण सर्वे, मुक्या छे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय छोडी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन श्री वीतरागी, सत्य स्वरुपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ दोष लगाडे नहीं संजममें, आतम अनुभव लेश्या ॥ चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जड चेतननी जुजवी रीती, जाणे अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न दृष्टी मांडे, विषय वा णयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने त्रोडीने, समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति छो डी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ए ॥ आर्त रौद्र कुध्यानकुं त्यागी, वर्त्ते छे समभावे, धर्म शुक्लके मा रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ रंग रागने कहानी कथनी, नवी कहे संजुता ॥ उपदेशी वैराग अनुभव, अचिंत है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

उष्ण शीत पावोषनी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥ बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान क्षमा गुण धारा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंछा, कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाभ अभयना दाता, ए मुनि लाभे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मोक्षनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वेष दोष योद्धा जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ले ते साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक याचुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजीना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नथु तेनी वाणी सुणतां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री भगवंते शा

र्म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण सर्वे, मुक्या छे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय छोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन श्री वीतरागी, सत्य स्वरुपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुभव लेश्या ॥ चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जम चेतननी जुजवी रीती, जाणे अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न इष्टी मांमे, विषय वा एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने छोमीने, समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति छो मी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ए ॥ आर्त रौद्र कुध्यानकुं त्यागी, वर्त्ते छे समभावे, धर्म शुकलके मा रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ रंग रागने कहानी कथनी, नवी कहे संजुता ॥ उपदेशी वैराग अनुभव, अचिंत हे अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

नुष्णा शीत पावोषनी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥ बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान क्षमा गुण धारा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक दुगंछा, कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज्ञ अज्ञयना दाता, ए मुनि लाज्ञे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मोक्षनी वरती मुक्की, मुक्की करमनी कहाणी ॥ राग द्वेष दोय योद्धा जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख छे ते साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक याचुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजीना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नज्ञु तेनी वाणी सुणतां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री ज्ञगवंते शा

में धुरंधर वीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण सवें, मुक्या छे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय छोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन श्री वीतरागी, सत्य स्वरुपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुजव लेश्या ॥ चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जम चेतननी जुजवी रीती, जाणे अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न दृष्टी मांमे, विषय वा सयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने शोमीने, समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति शो मी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग नी योग कलाने, जाणे परखे पोते ॥ निमित्त कारण ने उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त रौद्र कुध्यानकुं त्यागी, वर्ते छे समजावे, धर्म शुक्लके मा रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ में रागोने कलानी कथनी, नहीं करे मंजुता ॥ तपवंती वैराग अनुजव, अचित्त है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

उष्ण शीत पावोषनी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥ बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान क्षमा गुण धारा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक दुगंछा, कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाभ अज्ञयना दाता, ए मुनि लाभे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मोक्षनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वेष दोय योद्धा जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख छे ते साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक याचुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजीना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नभु तेनी वाणी सुणतां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री भगवंते शा

से करी ॥ १ ॥ पूर्व सन्मुख स्नान आदरो, पश्चिम
दिशि रही दातण करो ॥ उत्तर वस्त्र पहेरो सही, पू
जो उत्तर पूरव मुख रही ॥ २ ॥ घरमां पेसतां डाबे
भाग, देरासर करवानो लाग॥ दोढ हाथ भूमिथी करी
जोए, ऊंचुं नीचुं सहुथी वरजीए ॥ ३ ॥ पूरव उत्तर
मुख पूजा जाण, बीजी दिशे हुवे करतां हाण ॥ न
वांग पूजानो विधि एह, विधि करतां होय निर्मल दे
ह ॥ ४ ॥ पग जंघा ने हाथ बे तणी, खभा मस्तक
नी पांचमी भणी ॥ भाल कंठ हृदय ए जाण, उदर
नवमुं तिलक वखाण ॥ ५ ॥ चंदन विण पूजा नवि
होय, वासपूजा प्रभातें जोय ॥ कुंकुम पूजा मध्या
ने करो, सांजे धूप दीप आदरो ॥ ६ ॥ धूप उखेवो डा
बे पास, जमणे पासे दीप प्रकाश ॥ सांमुं लावण मू
को सही, चैत्यवंदन करो दक्षिण रही ॥ ७ ॥ हाथ
थकी जे भूमियें पडे, पग लागे मलीन आभडे ॥
मस्तकथी ऊंचुं परिहरो, नाभिथकी नीचुं मत धरो
॥ ८ ॥ ढीलें खाधुं नाख्यिं फूल, एम फलादिक जो
इए अमूल ॥ फूल पांखडी नवि छेदीए, कलिका जो

ये नवि ज्नेदीॐं ॥ ए ॥ गंध धूप अखे आंणीयें, फूल दीप वलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठमुं सुंदर सही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥ १० ॥ शांति कारण उज्वल वस्त्र, लान्न कारणें पीत पवीत्र ॥ वयरी जीपवा पहेरो श्याम, रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥ पंच वरण वस्त्रे होय सिद्ध, खंमित सांध्यां वस्त्र निषिद्ध ॥पद्मासनने मौने रही, मुख कोश पूजाविधि कही ॥ १२ ॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पामीजे सुख संपदा ॥ आनंद विमल पंमितनो दास, प्रीति विजय प्रणमे उल्लास ॥ १३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं न्नावपूजानुं स्तवन ॥

पूजाविधि मांहे न्नावीएजी, अंतरंग जे न्नाव ॥ ते सवि तुज आगल कहुंजी,साहेब सरल स्वन्नाव॥१॥ सुहंकर, अवधारो प्रन्नु पास ॥ ए टेक ॥ दातण करतां न्नावीॐंजी, प्रन्नु गुण जल मुख शुद्ध ॥ जल उतारी प्रमत्तताजी, हो मुज निरमल बुद्ध॥ सुहं० ॥२॥ जतनाए स्नान करीजीएजी, काढो मयल मिथ्यात ॥

अंगुछो अंग शोषवीजी, जाणुं हुं अवदात ॥ सुहं० ॥ ३ ॥ खीरोदकना धोतीआंजी, चिंतवो नित संतोष ॥ अष्टकरम संवर भलोजी आठ पडो मुखकोश ॥ सुहं० ॥ ४ ॥ चरचीयो एकाग्रताजी, केसर भक्ति कचोल ॥ श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंग रोल ॥ सुहं० ॥ ५ ॥ भाल वहुं आणा भलीजी, तिलक तणो ते भाव ॥ जे आभरण उतारीएजी, ते उतारो परभाव ॥ सुहं० ॥ ६ ॥ जे निरमाल्य उतारीएजी, ते तो चित्त उपाध ॥ पखाल करतां चिंतवोजी, निरमल चित्त समाधि ॥ सुहं० ॥ ७ ॥ अंगलूहणां बे धरमनांजी, आतम स्वभाव जे अंग ॥ जे आभरण पहेरावीएजी, ते स्वभाव निज चंग ॥ सुहं० ॥ ८ ॥ जे नववाड विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग ॥ पंचाचार विशुद्धताजी, तेह फुल पंच रंग ॥ सुहं० ॥ ९ ॥ दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञानदीप सुप्रकाश ॥ नयादि पूरपूरीतजी, तत्त्व पात्र सुविशाल ॥ सुहं० ॥ १० ॥ धूप रूप अतिकार्यताजी, कृष्णागर शुभ योग ॥ शामना मद मदमहेजी, ते तो अनुभव योग ॥ सुहं० ॥ ११ ॥

मद्य स्थानक अम ठांरूवांजी, तेह अष्ट मंगलीक ॥ जे नैवेद्य निवेदीएजी, ते मन निश्चल ठीक ॥ सुहं० ॥ १२ ॥ लवण उतारी भावीअेंजी, कृत्रिम धर्मनो रे त्याग ॥ मंगल दीवो अति भलोजी, शुद्ध धरम परभा ग ॥ सुहं० ॥ १३ ॥ गीत नृत्य वादीत्रनोजी, नाद अ नहद सार ॥ समरति रमणी जे करीजी, ते साचो थेइकार ॥ सुहं० ॥ १४ ॥ भाव पूजा एम भावीएजी, सत्य बजावोरे घंट ॥ त्रिभुवन मांहे ते विस्तरेजी, टाले करमनी फाट ॥ सुहं० ॥ १५ ॥ इणीपरें भावना भावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ॥ जनम सफल जग तेहनोजी, तेह पुरुष धन्य धन्य ॥ सुहं० ॥ १६ ॥ प रम पुरुष प्रभु सांभलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर करो भव आमलोजी, वाचक जश कहे देव ॥ सु हं० ॥ १७ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

बापलडांरे पातीकडां, तमे शुं करशो हवे रही ने रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणे नीरख्यो, दूर जाउ तुमे वहीने रे ॥ १ ॥ बापलडां रे० ॥ काल अनादि लगे तु

म साथे, प्रीत करी निर वहीने रे ॥ आजथकी प्रभु चरणे रहीशुं, एम शीखवीयुं मनने रे ॥ २ ॥ वापलडां रे० ॥ दुषमकाले एणे भरते, मुक्ति नहीं संघेणने रे ॥ पण तुज भक्ति मुक्तिने खेंचे, चमक उपल जेम लोहने रे ॥ ३ ॥ वापलडां रे० ॥ वाह्य अभ्यंतर शत्रु केरो, भय न होवे मुज मनने रे ॥ सेवक सुखीयो सुजस विलासी, ते महिमा प्रभु तुजने रे ॥ वापलडां रे० ॥ ४ ॥ शुद्ध सोहागण चुरण आप्युं, मिथ्या पंक सोधनने रे ॥ आतमभाव थयो जब निरमल, आणंदमय तुज भजने रे ॥ वापलडां रे० ॥ ५ ॥ नाम मंत्र तुमारो साध्यो, ते थयो जग मोहनने रे ॥ तुज मुख मुद्रा देखी हरखुं, जीम चातक जलधरने रे ॥ वापलडां रे० ॥ ६ ॥ अखय निधान तुम समकित पामी, कोण वंछे चल धनने रे ॥ शांत सुधारस कनक कचोले, सींचो सेवक तनने रे ॥ वापलडां रे० ॥ ७ ॥ तुम विण अवर देव नहीं जाचुं, फरि फरि आ मनने रे ॥ ज्ञान विमल कहे भवजल तारो, सेवक वांह्य ग्रहीने रे ॥ वापलडां रे० ॥ ८ ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीनुं स्तवन ॥

माता मरुदेवाना नंद, देखी तारी मुरति मारुं मन लोभाणुंजी ॥ मारुं दिल लोभाणुंजी ॥ देखी० ॥ करुणाना घर करुणा सागर, काया कंचनवान ॥ धोरी लंछन पाउले कांइ, धनुष पांचसे मान ॥माता०॥ ॥ १ ॥ त्रिगडे बेशी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार ॥ योजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जल धार ॥ माता० ॥ २ ॥ उर्वशी रुडी अपछराने, रामा छे मन रंग ॥ पाये नेउर रणझणे कांइ, करती नाटारंग ॥ माता० ॥ ३ ॥ तुंही ब्रह्मा तुंही विधाता, तुं जग तारण हार ॥ तुज सरखो नहीं देव जगतमां, अरुव डीआं आधार ॥ माता० ॥ ४ ॥ तुंहीज भ्राता तुंही ज त्राता, तुंही जगतनो देव॥ सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव ॥ माता० ॥ ५ ॥ श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद ॥ कीर्ति करे माणेक मुनी ताहरी, टालो भव भय फंद ॥ माता० ॥ ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

चालो चालो विमलगिरि जइए रे भवजल तर वाने ॥ तुमे जयणाए धरज्यो पायरे पार उतरवाने ॥ ए टेक ॥ बाल कालनी चेष्टा टाली, हांरे हुंतो धरम योवन हवे पायो रे ॥ भव जल० ॥ भूल अनादिनी दूर निवारी हांरे हुंतो अनुभवमां लय लायो रे॥ पार० ॥ चालो० ॥ १ ॥ भव तरणा सवी दूर निवारी, हांरे मारी जिन चरणे लह्य लागी रे ॥ भव० ॥ संवर भावमां दिल हवे ठरीछं, हांरे मारा भवनी भावट भागी रे ॥ पार० ॥ चालो० ॥ २ ॥ सचित सरवनो त्याग करीने, हांरे नित्य एकासणां तपकारी रे ॥ भव० ॥ पडिक्कमणां दोय टंकनां करशुं, हांरे भली अमृत क्रिया दिल धारी रे ॥ पार० ॥ चालो० ॥ ३ ॥ व्रत उचरशुं गुरुनी पासे, हांरे हुंतो यथाशक्ति अनुसारे रे ॥ भव० ॥ गुरु साथे चडशुं गिरि पाजे, हांरे जे भवोदधि बुडतां तारे रे ॥ पार० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ भवतारक ए तीरथ फरसी, हांरे हुंतो सूरज कुंडमां नाह्यो रे ॥ भव० ॥ अष्ट प्रकारी ऋषभ जिणं

दनी, हां रे हुंतो पूजा करीश लह्य लावी रे ॥पार०॥ ॥ चालो० ॥ ५ ॥ तीरथ पतिने तीरथ सेवा, एतो सा चा मोक्षना मेवा रे ॥ भव० ॥ सात छठ दोय अठम करीने, मने स्वामीवछ्छलनी हेवा रे ॥ पार० ॥ चा लो० ॥ ६ ॥ प्रभुपदपद्म रायण तले पुजी, हुंतो पा मीश हरख अपार रे ॥ भव० ॥ रुपविजय प्रभु ध्या न पसाए, एतो पामे सुख श्रीकार रे ।पार०।चालो०।७।

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

आंखभियेरे में आज शेत्रुंजो दीठो रे, सवा ला ख टकानो दहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ सफल थयो रे मारा मननो उमाह्यो, वहाला मारा भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तीर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुंजय० ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ मानव भवनो लाहो लीजे, वहाला मारा दे हडी पावन कीजे रे ॥ सोना रुपाने फुलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखाली ने केसर घोली वहाला० ॥ श्री आदिश्वर पूज्या रे ॥

श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धूज्या रे ॥ शत्रुं० ॥३॥ श्रीमुख सौधर्मा सुरपति आगे ॥ वहाला० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहीं कोई शत्रुंजय तोले रे ॥ शत्रुं० ॥४॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वहाला० ॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे, कायानो तो काद्धर काढी, सूरज कुंभमां नाह्ये रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध खेत्रे॥ वहाला०॥साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभीराया सुत नयणे जोतां॥ वहाला० ॥ मेह अमीरस वुठा रे॥ उदयरत्न कहे आज मारे पोतें, श्री आदेश्वर तुठ्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥

॥ क्रीडा करी घेर आवीउ ॥ ए देशी ॥

समेत शिखर जिनवंदिये, महोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे भवतणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥ स० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि

परिवार रे ॥ पद्म प्रभु शिव सुख वर्या, त्रणशें अरु अणगार रे ॥ स० ॥ २ ॥ पांचसें मुनि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभु श्रेयांस लगे, साथे सह स मुणींद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराज शुं, विमल जिनेसर सिद्धा रे ॥ सात सहसशुं चउदसा, निज कारज वर कीधां रे ॥ स० ॥४ ॥ एकसो आठ शुं धर्मजी, नवसेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथुअर एक स हस शुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥५ ॥ मल्लि नाथ शत पांचसुं, मुनि नमी एक हजार रे ॥ तेत्रीस मुनियुत पासजी, वरिया शीव सुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणसें, उपर उगणपंचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणें गीरि, सिद्धा अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीने, पास शामलनुं चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति.

॥ अथ समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

जइ पूजो लाल, समेतशिखर गिरि उपर पास जी शामला ॥ जिन भक्ति लाल, करतां जिनपद पा

वे टले भव आमला ॥ ए आंकणी ॥ ठरी पाली दर्शन करिये, भवभव संचित पातक हरियें, नीज आतम पुण्य रसें भरिये ॥ जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य सेवा कीजे, जिम शिव सुखमां करमां लीजे, चिदानंद सुधारस नित्य पीजे ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवरमणी वरवा आव्या, अजितादिक वीशे जिनराया, बहु मुनिवर युत शिव वधु पाया ॥ जइ० ॥ ३ ॥ तेणे ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम करी साणो, ए फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ जइ० ॥ ४ ॥ तुमे धन कन कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, किम तरशो विण ए गिरिराया ॥ जइ० ॥ ५ ॥ इम शुभ मति वचन सुणी ताजां, ए भजो जगगुरु आतम राजा, गिरि फरसे वरी मन शुचि माजा ॥ जइ० ॥ ॥ ६ ॥ संवत्तसर रिषि गज चंद समे, फागण सुदी त्रीज बुधवार गमे, गिरि दर्शन करतां चित्त रमे॥जइ०॥ ॥ ७ ॥ प्रभुपद पद्म तणी सेवा, करतां नित्य लहियें शीव मेवा, कहे रूपविजय मुज ते देवा ॥ जइ० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथश्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

समेतशिखर गिरि भेटीये रे, मेटवा भवना पास ॥ आतम सुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ १ ॥ भविया सेवो तीरथ एह ॥ समेतशिखर गुण गेह रे ॥ भ० ॥ से० ॥ ए आंकणी ॥ समेतशिखर कल्पे कह्यो रे, वीश टूंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शीव वर्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ भविया० ॥ २ ॥ सेवो० ॥ सिद्ध क्षेत्र मांहे वर्या रे, भांखे नय व्यवहार, निश्चय निज स्वरूपमां रे, दोय नय प्रभुजीना सार रे ॥ भविया० ॥३॥ सेवो०॥ आगम वचन विचारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्त्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्यादवाद रे ॥ भविया० ॥ ४ ॥ से० ॥ जयरथ राय तणी परे रे, जात्रा करो मन रंग ॥ भव दुःखने देइ अंजली रे, थाये सिद्धि वधुनो संग रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ से० ॥ समकित युत जात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भव हेतु किरिया त्यागथी रे, आतम गुण प्रगटाय रे॥भ०॥ ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समये समकित थयुं रे, तेह सम

ये होये नाण ॥ ज्ञान विमल गुरु भाखिया रे, आव श्यक भाष्यनी वाण रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सेवो० ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

कोइ लो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ आबु अचल रलीआमणो रे लो, दिलवाडे मनोहार ॥ सुख कारी रे ॥ वादलीए जे स्वर्गशु रे लो, देवल दीपे चा र बलिहारी रे ॥ भाव धरीने भेटीए रे लो॥ ए आंक णी ॥ बार पादशाह वश कीया रे लो, विमल मंत्री सर सार ॥ सु० ॥ तेणे प्रासाद निपाइओ रे लो, रिख भजी जगदाधार रे ॥ व० ॥ १ ॥ भा० ॥ तेह चैत्यमां जिनवरु रे लो, आठसेंने बोंतेर ॥ सुख० ॥ जे दीठे प्र भु सांभरे रे लो, मोह कर्यो जेणे जेर ॥ व० ॥ २ ॥ ॥ भा० ॥ द्रव्य भाववी तिम वरी रे लो, दीधी देव ल काज ॥ सु० ॥ चैत्य तीहां मंडावीयुं रे लो, लेवा शीवपुर राज ॥ व० ॥ ४ ॥ आ० ॥ पंदरसें कारीग रो रे लो, दीवी धरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दन कार क वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥५॥आ०॥

कोरणी घोरणी तीहां करी रे लो, दीठे बने ते वात ॥ सु० ॥ पण नवि जाए मुखे कही रे लो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ ब० ॥ ६ ॥ आ० ॥ त्रणे वरसे नीपनो रे लो, ते प्रासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ बार क्रोड त्रेपन लक्षने रे लो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ ब० ॥ ७ ॥ ॥ आ० ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा रे लो, देखतां हरख ते थाय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीआ रे लो, धन धन एनी माय ॥ ब० ॥ ८ ॥ आ० ॥ मूल नायक नेमीसरु रे लो, जनम थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज सत्ता रमणी थया रे लो, गुण अनंत आधार ॥ब०॥ ॥ ए ॥ आ० ॥ चारसेंने अडसठ भला रे लो, जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज भले में भेटीआ रे लो, पाप गया पायाल ॥ ब० ॥ १० ॥ आ० ॥ रिखभ धातुमय देह रे लो, एकसो पीसतालीश बिंब॥सु०॥ चोमुख चैत्य जुहारीए रे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ ब० ॥ ११ ॥ आ० ॥ बाणुं काउस्सग्गिआ तेहमां रे लो, उगणांशी जिनराय ॥ सु० ॥ अचल गढे बहु जिनवरा रे लो, वंदु तेना पाय ॥ ब० ॥ १२ ॥ आ० ॥

धातुमय परमेश्वरा रे लो, अद्भूत जास स्वरूप॥सु०॥ चोमुख जिन वंदता रे लो, थाए निजगुण भूप ॥व०॥ ॥ १३ ॥ आ० ॥ अढारसेंने अढारमां रे लो, चैत्र वद त्रीज दीन ॥ सु० ॥ पालनपुरना संघशु रे लो, प्रणमी थयो धन धन ॥ व० ॥ १४ ॥ आ० ॥ तेम शांति जग दीसरु रे लो, जात्रा करी अद्भुत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांभरे रे लो, सेवा करे पुर हुंत ॥ व० ॥ १५ ॥ ॥ आ० ॥ एम जाणी आबु तणी रे लो, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्मविजय कहे तेह ॥ व० ॥ १६ ॥ आ० ॥ इति.

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

चालो चालोने गिरिवर रमवा जइए. ए देशी.

आवो आवोने राज, श्री अर्बुदगिरि जइये ॥ श्री जिनवरनी भक्ति करीने, आतम निर्मल थइए ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसइना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइए ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठे टोडर ठवीये ॥ आ० ॥ १ ॥ जमणे पासे लुण वसइ, श्री नेमीसर नमीये ॥ राजिमती वर

नयणे निरखी, दुख दोहग सवि गमीये॥ आ० ॥२॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरियें ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीयें॥ आ० ॥ ३ ॥ मंमप मंमप विविध कोरणी, नीरखी हीयमे ठरीए ॥ श्री जिनवरनां बिंब निहाली, नर नवसफलो करीए ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी, अशुन्न करम सवि हरीए ॥ पास शांति निरखी जब नयणे, मन मोह्युं मुंगरीए ॥आ० ॥ ५ ॥ पाजे चढतां नजम वाधे, जेम घोमे पाखरीये ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पमल सवि हरिये ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक ध्याने प्रनुने ध्यातां, मनमां ही नवी मरिये ॥ ज्ञान विमल कहे प्रनु सुपसाए, सकल संघ सुख करीये ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुगिरिनुं स्तवन ॥

आदि जिणेसर पूजता दुःख मेटो रे, आबुगढ दृढ चित्त; नविक जइ नेटो रे, देलवामे देहरां नमी ॥ दु० ॥ चार परिमित नित्य ॥ न०॥ वीश गज

वल पद्मावती ॥ ऊ० ॥ चक्केसरी इण्य आण॥ त्न०॥ शंख दीये अंबीसुरी ॥ ऊ०॥ पंचकोश वेह वाण ॥त्न० ॥ २ ॥ वार पादशाह जीतीने ॥ ऊ० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥त्न०॥ इण्य जणी धरती कीयो ॥ ऊ० ॥ ऋषन्न देव प्रासाद ॥ त्न० ॥३॥ विहुत्तेर अधिकां आठ सें ॥ ऊ० ॥ विंव प्रमाण कहाय ॥त्न०॥ पन्नरशे कारीगरे ॥ ऊ० ॥ वरस त्रीके ते थाय ॥त्न०॥ इण्य अनुपम खरचीयो ॥ ऊ० ॥ लाख त्रेपन वार कोमी ॥त्न० ॥ संवत दश अठाशीए ॥ ऊ० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होमी ॥ त्न० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखमा ॥ ऊ०॥ लाख अढार प्रमाण ॥ त्न० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ ऊ० ॥ ए दोय कांता जाण॥ त्न० ॥ ६ ॥ मूलनायक नेमीसरु ॥ ऊ० ॥ चारसें अमसठ विंव ॥ त्न० ॥ ऋषन्न धातुमय देह रे ॥ऊ०॥ एकसो पीसतालीस विंव ॥ त्न० ॥७॥ चउमुख चैत्य जुहारीए ॥ऊ०॥ काउस्सगीया गुणवंत ॥ त्न० ॥ वाणुमित्त तेहमां कहुं ॥ ऊ० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ त्न० ॥ ८ ॥ अचलगढे प्रनुजी घणा ॥ ऊ० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ त्न० ॥ कोमी

तपे फल जे लहे॥ छु०॥ ते प्रनु नक्ति विचार॥ न०॥ ए॥ सालंबन निरालंबने ॥ छु० ॥ प्रनु ध्याने नवपार ॥ मंगल लीला पामीये ॥ छु०॥ वीर विजय जयकार ॥ न० ॥ १० ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

माहारा वालाजी, ए देशी.

तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंत रे, प्रीतमजी आठ नवोनी प्रीतनी त्रोमी तंत ॥ मारा प्रीतमजी ॥ नवमे नव पण नेह न आणो मुऊ रे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुज्ज ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तीर्यंचनो एम रे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती प्रनुजी केम ॥ मा० ॥ खट् जीवना रखवालमां शि रदार रे ॥ प्री०॥ तो केम विलवती स्वामी मूको नारी ॥ मारा० ॥ २ ॥ शिव वधु केरुं एहवुं केहवुं रुप रे ॥ प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन नूप ॥ मा०॥ जिनजी लीए सहसा वनमां व्रत नार रे ॥ प्री० ॥ घाती करम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ ३ ॥ केवल

ऋद्धि अनंती प्रगट कीध रे ॥ मी०॥ जाणी राजुल ए म प्रतिज्ञा लीध ॥ मा० ॥ जे प्रभुजीये कीधुं करवुं तेह रे ॥ मी० ॥ एम कही व्रतधर थइ प्रभु पासे जेह ॥ मारा० ॥ ४ ॥ प्रभु पेहेलां निज शोक्यनुं जोवा रूप रे ॥ मी०॥केवल ज्ञान लही थइ सिद्ध सरुप ॥ मारा० ॥ शीववधु वरीया जिनवर उत्तम नेमरे ॥मी०॥ पद्म कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थनुं स्तवन ॥

सहसावन जइ वसीए, चालोने सखी सहसा वन जइ वसीए ॥ घरनो धंधो कबुअ न पूरो, जो करीए अहो निसिए ॥ पीयरमां सुख घणीय न दीठुं, ज्ञय कारण चल दीशीये ॥ चालो० ॥ १ ॥ नाक वि हुणा सयल कुटुंबी, लज्जा किम्मपि न पसिए ॥ चा० ॥ ज्ञेलां जमीए ने नजर नहीसे, रहेवुं घोर तमसीए चा० ॥ २ ॥ पीयर पाछल छल करी मेल्युं, सासरीए सुख वसीए ॥ चा० ॥ सातुमी ते घर घर ज्ञटके, लोकने चटके मसीए ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सातु आवे हांसु, मुंशिये मुख लेइ मशीए ॥ चा० ॥ कंत

अमारो बालो ज्ञोलो, जाणे न असि मसि कसिए ॥ चा० ॥ ४ ॥ जूगबोली कलहण शीला, घरघर शूनी ज्युं ज्ञसीए ॥ चा० ॥ ए डुःख देखी हरुं मूके, डुरजनथी दूर खसीए ॥ चा० ॥ ५ ॥ रैवतगिरिनुं ध्यान धरीडं, काल गयो हसमसीए ॥ चा०॥ श्री गिरनारे त्रण कल्याणक, नेमि नमन ज्ञल्लसिए ॥ चा० ॥ ६ ॥ शिववरशे चोवीश जिनेश्वर, अनागत चउवीशीए ॥ चा० ॥ कैलास उजयंत रैवत कहीए, शरण गिरिने फरसीए ॥ चा० ॥ ७ ॥ गिरनार नंदज्ञड ए नामे, आरे आरे ठ ज्ञविसिए ॥ चा० ॥ देखी महितल महिमा मोटो, प्रज्ञु गुण ज्ञान वरसिये ॥ चा० ८ ॥ अनुज्ञव रंग वधे तेम पूजो, केसर घशी उरशीए ॥ चा०॥ज्ञावस्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुज्ञवीर विलसीए ॥ चा० ॥ ए ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थ स्तवन ॥

देखी कामनी दोयके काम व्यापिउरे के, कामे व्यापीउ ॥ ए देशी ॥ नेम निरंजन देवके सेव सदा

करुं रे के ॥ से० ॥ अहनीश तारुं ध्यान के, दील मांहे धरुं रे के ॥ दी० ॥ शंख लंछन गुणखाण के, अंजन वान छे रे के ॥ अं० ॥ राजेमतिना कंथ के, परण्या विणुअछे रे के ॥ प० ॥ १ ॥ तुंहिंज जीवन प्राण के, आतमराम छे रे के ॥ आ० ॥ माहरे परमाधार के, ताहरुं नाम छे रे के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन, नितु नितु वंदना रे के ॥ नि० ॥ कीजीये करु णावंत के, कर्म निकंदना रे के ॥ क० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज, रही गढ उपरे रे के ॥ र० ॥ पहेरी शी ल सन्नाह, उदास एसी धरो रे के ॥ उ० ॥ सवि जि नवरमां स्वामि, तुम्हे अधिकुं करचुं रे के ॥ तु० ॥ कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उचर्यां रे के ॥ म० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह, तेह उवेखीने रे के ॥ ते० करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीने रे के ॥ प० ॥ पूरण पाली प्रीत, वली निज नारने रे के ॥व०॥आपी संजम भार, पहोचाम्री पारने रे के ॥ प० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा रे के ॥ क०॥ निरवाहे धरि नेह के, ते विरला सुण्या रे के ॥ ते०॥

राजेमतिनो कंत, वखाणे कविजना रे के ॥ व० ॥ तुम्हे तो दीधो छेह के, तेह तो धीर मना रे के ॥ ते० ॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ, करो मुजने सदा रे के ॥ क० ॥ दिय मुज शिरपर हाथ, होवे जेम संपदा रे के ॥हो०॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवाने मन नहीं रे के ॥ दी० ॥ नाणे मन असवार, घोमो दोमे सही रे के ॥ घो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निबलने नवि कही रे के ॥ नि० पण लाग्या जे केमे, किहां जाए नही रे के ॥ कि० ॥ जे सज्जन शुं होय ते, छीम न छंजिये रे के ॥ छी० ॥ पोतानो जे होय, सदा दिल रंजीए रे के ॥ र० ॥ ७ ॥ तुमची सु नजर होये तो, कर्मने मंजीए रे के ॥ क० ॥ तो डुश्मन होय दूरे, कोणे नवि गंजीए रे के ॥ को० ॥ प्राणाधार पवित्र के, दरशन दीजीए रे के ॥द०॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीने कीजीये रे के ॥ म० ॥ ८ ॥ इति.

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

कुंवर गंभारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥

चउ अठ दश दोय वंदिएजी, वर्त्तमान जगदीश

रे; अष्टापद गिरि उपरेजी, नमतां वाधे जगीशरे ॥ च० ॥ १ ॥ जरत जरतपति जिन मुखेजी, उच्चरीयां व्रत वार रे; दर्शन शुद्धिने कारणेजी, चोवीश प्रजुनो विहार रे ॥च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्योजी, योजन एक विस्तार रे; निज निजमान प्रमाण जरा वीयाजी, बिंब स्वपर उपगाररे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणेजी, पश्चिमे पउमाइ आठ रे; अनंत आदे दश उत्तरेजी, पूरवे ऋषज वीर पाठरे ॥ च० ॥ ४ ॥ ऋषज अजित पूरवे रह्याजी, ए पण आगम पाठ रे; आतम शक्ते करे जातराजी, ते जव मुक्ति वरे इणी आठ रे ॥ च० ॥५॥ देखो अचंजो श्री सिद्ध चलेजी, हुआ असंख्या उद्धार रे; आज दिने पणइणे गिरेजी, कगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणि लगेजी, देव महिमा गुणदाख रे; सिंह निषद्यादिक थिर पणेजी, वसुदेव हिंमनी साख रे ॥च० ॥ ७ ॥ केवली जिन मुखमें सुणयोजी, इण विधे पाठ पठाय रे; श्री शुजवीर वचन रसेजी, गायो ऋषज शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

अष्टापद अरिहंतजी मारा वालाजी रे, आदी
श्वर अवधार; नमीये नेह शुं ॥ म्हा० ॥ दश हजा
र मुणिंद शुं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधु सार ॥ न
मीये० ॥ भरत भूप भावे कर्यो ॥ मा० ॥ चउमुख
चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जीहां ॥मा०॥
थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण
प्रमाणे विराजता ॥ मा० लंछनने अलंकार ॥ न० ॥
समनासाये सोभता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्र
प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तीहां ॥मा०॥
नाटक करतां विचाल ॥ न० ॥ त्रुटी तांत तव रावणे
॥ मा० ॥ निजकर वीणा सत्त काल ॥ न० ॥४॥ क
री बजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवी त्रोड्युं ते
तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अद्भूत भा
वशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥
मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंता
मणी तीहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥
न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मा० ॥ तेणे

ज्ञव पामे जे सिद्ध ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वत ऋद्धि ॥ न० ॥ ७ ॥ पद्म वि जय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोमि कल्या ण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन.

अष्टापद गिरि यात्रा कारणकुं, रावण प्रति ह रि आया; पुष्पक नामे विमाने वेसी, मंदोदरी सुहा या ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल कीजे; नयणे निरखी हो लाल, नरज्ञव सफलो कीजे; हैयमे हरखी लाल, समता संग करीजे; ए आंकणी॥ चउमुख चउगति हरण प्रासादे, चउवीसे जिन बेग; चउदिशि सिंहासन समनासा, पूरव दिशि दोय जि ण ॥ श्री० ॥ २ ॥ संज्ञव आदे दक्षिण चारे पश्चिमे आठ सुपासा; धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जि न चउवीसा ॥ श्री० ॥ बेठा सिंह तणे आकारे, जि णहर ज्ञरते कीधां; रयण बिंब मूरति थापीने, जग जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी

नाटक, रावण तांत बजावे; मादल वीणा ताल तंबूरो, पग रव ठम ठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्ति भावे एम नाटक करतां, त्रुटी तंती विचाले; सांधी आपनसा निज करनी, लघु कलाशुं तलकाले ॥ श्री० ॥ ॥ ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी, तो अक्षय पद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने तीर्थंकर पद बांध्युं ॥ श्री० ॥ एणी पेरे भविजन जे जिन आगे, बहुपरे भावना भावे; ज्ञान विमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति.

अथ श्री तीर्थमालानुं स्तवन.

शेत्रुंजे ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या ए; सिध्या साधु अनंत तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥ तीन कल्याणक तीहां थयां, मुगते गयारे; नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापदे एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥ भरते भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ ३ ॥ आबु चोमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे; विमल वसे वस्तुपाल ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे; सीध्या तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी

चंपा निरखीए, हिये हरखीए रे; सिध्या श्री वासुपुज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूरव दिशि पावापुरी, ऋद्धे भरी रे; मुगतें गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर जुहारीए, दुःख वारीए रे; अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ८ ॥ विकानेरज वंदीए, चिर नंदिए रे; अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ ए ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे; फलोधि थंभण पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजावरो, अमीझरो रे; जिरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥ त्रिलोकय दीपक देहरो, जात्रा करो रे; राणपुरो रिसहेस ॥ ती० ॥ १२ ॥ नाकुलाइ जादवो, गोडी स्तवो रे; श्री वरकाणो पास ॥ ती० ॥ १३ ॥ नंदीसरनां देहरां, बावन भलां रे; रुचक कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे; स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ १५ ॥ तीरथ जात्रा फल तीहां, होज्यो मुज इहां रे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति

॥ अथ श्री सीमंधर जिनस्तवन ॥

घन धन खेत्र माहाविदेहजी, धन्य पुंडरिगिणी

गाम ॥ धन्य तिहांनां मानवीजी, नित उठी करे रे प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कइयेंरे हुं महा विदेह आवीश, जयवंता जिनवर कइयें रे हुं तमने वांदीश ॥ १ ॥ चांदलीआ संदेशमोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम॥ भरत क्षेत्रनां मानवीजी, नित उठी करे रे प्रणाम ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तीहां, चोसठ इंद्र नरेश ॥ सोना तणे सींहासन बेठा, चामर छत्र धरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहूंलीजी, मोतीना चोक पूरेश ॥ ररली ररली लीये लूछणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एवे समे में सांभल्युंजी, हवे करवां पच्चरकाण ॥ पोथी ठवणी तीहां कणेजी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वहाला घोमलांजी, वेपारीने वहाला छे दाम ॥ अमने वहाला सीमंधर स्वामी, जिम सीताने श्री राम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहीं मागुं प्रभु राज रीद्धिजी, नहीं मागु गरथ भंमार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार॥ सी० ॥७॥ दैव न दीधी पांखमीजी, केम करी आवुं रे हजुर॥मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर॥सी०॥

॥ ८ ॥ समय सुंदरनी वीनतीजी, मानजो वारंवार ॥ बे कर जोमी वीनवुंजी, वीनतमी अवधार ॥ सी०॥ए॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

श्री युगमंधरने कहेजो, के दधिसुत वीनतमी सुणजो रे ॥ श्री युग० ॥ ए आंकणी॥ काया पामी अति कूमी, पांख नहीं रे आवुं उमी, लब्धि नहीं कोये रूमी रे ॥ श्री०॥ १ ॥ तुम सेवा मांहे सुर कोमी, त इहां आवे एक दोमी, आश फले पातक मोमी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ दुःखम समयमां इणे भरते, अतिशय नाणी नवि वरते, कहीए कहो कोण सांभलते ॥ श्री० ॥ ३ ॥ श्रवणे सुखीआ तुम नामे, नयणां दरिसण नवि पामे, एतो ऊघमाने गामे रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकलमीनी परे दुःख सहेवुं, प्रभु विना कुण आगल कहेवुं रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ महोटा मेल करी आपे, बेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुगल पावे; तो सवि वात बनी आवे रे

श्री० ॥ ७ ॥ गज लंछन गज गति गामी, विचरे वि
प्रविजय स्वामी, नगरी विजया गुण धामी रे ॥ श्री०
॥ ৳ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आ
यो, पंमित जिन विजये गायो रे ॥ श्री० ॥ए॥ इति.

॥ अथ अजरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

महा कोप थयो ते कलीकालमां जो ॥ ए गर
बानी देशीमां ॥ हां रे मारे आजनी घमी ते रलीआ
मणी जो, अजरा पासजी पुन्याली वधामणी जो ॥
मारे० ॥१॥ पूरो पूरो रे सोहागण साथीज जो ॥ मारे
मंदिरे पधास्यो पास हाथीज जो ॥ मारे० ॥ २ ॥ हुं
तो मोतीमाना चोक पूरावती जो ॥ अजरापासजीनी
आंगीज रचावती जो ॥ मारे० ॥ ३ ॥ हुं तो चंपली
ना थंन्न रोपावती जो ॥ अजरापासजीने पधरावती
जो ॥ मारे० ॥ ४ ॥ कहे रूपचंद स्वामीने दीठमो
जो ॥ मारा हृदय कमल लागे मीठमो जो ॥ मारे
आज० ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री पांच कारणनुं स्तवन ॥

दोहा.

सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज; व
स्तु तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥
स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात; सप्त भंग
रचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नयजू
जुआ, आप आपणे ठाम; पूरण वस्तु विचारतां, को
ई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अ
वयव एकेक; दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मिली
अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनये करी, जुगति योग
शुद्ध बोध; धन्य जिन शासन जगजयो, जिहां नहीं
किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली. राग आशावरी ॥

श्री जिनशासन जगजयकारी, स्याद्वाद शुद्ध
रूप रे; नयएकांत मिथ्यात निवारण, अकल अभंग
अनूप रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक का
लतणे वश, सकल जगत गति होय रे; काले उपजे

काले विणसे, अवर न कारण कोय रे. श्री ॥ २ ॥का
ले गर्भ धरे जग वनिता, काले जनमे पूत रे; काले बो
ले काले चाले, काले जाले घर सूत रे. श्री ॥३॥ का
ले दूध थकी दही आये, काले फल परिपाक रे; विविध
पदारथ काल उपाए, काले सहु आये खाक रे.श्री॥४॥
जिन चोवीशे बारे चक्रवर्त्ती, वासुदेव बलदेव रे; काले
कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुरसेव रे. श्री
॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, छए जुइ जुइ
जातरे; षट ऋतु काल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न
दिन रातरे ॥ श्री ॥ ६ ॥ काले बाल विलास मनोहर,
यौवन काला केशरे; वृद्धपण वली पली वपु अति डुर्बल,
शक्ति नहीं लवलेशरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

इति काल विवादः

ढाल बीजी; गिरुआ गुणवीरजी, ए देशी.

तव स्वभाववादी वदेजी, काल किस्युं करे रंक;

वस्तु स्वन्नावे नीपजेजी, विणसे तिमज निशंक; सुविवेक विचारी जुत्र; जुत्र वस्तु स्वन्नाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छते योग जोवनवतीजी, वांजणी न जणे वाल; मूछ नहीं महिला मुखेजी, करतल ऊगे न वाल ॥ सु० ॥ २ ॥ विण स्वन्नाव नवि नीपजेजी, केम पदारथ कोय; अंब न लागे लींवमेजी, वाग वसंते जोय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोर पिछ कुण चीतरेजी, कुण करे संध्या रंग; अंग विविध सवि जीवनांजी, सुंदर नयन कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा वोर बबुलनांजी, कोणे अणीयालां कीध; रूप रंग गुण जुजुआजी, तरु फल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य वसेजी, मणि हर विष ततकाल; पर्वत थिर चल वायरोजी, ऊर्ध्व अग्निनी जाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मछ तुंब जलमां तरेजी, बूमे काग पहाण; पंखि जात गयणे फिरेजी, इणिपरे सयल विन्नाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठथी उपशमेजी, हरमे करे विरेच; सीजे नहीं कण कांगमुंजी, शक्ति स्वन्नाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ दश निशेषे काष्टनांजी, जुयमां थाय पहाण; शंख अस्थिनो

नीपजेजी, क्षेत्रे स्वभाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ए ॥ रवि तातो शशि शीतलोजी, भव्यादिक बहु भाव; गए द्रव्य आप आपणाजी, न तजे कोय स्वभाव ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ इति स्वभाव वादः

ढाल त्रीजी.

कपूर होए अति उजलो रे. ए देशी.

काल किश्युं करे बापमोजी, वस्तु स्वभाव अकज; जो नवि होये भवितव्यताजी, तो किम सीझे कज रे; प्राणी मकरो मन जंजाल, भावी भाव निहाल रे ॥ प्राणी ॥ म० १ ॥ ए आंकणी. जलनिधि तरे जंगल फरेजी, कोडी जतन करे कोय; अणभावी होवे नहींखी, भावि होय ते होय रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमांजी, माले माले केइ लाख; केइ खर्यां केइ खाखटीजी, केइ आंधा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाउल जिम भवितव्यताजी, जिण जिण दिसिउ जाय; परवश मन माणस तणुंजी, तृण जिम पूंठे धाय रे. प्रा० ॥ ४ ॥

नियति वशे विण चिंतव्युंजी, आवी मले तत्काल; वरसासोनुं चिंतव्युंजी, नियति करे विसराल रे. प्रा० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणांजी, नयण हणे गोवाल; दो य सहस्सजस देवताजी, देह तणा रखवाल रे. प्रा० ॥ ६ ॥ को कूहो कोपल करेजी, किम राखी शके प्राण; आहेमी शर ताकीयोजी, ऊपर ज्ञमे शींचाण रे. प्रा० ॥ ७ ॥ आहेमी नागें मस्योजी, वाण लाग्यो शीं चाण; कोकुहो ऊमी गयोजी, जूऊ जूऊ नियत प्रमाण रे. प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हएयां संग्राममांजी, राने प मया जीवंत; मंदिरमांथी मांनवीजी, राख्याही न रहंत रे. प्रा० ॥ ए ॥ इति ज्ञवितव्यतावादः कथितः

॥ ढाल चोथी ॥

राग मारुणी. मनोहर हीरजीरे, ए देशी.

काल स्वज्ञाव नियतमति कूमी, कर्म करे ते थाय; कर्में निरय तिरिय नर सुरगतिजी, जीव ज्ञवंत रे जाय; चेतन चेतिये रे ॥ १ ॥ कर्म समो नहीं कोइ. चेतन० ए आंकणी कर्में राम वस्या वनवासे, सीता

पामे आल; कर्मे लंकापति रावणनुं, राजी थयुं विसराल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर, कर्मे नर गुणवंत; कर्मे रोग शोग दुःख पीडित, जनम जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्मे वरस लगें रिसहेसर, उदक न पामे अन्न; कर्मे वीरने जुग योगमां रे, खीला रोप्या कन्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्मे एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय; एक हय गय रथ चढ्यां चतुरनर, एक आगल उजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यम मानी अंधतणी परे, जग हींडे हाहूतो; करम बली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सूतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ उंदर एके कीधो उद्यम, करंमीउ करकोले; मांहे घणां दिवसनो भूख्यो, नाग रह्यो दुःख मोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूषक तस मुखमां, दिये आपणो देह; माग लही वननाग पधार्यो, कर्म मर्म जूउ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ इति कर्म विवादः कथितः ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

हवे उद्यमवादी भणे ए, ॥ ए च्यारे असम

थंतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो
॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीझे काज तो;
रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥
करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो;
देखल वाघ मुखे पंखीयां ए, पिन पेसंता जाय तो
॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मां हेथी ते
ल तो; उद्यमथी उंची चढे ए, जुओ एकेंद्रिय वेल तो
॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीझे का
ज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज
तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उर्या विना ए, नवि रंधाये अ
न्न तो; आवी न पके कोलीउ ए, मुखमां पखे जतन
तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां क
र्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुओ कर्मनो मर्म तो॥७॥
दृढ प्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्य
मथी षट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥
टींपे टींपे सर भरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि
जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥९॥
उद्यमथी जल बिंदुओ ए, करे पाखाणमां गम तो, उद्य

मथी विद्या जणे ए; उद्यम जोमे दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति उद्यम विवाद: ॥

॥ढाल ७मी. ए छंमी किहां राखी. ए देशी॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अ मिय सरस जीन वाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ता णो रे प्राणी; ते मिथ्या मति जाणो रे प्राणी ॥स०॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोइ काज न सीजे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे बूजे ते रीजे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी कोइ एकने, एहमां दीजे वमाइ; पण सेना मिलि स कल रणांगण, जीते सुजट लमाइ रे प्राणी ॥सम०॥ ॥ ३ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावे, कालक्रमे रे वणा ए; जवितव्यता होय तो निपजे, नहीं तो विघन घ णांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम जो क्तादिक, जाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मलि सक ल पदारथ, उत्पत्ति जुन्न निहारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

र्थतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो ॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीझे काज तो; रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥ करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो; देउल वाघ मुखे पंखीयां ए, पिउ पेसंता जाय तो ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मां हेथी ते ल तो; उद्यमथी ऊंची चढे ए, जुउ एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीझे का ज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उर्या विना ए, नवि रंधाये अ न्न तो; आवी न पडे कोलीउ ए, मुखमां पखे जतन्न तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां क र्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुउ कर्मनो मर्म तो॥७॥ दृढ प्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्य मथी षट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टींपे टींपे सर भरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥९॥ उद्यमथी जल बिंदुउ ए, करे पाखाणमां गम तो, उद्य

मथी विद्या न्नणे ए; उद्यम जोरे दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति उद्यम विवादः ॥

॥ढाल ७मी. ए छंमी किहां राखी. ए देशी॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अमिय सरस जीन वाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ताणो रे प्राणी; ते मिथ्या मति जाणो रे प्राणी ॥स०॥१॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोइ काज न सीझे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे बूझे ते रीझे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी कोइ एकने, एहमां दीजे वमाइ; पण सेना मिलि सकल रणांगण, जीते सुन्नट लमाइ रे प्राणी ॥सम०॥ ३ ॥ तंतु स्वन्नावे पट उपजावे, कालक्रमे रे वणाइ; न्नवितव्यता होय तो निपजे, नहीं तो विघन घणांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम न्नोक्तादिक, न्नाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मलि सकल पदारथ, उत्पत्ति जुउ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

॥ ५ ॥ नियति वशे हलु करमो थइने, निगोद थकी निकलीयो; पुण्ये मनुज भवादिक पामी. सद्गुरुने ज इ मलियो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ६ ॥ भव थितिनो प रिपाक थयो तव, पंडितवीर्य उल्लसीउ; भव्य स्वभा वे शिवगति पामी, शिवपुरे जइने वसीउ रे प्राणी ॥ सम० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जीन इणीपरे विनये, शास न नायक गायो; संघ सकल सुख होये जेहथी, स्या द्वादरस पायो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ८ ॥

कलश.

इय धर्मनायक, मुक्ति दायक, वीर जिनवर संथु णयो; सय सत्तर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घ णो; श्री विजयदेव सूरिंद पटधर श्री विजयप्रभ मु णिंदए, श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणी परे, वि नय कहे आणंद ए ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभवनाथनुं स्तवन ॥

साहिब सांभलो रे, संभव अरज हमारी ॥ भ

वोभव हुं भम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय नि गोदमां रे, तिहां हुं बहु भव भमीउ ॥ तुम विना दुःख सह्यां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रे, पाळ्यां व्रत नवि सुंसे ॥ त्रस पण नवी गण्या रे, हणीया थावर हुंसे ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तीहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाळ्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संयम पाळ्युं ॥ मधुकरतणीपरे रे; शुद्ध न अहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, नीरस पिंड उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरभव दोहिलो रे, पामी मोह वश पडियो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज मन तिहां जइ अडीयो ॥ काम न को सर्यां रे, पापे पिंड में भरीयो ॥ शुद्ध बुद्ध नवी रही रे, तणे नवी आतम तरीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मलीतो नव रही राखी ॥ जे जन अभिलसे रे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा०॥

॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोडी ॥ अन्नक्ष ते में नख्यां रे, रात्री नोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दीये रे, बोध रयण मुज बलियो ॥ संन्नव आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम विनवे रे, सुणजो देवाधि देवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

अंतरजामि सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांन्नलीने आव्यो हुं तीरे, जनम मरण दुःख वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शीव सुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवांछित पूरी, चिंता सहुनी चुरो ॥ एहवुं विरुद ठे राज तुमारुं, केम राखो छो दूरे ॥ से० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो ॥ से० ॥ ३ ॥ लट

पटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजे ॥ धुंआडे धीजुं नहीं साहेब, पेट पड्यां पतीजे ॥ से० ॥ ॥ ४ ॥श्री संखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो॥ कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, भव सायरथी तारो ॥ से० ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमे जोतां रे ॥ ए देशी.

जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवलनाण उल्लासे ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ कटीलंके वाद वदाय रे, पण जिन साथे न घटाय रे, तेणे हरिलंछन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सवि सुरवहू थेइ थेइ कारा रे, जल पंकजनी परे न्यारा रे, तजी तृषणा भोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रभु देशना अमृतधारा रे, जिन धर्म विषे रथकारा रे, जेणे तार्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल

आली रे, वरुया स्वातिये शिव वरमाली रे; करे उत्तम लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलछ निवारी रे, शुभ सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर वीभु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रभु कंठे ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी.

रमती गमती अमुन साहेली, बेहु मली लीजी ए एक ताली रे ॥ सखी आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासे पूरण मासे, पोश दशम निशि रढीयाली रे ॥ स० ॥ १ ॥ पशुपंखी वसीयां वनवासे, तेपण सुखीआं समकाली रे ॥ स० ॥ एणी रात्रे घेर घेर उत्सव होशे, सुखीयां जगतमां नरनारी रे ॥स०॥ ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगे, जनम्या प्रभुजी जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरके थयां अजुवालां, थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी आवे दिक्कुमरी, अधोलोकनी वसनारी रे ॥ स० ॥ सू

तीघर इशाने करती, जोजन एक अशुची टाली रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वलोकनी आठज कुमरी, वरसावे जल कुसुमाली रे ॥ स० ॥ पूरव रुचक आठ दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशाली रे ॥ स० ॥५॥ अड पछिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे ॥ स० ॥ विदिशीनी चउ दीपक धरती; रुचक द्वीप नी चउबाली रे ॥ स० ॥ ६ ॥ केल तणां घर त्रणे करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षा पोट ली बांधी बेहुने, मंदिर मेल्यां शणगारी रे ॥ स० ॥ ॥ ७ ॥ प्रभु मुख कमलें अमरी भमरी, रास रमं ती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रभु माता तुं जगतनी मा ता, जग दीपकनी वरनारी रे ॥स०॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी रे ॥ स० ॥ उप्पन्न दिक्कुमरी गुणगाती, श्री शुभवीर वचन शा लीरे ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबेलनी उली

॥ उली करतां आपद जाये, ऋद्धि सिद्धि लहिये वहु ली ॥ अ० ॥ १ ॥ आसोने चैत्रे आदरशुं, सातमथी संभाली रे ॥ आलस मेली आंबेल करशे, तस घर नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते प्रेमशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधि, जा प जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहेरे जइने देव जु हारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीसे चाहीने पूजो, भावशुं भगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ वे टंके पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी प रे समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकि त पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वाद पंथे संचरतां, आवे भवनो अंत, ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुंये शुदि चैत्रीये, वारशे वनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरत्न वाचक, जे नरना री चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरी मां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ रोहिणी तपनुं स्तवन ॥

हां रे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मघवा नामजो ॥ राणी तेहनी कमला, पंकज लोयणी रे लो ॥ हां रे मारे आठ पुत्रने, उपर पुत्री एक जो ॥ मात पिताने वहाली, नामे रोहिणी रे लो ॥ १ ॥ हां रे मारे देखी यौवन, वय निज पुत्री नृप जो ॥ स्वयंवर मंरूप मांरुी, नृप तेरूाविया रे लो ॥ हां रे मारे अंग वंगने, मरुधर केरा राय जो ॥ चातुरंगी फोजांथी चंपाये, आवीआ रे लो ॥ २ ॥ हां रे मारे पूरव नवना, रागे रोहिणी नाम जो ॥ नूप अशोकने कंठे, वरमाला धर रे लो ॥ हां रे मारे गज रथ घोरूा, दान अने वहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आरुंबरे रे लो ॥ ३ ॥ हां रे मारे रोहिणी राणी, नोगवतां सुख नोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री चार सोहामणी रे लो ॥ हां रे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल ठे नाम जो ॥ ते खोले लई बेठी, गोखे नामीनी रे लो ॥ ४॥ हां रे मारे एहवे कोइक, नगर वणीकनो पुत्र जो ॥ आयु क्षयथी बालक, मरण दशा लहे रे लो ॥

हां रे मारे मातपितादिक, सहु तेनो परिवार जो॥ रम तो पमतो गोख तले, अईने वहे रे लो॥५॥ हां रे मारे ते देखी अति, हरखी राणी ताम जो ॥ पीउने नां खे ए नाटक कुण नातनुं रे लो ॥ हां रे मारे दीप केहे ए, पूरव पुन्य संकेत जो ॥ जन्म थकी नवी दीठुं डुःख कोइ जातनुं रे लो ॥ ६ ॥

॥ अथ गौतमस्वामीनुं प्रनाति स्तवन ॥

राग प्रनाति

॥ मात पृथ्वी सुत प्रात उठी नमो, गणधर गौतम नाम गेले॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंश वेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेनुं ॥ अनेद बुद्धे करी नविजन जे नजे, पूर्ण पहोंचे सही नाग्य तेनुं ॥ मा० ॥२॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतम तणुं ध्यान हृदये धरो, जेह थकी अधिक नहीं महात्म्य केनुं

॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेजने सकल सुख संपदा, गौतम नामथी सिद्धि पामे ॥ अखंम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुरनर जेहने शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीजे करी, स्वमुखे गौतम नाम ध्याये ॥ कोमी मन कामना सफल वेग फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ दुष्ट दूरे टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे॥ भूतनां प्रेतनां जोर भांजे वली, गौतम नाम जपतां उल्लासे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ, पन्नरशें त्रणने दीख दीधी ॥ अठम पारणे तापस कारणे, क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥७॥ वरस पच्चास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी वीर सेवा ॥ बार वरसां लगे केवल भोगव्युं, भक्ति जेहनी करे नित्ये देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गौतम गोत्र महिमा निधि, गुण निधि ऋद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी, अधिक लीला लहे, सुजस सौभाग्य दोलत सवाई ॥ ए ॥ इति ॥

॥ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

पास संखेश्वरा, सार कर सेवकां, देवकां एवमी वार लागे ॥ कोमी कर जोमी दरबार आगे खमा ॥ ठाकुरां चाकुरां मान मागे ॥ पास० ॥ १ ॥ प्रगट था पासजी मेली पमदो परो, मोम असुराणने आप छोमो ॥ मुज महीराण मंजुसमां पेशीने, खलकना नाथजी बंध खोलो ॥ पास० ॥ २ ॥ जगतमां देव जगदीश तु जागतो, एम शुं आज जिनराज ऊंघे ॥ मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जगकाल मोघे ॥ पा० ॥ ३ ॥ भीम पमी जादवा जोर जागी जरा, ततक्षण त्रीकमे तुज संभार्यो ॥ प्रगट पातालथी पलकमां तें प्रभु, भक्तजन तेहनो भय निवार्यो ॥ पास० ॥ ४ ॥ आदि अनादी अरिहंत तुं एक छे, दीन दयाल छे कोण डुजो ॥ उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भय भंजनो एह पूजो ॥ [उदयरत्न कहे असुरनुं शुं गजु, मानसो रखे महाराज जूगो]॥५॥ इति.

॥ अथ दान, शील, तप, अने भावनुं प्रभातियुं ॥

रे जीव जैन धर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार॥ दान शीयल तप भावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे जी० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सुखकार ॥ शेलडी रस वोहोरावियो, श्री श्रेयांस कुमार ॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघाडवा, चारणीए काढ्यां नीर ॥ सतीय सुभद्रा जश थयो, शीयले सुरनर धीर ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, सरस नीरस आहार ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, धन धन्नो अणगार ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावतां, धरतां निर्मल ध्यान ॥ भरत आरिसा भुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल गया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वंछित फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रभातियुं ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती

रे ॥ घमी घमीनां घमियालां वागे, तोय न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे, आवी अवधे डशंके नहि लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले बेठो मोज करे छे, खांते जुवे खेती रे॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जमराजाने शरणे जावुं, जोरालो कोइ जेथी रे ॥ डुनियां दूजो दीसे नांहि, आखर तरशो तेहथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दांत पम्या ने मोसो थयो, काज न सरयुं केहथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपे समजो, कहीये वातो केती रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रजाति रागमां स्तवन ॥

प्रजाते उठीने माता मुखमुं जोवे ॥ ए देशी ॥

आवी रूमी जगति में, पेहेलां न जाणी पेहेलां न जाणी रे प्रजु पेहेलां न जाणी ॥ संसारनी मायामां में वलोव्युं पाणी ॥आ० ॥ ए आंकणी ॥ कल्पतरुनां फल लावीने जे जिनवर पूजे ॥ काल भ

नादि कर्म ते संचित, सत्ताथी छूजे ॥ आ० ॥ १ ॥
स्थावर तिरि निरयालय डुग, इग विगला लीजे ॥
साधारण नवमे गुणठाणे, धुर ज्ञागे गीजे ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी टाणे॥
चरम समय दोय मांहे स्वामी, अंतिम गुणठाणे
॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयरूी, सघली
तीहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपे निःकर्मा
थावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पमिमा पूजे, ते
सिद्धमयी होवे ॥ नाही धोइ निर्मल चित्ते आरिसा
जोवे ॥आ०॥५॥ कर्म सुरूण तप केरी पूजा, फल ते न
र पावे ॥ श्री शुन्नवीर स्वरूप विलोकी, शिव वहु घर
आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन ॥ राग प्रन्नाती ॥

आजको लाहो लीजीए, काल केणे रे दीठी ॥
रहण न पावे पा घमी, जब आवे चीठी ॥ आ०॥
॥ १ ॥ मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब ठंमी ॥
ध्यान धरुं अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंमी ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ विनय मूल जे पालीए, श्री जिनवर धर्म ॥ न्ना

वे शुद्ध आराधतां, छूटे निज कृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥ दान शीयल तप भावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध आराधिये, पामीये भवपार ॥ आ०॥४॥ धर्मनो मर्म ए जाणजो, राग द्वेषने वारो ॥ केवलज्ञान निपाईने, देवचंद पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन ॥ राग प्रभाति ॥

जागे सो जिन भक्त कहावे, सोवे सो संसारी रे ॥ कर्म कलंककी कीच भइ है, ताथें भयो भ्रम भारी है ॥ जा० ॥ १ ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्थावर करुणा कारी है ॥ कूडी साख कथन नहीं कूडा बोले बोल विचारी है ॥ जा० ॥ २ ॥ थापण मोसे अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी है ॥ पंच साखे पाणि ग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी है ॥ जा० ॥३॥ स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारी है ॥ रूपचंद समकितके लछन, ताकुं वंदना हमारी है ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आप स्वभावनी सझाय ॥

आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां.

जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ

न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा, कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनको विलासी ॥ वपु संग जब दूर निकाशी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए है जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अपभ्राजी ॥ कबहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥आ०॥६॥ शुद्ध उपयोगने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी,जीव वरे शिव नारी॥आ०॥७॥

॥ अथ सहजानंदीनी सज्झाय ॥

॥ बीजी असरण भावना ॥ ए देशी ॥

सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत रे ॥ मोह तणा रणीआ भमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूंटे

जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरकावास ठ वंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परें जीवडो, फोगट जनम गमाय रे, माथे भय जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे; दश माथां रण रडवड्यां, चांच दीए शिर काग रे; देव गया सवि भाग रे, न रह्यो माननो ठाग रे; हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो भाइडना राग रे ॥स०॥३॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोतां लाख हजार रे ॥ देश विदेश सधार रे, ते नर एणें संसार रे ॥ जातां जम दरबार रे, न लुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायण पुरी द्वारिकां, बलती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु ठाया आवास रे, जलजल करी गयो सास रे ॥ बलभद्र सरोवर पास रे, सुणी पांडव शिववास रे ॥स०॥५॥

राजी गाजीने बोलता करता हुकम हेरान रे ॥ पो ढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पींपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेस र विना एक घरूी, नवि सोहातुं लगार रे ॥ ते विना जन्मारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे ॥ नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीज परिवार रे ॥ माता मरुदेवी सार रे, पोहोतां मोक्ष मोझार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विषय गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विख देती भरतार रे ॥ नृप जिन धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देता रे तालीज, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी थया, लोक चणे घरबार रे, घरूता पात्र कुंभार रे, एहवुं जाणी असार रे॥ छोरूयो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ थाव च्चासुत शिव वर्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली

मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकं डू नूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म रयण धरो टेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर भेक रे, धरता धर्मनी टेक रे, भवजल तरिया अनेक रे ॥स०॥११॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सज्झाय ॥

चेतन अब कछु चेतीयें, ज्ञान नयन उघारी; समता सहजपणुं भजो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ या दुनीयां हे बावरी, जेसी बाजीगर बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले; ज्युं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुछाया परें, न रहे थिरकारी; जानत हे दिलमें जनी, पण करत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी; पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥चे० ॥४॥ परमातम अविचल भजो, चिदानंद आकारी; नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुखकारी ॥चे०॥५॥

॥ अथ आत्मबोधनो सज्झाय ॥

॥ हो सुण आतमा मत पड मोहपंजर मांहे ॥

माया जाल रे॥ धन राज्य जोबन रूप रामा, सुत सुता घरबार रे ॥ हुकुम होदा हाथी घोमा, कारिमो परिवार॥ मायाजाल रे ॥ हो० ॥१॥ अतुल बल हरि चक्री रामा, नुजोर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल निकट आवे, गलित जाये सत्त ॥ माया० ॥ हो० ॥२॥ पुहवीने जे छत्र परें करे, मेरुनो करे दंरू रे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंरू ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकुम करता, पहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत टेढा, मरी गया जमदेश ॥ मा० ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोलने अधर राता, करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य घाठे, करत परघर टेल ॥ मा० हो० ॥ ५ ॥ नज सदा नगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥ रूप कहे कर धर्म करणी, पामे शाश्वत सद्म ॥मा०॥हो०॥ ६ ॥

॥ अथ आत्मबोधनो सज्ञाय ॥

॥ सांनल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं पाम्यो रे नाइ ॥ नरक निगोदमां नमतां नरनव, तें निःफल केम वाम्यो रे नाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म

जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे ज्ञाइ ॥ मेघ घटा सरिखा गज साटे, गर्दज्ञ घरमां बांध्यो रे ज्ञाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कुहामे कापी, धंतुरो घेर धारे रे ज्ञाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग ज्ञमा रुण मारे रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥ ३ ॥ एम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नर ज्ञवने रे ज्ञाइ ॥ ज्ञलखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मननें रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विज्ञाव परज्ञावमां ज्ञजीश्रें, रमण स्वज्ञावमां करीश्रें रे ज्ञाइ ॥ उत्तम पद पद्मने अव लंबी, ज्ञवियण ज्ञव जल तरीयें रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥५॥

॥ अथ धोबीमानी सज्झाय ॥

॥ धोबीमा तुं धोजे मननुं धोतीउं रे, रखे रा खतो मेल लगार रे ॥ एणे रे मेलें जग मेलो कर्यो रे, अणधोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिन शासन सरोवर सोहामणुं रे, समकित तणी रुमी पा ल रे ॥ दानादिक चारे बारणां रे, मांही नवतत्त्व कम ल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां ऊीले मुनिवर हं सला रे, पीये छे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदे

जे सिला रे, तिहां पखाले आतम चीर रे ॥ धो० ॥ ॥ ३ ॥ तपवजे तप तमके करी रे, जालवजे नव ब्रह्म वाम रे ॥ गंटा जम्मामे पाप अढारना रे, एम ज जलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण ला वूमो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे पवित्रपणुं राखजे रे, पछे आपणा नियम संन्नाल रे ॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, पम मेली ने संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखमी रे, सुखमी अमृतवेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ न्नरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमें वैरागी न्नरतजी, मनहीमें वैरागी ॥

सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वम न्नागी ॥ चोसठ सहस अंतेनुरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ न्न० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नुं कोम हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सोही यें, सुरता धर्मशुं लागी ॥ न्न० ॥ २ ॥ चार करोम मण अन्नज नपमे, लूण दश लख मण लागे ॥ तिन कोम तो गोकुल दूजे, एक कोम हल सागी ॥ न्न० ॥

॥ ३ ॥ सहस बत्तीस दश वरूजागी, जये सरवके त्यागी ॥ गनुं कोरू गामके अधिपति, तोहे न हुआ सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगरूा वाजे मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीर्त्ति मुनिवर वंदतहे, देजो मुक्ति में भागी ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ढंढण ऋषिजीनी सद्याय ॥

॥ ढंढण ऋषिने वंदणा ॥ हुं वारी ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अजिग्रह ली धो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धें लेशुं आहार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल असूऊतो ॥ हुं० ॥ पींजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुजने कहो विचार रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीउ ॥ हुं० ॥ श्री मुख नेम जिणंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादवकुल चंद्र रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआमां मुनिवर मल्या ॥ हुं०

वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वियें देखीने ॥ हुं० आव्यो भाव विशेष रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ऋषिजी लेइ आवीया ॥ हुं० प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लब्धें मोदक मिल्या ॥हुं०॥ पूछे छे कहो कृपाल रे॥हुं०॥ लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्री पति लब्धि निहाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंभाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ८ ॥ आवी सूधी भावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगतें गया ॥ हुं०॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अइमत्ताजीनी सझाय ॥

श्री अइमत्ता मुनिवरजूकी, करणीकी बलिहारी वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण आद

र, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण संवछर आदिक, करकें काय भ्रझारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल पर, करी अणसण अति भारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढारसें अमताले तिहिं गिरि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्षमा कल्याण हरख घर, गुण गावे जयकारी वे ॥श्री०॥५॥

॥ अथ करकंमू प्रत्येक बुद्धजीनी सज्झाय॥

॥ चंपा नगरी अति भली ॥ हुं वारी ॥

दधिवाहन भूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखें उपनो ॥ हुं० ॥ कर्मे कीधो चंमाल रे ॥ हुं० ॥१॥ करकंमूने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येक बुद्ध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥हुं०॥ समकित थाये शुद्ध रे ॥हुं०॥क०॥२॥ लाधी वांशनी लाकमी ॥हुं०॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं० ॥ वापशुं संग्राम मांमीउ ॥ हुं० ॥ साधवी लीउ समजाय रे ॥हुं०॥क०॥३॥ वृषभ रूप देखी करी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश

रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम आदर्यो ॥ हुं० ॥ देवता दीधो वेषरे ॥हुं०॥क०॥४॥ कर्म खपाय मुगतें गया॥हुं०॥ करकंडू रुषिराय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं०॥क०॥५॥इति॥

॥ अथ क्रोधनी सद्याय ॥

॥ कडुवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधे क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, तेतो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही ॥ क० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ अथ माननी सझाय ॥

रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते केम लहीए जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वड्यो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ माने गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे ॥ दुर्योधन गर्वे करी, अंते सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सझाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात्॥साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड कपटनो रे

कोट ॥ जीभें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोंट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडीजी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न छंडे मन तणो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राख्यो नेद ॥ मल्लीजीनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे सांभलो जी, मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ लोभनी सद्याय ॥

तुमें लक्षण जो जो लोभनां रे, लोभें जन पामे क्षोभना रे ॥ लोभें डाह्या मन डोल्या डुरे रे, लोभें डुर्धर पंथे संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहनां लेउं भामणां रे, वली पाये नमीने करुं खामणां रे ॥ लोभे मरजादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभे घर मेहेली रणमां मरे रे, लोभें ऊंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोभें पाप भणी पग

सां न्नरे रे, लोज्नें अकारज करतां न उसरे रे ॥ तु० ॥ ॥ ३ ॥ लोज्नें मनरुं न रहे निर्मलुं रे, लोज्नें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोज्नें न रहे प्रीतिने पावहुं रे, लोज्नें धन मेले वहु एकठुं रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोज्नें पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोज्नें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोज्नें करी रे, उपर मणिधर थाए ते म री रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोज्नो थोज्न दीसे नहीं रे, एवुं सूत्र सिद्धांते कह्युं सही रे ॥ लोज्नें चक्री सुज्नुम नामे जुवो रे, ते तो समुद्रमांहे मूवी मुवो रे ॥तु०॥ ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोज्नने ठंरूजो रे, एक धर्म शुं ममता मंरूजो रे ॥ कवि उदयरतन न्नांखे मुदा रे, वं दूं लोज्न तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आठ मदनी सज्झाय ॥

मद आठ महामुनि वारीये, जे पुर्गतिना दाता रो रे ॥ श्री वीर जिणेसर उपदिसे, न्नांखे सोहम ग णधारो रे ॥ मद० ॥ १ ॥ हांजी जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधो रे ॥ चंमाल तणे कुल

उपन्यो, तपथी सवि कारज सीधो रे ॥ मद० ॥ १ ॥
हांजी कुल मद बीजो दाखीयो, मरीची जवे कीधो
प्राणी रे ॥ कोमा कोमि सागर जवमां जम्यो, मद म
करो इम मन जाणी रे ॥ मद० ॥ २ ॥ हांजी बल म
दथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसूजुति जीवो रे ॥ ज
इ जोगव्यां दुःख नरक तणां, मुख पामता नित रीवो
रे ॥ मद० ॥ ४ ॥ हांजी सनतकुमार नरेसरु, सुर
आगल रूप वखाण्युं रे॥ रोम रोम काया बिगमी गई,
मद चोथानुं ए टाणुं रे. ॥ मद० ॥ ५ ॥ हांजी मुनि
वर संजम पालतां, तपनो मद मनमां आयो रे ॥ थ
या कूरगरु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतरायो रे
॥ मद० ॥ ६ ॥ हांजी देश दशारणनो धणी, राय द
शार्ण जद्र अजिमानी रे ॥ इंडनी ऋद्धि देखी बुजी
या, संसार तजी थया ज्ञानी रे ॥ मद० ॥ ७ ॥ हांजी
स्थुलिजद्र विद्यानो कस्यो, मद सातमो जे दुःख दाइ
रे ॥ श्रुत पूरण अर्थ न पामीया, जुर्र मान तणी अ
धिकाइ रे ॥ मद० ॥ ८ ॥ राय सुजुम षट खंमनो धणी,
लोजनो मद कीधो अपार रे ॥ हयगय रथ सब साथ

रे मळ्युं, गयो सातमी नरक मझार रे ॥ मद० ॥९॥ इम तन धन यौवन राजनो, म धरो मनमां अहंकारो रे॥ ए अथिर असत्य सवि कारमुं, विणसे क्षणमां बहु वारो रे ॥ मद० ॥१०॥ मद आठ निवारो व्रतधारी, पालो संयम सुखकारी रे ॥ कहे मान विजय ते पामशे, अविचल पदवी नर नारी रे ॥ मद० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री मेतारज मुनिनी सज्झाय ॥

सम दम गुणना आगरुजी, (संजम गुणना आगलाजी,) पंच महाव्रत धार ॥ मासखमणने पारणेजी, राजगृही नगरी मझार ॥ मेतारज मुनिवर, धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज ऋषि राय ॥ जवला घडतो उठीयोजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मेतारज० ॥ २ ॥ आज फळ्यो घर आंगणेजी विणकाले सहकार ॥ ल्यो भिक्षा छे सूझतीजी, मोदिक तणो ए आहार ॥ मेतारज० ॥ ३ ॥ क्रौंच जीव जवला च ण्योजी, वहोरी वळ्या ऋषिराय ॥ सोनी मन शंका थ ई जी, साधुतणां ए काम ॥ मेतारज० ॥ ४ ॥ रीस

करी ऋषिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज ॥ वाधर शीशे वींटियुंजी तड़के राख्या मुनिराज ॥ मेतारज० ॥ ५ ॥ फट फट फूटे हाडकांजी, तड तड त्रूटे चाम॥ सोनीडे परिसो कियाजी, मुनि राख्यो मन ठाम ॥ मेतारज० ॥ ६ ॥ एहवा पण महोटा यतीजी, मन्न न आणे रोष ॥ आतम निंदे आपणोजी, सोनीनो शो दोष ॥ मेतारज० ॥ ७ ॥ गजसुकुमाल संतापीयाजी, बांधी माटीनी पाल ॥ खेर अंगारा शिर धस्याजी, मुगते गया ततकाल ॥ मेतारज० ॥ ८ ॥ वाघणे शरीर वलूरियुंजी, साधु सुकोसल सार ॥ केवल लही मुगति गयाजी, इम अरणिक अणगार ॥ मेतारज० ॥ ए ॥ पापी पालके पीलियाजी, खंधक सूरिना शिष्य ॥ अंबड चेला सातशेंजी, नमो नमो ते निश दिश ॥ मेतारज० ॥ १० ॥ एहवा ऋषि संभारतांजी, मेतारज ऋषिराय ॥ अंतगड हूआ केवलीजी, वंदो मुनिना पाय ॥ मेतारज० ॥ ११ ॥ भारी काष्ठनी स्त्रीये तिहांजी, लावी नांखी तिणि वार ॥ धबके पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तिणे सार ॥ मेता

रज० ॥ १२ ॥ देखी जवला विठमांजी मनमां ला ज्यो सोनार ॥ उघो मुहपति साधुनोजी, लेइ थयो अणगार ॥ मेतारज० ॥ १३ ॥ आतम तार्यो आपणो जी, थिर करी मनवचकाय ॥ राजविजय रंगे भणे जी, साधुतणी ए सझाय ॥ मेतारज० ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरणिक मुनिनी सझाय ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे शीशोजी ॥ पाय अणवाणेरे वेलु परजले, तन सु कुमाल मुनीशोजी ॥ अरणिक० ॥ १ ॥ मुख करमा णुं रे मालती फूल ज्युं, ऊभो गोखनी हेठेजी ॥ खरे रे बपोररे दीठो एकलो, मोही माननी देठेजी ॥ अरणिक० ॥ २ ॥ वयण रंगीली रे नयणे वेंधियो, रुषि थंभ्यो तेणे ठाणोजी ॥ दासीने कहे जारे उताव ली, रुषि तेडी घर आणोजी॥ अरणिक० ॥३॥ पाव न कीजे रे रुषि घर आंगणुं, वोहोरो मोदक सारोजी॥ नव यौवन रस काया कां दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ अरणिक० ॥ ४ ॥ चंद्रवदनी रे चारित्र चू क्युं, सुख विलसे दीन रातोजी॥ एक दिन रमतां रे

गोखे सोगठे, तव दीठी निज मातोजी ॥अरणिक०॥५॥ अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिये गलिये मझा रोजी ॥ कहो कोणे दीठोरे म्हारो अरणीको, पूंछे लोक हजारोजी ॥ अरणिक० ॥ ६ ॥ ऊतर्यो त्यांथी रे जननीने पाय पड्यो, मन शुं लाज्यो अपारोजी ॥ वछ तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेहथी शिव सुख सारोजी ॥ अरणिक० ॥ ७ ॥ एम समजावी रे पाछो वालीयो, आण्यो गुरुने पासोजी ॥ सद् गुरु दीए रे शीख भली परे, वैरागे मन वासोजी ॥ अरणिक० ॥ ८ ॥ अग्नि धखंतीरे शीला ऊपरे, अरणिके अणसण कीधोजी ॥ रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरु, जिणे मनवंछित लीधोजी ॥ अरणिक० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ वणझारानी सद्याय ॥

नरभव नयर सोहामणुं ॥ वणझारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवरतणी ॥ व० ॥ पोठी भरजे ऊदार ॥अ०॥१॥ शुभ परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मू

ह ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा भणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल ओलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ ओलंघजे ह लवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाम्री मनोरथ भट तणी ॥ व० ॥ पूरवानुं नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे रे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोठें भर्या गुणरा श ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायक भावें ते थशे ॥ व० ॥ ला भ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ आत्मशिक्षा सझाय ॥

॥ राग सामग्री ॥

आतमरामें रे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ ताहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मळ्युं

जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूछे सब मली रो य रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारमुं, कूडो कुटुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पामे भवपार रे ॥आण॥ ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकीयां; ते कीयां सगपण अनंत रे ॥ भव छछेगे रे तुं भम्यो, तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदयमां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ भोग अनंता तें भोगव्या, देव मणुअ गति मांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांछा छे त्यांहि रे, आण संतोष चित्त मांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतमतणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुजको नहीं, शुद्ध निश्चय इम धारी रे, इण विध निजचित्त ठारी रे, मणिचंद आतम तारी रे॥आण॥५॥

॥ सामायिकना बत्रीश दोषनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥

शुभ गुरु चरणें नामी शीश, सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, दुशमन देखी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ

विचार न हैंमे धरे ॥ मन उद्वेग इच्छे यश घणो, न करे विनय वमेरा तणो ॥ २ ॥ जय आणे चिंते व्यापार, फल संशय नीआणा सार ॥ हवे वचननां दोष निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघारु, मुखे लवी करतो वढवारु ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथा न हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोमे उंचे हाथ ॥ पग लांबे बेसे अविनीत, उठिंगण ल्ये थांजो ज्रींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपरच ढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमे, करहा कंटक तरुएं जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्री शुन्नवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥

॥ इति सामायिक बत्रीश दोष स्वाध्याय ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया; मरु देवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगतस्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया; केवलसिरि राया, मोक्ष नगरें सधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी; दुरगति दुःख भारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणिक्षपक सुधारी, केवलानंत धारी; नमियें नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा; करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरिठा, गूंथतां टाले रिठा; भविजन होय हिठा, देखि पुण्यें गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेह ऋद्धे महंता; जेह सज्जन संता, टालियें मुज चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दुरंता; जिन उत्तम थुणंता, पद्म ने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चार शाश्वता जिननी स्तुति ॥

ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारिखेण दुःख वारेजी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वता नाम

ए चारेजी ॥ भरतादिक खेत्रें मली होवे, चार नाम चित्तधारेजी ॥ तेणें चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीएं नित्य सवारेंजी ॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो त्रीजे लोकें थइ, कोमी पंनरशें जाणोजी ॥ उपर कोमी बेंतालीश प्रण मो, अरूवन लख मन आणोजी ॥ बत्रीश सहस एं सी ते उपर, बिंब तणो परिमाणोजी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषिमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी ॥ २ ॥ रा यपसेणी जीवाभिगमें, भगवती सूत्रें भांखीजी ॥ जंबुद्वीपपन्नत्तिठाणांगे, वीवरीने घणुं दाखीजी, वली अशाश्वती ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र वे साखीजी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशा न इंड कहायाजी ॥ जेम सूरीयाभ प्रमुख सुरवर, दे वी तणा समुदायाजी ॥ नंदीसर अठाइ महोछव, करे अति हरख भरायाजी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दि वसें, पद्म विजय नमे पायाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥

राय राणा प्रणमें, चंद्रतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्रविमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीजतणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत ॥ जेम विमल कमल दोय, विपूल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चें व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजे, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धि विजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीए, जन्म्या नेम जिणंद तो ॥ श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखुए, ब्रह्मचारि भग

वंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणिए, पोहोता मुक्ति म हंत तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्ति मोझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वलीए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहु तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवाए, जांखे सार वचन तो ॥ जीव दया गुण वेलडीए, कीजें तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरीएं पर नार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सानिध्य जे करे ए, करे वली धर्मनां काम तो ॥ तप गच्छ नायक गुण निलो ए, श्री विजयसेन सूरि राय तो ॥ ऋषभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराजजी ॥ आठ जातना कलश करीने, न्हवरावे जि

नराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घेरे, मंगल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गज गंजन, अष्टापद परें बलीयाजी ॥ आठमे आठ सरूप विचारी, मद आठे तस गलीयाजी ॥ अष्टमी गति प होता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंगजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥२॥ प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजेजी॥ आठमे आठसो आगम जांखी, जविमन संशय जांजेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारोजी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारी, जीव दया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पुजा करीने, मानव जव फल लीजेंजी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोम कल्याणजी ॥ ४ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रुअमी, गोविंद पुछे नेम ॥ को

ण कारण ए परव मोटुं, कह्योने मुज शुं तेम ॥ जिनवर कल्याणक अति घणां, एकसोने पंचाश ॥ तेणे कारण ए परव मोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिमरेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेह्वुं, करो जिनसु रंग ॥ २॥ अगीआर अंग लखाविएं, अगीआर पाठां सार ॥ अगिआर कवली विंटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें भवपार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुज दंड चंड अखंड जेहने, समरतां सुख थाय॥ एकादशी एम मनवशी, गणि हर्ष पंडित शीस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघतणां निश दिश ।४। इति।

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति ॥

नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत्त पोषध

करी शुभ भावे, चउविहार मन लावे ॥ वासुपूज्य नी भक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरष सत्तावीस लीजें ॥ थोमी सक्कें वरस ते सात, जाव जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्मघात ॥ निज शक्ति उजमणुं आवे, वासुपूज्यनुं बिंब भरावे, लाल मणिमय गावे ॥१॥ एम अतीत अने वर्तमान, अनागत वंदो जिन बहु मान, कीजें तस गुण गान॥ तप कारक नी भक्ति आदरीएं, साधर्मिक वली संघनी करीए, धरम करी भव तरीएं॥ रोग सोग रोहिणी तपें जाए, संकट टले तस जश बहु थाए, तसु सुरनर गुण गाए ॥नीराशंसपणे तप एह, शंका रहितपणे करो तेह, निधि नव होए जेम गेह ॥ २ ॥ उपधान स्थानक जिन कल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ पमिमा तप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार, मुक्तावली मनोहार ॥ आगम चउदश ने वर्धमान, इत्यादिक तप मांहे प्रधान, रोहिणी तप बहुमान ॥ एणि परें भांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमीअ समाणी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥३॥ चंमा यक्षणी यक्षकुमार

वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रोहिणी तप करता जन जेह, एह भव परभव सुख लहे तेह, अनुक्रमे भवनो छेह ॥ आचारी पंडित उपगारी, सत्य वचन भांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रत धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिनगुरु राय, तस शिष्य मुज गुरु उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गाय॥४॥

॥ अथ पजूसणानी स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, परव पजूसण पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुंअर गयवर खंध चढावी, ढोल निशान वजडावोजी ॥ सदगुरु संगें चढते रंगे; वीर चरित्र सुणावोजी ॥१॥ प्रथम वखाण धरम सारथिपद, बीजे सुपनां चारजी ॥ त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर जनम अधिकारजी ॥ पंचमे दीक्षा छठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी॥ आठमे थिरावली संभलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ॥२॥ छठ अठम अठाइ कीजें, जिनवर चैत्य नमीजेंजी ॥ वरशी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघ

सयल स्वामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रवा वना, दान सुपात्रे दिजेजी॥ भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवर मांही जिन वर मोहोटा, परव पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी साहम्मीवछल, बहु पकवान्न वधाइजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक व धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पजूसणनी स्तुति ॥

सत्तरभेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजेंजी ॥ ढोल ददामा भेरी नफेरी, झलरी नाद सुणीजेंजी ॥ वीरजिन आगें भावना भावी, मानव भव फल लीजेंजी ॥ परव पजूसण पूरव पुण्यें, आ व्यां एम जाणीजेंजी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम दुवालस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली दस दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वडा कल्प नो छठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेंजी ॥ पडवेने दिन

जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजेंजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमर पलावी, अठमनुं तप कीजेंजी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीए जी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदी जेंजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे ऋषभ चरित्र सुणीजेंजी ॥ ३ ॥ बारशे सूत्रने समाचारी, संवछरी पडिक्कमिएजी ॥ चैत्य प्रवाडी विधि शुं कीजे, सकल जंतुने खामीजेंजी ॥ पारणाने दिन साहमीवछल, की जें अधिक वधाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनो रथ, पूरे देवी सिद्धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ अध्यात्म स्तुति ॥

भ्रगी सवेरा सामायिक लीधुं, पण बारणुं नवि दीधुंजी ॥ कालो कूतरो घरमां पेठो, घी सघलुं तेणे पीधुंजी ॥ भ्रगो वहुअर आलस मूको, ए घर आप संभालोजी ॥ निज पतिने कहो वीरजिन पूजो, स मकितने अजुआलोजी ॥ १ ॥ बले बिलारू ऊरूप ऊडपावी, भत्रीरू सर्वे फोडीजी ॥ चंचल छैयां वार्यां न रहे, त्राक भांगी माल त्रोडीजी ॥ तेह विना रेंटि

यो नवि चाले, मौन भलो केने कहीयेंजी ॥ ऋषभा दिक चोवीश तीर्थंकर, जपीयें तो सुख लहीयेंजी ॥ २ ॥ घर वाशीदूं करोने वहूअर, टालो नजी शा लुजी ॥ चोरटो एक करे छे हेरु,नरडे द्योने तालुंजी ॥ लबके प्राहुणा चार आव्या छे, ते भन्ना नवि राखो जी ॥ शिवपद सुख अनंतां लहियें, जो जिन वाणी चाखोजी ॥ ३ ॥ घरनो खुणो कोल खणे छे, वहु तुमे मनमां लावोजी ॥ पोहोळे पलंगे प्रीतम पोढ्या, प्रेम धरीने जगावोजी ॥ भावप्रनु सुरि कहे नहीं ए क थलो, अध्यातम नपयोगीजी ॥ सिद्धायिका देवी सा निध्य करेवि, साधे ते शीवपद भोगीजी ॥४॥ इति.

॥ अथश्री शांतिजिन स्तुति ॥

शांति जिणेसर समरिये, जेनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल नपना, मृग लंछन पाय ॥ गजपुर न यरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष्य चालीस देहडी, लाख वरसनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं॥ कुंथुनाथ चक्री छठा, अ

रनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंदु ॥ संजम लेइ मुगते गया, नित्य उठीने वंदु ॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, वेग धर्म प्रकाशे ॥ दान शील तप भावना, नर सोहे अभ्यासे ॥ एह वचन जिनजी तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सुणतां समकित निर्मलां, निश्चे केवल वरिया ॥३॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अणसण कीधुं ॥ काउस्सग्ग मुद्रायें रह्या, तिणें मुगतिज लीधुं ॥ गरुड यक्ष समरुं सदा, देवी निर्वाणी ॥ भविक जीव तुमें सांभलो रिषभदासनी वाणी ॥४॥

॥ अथश्री ऋषभ देवजीनी स्तुति ॥

त्र्याशी लाख पुरव घर वासें, वसीआ परिकर युक्ताजी ॥ जन्मथकी पण देव तरु फल, क्षीरोदधि जल भोक्ताजी ॥ मइ सुअ उहि नाण संजुता, नयण वयणकज चंदाजी ॥ चार सहस शुं दीक्षा शिक्षा, स्वामी श्री ऋषभ जिणंदाजी ॥ १ ॥ मनःपर्यव तव नाण उपन्युं, संजति लिंग सहायाजी ॥ अढि द्वीपमां संज्ञी पंचेंद्रि, जाणे मन गत भावाजी ॥ द्रव्य अ

नंता सूक्ष्म त्रीग, अढारशें खित गयाजो ॥ पलिय अ संख्यम न्नाग त्रिकालिक, ज्व्य असंख्य परजायजी॥२॥ ऋषन्न जिनेश्वर केवल पामी, रयण सिंहासण गया जी ॥ अनन्निलाप्य अन्निलाप्य अनंता, न्नाग अनंत उ च्चरायाजी ॥ तास अनंतमे न्नागे धारी, न्नाग अनंते सूत्रजी ॥ गणधर रचीआं आगम पूजी, करीअें जन्म पवित्रजी ॥ ३ ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, सम कित शुद्ध सुहावेजी ॥ आदी देवनी सेव करंती, शासन सोह चढावेजी ॥ श्रद्धासंयुत जे व्रतधारी, विघन ता स निवारेजी ॥ श्री शुन्न वीर विजय प्रन्नु न्नक्ते, समरे नित्य सवारेजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पंच तीरथनी आरती ॥

पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजय मंमण ऋषन्न जिणंदा ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थे आव्या, पूरव नवाणुं न्नविक मन न्नाव्या॥ आरती कीजे श्री जिन वरकी ॥ १ ॥ ज्ुसरी आरती शांति जिणंदकी ॥ शां ति करे प्रन्नु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शरणे रा

ख्यो ॥ केवल पामीनें धर्म प्रकास्यो ॥ आ० ॥ २ ॥ तीसरी आरती श्री नेमनाथ ॥ राजुल नारी तारी निज हाथ ॥ सहस पुरुष शुं संयम लीधो ॥ करी निज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चोथी आरती चिहुंगति वारी ॥ पारसनाथ ज्नविक हितकारी॥ गोमी पास संखेश्वरो पास ॥ ज्नविजननी पूरे मन आस ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्री महावीर॥ मेरुपरे जिम रह्या धीर ॥ साढाबार वरस तप तपीया॥ कर्म खपावीने शिवपुर वसिया ॥ आ० ॥ ५ ॥ इणिपरें प्रज्नुजीनी आरती करशे ॥ शुज्न परिणामें शिवपुर वरसें ॥ इणिपरें जिनजीनी आरती गावे ॥ शुज्न परिणामे शिवपुर जावे ॥६॥ करजोडी सेवक एम बोले ॥ नहीं कोइ मारा जिनजीने तोले ॥आ०॥७॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती.

जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरण कमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥

॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पांचमा शोहे, शोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ ॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तारी कीजे, जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोमी सेवक गुण गावे, सो नरनारी अमरपद पावे ॥ जय०॥६॥

॥ आदि जिननी आरती.

जय जय आरतो आदि जिणंदा, नाभीराया मरुदेवीको नंदा ॥ पेहली आरतो पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे ॥ १ ॥ जे०॥ डुसरी आरती दीन दयाल, धुलेव मंमपमां जग अजवाळ्युं ॥ २ ॥ जे० ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इंड करे तोरी सेवा ॥ ३ ॥ जे०॥ चोथी आरती चौगति चुरे, मन वांछितफल शिवसुख पुरे ॥४॥ जे०॥ पंचमी आरती पुन्य उपाया, मुलचंदे रीखव गुण गाया ॥ जे०॥५॥

॥ अथ मंगल दीवो ॥

दीवोरे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरतो उतारन

बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिवाली, अंबर खेले अबला बाली ॥ दी० ॥ देपाल ज्ञणे इणें कल अजुआली, ज्ञावें ज्ञगते विघ्न निवारी ॥ दी० ॥ देपाल ज्ञणे इणे ए कलीकाले, आरतो उतारी राजा कुंमारपाले ॥ दी०॥ अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक, मंगलिक चतुर्विध संघने होजो ॥ दी०॥ इति.

॥ अथ मंगल चार. ॥

चारो मंगल चार, आज म्हारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोज्ञा सुंदर सार ॥ आज० ॥ १ ॥ छिनुं छिनुं जन मनमोहन अरचो, घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ २ ॥ विविध जाति के पुष्प मंगावो, सफल करो अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥ धूप उखेवोने करो आरति, मुख बोलो जयजयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥ समवसरण आदिसर पूजो, चोमुख प्रतिमा चार ॥ आ० ॥ ५ ॥ हैये धरी ज्ञाव ज्ञावना ज्ञावो, जिम पामो ज्ञवपार ॥ आ०॥ ६ ॥ सकलचंद सेवक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥ आ०॥ ७॥

॥ अथ चार मंगल ॥

आज घेर नाथ पधार्या, कीजें मंगल चार ॥ आ० ॥ पहिले मंगल प्रज्जुजीने पूजुं, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥ १ ॥ बीजे मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारुं, घंट वजावुं रणकार ॥ आ० ॥ २ ॥ चोथे मंगल प्रज्जुगुण गाउं, नाटक थै थैकार ॥ आ० ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ०॥३॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजाना दोहा ॥

जल जरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ ऋषज्ज चरण अंगूठडो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरश्या वरशी दान ॥ करकांडे प्रज्जु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ जुजाबलें जवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्ध शिला गुण उ

जलो, लोकांते भगवंत ॥ वसिया तेणें कारण भवि, शिर शीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥६॥ सोल पहोर प्रभु देशना, कंठे विवर वरतुल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सूणे, तिणे गले तिलक अमूल्य ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बले, बाळ्या रागने रोष ॥ हीम दहे वनखंमने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजलो, सकल सुगुण विशराम ॥ नाभि कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ए ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंग पूजाना दोहा ॥

॥ अथ सामायिक लेवानी विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ति चवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी, कटासणा उपर बेसी, मुहपत्ति मा बा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी

सनमुख राखो एक नवकार गणि पंचिंदिअ कही खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नछ उससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इछाकारेण संदिसह भगवन्, सामायक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इछं. एम कहि मुहपति पडिलेहणाना पचाश बोल कही, मुहपति पडिलेहीएं. पछी खमासमण देइ० इछाकारेण संदिसह भगवन् सामायक संदिसाहुं ? इछं. कही खमासमण देइ, इछा० सामायक ठाउं ? इछं. एमकहि बे हाथ जोडी एक नवकार गणी, इछकारी भगवन्, पसाय करी सामायक दंडक उच्चरावोजी. वडिल करेमिभंते कहे. पछी खमासमण देइ इछा० बेसणे संदिसाहुं? इछं. कही खमासमण देइ इछा० बेसणे ठाउं ? इछं खमा० देइ इछा० सझाय संदिसाहुं ? इछं. खमा०॥ इछा०॥ सझाय करुं? इछं० एम कहि त्रण नवकार गणवा, पछी बे घडी सझाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि समाप्तम् ॥

॥ अथ सामायक पारवानी विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावहि पडिक्कमवाथी जावत् लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इच्छाण ॥ मुहपति पडिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमासमण देइ, इच्छा० ॥ सामायक पारुं? यथाशक्ति. वली खमासमण देइ, इच्छा० ॥ सामायक पार्युं; तहत्ती कही, पछी जमणो हाथ चवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी, एक नवकार गणी सामाइयवयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखीने एक नवकार गणीयें.

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पछी पाणी वापर्युं होय तो मुहपत्ति पडिलेहवी, अने आहार वावर्यो होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसिआए ए पाठ न केहेवो. पछी यथा शक्ति पच्चक्खाण करवुं. खमासमण देइ इच्छाकारेणण कही, वम्मेरा अथवा पोते चैत्यवंदन कहिने पछी जंकिंचि नमुत्थुणं कही,

उन्ना थईने अरिहंत चेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० कहिने प्रथम थोय केहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय केहेवी. पछी पुक्खरवरदी कही, सुअस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं अन्नञ० कही पछी एक नवकारनो काउस्सग्गपारी, नमोर्हत्० कही, चोथी थोय केहेवी. पछी बेसीने नमुत्थुणं केहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पूर्वक नगवान, आचार्य, उपाध्याय सर्वसाधुन्यः प्रत्येंं वंदन करीयें. पछी इच्छाकारेण० देवसि प्रतिक्रमणे ठाउं एम कहि, जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीनें इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ० केहेवुं. पछी उन्ना थइ करेमिन्नंते इच्छामि ठामि काउसग्गं जोमें देवसिउ तस्सउत्तरी० कही, पछी अतिचारनी आठ गाथानो काउस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे

तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ते पारीने, पछी लोगस्स कहेवो. ॥ बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां. पछी उन्ना थइने इच्छाका० देवसिअं आलोउं इच्छं आलोएमि जो मे देवसिउ० कहीने, पछी सातलाख कहेवा. पछी अढार पापस्थानक आलोइने सव्वस्सवि देवसिअ कहीने बेसवुं. बेसीने जमणो ढींचण उन्नो राखी एक नवकार गणी पछी करेमिन्नंते इच्छामि पमिक्कमिउं०कहीने, वंदित्तु कहेवुं, पछी वांदणां बे देवां. पछी अप्नुठिउहं अप्निंतर देवसिअं खामीने वांदणां बे देवां. पछी उन्ना थइ आयरियउवज्ञाए कहीने, करेमिन्नंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जोमें देवसिउ०तस्सउत्तरी०कही, पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्गपारीने पछी लोगस्स प्रगट कहेवो, पछी सव्वलोए अरिहंतचेईयाणं,वंदणवत्तिआए० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने पुरकरवरदी० सुअस्सन्नगवउ० करेमि० वंदण० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने,

सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नछ०कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही पुरुषे सुअ देवयानो पेहेली थोय कहेवो, स्त्रीये कमल दलनी पेहेली थोय कहेवी. पछी खेत्रदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारो नमोऽर्हत्० कहो क्षेत्र देवयानी बीजो थोय स्त्रीये तथा पुरुषे बंने ए कहेवी. पछी प्रगट एक नवकार गणी बेसोने, छठा आवश्यकनो मुहपति पडिलेही, बे वांदणां दीजे. पछी सामायक, चउव्विसछो, वंदण, पडिक्क मणुं. काउस्सग्ग अने पच्चक्काण ए छ आवश्यक संना रवां. पछी इच्छामो अणुसट्ठिं कही, नमो खमासमणाणं कही, नमोऽर्हत्० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पछी नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पछी वरकनक कही भ गवान् आदे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाईज्जेसु कहेवुं. पछी देवसिअ पायच्छित्तनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो

करवो. पछी ते काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही, बेसीने खमासमण बे देइ सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी सझाय कहीए, पछी एक नवकार गणीए, पछी डुक्खक्खउ कम्मक्खउनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक वमेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत्० कही लघुशांति कहेवी, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी इरियावहि कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स केहेवो. पछी चउ क्कसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुहपत्ति पमिलेहवी इच्छामि० ॥ इच्छाकाण॥ सामायक पारुं. यथाशक्ति इच्छामिण॥ इच्छा का० सामायक पार्युं तहत्ति कही, पछी जमणो हाथ उपधी उपर आपी एक नवकारगणीने सामाइअ वय जुत्तो कहेवो. पछी थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधि कही, बाकी अंतरविधो वमेराथी समजवी.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्वनीरीते सामायक लीजे ॥ पछी कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस्स केहेवो, पछी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पछी चार खमासमण पूर्वक भगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्ये वांदवा, खमासमण बे देइ, सझायनो आदेश मागी एक नवकार गणीने भरहेसरनी सझाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पछी इच्छकार सुहराइनो पाठ केहेवो, पछी इच्छाका० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर स्थापीने इच्छंसव्वस्सवि राइय दुच्चिंतिय० कही॥ नमुत्थुणं करेमि भंते कही, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं० तस्सउत्तरी अन्नत्थ०कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने, प्रगट लोगस्स कही, सव्वलोए० अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पुक्खरवरदी० सुअ

स्सण वंदणा कही, अतिचारनी आठगाथानो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवस्यकनो मुहपति पडिलेही वांदणां बे देवां. त्यांथी ते अप्पुठिउ खामि वांदणां बे दीजे, त्यां सुधी देवसिनीरीते जाणवुं, पण जे ठामें दे वसिअं आवे छे ते ठामे राइयं केहेवुं. पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमिभंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्स उत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवडे तो चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, पछी छठा आवश्यकनी मुहपति पडिलेहीनें वांदणां बे देवां, ते पछी तीर्थवंदन करवुं, पछी यथाशक्तियें पच्चख्काण करवुं. पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक चउव्विसछो, वंदण, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चख्काण ए छ आवश्यक संभारवां. पच्चख्काण कर्युं होय तो कर्युं छेजी केहेवुं, अने धार्युं होय तो धार्युं छेजी एम कहेवुं. पछी इच्छामोअणुसठिं नमोखमासमणाणं नमोऽर्हत०

कही विशाललोचन, नमुत्थुणं, अरिहंतचेईयाणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने नमोऽर्हत्० कही कल्याणकंदनी थोय प्रथम कहेवी. पछी लोगस्स, पुक्खरवरदी, सिद्धाणं बुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो कहीयें वैए त्यां सुधी सर्व कहेवुं. पछी नमुत्थुणं कही, भगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पछी श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय राय, काउस्सग्ग, थोय पर्यंत करवुं. पछी खमासमण पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय राय, काउस्सग्ग थोय सुधी करवुं. पछी सामायक पारवानो विधिनी रीते सामायक पारवा सुधी कहेवुं.॥ इति राइप्रतिक्रमणनी विधि समाप्त ॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणनी विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कहि रह्या त्यां सुधी कहेवुं, पण चैत्यवंदन सकलाऽर्हतनुं कहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमासमण देइने

इछा कारेण संदिसह जगवन्, देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इछाका० परिकमुहपति पडिलेहुं, एम कही मुहपति पडिलेहिये, पछी वांदणां बे दीजे पछी इछा का० संबुध्धा खामणेणं अप्नुठिओहं अप्निंतर परिकअं खामेउ इछं खामेमि परिकयं पन्नरस दिवसाणं पन्नर स राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही इछाका० कहो परिकअं आलोएमि इछं आलोएमि जोमे परिकउ अ इआरो कउ कही इछाका० कही परिक अतिचार आ लोउं एम कहीने अतिचार कहीये.पछी एवंकारे श्रीश्राव क तणे धर्मे श्रीसमकित मूल बारव्रत एकसो चोवी श अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मां हे सुक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मने, वचने अने कायाए करी मिछामिडुक्कडं. सव्व स्सवि, परिकअ, डुचिंतिअ, डुप्नासिअ, डुचिठिअ, इछा कारेण संदिसह जगवन् , तस्समिछामि डुक्कडं०॥ इछ कारि जगवन् , पसाय करी परिक तप प्रसाद करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीते कहिए. चउत्थेणं ए

क उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि, चार एकासणां, आठ बियासणां, बे हजार सज्झाय यथाशक्ति तपक री प्रवेश कर्यो होय तो पइठीउ कहिए. करवो होय तो तहत्ति कहिये. ने न करवो होय तो अणबोल्या रहिये. पछी बे वांदणां दीजे; पछी इच्छाकाº पत्तेय खामणेणं अप्भुठ्ठिउहं अप्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं खा मेमि पक्खिअं. पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं कही पछी वांदणां बे दीजे, पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं पडिक्कमुं? सम्मं पडिक्कमामि इच्छं एम कही करे मिभंते सामाइयं कही इच्छामि पडिक्कमिउं जोमे प क्खिउ कह्या पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही प क्खिसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदितु कहे, पछी सुअ देवयानी थोय कहेवी. पछी हेठा बेसी जमणो ढींचण ऊभो करवो. एक नवकार गणी करेमिभंते इच्छामि पडिक्कमिउं क

ही वंदित्तु केहेवुं. पछी करेमिभंते इछामिठामि काउ स्सग्गं जोमे पक्किउ, तस्सउत्तरी, अन्नछ० कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. लोगस्स चंदेसु निम्मल यरा सुधी केहेवा, अथवा अमृतालीश नवकारनो का उसग्ग करीने पारवो. पालीने प्रगट लोगस्स केहेवो. पछी मुहपत्ति पमीलेहिने, वांदणां बे दिजे. पछी इ छाका० समाप्त खामणेणं अप्पुछिउहं अप्रिंतर पक्किअं खामेउं इछं खामेमि पक्किअं. एक पक्काणं पन्नरस दि वसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही प छी खमासमण देइ ने इछाका० कही, पक्किखामणां खामुं ? एम कहीने खामणां चार खामवां. पछो देव सि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कह्या पछी वांदणां बे देइने त्यांथी सामायक पारियें, त्यां सुधी देवसिनी पेठे जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिक नी थोयो केहेवी, स्तवन अजितशांतिनुं केहेवुं, सझा यने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी चार थोयो केहेवी. अने लघुशांतने ठेकाणे मोटी शांत क

हेवी. अने देवसिअंनो पाठ होय त्यां पक्खिअं कहेवुं.
॥ इति पक्खि प्रतिक्रमणविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ चउम्मासी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ उपर लखेला पक्खिना विधि प्रमाणेज छे, पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो,अने पक्खिना आगारनेठेकाणे चउम्मासीना कहेवा.तथा तपने ठेकाणे छठ्ठणं बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासण, सोल बिआसण, चार हजार सज्झाय ए रीते कहेवुं. ॥ इति चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ अथ सांवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ ए पण उपर लखेला पक्खिना विधि प्रमाणे छे, तथापि बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकसोने साठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अठ्ठम भत्तं एटले त्रण उपवास, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणां, चोवीश बेआसणां, अने छ हजार सज्झाय एरीते कहे

वुं. परिकना आगारने ठेकाणे सांवत्सरीना आगार कहेवा. ॥ इति संवत्सरी प्रतिक्रमण ॥

॥अथ चउद नियम धारवानी विगतलखीएछीए॥

॥गाथा॥ सच्चित्त[1] दव्व[2] विगइ[3], वाणह[4] तंबोल[5] वथ्थ[6] कुसुमे[7]सु, वाहण[8] सयण[9] विलेवण[10], बंभ[11] दिसि[12] न्हाण[13] भत्तेसु[14].

१ सच्चित जे माटी पाणी अग्नि मोहुं नीली वनस्पति फलफूल छाल काठ मूल पत्र बीज आदि काचां धान्य, पाकां पण शस्त्र लागे बे घडी थया विना सचितमां तेनुं मान करे ॥

२ द्रव्य जे जे वस्तु मुखमां जुदा स्वाद अर्थे नांखवी तेनी गणतीनो नियम ॥

३ विगइ ते दुधं[1], दहीं[2], घी[3], गोल[4], तेल[5],कडाहविगे[6] ते जे तावडे तळे ने त्रण घाण तळया पदार्थ कडे विगे, बीजा घाण निवियातामां तेनो नियम ॥

४ वाणह ते पगरखां मोजडि पावडि चाखडि मोजां तेनो नियम ॥

५ तंबोल ते सोपारी पान लवंग एलची प्रमुख

मुख शुद्धि थाय तेना तोलनो नियम ॥

६ वत्थ ते पोतानें पेहेरवामां आवे ते वस्त्रनी गण तिनो नियम ॥ [नियम करे ॥

७ कुसुमेसु ते जे वस्तु नाके सुंघे तेना तोलनो

८ वाहाण ते त्रण न्नेदे. चरतुं ते घोरूा हाथी ऊंट बलद पारूा प्रमुख; फरतुं ते गाडी रथ प्रमुख;तरतुं ते वहाण,नाव,त्रापा,बोट प्रमुख;तेनो नियम॥

ए सयण ते सुवाना खाटला पलंग गादी पाट पाटला, पाथरणां प्रमुखनो नियम ॥

१० विलेवण ते जे वस्तु पोताने शरीरे विलेपन करे तेना तोलनो नियम ॥

११ बंन्न ते नारीना न्नोगनो नियम ॥

१२ दिसि ते पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर,ऊर्द्ध, अधो, जवानुं प्रमाण करे ते ॥

१३ न्हाण ते सर्व अंगे नाहावुं तेनुं परिमाण ॥

१४ न्नत्तेसु ते न्नोजन पाणी जम्यामां आवे तेनुं तोल॥

१५ पृथ्वीकाय ते माटी मीठुं खमी प्रमुख पोताने निमीत्ते वरे तेनो नियम ॥

१६ अपकाय ते पाणी पोए वावरे नाह्या प्रमुखमां आवे तेना तोलनुं मान ॥

१७ तेऊकाय ते जे पोताने शरीरे भोग उपभोगमां चुला, चारी, शघडी, अंजोठी प्रमुखनुं रांध्युं निपज्युं ताप्या शेकयामां आवे तेनो नियम करे ते.

१८ वाऊकाय ते पंखा, हिंचोला,पडवा, लुगडादिक थी पवन नांखीए तेनुं प्रमाण ॥

१९ वनस्पतिकाय ते लीलां फल, फूल, शाक, खाधा वावर्यामां आवे ते दातण सुधांनुं परिमाण ॥

२० त्रसकाय ते जे त्रास पामे ते किडा, कीडी, विंछी, गाय,मच्छर,पंखी,मनुष्य,देव नारकी तेमांना कोइने विना अपराधे संकल्पी मारुं नही तेनो नियम

२१ असि ते तरवार भाला तीर छुरी कोस कोदाला पावडा, घंटि प्रमुख जीव वधनां करनारां शस्त्र तेनो नियम करे ते ॥ [नियम करे ते ॥

२२ मसी ते साहीना खडिया दवातो प्रमुखनो

२३ कसी ते जमिन खोदवादीक घर हाट खेत्र प्र

मुख तलाव कुवादि पावडादिके करी खोदे तेनो नियम ॥ इतिश्री चउद नियमादि बोल १३ पोताथी पळे तेम पाळे ॥ तेहने धन्य छे ॥

॥ अथ समकित सहित बारव्रत उचरवानी विधि संक्षेपे लखीए छीए ॥

॥ प्रथम समकित ते यथार्थ वस्तु तत्त्वना धर्म तथा देवगुरु धर्मनी श्रद्धा ते शुद्ध पद युक्त ॥

१ देव श्री अरिहंत, अढार दोष रहित, संपूर्ण ज्ञान, संपूर्ण दर्शनना धणी, मुक्ति मारगना देखाडनार ते देव वीना बीजा देवने देव बुद्धिए नाआदरुं.

२ गुरु, सुसाधु, पंचमहाव्रतधारी, निग्रंथ, मोक्ष मारग साधवा उद्यमी ते वीना बीजा नामधारी पाखंडी गुरु बुद्धिए ना आदरुं ॥

३ सुधर्म, श्री जिनेश्वर श्री वीतरागदेवे भाख्यो ते आज्ञा सहित दया मूल, दुर्गती पडता प्राणी उने आलंबन; ते वीना बीजा नाम धर्म, गुण विना धर्म बुद्धिए न आदरुं ॥

॥ ए त्रण तत्त्व सुधां सद्दहु ते पूजुं, वांडुं, सेवुं, ते थी विपरीत न पूजुं, न वांडुं, न सेवुं, रायाभियोगादि आगारें जयणा; नियम ज्नंग न थाय ॥

१ दिनप्रते देव जूहारुं, जोग ना बनें तो १ नवकारवाली प्रमुख गणुं ॥

२ दिनप्रते गुरु वांडु.जोग ना बनें तो श्रीसीमंधरादि प्रज्नुनीदिशिधारीने वांदू ,ज्नूलें नवकारवाली१गणुं.

३ धर्म, प्रज्नाते नवकारसी आदि संध्याये डुविहार आदि करुं. न करुं तो नवकारवाली १ गणुं.वरस प्रते देव पूजामां रू० ॥ गुरु ड्व्यमां रू० धर्म कार्यमां सात खेत्रे रू० ॥ वावरू० ॥ आशातना टालवा खप करूं ॥ ॥ श्री ॥

१ प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण अणुव्रत० स्थूल जीव संकल्पी निरअपराधें हणवानी बुद्धि ए न हणुं. हणाववा अनुमोदवामां पण थाय तेनी जतना उपयोग राखुं.

२ बीजे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत. पांच प्रकारे

जूठ न बोलवुं तेनां नाम १ कन्या २ गो ३ जूमी ४ थापण मोसो ५ कुडीसाख्य. ए पांच प्रकारे जूठ न बोलुं. सुक्ष्म जयणा ॥

३ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ॥ मोटी चोरी ना करुं, तालुं तोरुं नहीं, गांठ गेडवी नहीं, भारग पारुवो नही, चोरीनो माल लेवो नहीं, जावत् अणदीधुं लेवुं नहीं राज दंडादि उपजे ते चोरी तजुं ॥

४ चोथुं स्वदारा संतोष परदार विरमण व्रत. विधवा वेश्या कुलांगना प्रमुख, देव मनुष्य त्रीजंच संबंधि स्त्री सोयदोराने आकारे सेववी नहीं. जावत् कुवचन तथा सरागे विकार बुद्धिए सामुं पण जोवुं नही. तेम नारीने पुरुष संबंधि जाणवुं ॥

५ पांचमुं परिग्रह परिमाणव्रत॥ इच्छा परिमाणव्रत॥ धन[1], धान्य[2], क्षेत्र[3], वस्त्र[4], रूप[5], सुवर्न[6], कुपद[7], द्विपद[8], चतुष्पद[9] ए नव प्रकारना परिग्रहनुं परिमाण वा इच्छा परिमाण करे उपरांत संबंधे बने तो तीर्थे वावरुं॥

६ छठुं दिशि परिमाण, ते पूर्वादि दिशाए जवानो नियम शक्ति अनुसारे करे जाव जीव सुधी०

७ सातमुं न्नोगोपन्नोगव्रत, तेमां न्नोग ते न्नोगवी वस्तु फरी काममां ना आवे ते,अन्न,पान,खादिम, स्वादिम प्रमुख;तथा उपन्नोग ते घर घरेणुं वस्त्र नारी प्रमुख न्नोगवेला पदार्थ वारंवार न्नोगवे ते उपन्नोग,तेनो नियम,बावीस अन्नक्ष्य बत्रीस अनंतकायधमहावीगय तजवो.१४ नियम धारवा.

८ आठमुं अनर्थदंम, विना अर्थे पाप कर्मे आर्त्त रौद्र विषय कषाय हास्यादिके करी सजन प्रमुख शरीर पूजा व्रतादि कारणविना घरेणां कोश कोदाला उखल मुसलादि हल गाम्मां शस्त्र सज्ज करी पाप काममां जे प्रवर्त्तावे ते० ॥

९ नवमुं सामायक व्रत, ते दिन,पक्ष, मास,वरसमां सामायक करवां तेनी संख्या. बे घमि सुधी स मन्नावें वरतवुं ते सामायक ॥

१० दशमुं देशावगासिकव्रत ते जावजीव दिशिपरि

माण करेलुं तेमांथी दिनप्रते जवा आववाना नियम करी घर शेरी प्रमुखमां रहेवुं ते वे घडीथी मांडी जावजीव सुधी नीमें खेत्रे रहेवुं, सामायक आदि धर्म सेववो, तथा चउद नियम धारवा ते प्रथम कह्या छे ॥

११ अगीआरमुं पोषध उपवास व्रत ते च्यार परवी वा पांच परवी पोसह मासें वरसें करवा ते शक्ति जोग चार प्रकारना पोसाना भांगा ८० एक, द्विक, त्रीक, चतुसंजोगी मली थाय छे सर्वथी चोवीहार, देशथी आंबिल नीवि एकासण; आठ अथवा चार पहोर रात्री दिन, अथवा रात वा दिन, आत्मानें चारित्र पुष्ट करवा प्रवर्त्तवुं ते ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविभाग व्रत ते प्रथम कह्या ते वा गुरुने पोसह पारणादीके पडीलाभी जे दान दीधूं ते भोजनादिक वधेलुं रहे ते पोते वावरे. जोग ना बने तो धर्म मित्रने भोजन करावे अथवा पोताना धर्माचार्य जे दिशाए विचरे ते

दिशाए वांदी निमंत्रणा करी वावरे ॥

॥ ए समकित मूल बारव्रत देशथी लख्य
तेमां भेद तो विशेष छे ते सुविहीत गुरुवादीकनें पु
ने ए आदरवां. जीवित जन्म जांणयानुं फल ए

॥ अथ पच्चरकाणना आगारनी गाथा ।

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छ चेव पोरिसिए ॥
सत्तेवय पुरिमड्ढे, एकासणगंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्तेग
णेसुअ, अट्ठेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पंचेव य भ
छ प्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग
निव्वीए अठ नव आगारा ॥ अप्पाउरणे पंच चउ,
वंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥



शुध्दि पत्र.

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८	अ	अै
७	य	य्य
११	ए	अै
१३	क्ष	क्षै
१४	ज्ञ	ज्ञै
४	वलचर	थलचर
५	वदीउ	वंदीउ
८	मो	नमो
१०	सीद्धाण	सिद्धाणं
१६	करी,	करी
१८	विशुद्ध	विशुद्ध
२	अरिंहंतादकि	अरिहंतादिक
५	अवे	अने
१८	कवलज्ञान	केवलज्ञान.
१	काइ	कोइ
१२	भाव	भाव
५	प्रतिवोधी	प्रतिवोधी
७	भगवान	भगवान
३	करता	करतो
१७	दवता	देवता
१	दाष्टिए	दृष्टिए
६	थअ	अथ
६	कं०	के०

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४५	१	इथ्था	इच्छा
४८	२५	गांव	गांठ
४९	२	ठे	छे
४९	२	कहेठे	कहेछे
४९	१८	वनतुं	वनतुं
५०	४	गायछे	थायछे
५२	३	इंद्रिय	इंद्रिय
५३	५	निग्धा	निग्धा
५४	१३	करीते	करीने
५५	१	निग्धायण	निग्धायण
५७	२	मोन	सौन
५७	२५	लास्व	लाख
५९	२१	आगर संपदा	आगार संपदा
६०	९	विराधना	विराधना
६२	१८	स्वामीने	स्वामीने
६२	२०	अरिष्टनेमि	अरिष्टनेमि
७३	१६	लांठन	लांछन
७५	८	लांछ्त	लांछन
७५	२८	सौम्यदृष्टए	सौम्यदृष्टिए
७७	१६	एवमंए	एवंमए
८५	३	तेमा	तेमां
९९	१५	इगानिखमणे	इगानिक्खमणे

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१००	१६	भोगण	भोगेणं
१०३	१४	पहुआ	पहुंआ
१०३	१८	वलवण	वलवण
२०५	५	द्वादश	द्वादश
१०६	१	श्रृंग	श्रृंग
१०७	१४	धीर	धीर
१०८	१९	पन्नने.	पन्नने,
१०९	४	बिंबाइ	बिंबाइं
११०	९	गंधहथ्थीणं	गंधहथ्थीणं
१११	४	अख्खथ्थं	अख्खयं
११२	१०	मखय	मख्खय
११३	१३	ओध	ओघ
११४	१६	लोकनाहाणं	लोगनाहाणं
१२१	६	संताइ	संताइं.
१२१	९	केविसाहु	केविसाहू
१२१	१०	साहु	साहू
१२३	१	दारिद्रत	दारिद्रता
१२३	३	समकत्व	सम्यकत्व
१२३	८	अविगेण	अविग्धेणं
१२५	४	धारण	धारण
१२६	१०	वप्माहये	वप्माहिए
१५०	२०	आंखवड	आखवडे
१५५	१	अर्हद्वक्र	अर्हद्वक्त्र
१५५	१८	कायान	कार्योने
१५६	२०	नाखी	नांखी
१५६	१८	ज्योतिषिदेख	ज्योतिषिदे
१५८	२	सप्पभूय	स्सप्पभूय
१६२	६	धम्मचक्कवट्टि	धम्मचक्कवट्टि
१६५	२	वेयावच्च	वेआवच्च
१७३	२	उणोवरिया	उणोवरिया
१७५	४	लि	ली
१७६	१३	निकाक्षित	निकांक्षित
१७८	१५	नकवी	नक्षी
१८९	१४	दृष्टि	दृष्टि
१८९	१८	पडिक्कमु	पडिक्कमुं
१९०	३	पडिक्कमणमां	पडिक्कमणमां
१९६	५	वेपगां	बेपगां
१९९	६	पडिक्कमीश	पडिक्कमीश
२०८	१	काष्ट	काष्ठ
२१३	१३	संग्रांम	संग्राम
२१५	१४	अन	एन
२१९	४	कौकुच्य	कौकुच्य
२२०	९	जधन्य	जघन्य
२२२	१३	दुप्पाज्जअ	दुप्पमज्जिअ
२२७	१५	वर्मना	धर्मना
२३१	१२	अप्या	अप्पा
२३६	१२	संताइ	संताइं
२३८	३	अवो	अधो
२३९	८	जधन्य	जघन्य

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४	साहर्म्मिए	साहम्मिए
१८	चित	चित्त
१४	सावर्म्मिक	साधर्म्मिक
छेल्ली	दुरियाइ	दुरियाइं
१८	जित्त	खित्ते
१५	जेनी	जेवी
१७	अघिष्टायेका	अधिष्टायिका
२	साघुभिः	साधुभिः
३	तापथी	तापथी
३	दवातु	दधातु
७	जेशु	ज्जेसु
४	नामसत्रं	नामसंत्र
२०	सिद्धि	सिद्धि
१५	द्दष्टीना	द्दष्टिनां
१२	विजयोदवि	विजयादेवि
१२	जीणु	जिणु
५	वंदु	वंदुं
२	कुप्ण	कृष्ण
२	दसन	दसन्न
५	अवांत	अवंति
११	अद्दकुमारोअ	अद्दकुमारो
७	इच्छाकार	इच्छकार
१५	जयोतिषी	ज्योतिषो
४	सुट्ठिसाहिअं	सुट्ठिस- सहिअं
१२	सुट्ठिसाहित	सुट्ठिसहित
७	निवगइनु	निविगइनुं
१९	लेखुं	लेवुं

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३०८	११	वन्धुं	वध्धुं
३०८	११	साघु	साधु
३१६	८	दूघ	दूध
३२५	११	ओठी	ओछी
३२५	१४	मोढ	मोडे
३३०	१४	मूवः	भुवः
४३१	५	मविष्टांनं	मधिष्ठानं
३३७	२	चित्	चित्त
३३७	१२	निर्मितिः	निर्मितिः
३३७	१५	जयांत	जयंति
३३७	३	नखांशव	नखांशवः
३४३	५	विचयां	निचयो
३४६	१२	दवराजार्चितानो	देवराजार्चितानां
३४९	३	अभिघ	अभिधः
३४९	४	रैवलकः	रैवतकः
३४९	८	विशालहृदया	विशालहृदया
३५२	१	संक्षीसा	संक्षिप्त
३५२	८	कायाग्र	कायाचे
३५५	१६	सांभल्या	सांभल्यां
३५७	५	इंघण	इंधण
३५७	८	घोसेल्ल	घीसेल
३५७	८	एतंगीया	पतंगीयां
३५९	१	स्वप्नातर	स्वप्नांतर
३६२	१	आप्या	आप्यां
३६५	१०	देवेंद्र	देवेंद्र
३६६	१	कर्या	कर्यां

पानुं.	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध.
३६७	२	कोधो	क्रोधो
३६८	११	उधरथे	उधर्यो
३६९	४	कोंइ	कोइ
३८७	१७	करण	करणे
३९४	१८	धीजेल	घसिल
४०७	१५	शांतिबाला	शांतीवाला
४१०	५	थइठे	थइछे
४२३	१	स्था	तथा
४३२	३	जिण	जिणं
४३८	१३	मार्गने	मार्गने
४४४	९	सांत	संते
४४३	१६	सींह	सीह
४३९	१५	पहेरलां	पहेरेलां
४४७	१	इर्ह	इष्ट
४५०	१५	छुद्य	क्षुध
४५४	९	शांति	शांति
४५६	११	गोष्टिकानां	गोष्ठिकानां
४५७	२	,,	,,
४५७	७	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
४५८	१	शाति	शांति
४५८	१०	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
४५८	११	,,	,,
४७२	१९	ष्ठां	
४७३	१८	,,	,,
	१३	,,	,,
	१५	,,	,,
	०	भिपण	भीषण

पानुं	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध.
५०७	९	दुरविपारिच	दूरविचारिच
५०७	१६	घवल	धवल
५०९	१८	असिग्वाथ	अस्निग्धाय
५१९	८	वाङ०मय	वाङ्मय
५२१	६	घडीनो	वडीना
५१२	१४	सत्वेत्ति	सत्वेति
५२२	६	सखरा	सुखरी
५२३	७	नात्यद्भुत्तं	नात्यद्भुतं
५२५	१३	पोतान	पोतानो
५२६	८	पयःपाणी	पयः—पाणी
५२७	७	नहि	न हि
५२८	५	सिपोन्मिय	सिपोन्मिप
५३०	१६	स्पष्टिकरोपि	स्पष्टीकरोपि
५३१	४	जलधर	जलधरैः
५३१	१०	निर्धुम	निर्धूम
५३२	१५	,,	,,
७३४	१८	सूर्वरिपु	सर्वरीपु
५३५	२	शु	शुं
५४३	१५	सुच्चे	सुच्चै
५४८	२	ठ	छे
५६५	५	हृद्वर्त्तिनि	हृद्वर्तिनि
५६५	९	वोल छे	वोले छे
५७४	१	निश्व	निश्चे
५७५	१०	हृदयना	हृदयसां
५७५	४	ध्यानथी	ध्यानथी
५७६	४	वृतं	वृंतं
५८१	९	सानिव्यतः	सानिध्यतः
५८१	९	पायूपतां	पीयूपतां
५८४	५	दिव्यधनि	दिव्यध्वनि

ओळ	अशुद्ध.	शुद्ध.
[illegible]	...धुरयं	विधुरयं
[illegible]	...दद्वयं	पादद्वयं
९	प्रात	प्रति
६	था	तथा
१	विधाय	विधाय
५	ध्यान	प्यान
७	देवद्र	देवेंद्र
११	भवंदृघ्रि	भवदंघ्रि
१७	वज्जिनेद्र	वज्जिनेंद्र
१	त्वाङ्घिव	त्वाङ्घ्रिंव
१	मोस	मोसं
११	सागरचदो	सागरचंदो
१३	विलपन	विलेपन
१	नमुत्थुणं	नमुत्थुणं
१४	बहु गान	बहु मान
१७	सढठाण	सट्ठाण
१४	पन्नवणा	पन्नवणा
६	इथ्थकारी	इच्छकारी
१९	लख्या छे	लख्या छे
९	मिथ्यामि	मिच्छामि
१३	इथ्था	इच्छा
९	,,	,,
१६	अध्भुट्ठिओ	अब्भुट्ठिओ
३	इथ्था	इच्छा
७	वञ्झो	वञ्झो
९	हेण	हणं
१७	पडी	पढी

पृष्ठ.	ओळ.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६४१	१७	हिंद्रा	निद्रा
६४९	१०	ज्जिनोघ	ज्जिनौघ
६४९	१	पमानः	मानः
६६०	७	ड्ठवणी	ठवणी
६६०	७	श्रीवथ्थ	श्रीवच्छ
६६०	८	श्रेयासनो	श्रेयांसनो
६६३	१४	धरशु	धरशुं
६६३	१५	धरणी	धरणी
६६४	५	गोतम	गौतम
६६९	१	,,	,,
६६९	५	विधि	विधि
६७१	११	धुर धुर	धुरंधर
६७६	४	धोपे	धोप
६७७	१२	अष्मी	अष्टमी
६८७	३	ब्रह्मद्र	ब्रह्मेंद्र
६८८	७	पाप	पाप
६९०	१५	पार्श्व	पार्श्व
६९७	३	पद	पदे
६९७	६	ध्यान	ध्यान
६९९	१३	सुधर्मा	सुधर्मा
७०१	६	तत्वे	तत्त्वे
७०५	६	वासोर	वासोरे
७११	११	आप्योर	आप्योरे
७११	१५	वेहन	वेहेन
७ ७	१४	पेर	पेरे
७१७	१३	गोतम	गौतम
७१८	५	आदरो	आदरो,
७२७	४	खेल	खेले

पानुं.	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध.
	२	कोधो	कीधो
७३५	१०	चरला	चरवला
७४१	१५	दूर	दूरे
७४४	१३	चोखु	चोखुं
७५२	३	भलोजी	भलोजी,
७६२	६	स्वगशु	स्वर्गशुं
७६५	१५	पूजता	पूजतां
७७२	१२	असंख्या	असंख्य
७७३	९	म्र	म्र
७७३	१२	सतकाल	ततकाल
७८३	११	नहींखी	नहींजी
७९५	१०	नामजो	तामजों
७९५	११	घररे	घेरेरे
८०१	४	पामी	गामी
८०७	७	घसता	घसंतां
८०८	५	उडाळण	उडावण
८१२	२	संव..र	संवच्छर
८१५	३	विपुलाचळ	विमलाचल
८१७	६	मुखपाडता	सुंखपाडंता

पानुं	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८१७	८	वगडी	वी ‹ाडी
८१७	१४	थया	थयो
८१९	४	कीयाजी	कीये
८१९	४	मनि	मुनि
८२०	११	वपोर	वपोरे
८२१	९	वासो	वास्यो
८२४	३	ववननां	वचनना
८२५	५	जन	जिन
८२५	१७	शाश्वतो	शाश्वतां
८२८	१७	करीने	भरीने
८३०	७	जेहवुं	जेहवो
८३४	१३	कुतरो	कूतरो
८४६	११	कहीन	हीने
८४७	३	पेहली	पेहेली
८५२	२	इछा	इच्छा
८५७	१३	अधा	अधो
८५७	१५	अंप	अंगे